॥ श्रीनाथ जी ॥

पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका

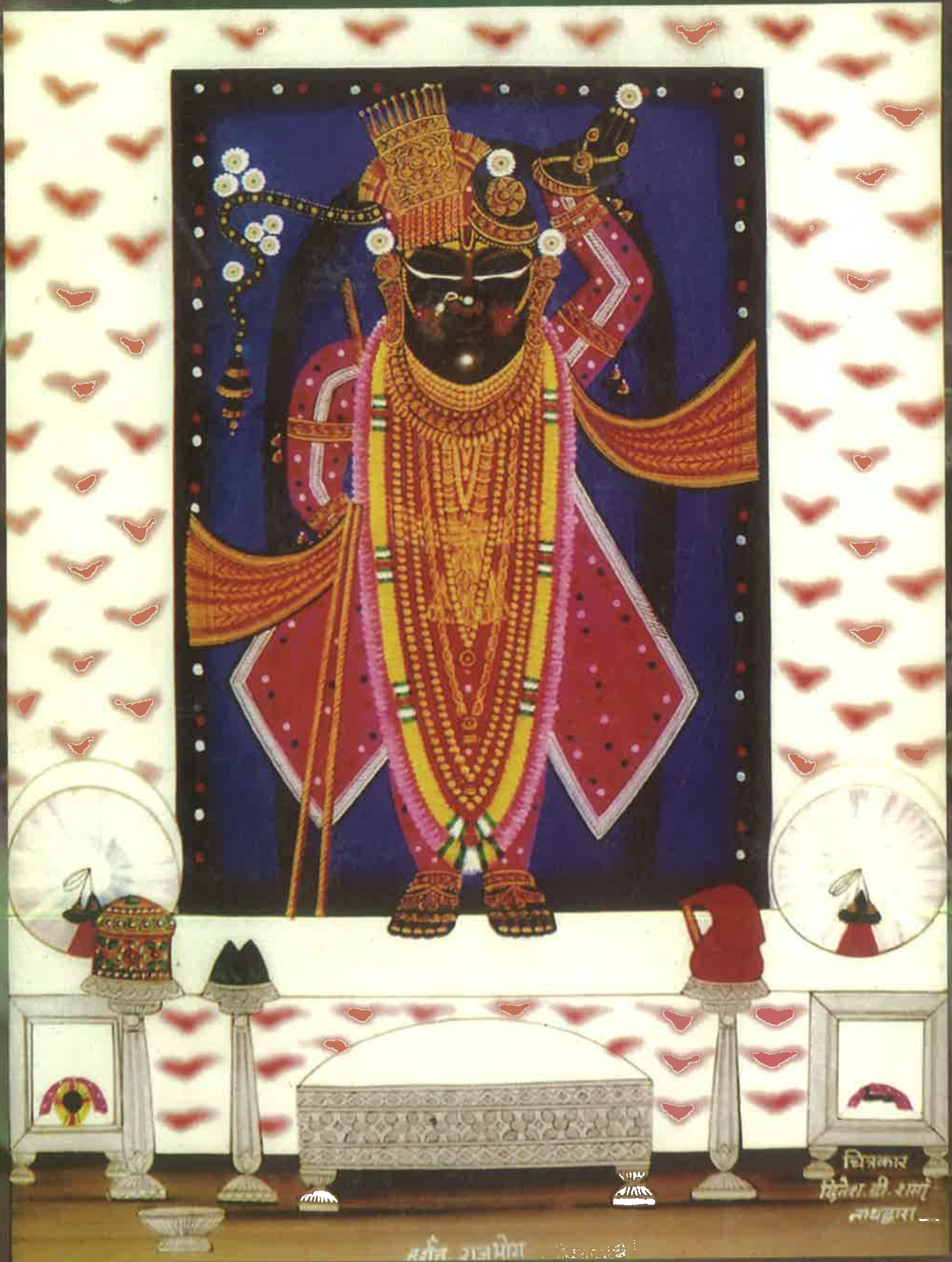
चित्रकार
हितेश डी. शर्मा
नाथद्वारा
दर्शन राजभोग

चतुर्थ पुष्प

(माघ, फाल्गुन, चैत्र कृष्ण पक्ष)

।। श्रीनाथजी ।।

पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका

चतुर्थ–पुष्प

(माह-माघ, फाल्गुन, चैत्र कृष्ण पक्ष)

संकलन

मदनलाल शर्मा

26, रामद्वारा चौक, उदयपुर (राज.) 313001

फोन : 0294–2417209 (निवास)

संकलनकर्ता एवं प्रकाशक

श्री मदनलाल शर्मा
26, रामद्वारा चौक, उदयपुर (राज.) 313001
फोन : 0294–2417209 (निवास)
मोबाईल : 09461808099

संशोधन एवं संयोजन

श्री रमणलाल पारीख
19–ए, मोगरावाड़ी, उदयपुर (राज.) 313001
फोन : 0294–2484929 (निवास)
मोबाईल : 09829307969

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक

श्री मदनलाल शर्मा
26, रामद्वारा चौक, उदयपुर (राज.) 313001
फोन : 0294–2417209 (निवास), 09461808099 (मोबाईल)

प्रथम संस्करण – 2013, आवृत्ति – 1000

न्यौछावर:
रू. 301.00
(पूरे वर्ष के चारों भाग एक साथ लेने पर न्योछावर रू. 1101.00 मात्र)

प्राप्ति स्थान

श्री मदनलाल शर्मा, 26, रामद्वारा चौक, उदयपुर (राज.) 0294–2417209
श्री रमणलाल पारीख, 19–ए, मोगरावाड़ी, उदयपुर (राज.) 0294–2484929, 09829307969
श्री पंडित भोलाशंकर चौबे, बंगाली घाट, मथुरा (उ.प्र.) 09897846066
श्री सीताराम पुस्तकालय, द्वारकाधीश मंदिर बजार, मथुरा (उ.प्र.)
श्री जगमोहन हरिप्रियाबेन अरोड़ा, श्रीविट्ठलनाथजी मंदिर, नाथद्वारा, 0921495115

मुद्रक:
संजय प्रिन्टर्स
71, महिला मण्डल स्कूल, उदयपुर

॥ श्रीनाथजी ॥

-: प्राक्कथन :-

परम कृपालु निकुंज नायक श्रीनाथजी की पूर्ण कृपा एवं मेरे गुरूदेव पूज्य तिलकायत श्री १०८ श्री राकेशजी महाराज के शुभ आशिर्वाद के फलस्वरूप ही, पूरे वर्ष भर के श्रृंगार एवं किर्तनो का संकलन चार भाग में प्रकाशित करने का मनोरथ पूर्ण हुआ, इसी के क्रम में यह चतुर्थ पुष्प (माह माघ, फाल्गुन एचं चैत्र कृष्ण पक्ष) प्रकाशित करा प्रस्तुत किये जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

इस महद् कार्य में श्रीनाथजी के बड़े मुखिया श्रीनरहरिजी ठक्कर तथा श्री इन्द्रवदन जी गिरनारा का पूर्ण मार्गदर्शन मिला।

कई अनुपलब्ध किर्तनों को उपलब्ध कराने में किर्तनकार श्री तोलारामजी, श्री पन्नालालजी, श्री भंवरलालजी तथा श्री ललीतजी का पूरा सहयोग मिला।

इस ग्रंथ के चित्र श्री भरत जी पालीवाल, गीता स्टूडियो, नाथद्वारा के उपलब्ध करा कर सहयोग दिया है।

इन किर्तनों के संशोधन एवं संयोजन का महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण मनोयोग से श्री रमणलालजी पारीख, मोगरावाड़ी, उदयपुर ने किया। इस ग्रंथ के प्रकाशन तक पूर्ण रूप से सहयोगी रहे है।

पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका के चारों पुष्पों को प्रकाशित कराने में सभी आर्थिक सहयोग कर्ता वैष्णवजनों को एंव जिन्होंने प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जो भी सहयोग दिया है उन सभी का अभिननंदन एवं धन्यवाद देता हूँ।

सन कम्प्यूटर्स के श्री लोकेश जी अग्रवाल जिन्होने मन लगाकर कार्य किया तथा श्री संजय प्रिंटर्स, उदयपुर जिन्होंने उचित लागत पर इस ग्रंथ के मुद्रण में सहयोग दिया, उन्हें भी धन्यवाद देता हूँ।

उक्त सभी महानुभावों के सहयोग से ही चारों ग्रंथ प्रकाशित होकर वैष्णवजनों के पास पहुँच सके।

विस्वास है कि पूरे वर्ष वैष्णवजनों को नित्य सेवा में, ये ग्रंथ उपयोगी होंगे। ग्रंथ प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी है, फिर भी कोई त्रुटि ध्यान में आवे तो, कृपया अवगत कराने का श्रम करावें। कृष्ट हेतू क्षमा प्रार्थी हूँ।

दासानुदास
मदनलाल शर्मा

नम्र निवेदन

परम कृपालु श्रीजी बावा तथा भगवदीयों की पूर्ण कृपा एवं आशिर्वाद के फलस्वरूप ही "पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका" के चतुर्थ पुष्प के संषोधन व संयोजन का कार्य प. भ. श्री मदनलालजी मास्टर साहब ने मुझ अकिंचन को सोंपा। मेरे लिये तो यह कार्य अत्यंत लाभप्रद रहा क्योंकि संषोधन के दौरान सभी पदो का बार-बार पठन होने से, अनायास ही उनका अवगाहन एवं आत्मसात करने का सौभाग्य मुझे मिला। इस कार्य में रूचि उत्पन्न कराने का श्रेय प.भ. श्री हरिदासजी, आगरा का शुभाशिर्वाद ही है। उदयपुर निवासी मेरे मित्र प. भ. श्री कृष्णदासजी पारख ने इस कार्य में बराबर सहयोग दिया, इसी कारण यह कार्य पूर्ण हो सका।

वैसे तो संशोधन में पूरा ध्यान रखा गया है, फिर भी मानव स्वभाववश त्रुटिया रहना संभव है, अतः विद्वान वैष्णवजनों से निवेदन है कि कोई त्रुटि ध्यान में आवे तो कृपा कर अवगत कराने का श्रम करावेंगे, ताकि सुधार किया जा सके।

हरि, गुरू, वैष्णव चरण रज अभिलाषी।

दासानुदास

रमणलाल पारीख

पूज्यपाद गोस्वाम तिलकायत श्री 108 श्री राकेशजी (श्रीइन्द्रदमनजी महाराज)

आर्शीवचन

।। श्रीनाथजी ।।

सचिव,
पूज्यपाद गोस्वामी तिलकायत श्री १०८
श्री राकेशजी (श्रीइन्द्रदमनजी महाराज)

खास दफ्तर, मोती–महल
नाथद्वारा (जिला–राजसमन्द) राजस्थान
फोन–कार्यालय 234480
श्रीवल्लभ दर्शन, पोद्दार पथ,
सान्ताक्रुज (पश्चिम) बम्बई–400054
कार्यालय फोन–26494648

- 5210 दिनांक 11 – 7 –2009

श्री मदनलालजी शर्मा
२६, रामद्वारा चौक
भोपालवाड़ी · उदयपुर

⑥

श्रीमानों को जान कर अति प्रसन्नता हुई कि आप "पुष्टि मार्गीय सेवा प्रणालिका" का द्वितीय तृतीय एवं चतुर्थ पुष्प का प्रकाशन करा रहे हैं इस कार्य की सफलता के लिये श्रीमानों को शुभआशिर्वाद प्रदान किया है।

भवदीय
सचिव
खा० दफ्तर, मोती महल
नाथद्वारा (राजस्थान)

आशीर्वचन के पीछे चित्रांकन

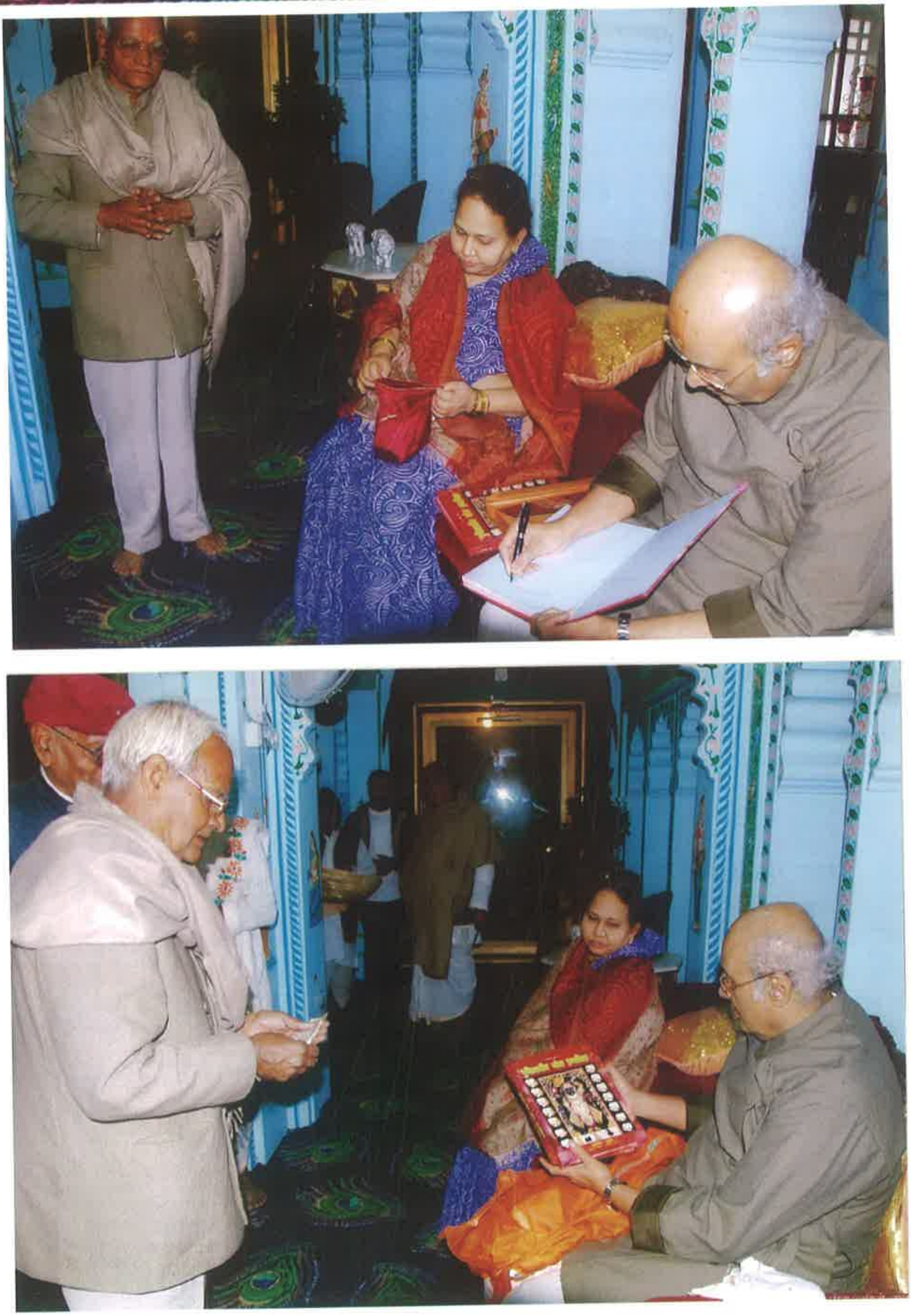

तिलकायत श्री द्वारा तृतीय पुष्प का विमोचन

समस्त वैष्णवजनों को भगवत् स्मरण

नर्बदादेवी-मदनलाल शर्मा, उदयपुर

Registration No. 70/Ajmer/1999-2000

SHRI KSHATRIYA PRATIBHA VIKAS EVAM SHODH SANSTHAN

E-19, Shastri Nagar, Ajmer - 305001 (Rajasthan) Ph. 0145-2425255

RAO HAMIR SINGH MEJA
CHIEF PATRON
EX-CHAIRMAN Railway Recruitment Board, Ajmer
Meja House, A-17, Naka Madar,
Madhuban Colony, AJMER
Cell : 9829449154

RANJEET SINGH
(Mayapur)
PRESIDENT
2-CH-11, Opp. Veer Udyan,
Behind Kashyap Dairy
Vaishali Nagar, AJMER
Cell : 9829040621
E-mail : rsm521@gmail.com

HANUVANT SINGH NATHAWAT
(KISHORPURA)
VICE-PRESIDENT
Sayar Villa, Pawansut Colony,
Opp. T. T. College, Meer Shah Ali, AJMER
Cell : 9829250755

NARENDRA SINGH RATHORE
(SARANA)
SECRETARY
1444/3, Pratap Nagar, Loha Khan,
Police Lines, AJMER
Cell : 9610666777
E-mail : aruns33154@icicipruparlner.com

MAHENDRA SINGH RATHORE
(GOTHIYANA)
DY. SECRETARY
A-84, Tilak Path, Opp. Ram Bhawan,
Lohagal Road, AJMER
Cell : 9414380266

BAJRANG SINGH SHEKHAWAT
(HEERWA)
TREASURER
1456/3, Pratap Nagar, Loha Khan,
Police Lines, AJMER
Cell : 9413040451

आदरणीय महोदय,

मेवाड़जन मेदपाट उदयपुर द्वारा प्रकाशित पुष्टि मार्गीय सेवा प्रणालिका पुस्तक के तीन खण्ड़ को देखकर अत्यन्त हर्ष है। श्री नाथजी की सेवा – श्रृंगार और कीर्तनों का त्रिवेणी संगम, इस प्रकाशन द्वारा भक्तजनों के हृदय को असीम शांति, आनन्द और लाभ प्रदान करता है।

इस कार्य के लिए आपको बधाई देते हुए मंगल कामना करता हूं। श्री नाथजी आपको इस कार्य में श्रेय प्रदान करे यही मेरी शुभकामना है।

शुभकांक्षी
हमीरसिंह
(रावत हमीर सिंह मेजा)
A–17, नाका मदार
मधुबन कोलोनी
अजमेर
Mobile No. 9829449154

हम कौन थे ? क्या हो गये हैं ? क्या होंगे अभी, आओ विचारें मिल सभी।।

।। श्रीनाथजी ।।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	पद	पेज
	-: अ :-	
१	अग्रत किट ध्रुं ध्रुं ध्रुं ध्रुं	९
२	अति रंग लाग्यो बना बनी	२७
३	अब दुध लाई हो यशोदा मैया	३
४	अनोखे होरी खेलन लागे	११७
५	अरि चल दुल्हे देखन जाय	१९२
६	अरि चल नवल किशोरी	१०८
७	अरि छकहारी चार पांच आवत	१७०
८	अरि तु काहे अनमनी	३९
९	अरि हों या मग निकसी आय	२००
१०	अरे कारे प्यारे रतनारे भौंरा	११७
११	अहो पियलाल लडैती को	१२७
१२	अहो बल जिय अधिक	१७१
	-: आ :-	
१३	आओ मेरे गोविन्द गोकुल के	३०
१४	आओ मिल ब्रज की नारी	७६
१५	आई छाक बुलाये श्याम	१७०
१६	आई है आज बसंत पंचमी	५३
१७	आई बसंत ऋतु अनूप नूत	४५
१८	आईये जु कैसे आवन पाये	४०
१९	आगे आऊरी छकहारी	१७०
२०	आगे गाय पाछे गाय	१३
२१	आज अटारी पर उसीर महल में	१७१
२२	आज उठ भोर नव कुंज	२९
२३	आज की बानिक पर हों लाल	४४
२४	आज तो छबिलो लाल	१४६
२५	आज नंदलाल सखी प्रेम मादिक	४२
२६	आज बनठन वृज खेलन फाग	१३४
२७	आज बन बृजराज कुंवर	१७१
२८	आज बने नवरंग छबिले	२९
२९	आज बने बृजराज कुंवर	२२
३०	आज बन्यो नवरंग पियारो	२९
३१	आज भटु देखे उसीर महल में	१७१
३२	आज भोर ही नंद पौरी	१०३
३३	आज मदन मोहन बने	५२
३४	आज माई झूलत हें नंदलाल	१५१
३५	आज माई मोहन खेलत होरी	९०
३६	आज वृंदा विपिन कुंज	१८९
३७	आज सगरी निशा कहाँ जागे	१९
३८	आज सखी मोहन अति बने	१९४
३९	आज हमारे भोजन कीजे	१९५
४०	आनंदराय खेले फाग हो	८४
४१	आयो फागुन मास कहे सब	१४५
४२	आरोगत नंदलाल सयाने	२००
४३	आलीरी कर श्रृंगार, सायंकाल	१६
४४	आली कुंज भवन बैठे	१८५
४५	आवत जात हों हार परीरी	१९४
४६	आवत हें आगे दे गैया	१८
४७	आवत कुंजन ते पोहोपी री	३१
४८	आवन कह गये अजहु न आये	१९
४९	आवे रावल की ग्वार नार	१४८
	-: इ :-	
५०	इक रंग श्याम सदा तुम	३०
	-: उ :-	
५१	उसीर महल में बिराजे	१५०
	-: ए :-	
५२	एक बोले बोलो नंदनंदन	६६
५३	ए चल जाऐं जहाँ हरि खेलत	११०
५४	ए री तु घरी घरी क्यों आवे	३४
५५	एरी सखी निकसे मोहनलाल	१०५

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
५६	एसे रीझे भीजे आयेरी लाल	४६	८५	कुसुम सेज पिय प्यारी पौढ़े	१८०
	-: ऐ :-		८६	कुसुम सेज पौढ़े दम्पति	१६६
५७	ऐ आज कौन बन चराई गैया	१७	८७	कुसुमित कुंज विपिन वृंदावन	४६
५८	ऐसो पत्र लिखि पठ्यो नृप	४६	८८	कुसुमित बन मधि विविध	३८
	-: औ :-		८९	केसरी छींट रूचिर वंदन रज	५३
५९	और राग सब भये हें बराती	६४	९०	केसरसों भीज्यो वागो	५१
	-: क :-		९१	कोऊ भलो बुरो जिन मानों	१६१
६०	कछु दिन ब्रज में रहो हरि	१५९	९२	क्यों मोहन दर्पन नहिं देखत	३६
६१	कटि पर नीके लटपटात पीत	२३	९३	क्योंरी तु द्वारे बोली आय	६
६२	कदम चढ़ कान्ह बुलावत गैया	३८		-: ख :-	
६३	कदम बन बिथन करत बिहार	१७५	९४	खिरक खन आछे बड्डे बगर	१६
६४	कनक कुसुम अति शोभित	२२	९५	खिलावन आंवेगी ब्रजनारी	२
६५	कमल नयन के कौतुक सुनो	७६	९६	खेल फाग फूल बैठे झूलत	१६७
६६	कमल मुख देखत तृप्ति न होय	१७९	९७	खेलत खेलत पौढी श्री राधा	४६
६७	कमल सी अँखिया लाल तिहारी	११	९८	खेलत फाग गोवर्धनधारी	८५
६८	कर तारी दे दे नाच ही	११४	९९	खेलत फाग फिरत रस फूले	११८
६९	करत ब्यारू हँ हँस मोहन	१८२	१००	खेलत फाग संग मिल दोऊ	९८
७०	कर मोदक माखन मिश्री ले	१६९	१०१	खेलत नंद किशोर ब्रज में	८३
७१	करो कलेऊ कहत जसोदा	२	१०२	खेलत बसंत गिरिधरनलाल	५१
७२	करो कलेऊ मदन गोपाल	३	१०३	खेलत बसंत गिरीधरनलाल मनमोहन	५७
७३	कहाँ ते आये हो इन साथ	१७	१०४	खेलत बसंत निश पिय संग	४७
७४	कहो तुम कौन हो कहाँ ते आये	३३	१०५	खेलत बसंत वल्लभ कुमार	५७
७५	कीजे लाड़िले पान अब दूध	३	१०६	खेलत बसंत वर विट्ठलेश	५६
७६	कीजे लाल यहि बार बियारू	८	१०७	खेलत बलि मोहन ऋतु बसंत	७७
७७	क्रीडत मणिमय आंगन रंग	२१	१०८	खेलत मदन गोपाल बसंत	४८
७८	कृष्ण नाम जबतें श्रवण	१९	१०९	खेलत मदन मोहन पिय होरी	७९
७९	कुच गडुवा जोबन मोर कंचुकी	५५	११०	खेलत मदन मोहन फाग	८७
८०	कुंज बिहारी प्यारे के संग	६०	१११	खेलत हें हरि हो हो होरी	११४
८१	कुंज में पौढ़े रसिक पिय प्यारी	१७१	११२	खेलन आई हम मोहन	६१
८२	कुंज भवन तें निकसे माधो	१७७	११३	खेलन को श्यामा जु चली	१४०
८३	कुंज भवन में पौढ़े दोऊ	१९८	११४	खेलि खेलि हों लडैती श्री राधे, तोहि	६४
८४	कुसुम गुलाब महल में बैठे	१७२	११५	खेलि खेलि हो लडेंती श्रीराधे, हरि	७३

क्र.स.	पद	पेज
११६	खेलि फाग अनुराग भरे	१६८
११७	खेलि फाग निकुंजन दोऊ	१८७
११८	खेले नंद को नंदन होरी	८५
११९	खेलौ होरी फाग सबै मिलि	१०१
	-: ग :-	
१२०	गाँऊ श्रीवल्लभ	१
१२१	गावत चली बसंत बधावन	४८
१२२	गावत धमार आई ब्रजकी	१४८
१२३	गायन के पाछे पाछे, नटवर	६
१२४	गारी हरि देत दिवावत	१५८
१२५	ग्वालिन सोंधे भीनी अंगिया	९१
१२६	गिरिधर यमुना तट कुंजन में	८५
१२७	गिरि पर चढ़ी गिरिवरधर टेरे	१७४
१२८	गैया गई दूर टेरो जू कान्ह	३८
१२९	गोकुल गाम सुहावनो	७९
१३०	गोकुल सकल ग्वालिनी, सब	८३
१३१	गोपाल को मुखारबिन्द	३६
१३२	गोप कुमार लिये संग हो हो	१३०
१३३	गोपी हो नंदरायधर मांगन	१२१
१३४	गोवर्धन गिरि सघन कंदरा	१७४
१३५	गोरी गोरी गुजरिया भोरीसी	१२८
	-: घ :-	
१३६	घोष नृपति सुत गाईये	७१
	-: च :-	
१३७	चटकीली चोली पहेरे तन	६६
१३८	चढ़ी चढ़ी अँखिया तिन मघि	२५
१३९	चम्पो गुलाब केतकी जाई	६५
१४०	चल री सखी नंदगाव जई	१३
१४१	चलहु गोपाल बोलत महतारी	३६
१४२	चली बन मौन मनायौ मानि	१०
१४३	चली हे कुंवरी राधे खेलन होरी	११५
१४४	चले हो भांवते रस ऐन	६४
१४५	चलो चलो री वृंदावन बसंत	५०
१४६	चलो क्यों न देखें री खरे दोऊ	१८९
१४७	चलो किन देखन कुंज कुटि	१७३
	-: छ :-	
१४८	छबिले लाल की यह बानिक	३६
१४९	छाक लिये सिर श्याम बुलावत	१७६
१५०	छाक ले आई ग्वालन गोरी	१७७
१५१	छांडो छांडो हमारी वाट	१०४
१५२	छिरकत छींट छबिलो राधे	६२
१५३	छींट छबिली तन सुख सारी	६६
	-: ज :-	
१५४	जब जब देखों जाय हरिको वदन	७
१५५	जन्म लियो रितुराज आज	५३
१५६	जसोदा नहीं बरजे अपनो बाल	५२
१५७	जहाँ तहाँ ढ़र परत ढ़रारे	३२
१५८	जाऊँगी वृंदावन भेंटोगी गोपाल	१७७
१५९	जागे हो रैन तुम सब	२३
१६०	जागो कृष्ण खेलौ रंग होरी	२
१६१	जान्यो प्रीत को मरम	१४
१६२	जेंवत कान्ह करत किलकारी	१३
१६३	जेंवत दोउ रंग भरे	३८
१६४	जेंवत नंद कान्ह बलभैया	११
१६५	जेंवत नंद गोपाल खिजावत	१५
१६६	जो कोई श्री यमुना नाम संभारे	१
१६७	ज्यों तु दर्पण ले निरखत हंसत	१६९
१६८	जोरत छाक प्रेमसों मैया	१७७
	-: झ :-	
१६९	झमकी चल राधे तो पे	२००
१७०	झुक रही सुन मुरली की टेर	१४
१७१	झुठी मीठी बतियन लालन	३४
१७२	झुलत ड़ोल नंदकुमार	१५८
१७३	झुलत डोल राधिक संग	१५४

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
१७४	झुलत युग कमनीय किशोर	१५६		-: द :-	
	-: ट :-		२०२	दिन दूल्हे मेरो कुंवर कन्हैया	१९१
१७५	टेढ़ि है री आली टेढ़ि	२५	२०३	दूध पियो मन मोहन प्यारे	३
१७६	टेर हो टेर कदंम चढ़	१८५	२०४	देखत व्रजनाथ वदन मदन	३१
	-: ड :-		२०५	देखियत लाल लाल दृग डोरे	५९
१७७	डला भर हों लाल कैसेक	१७७	२०६	देखो देखोरी नागर नट	१७६
१७८	डेल चंदन को झूलत हलधर	१५३	२०७	देखन बन ब्रजनाथ आज अति	६७
१७९	डोल झूलत हें गिरिधरन	१५४	२०८	देखों देखों व्रज की विथिन	१४१
१८०	डोल झुलत हैं प्यारो लाल	१५२	२०९	देखों राधा माधो सरसजोर	६३
१८१	डोल झुलत हैं पिय प्यारी	१५९	२१०	देखों वृंदावन श्री कमलनैन	६४
१८२	डोल झूलावत लाल बिहारी	१५१	२११	दौरी दौरी आवत मोहि मनावत	२६
१८३	डोल माई झूलत नंद कुमार	१६६		-: ध :-	
	-: ढ :-		२१२	धनि धनि नंद जसोमति	९१
१८४	ढोटा दोऊ रायके खेलत	१६१	२१३	धरे टेढ़ी पाग टेढ़ी चंद्रिका	२००
	-: त :-		२१४	धोरी धुमर कारी काजर	१७
१८५	तु जिन बोलेरी दैन दै वाहि	१५४		-: न :-	
१८६	तुम आवो री तुम आवो	१४४	२१५	न छूटे डोरना अहो	१९२
१८७	तुम को टेर टेर में हारी	१७९	२१६	नयन छबिले तरून मदमाते	१२
१८८	तुमको टेरत हों कान्ह	६	२१७	नयनन लागी हों चटपटी	१७५
१८९	तुमको मैय्या छाक पठाई	१७९	२१८	नवल कन्हाई हो प्यारे	१५२
१९०	तुम चलो सबैं मिलि जांय	१२८	२१९	नवल कुंवर वृजराय के, लाल	७३
१९१	तुम बेगी श्याम भले आये हो	८१	२२०	नवल घनश्याम सखी नवल	१९९
१९२	तुम सम और न कोई श्री यमुनाजी	२	२२१	नवल वृजराज को लाल ठाड़ो	४२
१९३	तु चल श्याम बुलावे भामिन	५५	२२२	नवल बसंत उनये मेघ	५९
१९४	तु बनरा रे बनि बनि आया	२८	२२३	नवल बसंत बीच वृंदावन	५१
१९५	तिहारे पूजिये पिय पांय	१९९	२२४	नवल बसंत नवल वृंदावन, खेलत	५६
१९६	तें जु नीलपट ओट दियौरी	२०	२२५	नवल बसंत नवल वृंदावन, नवल ही	५१
१९७	तें प्यारी चित हर लियो हों	१२७	२२६	नाचत गावत बनतें आवत	२३
१९८	तेरे पैयां लागूँ गिरिधर	७	२२७	न्याय दिन दूल्हे हो नंदलाल	१९३
१९९	तेरी भ्रोंह की मरोरन तें	९	२२८	निकस कुंवर खेलन चले	९९
२००	तें मोहन को मन हर्यो	१६६	२२९	निर्तत गावति तथा बजावति	५९
२०१	तें री मोहन को मन हर लियो	२५	२३०	निर्तत मोहन रसिक सखन	८
			२३१	नीकी ऋतु लागत हे अति	१४

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
२३२	नैक चितै चले री लालन	२५		-: फ :-	
२३३	नैक म्होड़ो मांडन देहों	१४१	२६३	फगुवा के मिस छलबल	६२
२३४	नंद किशोर किशोरी की जोरी	६५	२६४	फाग खेलन ब्रजसुन्दरी	७७
२३५	नंदगाम को पांडे ब्रज बरसाने	१३८	२६५	फाग खेले राधा गोरी	११०
२३६	नंद महर को कुंवर कन्हैया	१३६	२६६	फूली फूली डोले सोनेके सदन में	१६६
२३७	नंदराय लला ब्रजराय लला	७८		-: ब :-	
२३८	नंद सुवन व्रज भांवते फाग	७२	२६७	बडौ मेवा एक ब्रज में टेंटी	१८६
	-: प :-		२६८	बदत नाहिन ग्वालिन जोबन	७४
२३९	परिवा प्रथम कुंवर अति विहरत	१२०	२६९	बन फूले द्रुम कोकिला बोली	५४
२४०	परिवा प्रथम कुंवर को देखन	१२२	२७०	बंदो मुनसाई नंद के जुवति	१३२
२४१	परिवा प्रथम ही होरी खेलन	१२२	२७१	बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु	१७७
२४२	परोसत गोपी घुंघट मारे	६	२७२	बरसाने की ग्वालिनी ओर	११८
२४३	पहिरे री माल गुलाब सुरंग की	१८०	२७३	बरसाने की गोपी मांगन फगुवा	१२६
२४४	पाछे ललिता आगे श्यामा	१८०	२७४	बरसाने की नवल नार मिलि	१२६
२४५	प्यारी के महेल तें उठि चले	१६६	२७५	बल बल आज की बानिक	१७०
२४६	प्यारी तोहि श्याम बुलावे	३५	२७६	बहुत फिरी तुम काज कन्हाई	१८२
२४७	प्रात समें गिरिधरन लाल को	२	२७७	बहुरी बसंत समे रितु आई	५४
२४८	प्रात समें जागी अनुरागी	११	२७८	बहोरी ढ़फ बाजन लागे हेंली	१०५
२४९	प्रातः समे श्री वल्लभ सुत को	१	२७९	ब्रजराज लडैतो गाईये लाल	११२
२५०	प्रात समे श्रीवल्लभ सुतको पून्य	१	२८०	बाघम्बर औढ़े साँवरो यामे	११३
२५१	पिय को नचवन सिखवत	१६८	२८१	बाँट बाँट सबहिन को देत	१८०
२५२	पिय तेरी चितवन ही में टोना	१२	२८२	बाल दशा गोपाल की सब	१७४
२५३	पिय तोहे नयनन ही में राखुं	४१	२८३	ब्यारू करत हें घनश्याम	१७८
२५४	पिय ही जीमावत नवल	३२	२८४	ब्यारू करत हें बलवीर	१८०
२५५	पीत उपरना वारे ढोटा	१७६	२८५	ब्यारू श्याम अरोगन लागे	१८५
२५६	पीतांबर काजर कहां लग्यो	१०३	२८६	बिराजत ग्वाल मंडली अहो	१८५
२५७	पीवत दूध किशोर किशोर	३	२८७	बिहारीलाल आई छाक सलोनी	१८२
२५८	पौढ़िये लाल लाडिली संग	३०	२८८	बिहारी लाल आवहु आई	१८१
२५९	पौढ़े प्रेम के पर्यंक	१७८	२८९	बेगी चलो बन कुंवर सयानी	६८
२६०	पौढ़े माई मदन मोहन श्याम	३५	२९०	बेन माई बाजत हे बंशीवट	१६
२६१	पौढ़े रंग महल सुखदाई	१२	२९१	बैठे लाल फूलन की चोखंड़ी	१७१
२६२	पौढ़े श्री राधिका के गेह	१८५	२९२	बैठे हरि राधा संग	१७२

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
२९३	बैठे श्री गोवर्धन गिरी गोद	१८४	३२३	मिल जू डंडा रस खेलही	९७
२९४	बोलत कान्ह बुलावत गैया	१८४	३२४	मिली खेले फाग बन में	९५
२९५	बोलत श्याम मनोहर बैठे	१६	३२५	मुकुट की छांह मनोहर किये	१९७
२९६	बोले सब हो हो होरी	१५५	३२६	मुरली अधर धरे नंदनंदन	७५
२९७	बंशीवट बैठे हैं नंदलाल	१८४	३२७	मेरे आये भोर प्यारे	१३
	-: भ :-		३२८	मेरे गृह आवहु नंदनंदन	२०
२९८	भली हो कीनी लाल गिरधर	८	३२९	मेरे तु जिय में बसत है	२०
२९९	भयो मदन प्रचंड ए हरि	१२९	३३०	मेरे नंदनंदन पाछे पर्यो हेली	१३४
३००	भामिनी चम्पे की कली	६३	३३१	मेरो नवरंग बिहारी	१४७
३०१	भोर भांवतो गिरिधर देखो	१७२	३३२	मैया तेरो मोहन अति ही सयानो	१३
	-: म :-		३३३	मैया मोहि ऐसी दुलहिन भावे	२७
३०२	मथुरा नगर की ड़गर में	१७३	३३४	मैया यातें भई अबेर	१८९
३०३	मदन गोपाल झूलत डोल	१५१	३३५	मोहन घुमत रतनारे नयन	१८४
३०४	मदन गोपाल लाल सब	४९	३३६	मोहन जान न देहों लाल	१०७
३०५	मदन मोहन गहवर बन	१५१	३३७	मोहन जेंवत छाक सलोनी	१७४
३०६	मधु ऋतु बृंदावन आनंद	५६	३३८	मोहन झूलत बढ्यो आनंद	१५०
३०७	मन मोहन अद्‌भूत डोल बनी	१५०	३३९	मोहन वृषभान के आये जू	१४४
३०८	मन मोहन ललना मन हर्यो	११८	३४०	मंगल आरती गोपाल की माई	४४
३०९	मनावत हार परी री माई	७		-: य :-	
३१०	मरगजी और कुंदमाल	१७९	३४१	यमुना तट भोजन करत	१८९
३११	माई आज तो मोहन संग	१४२	३४२	यह ऋतु नीकी लागत हे	१०
३१२	माई बरसाने ते नंदग्राम	१५५	३४३	यह छबी मोपे जात न बरनी	१६
३१३	माई बंशी की भनक कान	१८२	३४४	यह दिन होरी को तु जिन मान	११६
३१४	माई मेरो मन मोह्यो सांवरे	१०४	३४५	यह देखि पंचमी ऋतु बसंत	५७
३१५	माई मेरो मोहन सों मन मान्यो	१५	३४६	यशुमति थार परोस धर्यो है	२७
३१६	माई मेरे श्याम लग्यो संग	३४	३४७	यह पटपीत कहाँ ते पायो	१८८
३१७	माई री आज और काल और	१५	३४८	या गोकुल के चोहटे रंगराची	९०
३१८	माई री लाल आयेरी मेरे	११		-: र :-	
३१९	माधो चाचर खेल हीं	१६७	३४९	रजनी राज कियो निकुंज	१९५
३२०	मान तजो भजो कंत	६५	३५०	रविजा तट कुंजन में गिरिधर	१४९
३२१	मानिनी मान छुड़ावन कारन	६२	३५१	रस सरस बसो बरसानो जु	१४६
३२२	मानो ब्रज तें करिणी चली	१३०	३५२	रसिक नृत्य भरे हो नृत्यत	१७८

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
३५३	रहसि धर समधिन आई	१५०	३८४	लाल को मीठी खीर जो भावे	३१
३५४	राखी हो अलक बीच चम्पकली	२२	३८५	लाल तुम पाये हो जु जान	४०
३५५	राग रंग राख्यो मुरली में	१८२	३८६	लाल गोपाल हे आनंद कंद	१८७
३५६	राधा के रस बस भये लाल	१७६	३८७	लालन जहीं जाऊ जाके रस	१७२
३५७	राधा कुंवरी रसिक सखी	१६८	३८८	लालन संग खेलन फाग चली	५०
३५८	राधा कुंवरी रसिक मणी सों	१३७	३८९	लालन नाहिन री काहु के बसके	६
३५९	राधा प्यारी तु रस रंग भरी	२७	३९०	लाल नेक देखिये भवन हमारो	१७०
३६०	राधा प्यारी दुलहिन जु को	२८	३९१	ले राधे मोहन दे पठई	१८०
३६१	राधा मोहन दोऊ करत ब्यारू	१९२		-: **व** :-	
३६२	राधिका आज आनंद में डोले	१७८	३९२	वन में श्याम चरावत गैया	१८६
३६३	राधे जू के प्राण गोवर्धनधारी	१८७	३९३	वृंदावन फूल्यो नव हुलास	४८
३६४	राधे जु के वदन की बलि जैहों	४१	९९४	वृंदावन सघन कुंज माधुरी	१९३
३६५	राधे देखि बन के चैन	८०	३९५	विधाता विध न जानी में जानी	१९४
३६६	रानीजु अपने सुत ही जिमावत	१२	३९६	विमल कदम्ब मूल अवलम्बित	९
३६७	रिंगन करत कान्ह आंगन में	४७	३९७	विविध बसंत बनाय चलौ	६०
३६८	रिझवत रसिक किशोर को	७४		-: **स** :-	
३६९	रूप रस पूंज वरणु कहा	१७५	३९८	सकल कुंवर गोकुल के निकसे	९३
३७०	रंग भरी मूरत अनंग भरी	६	३९९	सकल ब्रजतियन में तु ही	१८५
३७१	रंगीले री छबिले नैना	८४	४००	सखियन यचि रूचि सेज बनाई	७
	-: **ल** :-		४०१	सब अंग छींटे लागी नीको	६१
३७२	लटकत चलत दोहनी लै री	३७	४०२	सब ब्रज कुल के राय लाल	७९
३७३	लटकत चलत युवती सुखदानी	४३	४०३	सब ब्रज गोपी रही तक ताक	१८८
३७४	लरिकाई में जोबन की छबि	२१	४०४	सहज प्रीति गोपाले भावे	४९
३७५	ललन की बातन पर बलि जैये	२८	४०५	सांची कहो मनमोहन मोसों	६८
३७६	ललना खेलत फाग बन्यो	१०२	४०६	सांचे बोल तिहारे सांझ के	१९५
३७७	ललना तुम मेरे मन अति बसो	१०४	४०७	सीला पखारो भोजन कीजे	१८८
३७८	लाडिली और लाल जेंवत दोउ	४०	४०८	सुतही जिमावत यशोदा मैया	१५
३७९	ललिता जी के आज बधायो	१९०	४०९	सुधे क्यो न बोलो कहा इतराने	६
३८०	लाड़िली मान न कीजे होरी	८८	४१०	सुनरी सेन दई ग्वालन को	१८१
३८१	लाडिली सुहाग देख ललितादिक	१८६	४११	सुन्दर श्याम सुजान सिरोमनी	१४३
३८२	लाडिले बोलत है तोहि मैया	१७३	४१२	सुनरी सखी तेरो दोष नहीं	१८
३८३	लाल करत मनुहारी प्यारी	१२५	४१३	सुबल गिरिधारी चढ़ टेरत	१७४

क्र.स.	पद	पेज
४१४	सुभग श्रृंगार निरख मोहन को	१६९
४१५	सोभित सुभग लटपटी पाग	१८१
४१६	सुमर मन गोपाल लाल	१९७
४१७	सुरंगी होरी खेले सांवरो	१३३
४१८	सेन भोग लाई भर थारी	१४
४१९	सेवक की सुख राशी सदाश्री	२१
४२०	सो इन दिन कैसे निबहेगो	८६
४२१	सोहत नासिका गिरिधर गजमोती	१८३
४२२	सोहत लाल चोकरी पाग	१८५
४२३	सोहत लाल पाग साकरे पेचन	११
	-: श :-	
४२४	श्याम की भुजन बीच राखी	१९९
४२५	श्यामा जु दुलहिनी दुल्हे लाल	१९२
४२६	श्यामा न कवेसर अति बनी	११७
४२७	शोभा सकल सिरोमणी दम्पती	१५७
४२८	श्याम सुभग तन शोभित छिटे	५४
४२९	श्यामा-श्याम प्रातः उठ बैठे	१८४
	-: ह :-	
४३०	हरि को डोल देख ब्रजवासी	१५४
४३१	हरि भोजन करत विनोद सों	१९
४३२	हरि मारग जोवत भई सांझ	७
४३३	हरिरिह व्रजयुवति सतसंगे	४५
४३४	हरि संग खेलन जाय अरि	८२
४३५	हरि संग होरी खेलन आई	१२१
४३६	हों किहिं मिस पनघट जाउंरी	१०५
४३७	होरी के खेल में गुमान कैसो	११९
४३८	होरी के खिलार भामतें	१३६
४३९	होरी के दिनन में पिया मोंसो	१२३
४४०	होरी के रंगीले लाल गिरिधर	१५९
४४१	हों कैसे यमुना जल जाऊंरी	१५७
४४२	होरी को सुख अदभूत मोपे बरन्यौ	१४०
४४३	होरी खेलत मोहन, उडत	१३३
४४४	होरी खेलत लाल ललना संग	९९
४४५	होरी खेलिये सुन्दर लाल	८९

क्र.स.	पद	पेज
४४६	होरी दे ख्याल विच ये क्या	१०६
४४७	होरी हो हरि खेलत आवत	१४५
४४८	हो हो बोलत डोलत मोहन	८१
४४९	हो हो हरि खेलत बसंत	५३
४५०	हो हो होरी खेलन जैये, आज	८९
४५१	हो हो होरी खेलन जैये, जाय	१६५
४५२	हो हो होरी खेले नंद को	९८
४५३	हो हो होरी वेणु मध्य गावे	१२४
४५४	हो हो हो हो होरी बोले	८८
४५५	होहो होहो होहो होरी	१४७
४५६	होंस नाईक खिलवार होरी की	१४२
४५७	हँसत परस्पर करत किलोल	१७५
४५८	हँस हँस दुध पीवत नाथ	३
४५९	हँस हँस ब्यारू करत गोपाल	१८७
४६०	हँसत हँसत लालन आयेरी	४०
४६१	हाँके हटक हटक गाय ठठक	१८२
	-: ऋ :-	
४६२	ऋतु बसंत के आगम हो	८२
४६३	ऋतु बसंत तरू लसंत	६०
४६४	ऋतु बसंत सुख खेलिये	६९
	-: श्री :-	
४६५	श्री गिरिधरलाल की बानिक उपर	५१
४६६	श्री गोकुल राजकुमार लाल	९२
४६७	श्री गोकुल राय कुमार, कमलदल	९६
४६८	श्री गोवर्धन की शिखर चारू	४६
४६९	श्री गोवर्धन गिरी कन्दरा में	१८८
४७०	श्री गोवर्धन राय लाला	९४
४७१	श्री पंचमी परम मंगल दिन	४५
४७२	श्री लक्ष्मण कुल गाईये	१०१
४७३	श्री वृंदावन खेलत गोपाल	५२
४७४	श्री वृंदावन निकुंज ठाडे उठ	१८८
४७५	श्री वल्लभ कुल मंडल जन	१३५
४७६	श्री वल्लभ प्रभु करूणा सागर	१
४७७	श्री वृषभान सदन भोजन को	१९०

।। श्रीनाथजी ।।

-: नित्य पद :-

-: श्री महाप्रभुजी के पद :-

राग-भैरव गाऊँ श्री वल्लभ, ध्याऊँ श्री वल्लभ, श्री वल्लभ चरण रज लपटाऊँ।। वल्लभ संतति नित्य प्रति निरखूं, वल्लभ दासन दास कहाऊँ।।१।। कृष्ण लीला सेवा नित्य करों, जगत सबै तृण तुल्य धराऊँ।। “व्यासदास” की यही प्रतिज्ञा, श्री गोविन्द कृपा तें पाऊँ।।२।।

राग-बसंत श्री वल्लभ प्रभु करूणा सागर, जगत उजागर गाईए।। निरखि निरखि मंगल मुख की छबि, बलि-बलि, बलि-बलि जाईए।।१।। जिनकी कृपा अनुग्रह तें, श्री गिरधरलाल लड़ाईए।। अनायास सब सुख कों लाहिए, जीवन कौ फल पाईए।।२।। चरण परस तन रूप दरस, सब ही दुख दूर बहाईऐ।। श्री वल्लभ गुन गाईये, याही तें “रसिक” कहाईए।।३।।

-: श्री गुसांईजी के पद :-

राग-विभास प्रात समें श्री वल्लभ सुत कौ, उठतहिं रसना लीजिये नाम।। आनंदकारी प्रभु मंगलकारी, अशुभ हरण, जन पूरण काम।।१।। याहि लोक पर लोक के बंधु, को कहि सकै तिहारे गुण ग्राम।। “नंददास” प्रभु रसिक शिरोमणि, राज करो श्रीगोकुल सुखधाम।।२।।

राग-बसंत प्रातः समै श्री वल्लभ सुत कौं, पुण्य पवित्र विमल यश गाऊँ।। सुन्दर सुभग वदन गिरिधर कौ, निरखि निरखि दोऊ नैन सिराऊँ।।१।। मोहन वचन मधुर श्रीमुख के, श्रवनन सुनि सुनि हृदय बसाऊँ।। तन मन प्राण निवेदन यह विधि, अपुने को सुफल कहाऊँ।।२।। सदा रहौं चरणन के आगे, महा प्रसाद उच्छिष्ठ जो पाऊँ।। “नंददास” प्रभु यह मांगत हैं, श्री वल्लभ कुल को दास कहाऊँ।।३।।

-: श्री यमुनाजी के पद :-

राग-मालकोष जोकोई श्री यमुना नाम संभारे।। ताकौ दरस परस कोऊ करहीं वाही को वे तारें।।१।। भक्त की महिमा बरनि न सकै, यम हा हा करि हारै।। “चतुर्भुज” प्रभु गिरिधरन लाल कौ, नितप्रति वदन निहारै।।२।।

राग-बसंत तुम सम और न कोई श्री जमुनाजी।। करौ कृपा मोहि दीन जानकें, निज व्रजवासौ होई।।१।। राखौ चरण शरण तरणि तनया, जन्म आपदा खोई।। यह संसार स्वारथ कौ सब विध, सुत बंधु सगौ न कोई।।२।। प्रेम भजन मे करत विघ्नता, संत संतापै सोई।। ताकौ संग मोहिं सपने न दीजै, मांगत नयन भर रोई।।३।। गरल पान डारत अमृत में, विषयारस सो मोई।। "रसिक" व्है दीन होय मांगू, लहर समुद्र समोई।।४।।

-: श्री ठाकुरजी को जगाने के पद :-

राग-बसंत प्रात समें गिरिधरन लाल कौ, करत प्रबोध जसोदा मैया।। जागौ लाल चिरैयाँ बोली, सुन्दर मेरे कुँवर कन्हैया।।१।। हलधर संग लेहीं मन मोहन, खेलन जाऊ वृंदावन धाम।। ऋतु बसंत प्रफुल्लित अति देखियत, सुन्दर है कालिंदी ठाम।।२।। जननी बचन सुनत मन मोहन, आनंद उर न समाई।। "कृष्णदास" प्रभु बेगि उठे जब, जननि जसोदा कंठ लगाई।।३।।

राग-बसंत खिलावन आवेगी ब्रजनारी।। जागौ लाल चिरैया बोली, कहै जसुमति महतारी।।१।। ओट्यो दुध पान करि मोहन, बेगि करौ स्नान गुपाल।। करि श्रृंगार नवल बानिक बनि, फेंटन भरौ गुलाल।।२।। बल दाऊ लै संग सखा सब, खेलौ अपने द्वार।। कुमकुम चंदन चौवा छिरकौं, घसि मृगमद घनसार।।३।। लै कन हेर सुनो मेरे मोहन, गावत आवें गारी।। "ब्रजपति" तब ही चौंक उठि बैठे, कित मेरी पिचकारी।।४।।

राग-बसंत (फागुन में) जागौ कृष्ण खेलौ रंग होरी।। अबीर गुलाल लेहौ भरि झोरी।। व्रज नव वधु खेलन कों निकसी, घोषराई जु की पौरी।।१।। कछु खाओ और सुगंध फैंट भरि, करौ रगमगो राम तुम जोरी।। संग सखा खेलन कों जैहौं, "दास" निरखि बोलत मुख होरी।।२।।

-: कलेऊ के पद :-

राग-बसंत करौ कलेऊ कहत जसोदा, सुन्दर मेरे गिरिधर लाल।। दूध, दही, पकवान, मिठाई, माखन मिसरी, परम रसाल।।१।। पाछें खेलन जाउ लड़ैते, संग लेहु सब ब्रज के बाल।। चोवा, चंदन, अगर, कुमकुमा, फेंटन भरौ अबीर गुलाल।।२।। कीयौ कलेऊ मन को भायौ, हलधर संग सकल मिलि ग्वाल।। कीयौ बिचार फाग खेलन कौ, "परमानंद" प्रभु नैन विशाल।।३।।

राग-बसंत करौ कलेऊ मदन गोपाल।। मधु मेवा, पकवान, मिठाई, भरि-भरि राखे कंचनथाल।।१।। माखन, मिसरी, सद्य जम्यौ दधि, औट्र्यो दूध, अरू सरस मलाई।। आपहु खाऔ ग्वालन संग लैकें, पाछैं खेलौ सघन बन जाई।।२।। करत कलेऊ रामकृष्ण दोऊ, औरहु संग लये सब ग्वाल।। करहि बात फाग खेलन की, "कृष्णदास" मनमोहन लाल।।३।।

-: दूध के पद :-

दूध का पद राग-ईमन कीजे लाडिले पान, अब दूध लाई हो जसोदा मैया।। कनक कटोरा भर पीजे, सुख दीजे, ब्रजराज कुँवरवर तेरी बेनी बढेगी मेरे भैया।।१।। आछो निको अति ओट्र्यों, और तामें मधुर मिठैया।। "आसकरन" प्रभु दूध पीजै, जननीको सुख दीजे, प्रात उठत करों धैया।।२।।

दूध का पद राग-कान्हरौं पीवत दूध किसोर-किसोरी।। आछो निको और सिरायो, मधुर आँच दइहे थोरी।।१।। कनक कटोरा करमें लाई सुन्दर, स्याम सोभित तन गोरी।। अबके रूचि उपजें नंदनंदन, यामे मधुर मिठाई थोरी।।२।। रूचिसों कुसुमन सेज बिछाई, पोढ़िये लालन एक संग प्यारी।। "सूरदास" बलि बलि जोरी पर, नंदनंदन वृषभानदुलारी।।२।।

दूध के पद राग-कान्हरौं दूध पियो मनमोहन प्यारें।। बलबल जाऊँ गहरू जिन कीजे, कमलनयन अँखियन के तारे।।१।। कनक कटोरा भर पीजे सुख दीजे, संग लेहौ बलभद्र भैया रे।। "परमानंद" मोहि गोधनकी सौं, उठत ही प्रात करू धैया रें।।२।।

राग-ईमन (दूध का पद) अब दूध लाई हो यशोदा मैया, कीजे लाडिले पान।। कनक कटोरा भर पीजे सुख दीजे, ब्रजराज कुँवर तेरी बेनी बढ़ेगी मेरे भैया।।१।। आछे मेवा ओट्र्यो दुध नीको, रूचिकर लेऊ कन्हैया।। बहुत यतन करके राख्यो ब्रजराज लडेते, तुम कारन बल भैया।।२।।

राग-बिहाग (दूध का पद) हँस हँस दूध पिवत नाथ।। मधुर कोमल वचन कहि-कहि, प्राण प्यारी साथ।।१।। कनक कटोरा भर्यो अमृत, दियो ललिता हाथ।। लाडली अचवाय पहिले, पाछे आप अघात।।२।। चिन्तामणि चित वस्यो सजनी, नाहिन और सूहात।। स्यामा-स्याम की नवल छबी पर, "रसिक" बलबल जात।।३।।

भावात्मक टिप्पण

माघ - फाल्गुन - चैत्रमास (कृष्णपक्ष)

(१) माघ फाल्गुन व चैत्रमास चन्द्रावलीजी के सेवा के माने जाते है। ये स्वामिनीजी के समान है। इनकी सेवा के तीन मास में इनके यहाँ विराज कर सब व्रजभक्तन की सेवा स्वीकार करें। परन्तु अधिकार उन-उन यूथाधिपान को रहें है सो ये तीन मास चन्द्रावलीजी के सेवाक्रम के उत्सव मनोरथ के वर्णन को है।

(२) माघ मास में श्री चन्द्रावली जी के सेवा प्रधान है। वस्त्र साटन जरी के धराये जाते है। घटा तीन या चार सुनहरी जरी की धराई जाती है। यदि पोष मास में सांठे के मण्डान न होय तो इस मास में धराया जाता है।

(३) **श्री मकर संक्रान्ति निर्णयः**- मकर संक्रान्ति को पुण्य संक्रान्ति बैठे पिछे बीस घड़ी तक जाननो सो सूर्यास्त से पहले जो संक्रान्ति बैठे तो उस दिन पुण्यकाल जा समय आवतो होय तो उस समय तिलवा भोग धरनो। दानादिक करनो और सूर्यास्त के पिछे संक्रान्ति बैठे तो दूसरे दिन प्रातःकाल के समय तिलवा भोग धरने दानादिक करने और संक्रान्ति के पहले दिन उत्सव माननो।

(४) **वसन्तागम के श्रृंगारः-** वि.सं. १६७०-७१ के बीच श्री गो. दामोदरलालजी की अनूठी सूझ-बुझ से यह श्रृंगार किया गया। इसमें घेरदार वागा, पाग, सूथन सफेद ठाडे वस्त्र लाल मोर चन्द्रिका तथ खण्डवार स्वेत चौवा चंदन की टिपकियां, आम्रमोर आदि धराये जाते है। जो आज भी प्रचलित स्थाई श्रृंगार धराया जाता है।

(५) **घटाः-** पूर्व में शीतकाल में चार ही घटा होती थी। हरी, लाल, श्याम व पीरी। श्री गो. ति. गोवर्धनलालजी श्री गो. दामोदरलालजी बनारस गये सो श्री मुकुन्दरायजी की घटा देखकर द्वादश घटा, दादश निकुंज के भाव से सं. १६७७ से चालू की गई।

(६) **माघ कृष्णा ८ :-** गोस्वामी तिलकायत श्री दाऊजी महाराज को उत्सव। देहरी वन्दनमाल। भारी श्रृंगार हीराकी कुल्हे, बड़े बूटाके बूटा की लाल खीन-खाप के चाकदार शुथन व पिछवाई सलमा-सितारा की, ठाडे वस्त्र मेघ-श्याम। कुल्हे जोड़ चमक की घेरा आदि। आपने प्रभु गोवर्धनधर को वि. सं.

१७२८ फाल्गुन कृष्णा सप्पनी वेद मंत्र व भावना से पाठ बैठाये। राणा राजसिंह का कार्यकाल १७०६ से १७३५ माना जाता है। श्री हरिराय महाप्रभुजी ने अनेक सेवाक्रम भावना युक्त लिखकर श्रीनाथजी की सेवामें संलग्न रहकर श्री गो. ति. श्री दामेदरजी को हर प्रकार से सहयोग किया। इस प्रकार आपश्री, श्रीनाथजी को मेवाड़ पधराने वाले कहे जाते है।

(७) श्री दामोदरदासजी हरसानी को मनोरथ व आखरी शितकाल को श्रृंगार जरी को तथा क्रीट को श्रृंगार माघ शुक्ला ४ को मान्यों जाय है। श्री हरसानी जी को, ललिताजी को स्वरूप माने जाते है।

(८) **बसंत पंचमीः-** इसे मदन पंचमी, श्रीपंचमी भी कहते है। यह उत्सव "नूतन अनूठो रस भर्यो" मान्यो जाय है। माघ शुक्ला ५ को बसंत पंचमी उत्सव मान्यो जाय है। यह ४० दिन तक वसन्तोत्सव के रूप में "रसलीला" दर्शन करा सुखानुभव कराया जाता है। माघ सुदी पंचमी बसंत पंचमी। सो पंचमी उदयात लेनी और दो पंचमी होय तो पहली पंचमी को तथा क्षय हो तो विद्धा पंचमी लेनी।

(९) श्रीहोलीका दण्डा रोपण निर्णय माधी पूर्णिमा को पर्वात्मक उत्सव सो दंडारोपण भद्रा रहित पूर्णिमा न होय तो आवती पिछली रात प्रतिप्रदा को दंडारोपण करनो। यदि ग्रहण हो तो ग्रहण से पहले या बाद में दंडारोपण करनो।

माघ कृष्णा १

श्रृंगार - पाग-कतरा को।

वस्त्र - हरि साटन के। रूपेरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार। उसपर फतवी लाल खीनखाप की धराई गई है। श्रीमस्तक पर पाग पर रूपेरी जरी के काम का कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र श्याम तथा पिछवाई हरि साटन की रूपेरी कोरकी। मोजड़ी हरि साटन की।

आभरण - नित्यानुसार माणक मोती के। सोना की वेणुवेत्र।

मंगला में राग-परज (ललित) रंग भरी मुरत अनंगभरी अँखियां, संग लिये प्यारी को महल मेरे आये हो।।१।। बैठो जु पलंग पर पलकन सों झारू मग, तनमन न्योछावर करूं, भाग्यन मेरे आये हो।। ऐसी है जू कौन त्रिय जिन वदन विलोक्यो, ताई के तो भाग जागे मृदु मुसकाये हो।। "नंददास" प्रभु रसिक शिरोमणी, मोहिनी के मोहिवे को मोहन बन आये हो।।२।।

श्रृंगार में राग-ललित तुमको टेरत हैं कान्ह।। श्री वृन्दावन की ओर जात है रूप रास की खान।।१।। टेरन के मिस हेरन लागे, हेरान आप हेरान।। "आनंदघन" रसमत पपैया, ज्यों जल बिन मुरझान।।२।।

राजभोग आते समय राग-आसावरी (ग्रह भोजन के पद) क्यों री तू द्वारे बोली आय। तेरो बोल सुनत, मेरों मोहन कछू न खाय।।१।। दौर चले भीतरतें बाहिर, उखट्यों हो तो पाय।। "श्रीविट्ठल" नंदरानी खीजत, तेरों कछु न सुभाय।।२।।

राजभोग में राग-जोनपुरी (धनाश्री) सूधे क्यों न बोलों कहा इतराने। ब्रजमें कौन कौनतें कौ बड़ौ, नाहीन रे इतराने।।१।। कौन टेब तिहारी दिन प्रति की, तकत अंग बिराने।। जोई जोई करम किये कहि देऊँ, "परमानन्द" रहौं छाने।।२।।

भोग में राग-नट लालन नाहिन री काहुके बसके।। बावरी भई री त्रिया उनसों मन अरूझावे, ये तो सदाई अपने रसके।।१।। निरख परख देख जियको भरम गयो, कामिनी वदन के मन कसके। जदापि कछु मोहिनी "गोविंद" प्रभुपें, जुवती सभा में बदत जसके।।२।।

संध्या में राग-गौरी हरि मारग जोवत भई साँझ, दिनमनि अस्त भयो, गोधूरक आवत बने मंडली माँझ।।१।। बाजत बेनु रेनु तन मंडित, बनमाला उर लोचन चारू।। बरूहा मुकट, श्रवन गुंजामनि, बनज धातुकौ तिलक सिंगारू।।२।। गोपी नैन भृंग रस लंपट, सादर करत कमल मधुपान।। बिरह ताप मोचन “परमानंद”, मुरली मनोहर रूप निधान।।३।।

शयन भोग आते समय ब्यारु के पद राग-ईमन तेरे पैयाँ लागूँ गिरिधर भोजन किजे।। उलटत पलटत झगुलिया भीजें, खीजत खिजावे सुन्दर तन छीजै।।१।। फेनी बाबर खुरमा खाजा, गूंजा मिश्री लडुवा लीजै।। बाँटि देत सब ग्वाल बालकों, “परमानंद” जननी कर लीजे।।२।।

शयन में राग-ईमन जब जब देखौं जाय हरिको वदन, तब नयना मेरे मोपें न आवही।। ऐसे रूप लालची ललचाय रहे मानों, ज्यों बिछुरे जलचर जल पावहीं।।१।। रूपके रिझोने नयना, रसमें मिल मगन भये, अब सखी हमसों न बतरावहीं।। “मुरारीदास” प्रभु एते पर निठुर भये, अपनों ओट दुरावही।।२।।

मान में राग-बिहाग मनावत हार परी री माई।। तू चट तें मट होति न राधे, क्त हरि लैन पठाई।।१।। राजकुमारी होइ तौ जानें, कै गुरू होई पढ़ाई।। नंदनंदनको जानि महातम, अपनी राखे बड़ाई।२।। ठोड़ी हाथ चली दै दूती, तिरछी भौहें चढ़ाई।। “परमानंद” प्रभु करौ दुलहिनी, तौ बाबाकी जाई।।३।।

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। रंग महल में परै हें परदा, घरी अंगीठी सुखदाई।।१।। सीत समें ग्रीष्म ऋतु कीनी, अति सुन्दर वरदाई।। “श्रीविट्ठल” गिरिधारी कृपानिधि, पौढ़े ओढ़ रजाई।।२।।

माघ कृष्णा २

श्रृंगार - त्रखुंटी टिपारे का।

वस्त्र - अमरसी रूपेरी कोर के, सुथन तथा वागो चाकदार खुंट का वागा श्री कण्ठ में गाती का पटका लाल साटन का। श्री मस्तक पर फिरोंजी टिपारो, ऊपर टिपारा को साज सोनेरी जरीका। फिरोंजी मीना के ठाडा वस्त्र वादली रंग के तथा पिछवाई अमरसी रूपेरी जरी की टिपकी की रूपेरी कोर की।

आभरण - **श्रीमस्तक पर** - ठाड़ीलड़ मोतीकी, शीशफुल तथा कुण्डल फिरोंजी मीना के, श्रीमुखारवृंन्द पर तिलक माणक का अलंकार, कमलाक्ष, नरूवेशर माणक मोतीकी, चिबुक हीरा का।

श्री अंग में - चरणारवृंन्द तक के हांस-हार फिरोंजी मीना के तथा मोती के, गुजामाला तथा फुल की माला।

श्री हस्त में - नखावली मोती पड़ाकी, मुद्रिका, हस्तपान, पौंची बाजुबन्द सभी फिरोंजी मीना के।

श्री चरणकमलों में - मोजड़ी फिरोंजी रंग की साटनप की तथा कड़ा, पायल पेंजनी, जेहर सभी फिरोंजी मीना के, नुंपुर सोनाके तथा वेणु वैत्र फिरोंजी मीना के धराये गये है।

मंगला में राग-ललित **भली हों कीनीं लाल गिरधर, भोर आये बोल सांचे।। युवति वल्लभ विरद कहियत, तुम भले हो बांचे।।१।। यहां आये कौन पठाये, मानों मंत्री कांचे।। तहां ही सिधारों लालन, जा त्रिया संग रंग राचे।।२।। अधर सूकत श्वास थिर नहीं, नव त्रिया संग रंग राचे।। सुन "कृष्णदास" नागरी कहत, ज्योंहि नचाये त्यों ही नाचे।।३।।**

श्रृंगार में राग-रामकली **निर्तत मोहन रसिक सखन सहित, गिडगिड़ तत थेई तत थेई ताता।। मृदंग ध्रुम ध्रुम ताल उपंग सुर, जो मिलवत मधुप मदमाता।।१।। टिपारो सिर पीत लाल काछनी बनी, किंकिनी झुनझुनात गावत सुरसुता।। "गोविंद" प्रभु गोपबाल संग, जै जै जै करत अनुरक्ता।।२।।**

राजभोग आते समय राग-टोडी (ग्रह भोजन के पद) परोसत गोपी घूंघट मारें।। कनकलता सी सुन्दर सोभा, आई है ज्योंनारें।।१।। झनक मनक आंगन में डोलत, लावण्य मोर सवारें।। नंदराय नंदरानी तें दूरि, लालें भले निहारें।२।। घरकी सोंझ मिलाय थारमें, आगें ले जब धारें।। परम मिलनियाँ मोहनजू की, हाँसी मिष हुँकारे।।३।। रूचिर काछिनी जटित कौंधनी, जुरों बाँह उघारें।। "परमानंद" अवलोकन कारन, भीर बहुत सिंघद्वारें।।४।।

राजभोग में राग-टोड़ी विमल कदम्ब मूल अवलम्बित, ठाडें हैं पिय भानसुता तट।। सीस टिपारो कटि लाल काछनी, उपरैना फरहरात पीत पट।।१।। पारिजात अवतंस सरित सखी, सीस सेहरों बनी है अलक लट।। विमल कपोल कुंडलकी सोभा, मंदहास जीते कोटी मदन भट।।२।। वाम कपोल वाम भुज पर धरि, मुरली बजावें, गावें टोड़ी तान विकट।। "गोविंद" प्रभुके श्रीदामा प्रभृति सखा, करत प्रसंसा जय नागरनट।।३।।

भोग में राग-पूर्वि गायनके पाछें पाछें, नटवर कांछे कांछे, बन्यों है टिपारो आछो, लाल गिरिधारी के।। धातु को तिलक किये, बनी गुंजामाल हिये, बनके सिंगार सब, विपिन बिहारीके।।१।। नटवर वेस किये, ग्वालमंडली संग लिये, गावत बजावत देत, कर तारी कें।। "गोविंद" प्रभु बनतें, ब्रज आवत दौर दौर, ब्रजनारी झाँकत, मध्य जारी कें।।२।।

संध्या में राग-गौरी अग्रतकिट धुंधुंधुंधुं धुंधुंधुंधुंनननन, नृत्यत रसिकवर, आवत गोधन संग।। लाल काछनी कटि किंकनी, पग नूपुर झंझनन, सिस टिपारो अति, खरोई सुरंग।।१।। उरप तिरप चंद चाल, मुरलीका मृंदग ताल, संग मुदित गोप-ग्वाल, गावत तान तरंग।। ब्रजजन सब हरख निरखे, जै जै कहि कुसुम बरखे, "गोविंद" प्रभु पर, वारौं कोटि अनंग।।२।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौ (ब्यारु) कीजे लाल यहि बार ब्यारू।। तातो दार-भात-घृत सान्यों, खोवा बासौंधी रूचिकारी।।१।। मधुमेवा पक्वान मिठाई, परोस धरी है कंचन थारी।। जेंवत स्याम राम रूचि उपजि, छबि पर "जगजीवन" बलिहारी।।२।।

शयन में राग-अडानों तेरी भ्रौंह की मरोरन तें, ललित त्रिभंगी भये, अंजन दे चितयों, भये जू स्याम वाम।। तेरी मुसकान देख, दामिनी सी कौंध जात, दीन है याचत

प्यारी, लेत राधे आधो नाम।।१।। ज्यों ज्यों नचायो चाहो, तैसे हरि नाचत बल, अब तो मया कीजे, चलिये निकुंज धाम।। "नंददास" प्रभु, बोलो तो बुलाय लाऊँ, उनको तो कल्प बीते, तेरी घरी याम।।२।।

मान में राग-बिहाग चली बन मौन मनायौ मानि।। अंचल ओट पुहुप दिखरायौ, धर्यो सीस पर पानि।।१।। ससि तन चितै नैन दोऊ मूँदे, मुख महँ अंगुरी आनि।। यह तो चरित गुप्त की बातें, मुसकाने जिय जानि।।२।। रेखा तीनि भूमि पर खींची, तृन तोर्यो कर तानि।। "सूरदास" प्रभु रसिक सिरोमनि, बिलसहु स्याम सुजानि।।३।।

पोढ़वा में राग-बिहाग यह ऋतु नीकी लागत है सीतकी।। अंसन दे पिय प्यारी पोढ़े बात करत रस रीतकी।।१।। बन गई एक रजाई भीतर, होत परस्पर जीतकी।। "गदाधर" प्रभु हेमंत मनावत, चाह बढ़ी नवप्रीत की।।२।।

माघ कृष्णा ३

पतंगी रंग की घटा

श्रृंगार - पाग-कतरा को।

वस्त्र - आज सभी वस्त्र पंतगी रंग के शाटेन के बिना कोरके शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग उसपर रूपेरी जरी के कामका कतरा धराया गया है। श्रीचरण कमलमें मोजाजी तथा पिछवाई भी पतंगी रंग की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार सारे हीरा मोती के तथा श्याम रेशम की अलक धराई गई है।

मंगला में राग-खट **प्रात समय जागी अनुरागी, सोवत हुती री, श्याम जू की संगिया।। चीर संभार उठी री दक्षिन कर, वाम भुजा फरकी भर अंगिया।।१।। भालमें सुहाग भरी छबि उपजत न्यारी, पहिरे कसुंबी सारी सोंधे रगमगिया।। "अग्रस्वामी" लाड लडाई बहुत कीनी बड़ाई, फूली फूली फिरत, अति ही सगमगिया।।२।।**

श्रृंगार में राग-ललित **कमल सी अखियां लाल तिहारी।। तिनसों तकतक तीर चलावत, बेंधत छतियां हमारी।।१।। इन्हें कहा कोऊ दोष लगावत, ये अजहू न संभारी।। "श्रीविट्ठल" गिरिधारी कृपानिधि, सुरत ही तें सुखकारी।।२।।**

राजभोग आते समय राग-धनाश्री **जेंवत नंद कान्ह बलभैया।। कनक थार खटरस बहुव्यंजन, माखन दूध मिठैया।।१।। उठ भाजत सुत केलि चाव लख, प्रफुल्लित यशुमति मैया।। "व्रजाधीश" प्रभु सुख व्रजजन को, दृगन सुधा बरखैया।।२।।**

राजभोग में राग-जोनपुरी **माईरी लाल आयेरी मेरे महल, तन मन धन सब वारों।। हौं बल गई सखी आजकी आवन पर, पलकन सों मग झारौ।।१।। अति सुकुमार पद करनसरि कंकरगुन सब टारौं।। "नंददास" प्रभु नंदनंदन सों, ऐसी प्रीत नित धारौं।।२।।**

भोग में राग-पूर्वि **सोहत लाल पाग साँकरे पेचन चोकरी।। सुन्दर कर केसन बिच राखी, सुग्रथित कुंद करी।।१।। सुरति श्रमित अति सिथिल लोचन निर्तत भुव रसभरी।। "गोविंद" प्रभु प्यारी संग बैठे, जहाँ निबिड निकुंजदरी।।२।।**

संध्या में राग-कान्हरौं नयन छबिले तरून मदमातें।। चंचल चपल भ्रकुटि छबि उपजत, आन आन मुसकाते।।१।। भक्त कृपारस सदाई प्रफुलित, मानहु कमलदल राते।। "गोविंद" प्रभुको श्रीमुख निरखत, पान करत न अघाते।।२।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौ (ब्यारू) रानीजू अपने सुतहि जिमावत।। बूझत बात कहो कैसें खेलें बनबन, मैया कहिकहि रूचि उपजावत।। करत ब्यारू अपने अंचलसों, पोंछत वदन मनमोद बढ़ावत।। "रसिकप्रितम" को ले ले नंदरानीजू, हँस हँस कंठ लगावत।।२।।

शयन में राग-नायकी पिय तेरी चितवन ही में टोना।। तन-मन-धन बिसर्यो जबही तें, देख्यो स्याम सलोना।।१।। ढिंग रहवे कूँ होत विकल मन, भावत नाहिंन भौना।। लोग चवाव करत घर घर प्रति, धर रहिये जिय मौना।।२।। छूट गई लोकलाज सुत पति की, और कहा अब होना।। "रसिकप्रितम" की बानिक निरखत, भूल गई गृह गोना।।३।।

मान में राग-ईमन जब जब देखों जाय हरीको वदन, तब नैना मेरे मापें न आवही।।

(यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंगमहल सुखदाई।। सीत समे प्यारी प्रीतम दोऊँ, पोढ़े ओढ़ रजाई।।१।। विविध भाँतिके परदा चहुँ दिस, अंगीठी धराई।। "आसकरन" प्रभु मोहननागर, सोभा बरनी न जाई।।२।।

माघ कृष्णा ४

श्रृंगार - ग्वाल पगा को।

वस्त्र - केसरिया रंग की साटन के रूपहरी कोरके, शुथन तथा वागों चाकदार, कटि में पटका धराया गया है। श्रीमस्तक पर पीले रंग का ग्वालपगा उसपर रूपहरी जरी के काम की मोरशिखा तथा लुमक लाल रेशमकी। ठाड़ा वस्त्र गुलाबी रंग के तथा पिछवाई केसरिया रूपहरी कोर की व मोजड़ी पीला रंग की साटन की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार मध्य के पन्ना मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-ललित मेरे आये भोर, प्यारे वाकें सब निस जागे।। सांची कहो तुम वाही त्रिया की सों, पाये प्रेम रस चोर।। कहुं अंजन कहुं पीक लाग रही, काहेकों दुरावत नंदकिशोर।। "सुरदास" प्रभु तुम बहुनायक, रंग रंगे चहुं ओर।।

श्रृंगार में राग-ललित मैया तेरो मोहन अतिहि सयानो, देत अटपटी गारी।। कुंजहल में अचरा फार्यो, हँसि हँसि दै दै तारी।। गोरस ढोरे मनके जोरे, माट दहीं के फोरे।। उठावे की डोरी कैसे बांधो, चौदह भवन बंध तोरे।। अधर पान परिरंभन चुंबन, कहीं कहा लजानी।। शुक नारद सो लीला अगोचर, "सूर" केतीक बखानी।।

राजभोग आते समय राग-धनाश्री (ग्रह भोजन के पद) जेंवत कान्ह करत किलकारी।। भर बुकटा मेलत मुख भीतर, कर पकरत महतारी।।१।। फूंक फूंक मुख लावत, डारत बांह उछारी।। तैसे ही चपल हरत सब को मन, श्री विट्ठल गिरिधारी।।२।।

राजभोग में राग-आशावरी चलरी सखी नन्दगाम जाई बसिये, खिरक खेलत ब्रजचंद सों हँसिये।। बसत बठैन सब सुख माई, कठिन इहै दुःख दूरि कन्हाई।।१।। माखन चोरत दुरि-दुरि देखौं, सजनी जनम सुफल करि लेखौं।। जलचर लोचन छिन छिन प्यासा, कठिन प्रीति "परमानंद" दासा।।२।।

भोग में राग-पूर्वि आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय, गोविंद के गायन में बसवोई भावे।। गायन के संग धावे, गायन में सचु पावें, गायन की खर रेनु अंग लपटावे।।१।। गायनसों ब्रज छायों वैकुंठ बिसरायो, गायन के हेत करि गिरि ले उठावे।। "छीतस्वामी" गिरिधारी विट्ठलेश वपु धारी, ग्वारिया को भेख धर गायन में आवें।।

संध्या में राग-गौरी झुक रही सुन मुरली की टेर।। उततें आयी पनियाँ के मिष, गौ आवन की बेर।।१।। मोर चंद्रिका मुकुट बिराजत, चपल नयन की फेर।। “परमानंद” प्रभु मिले खिरक में, यातें भई अबेर।।२।।

शयन भोग आते समय राग- कान्हरौ (ब्यारू) सेन भोग लाई भर थारी।। दाल भात और कड़ी बठी की जशुमति मात परोसन हारी।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई शीतल भरी यमुना जल झारी।। “श्री विट्ठल गिरिधरन” अरोगत, दासन को झूठी पनवारी।।

शयन में राग-नायकी जान्यों प्रीतको मरम।। मुखकी मोसों, जियकी औरनसों, पायो है तिहारो भरम।। ऐसी है जु कौन बाल, जिन रसबस कर लीने, जानियत हियके नरम।। “स्यामदास” के प्रभु माई, भली कीनी भोरे आये, चतुर परम।।

मान में राग-ईमन जब जब देखों जाय हरीकों बदन, तब नैना मेरे मोपें न आवही।

(यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग नींकी रीतु लागत अति सीत की, पोढिये लाल लाड़ली संग लै।। नौतन सेज बनी अति सुंदर, बिच बिच सौंधे की पुट दै।।१।। हौं करहौं चरनन की सेवा, जो मेरे नैनन अति सुख व्है।। “गोपीनाथ” या रंग महल में, करोजु बास अविचल है।।२।।

माघ कृष्णा ५

श्रृंगार - बसन्त के आगम का।

वस्त्र - वस्त्र सफेद साटनके सुथन तथा घेरदार वागा। श्रीमस्तक पर सफेद पाग पर मोर चन्द्रिका। वस्त्र सफेद साटन के कामके लाल-पीली-काली टिपकी वाला (जैसे उस पर चौवा-चंदन-गुलाल की टिपकियाँ होय वैसी लगती है।)

आभरण - नित्यानुसार माणक-मोती, सोना आदि के मध्य का श्रृंगार किया गया है।

विशेष - पीछवाई सफेद साटन की जिसमें वस्त्र की टिपकियों वाली धराई गई है।

मंगला में राग-ललित माई मेरो मोहनसों मन मान्यो।। अपने तन अरू कमल नयन को, एक ठोर करि सान्यो।।१।। लोकवेद की लाज तजी मैं, न्यौंति आपुने आन्यों। एक गोविंदचंद के कारन, बैर सबनि सो ठान्यों।।२।। अब क्यो भिन्न होहि मेरी सजनी, दूध मिल्यौ जैसे पान्यों।। "परमानंद" मिलि हों मोहन कों, है पहिलो पहिचान्यो।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल माईरी आज और काल और, दिन प्रति ओर ओर, देखिये रसिक गिरिराज धरन।। नित्य प्रति नई छबि, बरने सो कौन कवि, नित्य ही सिंगार बागो, बरन बरन।।१।। सोभा सिंधु अंग अंग, मोहे कोटि अनंग, उपजी सोभा तरंग, विश्व को मनहरन।। "चतुर्भुज" प्रभु, गिरधर को स्वरूप सुधा, पान कीजें जीजे, रहिये सदा ही सरन।।२।।

राजभोग आते समय राग-धनाश्री (ग्रह भोजन के पद) सुत ही जिमावत यशोदा मैया।। सानत कोर मधुर मृदु मीठों, दे मुख लेत बलैया।।१।। खेलन को उठ उठ भाजत है, राखत है बोहोरैया।। आवो चिरैया आवो खुमरैया, ग्वालिन लेत बलैया।।२।। तुम जेवो मिल संग लालके, बहु विध ख्याल खिलैया।। "श्रीविट्ठलगिरिधर" माता की, प्रीति कहि नहिं जैया।।३।।

जेंवत नंद गोपाल खिजावत।। पहर पन्हैया बाबाजू की, निपट निकट डरपावत।। ब्रजरानी बरजत गोपालें, हरे हरे ढिंग आवत।। "परमानंददास" को ठाकुर, पूत बाबा कों भावत।।

राजभोग में राग-पंचम बोलत श्याम मनोहर बैठे, कदम खण्ड और कदम्ब की छैया।। कुसुमित मग अलि गुंजत सखी, कौकिला कल कूजत तहियाँ।।१।। सुनत दुतिका के बचन माधुरी, भयो है हुलास जाके मनमहियाँ।। "कुंभनदास" ब्रजकुँवरी मिलन चलि, रसिक कुँवर गिरिधरन पैयाँ।।२।।

भोग में राग-नट यह छबि मोपें जात न बरनी।। गोवर्धन के आसपास सब, झूल रही है अरनी।। मदनमोहन पिय खेलन निकसे, संग राधा मन हरनी।। "श्रीविट्ठल" गिरिधर पद परसत, धन धन ब्रज की धरनी।।

संध्या में राग-गौरी बेन माई बाजत श्री बंसीवट।। सदा बसन्त रहत वृन्दावन, पुलिन पवित्र सुभग जमुना तट।।१।। क्रीट मुकुट मक्राकृत कुंडल, मुखार विंद भँवर मानो लट।। दसनन कुंद कली छबि राजति, भ्राजति कनक समाज पीत पट।।२।। सुर मुनि ध्यान धरति नहिं पावत, करति बिनोद संग बालक भट।। दास अनन्य भजन रस कारन "हित हरिवंस" प्रगट लीला नट।।३।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौं (ब्यारू) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-ईमन आली री कर सिंगार, सायंकाल चली ब्रजबाल, पिय दरसवे को, मत्त द्विरद गैन।। मानों सिसुमार चक्र, उदय होत गगन मध्य, ध्रुव नक्षत्र की परिक्रमा दैन।। मानो ऋतु बसंत आई, अंग अंग छबिछाई, दंपति समाज मोपे, कही न परत बैन।। "मुरारीदास" प्रभुप्यारी, चित्र विचित्र गति सेवक, निरख पिया छबि अद्भुत, ऐसी को कर रची मैन।।

मान में राग-ईमन जब जब देखौं जाय हरिको वदन, तब नयना मेरे मोपें न आवही।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

माघ कृष्णा ६

श्रृंगार - फेंटा का।

वस्त्र - पीली शाटन के रूपेरी कोरके, शुथन तथा वागों चाकदार श्रीमस्तक पर फेटों पर सोनेरी जरी के कामका कतरा कलंगी तथा श्रीचरणकमल में पीली साटन की मोजड़ी, ठाड़ा वस्त्र बादली रंग के तथा पिछवाई रूपेरी कोर की पीली शाटन की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार धराये गये है।

मंगला में राग-ललित **कहां ते आये हो इन साथ, आलस भरे हो जंभात।। जे अलि** निपुण बसे तुम्हारे संग, मधुप गुंज औरन भाखत, गावत गुणन गाथ।।१।। हो तुमते सुधें व्है बूझत, तुम उलटे ही तरजत हम पर, हमने कहा भरलीने बाथ।। ब्रजपति रसिक रसिक तुम दोऊ, बेहुं रसिक जिन किये है "चतुर्भज", सुन पिय गोकुलनाथ।।२।।

श्रृंगार में राग-ललित **मैया तेरोरी मोहन अतही सयानो देत अटपटी गारी।।** (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-आसावरी (ग्रह भोजन के पद) खिरक खन आछे बडूडे बगर।। नव तरूनि नव तरूलित मंडित, अगनित सुरभ मग्न डगर।।१।। जहाँ जहाँ दधिमंथन घमर के, प्रमुदित माखन चौर लंगर।। मागधसुत बंदी चारन जस गावत, सुरपुर नगरी नगर।।२।। दिन मंगल दीनि बंदनमाला, भवन सुवासित धूप अगर।। "हरिदास" कुंवर गुन महिमा, सागर बरू अरनी कगर।।३।।

राजभोग में राग-टोड़ी ऐ आज कौन बन चराई गैया कंहा लगाई एती बेर।। बैठे वे कहा सुध लेहीं नैन औसेरा।।१।। एक बन ढूँढ सकल बन ढूँढ़ी, तोउ न पाई गायन की नेर।। "तानसेन" के प्रभु तुम बहुनायक, देहीं कदम चढ़ टेर।।२।।

भोग में राग-पूर्वि धोरी धूमर कारी काजर पियरी कहि कहि टेरत।। वाभ भूजा मुरली कर लिने, दक्षिन कर पीतांबर फेरत।।१।। सुंदर नागर नट नर्तत कालिंदी तट, लकुट लिये गायन हेरत।। हुक हुक एक वार गरज सब धाई, "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधारी निवेरत।।२।।

संध्या मेंराग-गौरी आवत है आगे दे गैया।। सुबल सुबाहु श्रीदामा संगी, क्वनित बेनु नितही की नैया।।१।। एक वे पैंज करत हैं ठाड़े, धाय छुवत परस्पर करत बडैयाँ।।२।। घेर रहे सब करत कुलाहल, देत गोपालहि नंद दुहैयाँ।। औरहु ग्वाल करत बहु क्रीडा, “रामदास” प्रभु के मन भैयाँ।।३।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौं (ब्यारू) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-नायकी सुनरी सखीरी तेरों दोष नही, मेरो पिय रसीया।। जो देखत सो भुलि रहत है, कौन कौन के मन बसिया।।१।। सो को जो न करी बस अपने, जा तन नेंकु चितै हँसिया।। “परमानंद” प्रभु कुँवर लाडिलो, अबहि कछु भीजत मसिया।।२।।

मान में राग-इमन जब जब देखों जाय, हरी को बदन तब नैना मेरे मोंपे न आवही।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग यह ऋतु नीकी लागत है सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १० पर पढ़े।)

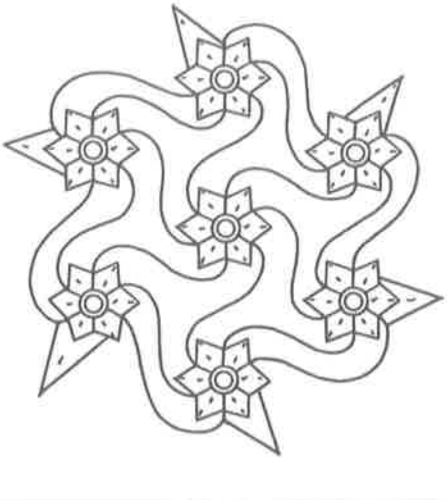

माघ कृष्णा ७

फिरोंजीघटा

श्रृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - आज सारे वस्त्र फिरोंजी रंग के शाटन के बीना कोर के शुथन तथा वागों घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग पर फिरोंजी रेशम के काम का कतरा धराया गया है। श्री चरणावृन्द में मोजड़ी फिरोंजी रंग की ठाड़ा वस्त्र तथा पिछवाई फिरोंजी रंग की शाटन की बीना कोरकी।

आभरण - नित्यानुसार फिरोंजी रंग के मीनाके धराये गये है।

मंगला में राग-ललित आज सगरी निशा कहाँ जागे लाल, कहों सांची सुभग सांवरे माधो।। धोख मथन शब्द, प्राणपति गहगहृयों, रहो रहो मोहन, सूर प्रकट भयो आधो।।१।। कमल विकसत भये, चक्रवाकी हँसी सुमुखि, पुलकित मुदित, निजपति आराध्यो।। विश्वमोहन बदन, निरख नभ चंद्रमा, सगण लज्जित भयो, प्रेमगुण बाध्यो।।२।। ललित सुंदर राग, चरचरी ताल धर, मधुप गावत सुयश, पिकन स्वर साध्यो।। कहे "कृष्णदास", गोवर्धनधारी प्रिया, धीर ब्रजसुंदरी, कृपण धन लाध्यो।।३।।

श्रृंगार में राग-मालकोस आवन कह गये, अजहु न आये पिय, सब निस बीती मोहे, गिनगिन तारे।। दीपक ज्योति, मलीन भई है, किन दुतियन, बिरमाये प्यारे।।१।। तमचर बोले, बगर सब खोले, फूले कमल, मधुप गुंजारे।। धोंधीं के प्रभु, तुम बहुनायक, आये निपट, सवारे प्यारे।।२।।

राजभोग आते समय राग-सारंग/आसावरी (ग्रह भोजन के पद) हरि भोजन करत विनोद सों।। कर-कर कोर मुखारविन्द में, देत यशोदा मोद सों।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई, दूध दहृयो घृत ओद सों।। "परमानंद" प्रभु भोजन करत है, भोग लग्यो संखोद सौं।।२।।

राजभोग में राग-आसावरी कृष्ण नाम जब ते, श्रवण सुन्योरी आली, भूली री भवन हौं तो, बावरी भई री।। भरभर आवे नैन, चितहुं न परे चैन, मुखहुं न आवे बैन, तनकी दसा कछु औरें भई री।।१।। जेतेक नेमधर्म, कीन्हेरी मैं बहुविध, अंगअंग भई हौं तो, श्रवन मईरी।। "नंददास" जाके, श्रवन सुने यह गति, माधुरी मूरति कैधों, कैसी दई री।।२।।

भोग में राग-पूर्वि/गौरी मेरे तुं जिय में बसत है, नवल प्रिया प्राण पियारी।। तेरेई दरस परस रागरंग उपजत, मान न कीजे हा हा री।।१।। तूही जीवन तू ही प्रान, तूही सकल गुननिधान, तो समान और नाहिन, मोकों हितकारी।। "व्यासकी स्वामिनी" तेरी दयातें मैं पायो है नाम बिहारी।।२।।

संध्या में राग-कान्हरौं मेरे ग्रह आवहु नन्द नन्दन, मोहन सर्वस देहों हो।। रूप रासि गिरिधरन छबीलौ, लाल बलैया जैहों हो।।१।। निरखी कमलमुख नयन सुफल करों, रसना हरिगुन गैहों हो।। "कृष्णदास" प्रभु मनमथ नाइक, रबकि कंठ लपटैहों हो।।२।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौं (ब्यारु) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-बिहाग/कान्हरौं तै जु नील पट ओट दियौरी।। सुनहु राधिका श्याम सुन्दरसों, बिनहि काज अति रोष कियौरी।।१।। जलसुत बिन मनहुँ जल राजत, मनहुँ सरद शशि राहु लियौरी।। भूमि घिसन किधौं कनखखंभ चढ़ि, मिलि रसही रस अमृत पियौरी।।२।। तुम अति चतुर सुजान राधिका, कत राख्यौ भरि मान हियौ री।। "सूरदास" प्रभु अंग अंग नागरि, मनहुँ काम कियौ रूप बियौ री।।३।।

मान में राग-ईमन जब जब दैखो जाय हरि को बदन तब तब नयना मैरे मौपे न आवतरी।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंगमहल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

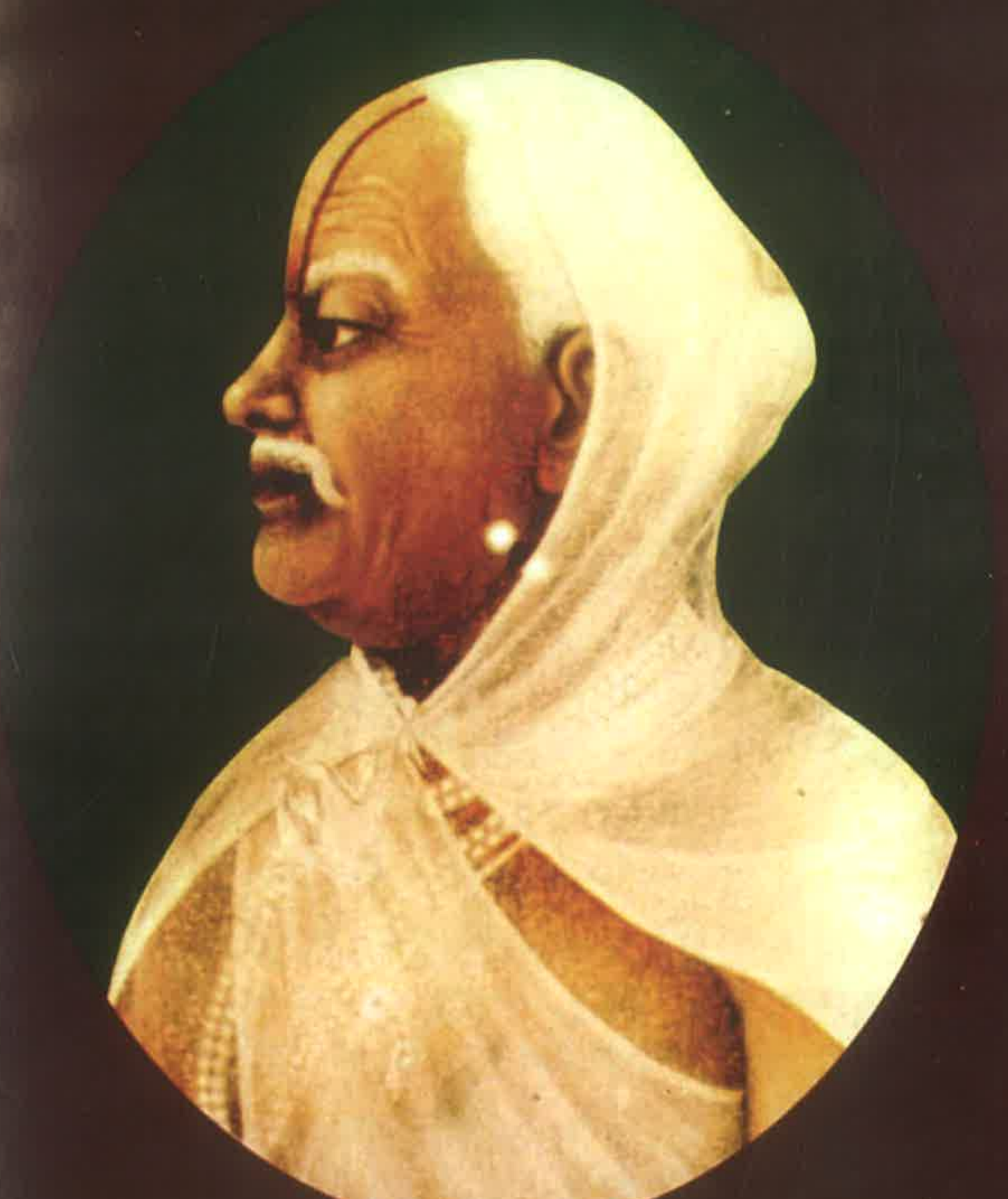

गोस्वामी तिलकायत श्री बड़े दामोदरजी

जन्म तिथि माघ कृष्ण ८ वि. सं. १७११

स्मिता भुवनेश भाई शाह, उदयपुर/अहमदाबाद का जयश्री कृष्ण

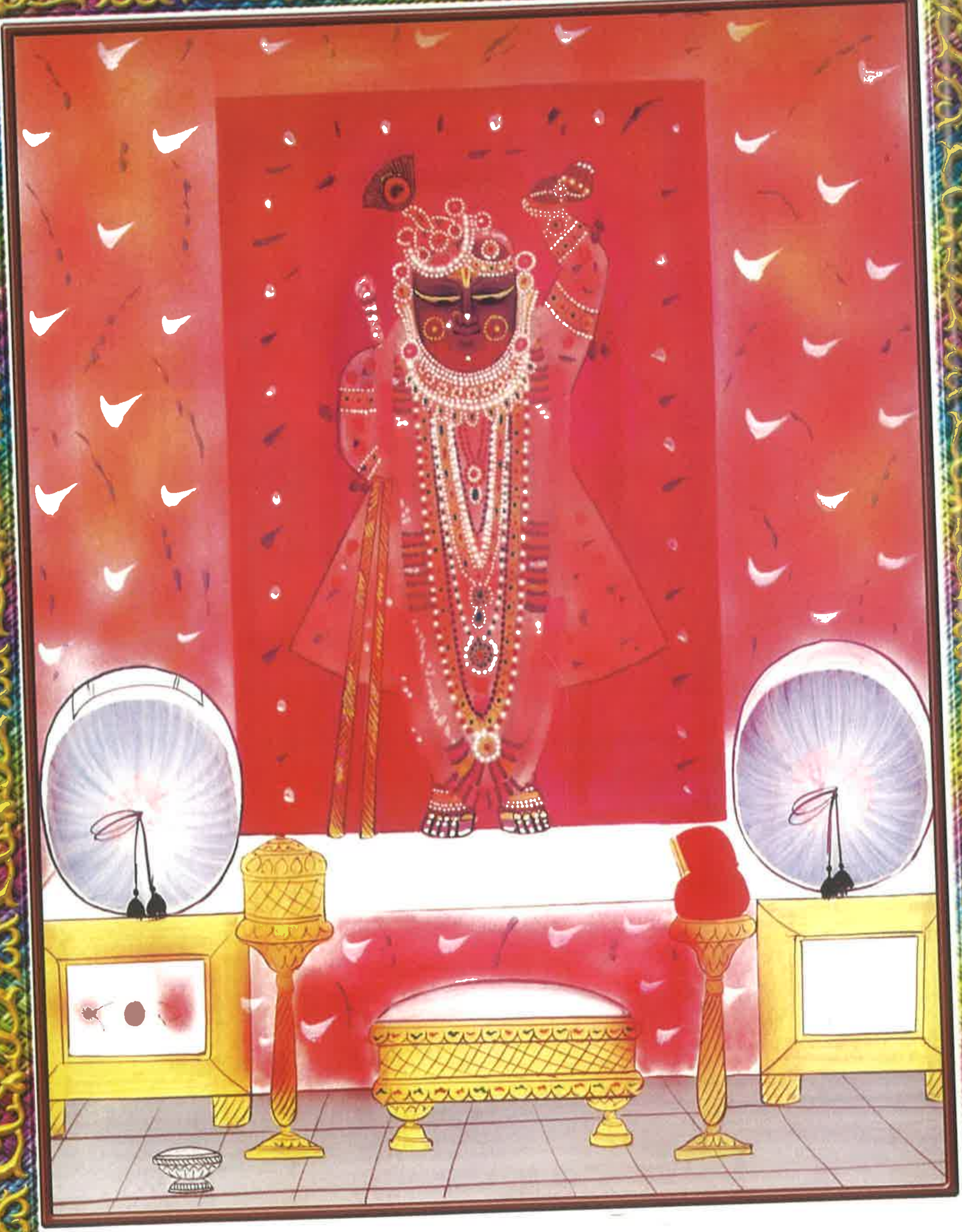

उषा एवं सत्यनारायण पुरोहित, चौपासनी, जोधपुर का जयश्री कृष्ण

माघ कृष्णा ८

गो.ति. श्रीदाऊजी महाराज (बड़े श्रीदामोदरजी) को उत्सव

श्रृंगार - कुल्है घेरा को। देहरी बन्दन माल।

वस्त्र - लाल रंग के खिनखापके मोटा बुटा के शुथन तथा वागों चाकदार। श्रीमस्तक पर हीरा की कुल्है पर सोनेरी बादलें का घेरा धराया गया है। हीरा के वेणी श्याम तथा मोजड़ी धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम रंग के तथा पिछवाई लाल मोटा बुटा की धराई गई है। आज श्रीजी के मुखारवन्द के दोनों तरफ श्याम रेशम की अलक धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार भारी हीरा-पन्ना-माणक-मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-ललित लरिकाई में, जोबन की छबि, देखों सुन्दर, नैनन भर भर।। बिथुरी अलक, बदन छबि राजत, सुरत केलि मानों, सीख दई हर।।१।। गंड चखोड़ा, पर चख बिटुला, चिन्ह किये मानो, चुंबन कर कर।। नैन सलोने, भ्रभर भमत मानो, ललित गिरा, राजत तोतर।।२।। आंगन डोलत, फिरत महाराज, लेत सखी लरकारे, भुजन भर।। "सुरश्याम", सब समे महारस, देत लाल, पावत सुख नागर।।३।।

श्रृंगार में राग-धनाश्री क्रीड़त मणिमय आंगन रंग।। पीत ताफ्ता की झगुलिया बनी है, कुलही लाल सुरंग।।१।। कटि किंकिणी घोख विस्मित सखी, धाय चलत बल संग।। गोसुत पूंछ भ्रमावत कर कहिं, पंकराग सोहे अंग।।२।। गजमोतिन लर लटकन शोभित, सुंदर लहर तरंग।। "गोविन्द" प्रभुके जू अंग अंग पर, वारो कोटि अनंग।।३।।

राजभोग आते समय राग-सारंग (ग्रह भोजन के पद) जेंवत कान्ह करत किलकारी।। (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग सेवक की सुखरासी सदाश्री वल्लभ राजकुंमार।। दरसन ही प्रसन्न होत मन, पुरूषोत्तम अवतार।।१।। सुदृष्टि चितै सिद्धान्त बतायो, लीला जग विस्तार।। इह तजि आन ज्ञान कहाँ धावत, भूले कुमति बिचार।।२।। "चत्रभुज" प्रभु उद्धरे पतित, श्रीविट्ठल कृपा उदार।। जाके चरन गही भुज दृढ़ करि, गिरिधर नंद दुलार।।३।।

भोग में राग-नट आज बने वृजराज कुंवर, बैठे सिंह द्वार निकस, अंग-अंग नव नव छबि, बरनी न जाई।। अलक तिलक नासिका कपोल, लोल कुण्डल छबि देखत, धावत कोटि कोटि रवि अरून, अधर दसनन में झाँई।।१।। लटपटी पाग लाल, पीत कुल्हे भरी गुलाल, लटकत सिर सेहरो, बन्यो शोभा अधिकाई।। "गोविन्द" प्रभु की बानिक निरखत, बिथकित सब ब्रजजन मन, रूपरासि गिरिवरधर, सुंदर मनराई।।२।।

संध्या में राग-कान्हरौं राखीहो अलक बीच चम्पकली गन गनी।। जगमगात हीरा लाल कुलह पर पाग अति बनी।।१।। सुभग नेन तरून मदमाते, मुसकाते अन अनी।। "गोविन्द" प्रभु ब्रजराज कुँवर, धन धन हो धन धनी।।२।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौं (ब्यारू व दूध के पद) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-ईमन/कल्याण कनक कुसुम अति सोभित श्रवननि।। घूमत अरून तरून मदमाते, मुसुकाते आननि।।१।। गोल पाग पर कुल्हे सुरंगा, तामें अलक रेख बनी।। "गोविन्द" प्रभु त्रैलोक विमोहत, कंठ कौस्तूभ मनी।।२।।

मान में राग-ईमन जब जब दैखो जाय हरि को बदन तब तब नयना मैरे मौपे न आवतरी।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

माघ कृष्णा ९

श्रृंगार - टिपारे को।

वस्त्र - लाल छींट के हरी गोट के शुथन तथा वागों चाकदार। श्रीमस्तक पर टिपारे की टोपी पन्ने की उसपर टिपारे का साज हीरा का धराया गया है। ढ़ाड़ा वस्त्र श्याम व पिछवाई तथा मोजड़ी लाल छिंट की हरा रंग की गोट की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार तथा वेणी हीरा मोती की धराई गई है। आज श्रीजी राजभोग से संध्या तक मोती के बंगले में बिराजे है।

मंगला में राग-ललित **जागे हो रेन तुम सब, नैना अरूण हमारे।। तुम कियो मधुपान घुमत हमारो मन, काहे ते जू नन्द दुलारे।।१।। उर नख चिन्ह तुम्हारे पीर हमारे, कारण कौन पियारे।। "नंददास" प्रभु न्याय स्याम धन, बरखे अनत जाय, हम पर झुमझुमारे।।२।।**

श्रृंगार में राग-रामकली **निर्तत मोहन रसीक सखन सहित गिडगिड तत्थेई ताता।।** **(यह पूरा पद पेज ८ पर पढ़े।)**

राजभोग आते समय राग-धनाश्री (ग्रह भोजन के पद) **जेंवत नन्द कान्ह बलभैया।।** **(यह पूरा पद पेज ११ पर पढ़े।)**

राजभोग में राग-टोड़ी **कटि पर नीके लपटात पीत पट।। सीस टिपारो मोरचंद सों मिलि, धातु प्रवाल विचित्र भेख नट।।१।। पचरंग छींट उदार ओढ़नी, लटकत चलत तरनि तनया तट।। ब्रज भामिनी के मोती हारसों उरझी, रही री कुंचित अलक लट।।२।।**

भोग में राग-पूर्वि **नाचत गावत वनतें आवत, लाल टिपारों शीश रहयों फबि।। घन तन वसन दामिनी मानों, कुंडल किरन निरख मोहे रवि।।१।। "हितहरिवंश" और सोभानिधि गोरज मंडित अलकन की छबि।। स्याम धाम सरस्वती सकुच रही, या बानिक बरनत को कवि।।२।।**

संध्या में राग-गौड़ी अग्रतकिट ध्रुंध्रुंध्रुंध्रुंध्रुं ध्रुंध्रुंध्रुंध्रुं ननननु, नृत्यत रसिकवर आवत गोधन संग।। (यह पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौ (ब्यारु के पद) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-उड़ानों तेरी भ्रौंह की मरोरन तें, ललित त्रिभंगी भये, अंजन दे चितयों, भये जू स्याम वाम।। (यह पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

मान में राग-ईमन जब जब देखो जाय हरि को बदन तब तब नयना मैरे मौपे न आवतरी।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग यह ऋतु नीकी लागत है सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १० पर पढ़े।)

माघ कृष्णा १०

श्रृंगार - पाग गोल चन्द्रिका का।

वस्त्र - केसरी साटन के रूपहरी कोर के शुथन तथा वागो घेरदार, श्रीमस्तक पर केसरी छोड़वाली पाग धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र पतंगी रंग के तथा पिछवाई केसरी साटन की रूपहरी कोर की तथा मोजड़ी भी केसरियां साटन की धराई गई है।

आभरण - माणक-मोती, हीरा-पन्ना तथा सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-ललित चढ़ी चढ़ी अखियाँ तिन मधि पूतरी, देखियत कोक पढ़ीसी।। श्याम अरून डोरे अछरसी, पाटी मदन गढ़ीसी।।१।। मृगजे सबे लगाय निहारो, मानो मीन पढ़ीसी।। "व्रजाधीश" हम कछु कहेगी, देखियत प्रेम बढ़ीसी।।२।।

श्रृंगार में राग-ललित तुमको टेरत हैं कान्ह।। (यह पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-धनाश्री (ग्रह भोजन के पद) जेंवत नंद गोपाल खिजावत।। (यह पूरा पद पेज १५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आसावरी नेक चितें चलेरी लालन, सखि ले जु गए चित चोर।। कबकी हौं द्वारे ठाड़ी चितवत ही, पितम की मुसकानी मुख मोर।।१।। हौं दधिमथन करत भवनमें, उझकि चले ब्रजराज किसोर।। लटपटि पाग केस विलुलित सखी, ना जानौं कहाँतें आये उठि भोर।।२।। सब निसि जागे डगमगत चरनगति, खसि खसि परत पीतपट छोर।। "गोविंद" प्रभु की लखी न जात गति, ऐसी वह चतुर नागरी कोर।।३।।

भोग में राग-नट तें री मोहन को मन हर लियो।। नेंक चितै इन चपल नयननि, ना जानों कहा कियों।।१।। बैठे री कुंज के द्वार, तुव मग जोवत, भर भर लेत हियो।। "गोविंद" प्रभु प्रेम कहाँलौं बरनौं, सखी तो बिन जाय न जियो।।२।।

संध्या में राग-गौरी टेढ़ि हेरी आली टेढ़ि अलकलट, अत लसत पगियां लटकत।। टेढ़ि चाल चलत जुवतिन संग, टेढ़ि भ्रकुटि भृंग भटकत।।१।। टेढ़ि तान मुरली में बजावत, टेढ़ि लकुट लिए गायन हटकत।। "नंददास" प्रभु टेढ़ि युवती देख, लेत बलैया कर मटकत।।२।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौ (ब्यारु के पद) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-नायकी जान्यौं प्रीतको मरम।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

मान में राग-ईमन दौरी दौरी आवत मोहि मनावत, दाम खरच कछु मोल लईरी।। अचरा पसार के मोहि खिजावत, हों तेरे बाबा की चेरी भईरी।।१।। जा री जा सखी भवन आपने, लख बातन की एक कही री।। "नन्ददास" प्रभु वे क्यों नही आवत, उनके पायन कछु मेंहदी दई री।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग यह ऋतु नीकी लागत है सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १० पर पढ़े।)

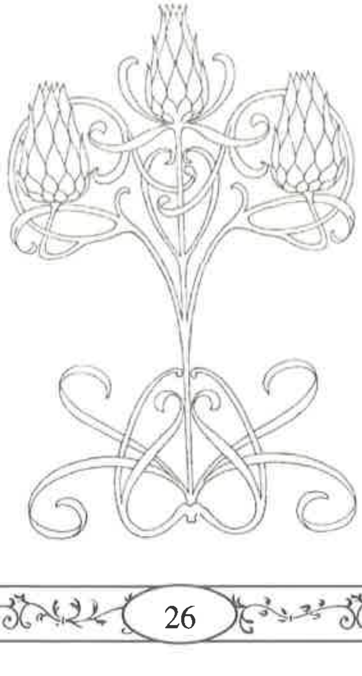

माघ कृष्णा ११

श्रृंगार - डोल के आगम का श्रृंगार।। पाग चंद्रिका का।

वस्त्र - वस्त्र तथा साज लाल साटन के सुथन एवं घेरदार जीसमें वस्त्र कामके चौवा चन्दन तथा अबीर के समस्त चिन्ह साटन के है। श्रीमस्तक पर पाग पर मोर चन्द्रिका धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र तथा पिछवाई लाल साटन की जिसमें चौवा चंदन गुला व अबीर के सभी चिन्ह है।

आभरण - आभरण सभी हरा गुलाबी मिनाके, माणक-मोती हीरा तथा सोना के धराये गये है। भारी श्रृंगार किया गया है।

मंगला में राग-ललित **राधा प्यारी! तू रस रंग भरी।। मैं जानी यह फौज मदन की, लूट लई सगरी।।१।। अटपटे भूषण रगभगी अंगिया, अलकावली बिथुरी।। "कृष्णदास" प्रभु गिरिधर पिय संग, रतिरस केली करी।।२।।**

श्रृंगार में राग-ललित **अति रंग लाग्यो बना-बनी।। दोऊ जन अनुरागे पागे रजनी सजनी जुवती जूथ चारू चितवनी।।१।। वृंदावन नित धाय रसिकवर तब गुनागनी।। "मदनमोहन" चिरजीयो दोऊ, दुल्हे और दुल्हनी।।२।।**

राजभोग आते समय राग-खट **यशुमति थार परोस धर्यो है, तुम्हे बुलावे दोऊ मैया।। बाबा नन्द की गोद ले बैठ के, भोजन करो हौ लेहु बलैया।।१।। पाछे करो केलि मनमोहन तुमको देही बहुत मिठैया।। "गोविन्द" प्रभु गिरिराज धरन चले, बैठी जहां यशोदा मैया।।२।।**

राजभोग में राग-आसावरी **मैया मोहि ऐसी दुलहिन भावै।। जैसी यह काहुकी दिठोंनिया, रूनक-झुनक घर आवै।।१।। करि करि पाक रसाल अपने कर, मोहि परोसि जिमावै।। करि अंचल पर ओट बाबासों, ठाढ़ी ब्यार ढुरावै।।२।। मोहि उठाइ गोद बैठारे, करि मनुहार मनावै।। अहो मेरे लाल! कहो बाबा सो, तेरो व्याह करावै।।३।। नंदराय नंदरानी हिलमिल, सुख-समूद्र बढ़ावै।। "परमानंद" प्रभुकी बाते सुनि, आनंद उर न समावै।।४।।**

भोग में राग-नट तू बनरा रे बनि-बनि आया, मो मन भाया, सुख उपजाया।। अति उतंग नील घोड़ी चढ़ि, धरी सेहरा अंग सुगंधि लगाया।।१।। अपने संग सकल जन सोहैं, रूचिर तिलक ललाट बनाया।। "रसिक प्रीतम" बलिहारी तेरी, उठके अंग लगाया।।२।।

संध्या में राग-गौरी राधा प्यारी दुलहिनजु को दुल्हा, देखो री आवत है व्रज लटकत।। ग्वालन संग ऊँचे सुर गावत, श्रवन सुनत मन अटकत।।१।। देखत ही जु समात हृदै में, अँखियाँ हू नहिं खटकत।। प्रभु "कल्यान" गिरिधर मुख निरखत, स्मर सरन गहि सटकत।।२।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौ (ब्यारू) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-बिहाग ललन की बातन पर बलि जैये।। हँस तुतरात कहत मैयासों, दुल्हन मोकों चहिये।।१।। गातन गोरी वयसन थोरी, दुल्हन को कर गहिये।। अब ही सॉझ समे कर गौनो, मंदिर मॉझ पधरैये।।२।। नंदराय नंदरानी हिलमिल, सुखसों मोद बढ़ैये।। "सूरस्याम" के रूप-गुन-शील, ब्रज में कहाँ पैये।।३।।

मान में राग-ईमन दौरी दौरी आवत मोहि मनावत, दाम खरच कछु मोल लईरी।। (यह पूरा पद पेज २६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंगमहल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

माघ कृष्णा १२

श्रृंगार - सेहरा को।

वस्त्र - लाल साटन फुलेवर वाले, रूपहरी कोरके, शुथन तथा वागो चाकदार। ऊपर सूती पटका धराया गया है। श्रीमस्तक पर केशरी दुमाला पर सेहरा हीरा जड़ा हुवा। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम रंगके जरीके, पिछवाई लग्नमंडप की जरी की भरतकाम की झाडवाली व्रजभक्तो के सहित धराई गई है।

आभरण - हीरा-मोती व सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-खट **आज उठ भोर, नव कुंज कानन सखी, ठाढी भई राधिका, रंग भीनी।। विलस सुख संग, नवरंग प्रिय स्यामघन, कामकी सेन, सब जीत लीनी।।१।। सुभग विकसत वदन, नयन अति रसमसे, मोर मुख हास, कछु सकुच कीनी। "श्रीविट्ठल" गिरिधरन संग नागरी, जाग सब रैन, आनंद दीनी।।२।।**

श्रृंगार में राग-बिलावल **आज बन्यो नवरंग पियारो।। ब्रजबनिता मिल क्यों न निहारो।।१।। लटपटी पाघ महावर पागे।। कुंवर मनावत अति बड़ भागे।।२।। नीलांबर नखरेख जो सोहे।। देखत मनमथ को मन मोहे।।३।। कहुं चंदन कहुं वंदन की छबि।। अंगराग बहु भांत रह्यो फबि।।४।। मदनमोहन पिय यह बिध देखो।। "दास गोपाल" जीवन फल लेखो।।५।।**

राजभोग आते समय राग-आशावरी **हरि भोजन करत विनोद सों।।** (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सुघराई **आज बने नवरंग छबीले।। डगमगात पग अंग अंग ढ़ीले।।१।। जावक पाग रंगी द्यों कैसे।। जैसे करी कहौ पिय तैसे।।२।। बोलत बचन बहुत अलसाने।। पीक कपोल अधर लपटाने।।३।। कुमकुम हृदय भुजन छबि वंदन।। "सूरश्याम" नागर मनरंजन।।४।।**

भोग में राग-ईमन **यह छबि मोपें जात न बरनी।।** (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी आओ मेरे गोविंद, गोकुल के चंदा।। भई बड़ी बार खेलत जमुनातट, वदन दिखाय देउ आनंदा।।१।। गायनि आवन की भई है बिरियां, दिनमनि किरन होत अति मंदा।। आये तेरे तात मात छतियाँ लगि, “गोविंद” प्रभु ब्रजजन सुखकंदा।।२।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौं (ब्यारु) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरौं इक रंग स्याम सदा तुम, आज भये पचरंग।। चंदन वंदन अधरन अंजन, पीक कपोल सुरंग।।१।। हौं तो तिहारे हाथ बिकानी, तुम औरन के संग।। “श्रीविट्ठल” गिरिधर बहुनायक, सीखे ऐसे ढंग।।२।।

मान में राग-ईमन दौरी दौरी आवत मोहि को मनावत दाम खरच कछु मोल लईरी।। (यह पूरा पद पेज २६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाड़ली संग लै।। नौतन सेज बनी अति सुंदर, बिच बिच सौंधे की पुट दै।।१।। हों करहौं चरनन की सेवा, जो मेरे नैनन अति सुख व्है।। “गोपीनाथ” या रंगमहल में करोजु अविचल बास व्है।।२।।

माघ कृष्णा १३

पीलीघटा

श्रृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - सारे वस्त्र पीली साटन के, बीना कोरके, सुथन तथा वागों घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग तथा उस पर पीला रंगकी रेशम का कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र तथा पिछवाई पीली साटनकी, बीना कोरकी तथा पुष्प की माला वसंत के फूलों की धराई गई है।

आभरण - सोना-माणक-मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-ललित **मेरे आये भोर प्यारे वाकें सब निस जागे।।** (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-विभास **आवत कुंजन तें पोंहोपी री।। पिय अलसात जृंभात रसभरे, लालन खवावत बीरी।।१।। सुरत शिथिल अंग अंग शिथिल अति, भूज भर श्यामा रसकी रसीली।। "श्रीविट्ठल" विपिन विनोद करो मिल, नई ललितादिक मीली।।२।।**

राजभोग आते समय राग-सारंग **लाल को मीठी खीर जो भावें।। बेला भर भर लावत यशोदा, बूरो अधिक मिलावे।।१।। कनिया लिये यशोदा ठाढ़ी, रूचिकर कोर बनावे।। ग्वाल बाल वन-चरन के आगे, झूठे हाथ दिखावै।।२।। ब्रजरानी जो चहूँधा चितवत, तनमन मोद बढ़ावे।। "परमानन्ददास" को ठाकुर हँस हँस कंठ लगावें।।३।।**

राजभोग में राग-धनाश्री **देखत ब्रजनाथ वदन मदन कोटि वारों।। जलज निकट नयन मीन, उपमा विचारों।।१।। कुंडल ससि सूर उदित, अघटन की घटना।। कुंतल अलिमाल तामें, मुरली कल रटना।।२।। जलद खंड सुंदर तन, पीत बसन दामिनी। बनमाला सक्र चाप, मोहि सब भामिनी।।३।। मुक्तामनी हार मंडित, तारागन पाँति।। "परमानंद" स्वामी गोपाल, सब विचित्र भाँति।।४।।**

भोग में राग-नट **लालन नाहिन री काहूके बसके।।** (यह पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

संध्या में राग-कान्हरौ नयन छबीले तरून मदमाते।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौ (ब्यारु) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-अडानों जहाँ तहाँ ढ़र परत ढरारे मोहन तेरे नैन।। जो निरखत तिनके मन बस करि, सौपंत है लै मैन।।१।। छिन सन्मुख छिन ही होत टेढ़े, एके अवस्था कबहुँ न ऐन।। "रसिक" प्रीतम ताकें बिन देखें, छिन मनमें नहीं चैन।।२।।

मान में राग-ईमन दौरी दौरी आवत मोहि को मनावत दाम खरच कछु मोल लईरी।। (यह पूरा पद पेज २६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंगमहल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

माघ कृष्णा १४

श्रृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - लाट शाटन के, रूपेरी कोरके, शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर सफेद रेशम का कतरा धराया गया है। मोजड़ी लाल शाटन की, ठाड़ा वस्त्र श्याम तथा पिछवाई लाल शाटन की इसके दोनो तरफ कशिदा के झाड़ वाली धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार पन्ना के, वेणु वेत्र मीना की तथा नुंपुर सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-ललित **कहो तुम कौन हो, कहांते आये, कित जाओगे सवेरे। जानत हो पहिचानत नही, आवत हो जू डरे रे।।१।। लाल पाघ अर्ध भाल, लटक रही मोतीन माल, याहि ते कहावत तुम रीझेरे।। "तानसेन" के प्रभु, ठाडे रहो जू श्याम, सब सखियन मिलि घेरे।।२।।**

श्रृंगार में राग-ललित **कहांते लाये हो इन साथ...** (यह पूरा पद पेज १७ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-धनाश्री (ग्रह भोजन के पद) **पिय ही जिमावत नवल किसोरी।। रहसी खीर मुख देत मधुर कर, चितै हँसत मुख गौरी।।१।। छिन छिन प्रीति प्रबल प्रितम उर, प्रिया प्रेम झकझोरी।। यह सुख सदा सखी विलसत, "परमानंददास" बलिहारी।।२।।**

राजभोग में राग-जोनपुरी **माईरी लाल आयेरी मेरेही महल तनमनधन सब वारौं।।** (यह पूरा पद पेज ११ पर पढ़े।)

भोग में राग-पूर्वि सोहत लाल पाग साँकरे पेचन चोकरी।। (यह पूरा पद पेज ११ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौड़ी टेड़ी हेरी आली टेढ़ी अलकलट.. (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े।)

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौ (ब्यारू) **सेन भोग लाई भर थारी।।** (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-नायकी **सुनरी सखी तेरो दोष नहीं, ..** (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग **दौरी दौरी आवत मोहि को मनावत..** (यह पूरा पद पेज २६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग **पोढ़िये लाल लाड़ली संग लै।।** (यह पूरा पद पेज ३० पर पढ़े।)

माघ कृष्णा ३०

श्रृंगार - पाग चीरा वाली कतरा को।

वस्त्र - श्याम रंगकी जरीके, रूपेरी कोरके शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर श्याम जरी की चीरावाली पाग पर रूपहरी जरी का कतरा धराया गया है। श्री चरण कमल में मोजड़ी श्याम जरी की ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई श्याम जरी की सोनेरी कोरकी धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार हीरा-मोती के नुंपुर सोना के तथा वेणुवैत्र चांदी की धराई गई है।

मंगला में राग-परज (ललित) **रंग भरी मुरत अनंगभरी अँखियां, संग लिये प्यारी को महल मेरे आये हो।।१।।** (यह पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-ललित **आवन कह गये अजहु न आये..** (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-आशावरी (ग्रह भोजन के पद) **हरि भोजन करत विनोद सों।।** (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी **माई मेरे श्याम लग्यों संग डौले।। जहीं जहीं जाउँ तहीं सुनि सजनी, बिना हि बुलायों बोलें।।१।। कहा करौं ये लोभी नैना, बस कीनें बिनु मोलें।। "हितहरिवंस" जानि हितकी गति, हँसि घुंघट पट खोले।।२।।**

भोग में राग-नट **झूठी मीठी बतियन लालन, मनुहार करन आये।। कहा कहिये तेरे हृदय की सुन्दरताई, जैसे तन श्याम तैसेई हों मन, तातें ब्रजयुवतिन मन भाये।।१।। कित सकुचत पिय, खरे निके लागत, प्रानपिया के रंग छाये।। धन्य-धन्य ते त्रिया, कौन सुकृत कीने सो, "गोविंद" प्रभु पिय पाये।।२।।**

संध्या में राग-गौरी **एरी तू घरी घरी क्यों आवे।। नंदनंदन सों हेत कहा है, सो क्यों न मोहि बतावे।।१।। दीपक बार द्वार मदिर, करि फेरही बारन धावे।। हिये अंधारों, उजारो चाहत है, सो दीपक क्यों जावे।।२।। मनिमाला आँगन में ले ले, तोर ड़ार बगरावे।। विनति मिस मोहन अवलोकत योंही पल बितावे।।३।। ब्रह्मादिक जाको ध्यान धरत है, खोजत अंत न पावे।। "चत्रभुज" प्रभु गिरिधर छबि निरखत, इनही लखौ सचु पावे।।४।।**

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौं (ब्यारू के पद) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-ईमन प्यारी तोही स्याम बुलावे, झमक चल राधे।। तो बिन मोहन पान न खावे, कौन मंत्र पढ़ि साधे।।१।। तेरो बिरह मोपे सह्यों न परत है, विरह अनल दाधे।। "सूरदास" प्रभु तिहारे दरस बिन, मोहन व्है गये आधे।।२।।

मान में राग-बिहाग/सारंग मनावत हारि परी री माई।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े माई मदन मोहन श्याम।। अनन्य होय चरनारविंद भज, सकल पूरनकाम।।१।। अष्टसिद्धि नवनिधि द्वारें, योग भोग विश्राम।। उमापति सुकदेव नारद, रटत निसदिन नाम।।२।। सकल कला प्रवीन गिरिधर, राधिका भुज वाम।। कहत "कृष्णा" सुवस बसिये, श्रीनंद गोकुलगाम।।३।।

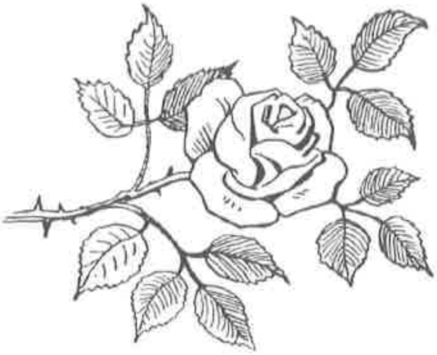

माघ शुक्ला १

श्रृंगार - पाग चीरा वाली तथा गोल चन्द्रीका का।

वस्त्र - पीली जरी के रूपहरी कोर के शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर छोर वाली चीरा की पाग पर रेशम व जरी के काम की गोल चन्द्रीका धराई गई है। श्री चरण कमल में मोजड़ी पीली जरी की है। वेणु वैत्र लाल-सफेद मीनाके, ठाड़ा वस्त्र श्याम तथा पीछवाई पीली जरी की रूपहरी कोर की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार माणक-मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-खट **प्रात समय जागी अनुरागी, सोबत हुती री, श्याम जू की संगिया।।**

(यह पूरा पद पेज ११ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-ललित **क्यों मोहन दर्पन नहीं देखत।। क्यो धरनी पग नखनी खनावत, क्यों मो तन नहिं पेखत।।१।। क्यों ठाढे, बैठत क्यों नाही, कहा परी हम चूक।। पीताम्बर गहि कह्यो बेठिये, रहे कहा व्है मूक।।२।। उघरी गयो उरते उपरेना, नखक्षत देत दिखाई।। "सूरदास" देखि लटपटी पाग पर, यावक की छबि छाई।।३।।**

राजभोग आते समय राग-धनाश्री **चलहु गोपाल बोलत महतारी।। परोसे थार धरे मग चितवत, नयनन आंसु डारी।।१।। विविध भांति पकवान मिठाई, मेवा मिश्री ठानी।। "रामदास" प्रभु रसिक छबीलों, ब्रज युवतिन सुखदानी।।२।।**

राजभोग में राग-धनाश्री **गोपालको मुखारविंद, जियमें बिचारों।। कोटि भानु कोटि चंन्द्र, मदन कोटि वारों।।१।। कमल नैन चारू बैन, मधुर हास सोहै।। बंकन अवलोकन पर, जुवती सब मोहैं।।२।। धर्म अर्थ काम मोक्ष, सब सुख के दाता।। "चत्रभूज" प्रभु गोवर्धनधर, गोकुल के त्राता**

भोग में राग-पूर्वि **छबिले लालकी यह बानिक, बरनत बरनी न जाई।। देखत तन मन करि न्योछावर, आनंद उर न समाई।।१।। कंदमूल फल आगे धरिकें, रहि हैं सकल सिरनाई।। "गोविंद" प्रभु पियसों रति मानी, पठई रसिक रिझाई।।२।।**

संध्या में राग-गौरी लटकत चलत दोहनी ले री।। अनोखी तू गाय दुहावनवारी, कौन पोरीमें पैठन देरी।।१।। बनते आवत भई न बिरिया, बासर श्रम तज नेक चिते री।। तोही न दोष न ये हितकी गति, कठिन हिलग की ऐसी है री।।२।। तव दृग चंचल अंबुज वदनी, दरसन हानि निमिष न सहे री।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधरन चंदने, तुव चित चोर्यों मृदु मुसके री।।३।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौ (ब्यारु) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-अड़ानों पिय तेरी चितवन ही में टोना।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग दौरी दौरी आवत मोहि को मनावत दाम खरच कछु मोल लईरी।। (यह पूरा पद पेज २६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

माघ शुक्ला २

श्रृंगार - फेंटा का।

वस्त्र - हरि या नीली जरी के। शुथन तथा वागो घेरदार, श्रीमस्तक पर हरि जरी का फेटा पर हीरा का कतरा व कलंगी धराये गये है। श्री चरण कमलों मोजड़ी हरी जरी की कड़ा, पायल, पेंजनी सभी हीरे झड़े हुवे तथा ठाड़ा वस्त्र पतंगी रंग के, पिछवाई हरी जरी की रूपहरी कोर की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार हीरा मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-ललित राधा प्यारी? तू रस रंग भरी।। (यह पूरा पद पेज २७ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-ललित (पंचम) मैया तेरो मोहन अतिहि सयानो देत अटपट गारी।। (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-टोडी जेंवत दोऊ रंग भरे।। चार भाँतके व्यंजन आने, खटरस रूचिर करे।।१।। गोपीजन के मंडल बिच राजत, लोकवेद बिसरे।। सकल मनोरथ पूरक नंदनंदन, प्रतिप्रति रूप धरें।।२।। वासर केलि मुदित गिरिधारी, सुख विलसत सगरें।। "लालदास" प्रभु बहुविधि क्रीडत, भोजन अखिल करें।।३।।

राजभोग में राग-टोड़ी कुसुमित बन मधि विविध केलि क्रीडत रंगराई।। बांधी फेंट पट मल्लयुद्ध करें, रसभरे दोऊ भाई।।१।। बिहँस कहत आपस में, गाय कौन छुवे धाई धाई।। सो भैया हौं ता पर चढ़के, "गोविंद" प्रभुकी गैया घेरन जाई।।२।।

भोग में राग-पूर्वि गैया गई दूर टेरो जू कान्ह।। जो ऊँचे चढ़ टेर सुनावहु, सब बग देंगी मेरे जान।।१।। वृंदावन में चरत हरित तृन, चौंकि चमकि टेर परी कान।। दूधधार धरनी सिंचत आई, "गोविंद" प्रभु को जहाँ करत मधुपान।।२।।

संध्या में राग-पूर्वि कदंब चढ़ कान्ह बुलावत गैया।। मोहन मुरली को शब्द सुनत ही, जहाँ तहाँ ते उठ धैयाँ।।१।। आवो आवो सखा संगके, सब पाई है एक ठैयाँ।। "गोविंद" प्रभु बलदाऊसों कहन लगे, अब घरको पग दैयाँ।।२।।

शयन भोग आवता राग-कान्हरौं रानीजू अपने सुतहि जिमावत।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

राग-बिहाग/कान्हरौं अरी तू काहे अनमनी, बोलत नाहिं बुलाये।। अब लौ तो तू हँसत-खेलतहीं, कहा भयो मोहिं आये।।१।। नयन नीचे किये चितवन रेख दिये, तिरछी भौंह चढ़ाये।। "रसिकप्रितम" पिय कबके ठाडे, विनवत हैं पट पाये।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग यह ऋतु नीकी लागत है सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १० पर पढ़े।)

माघ शुक्ला ३

श्रृंगार - पाग कतरा का।

वस्त्र - लाल रंग की जरीके शुथन तथा वागो घेरदार श्रीमस्तक पर पाग लाल जरीकी चीरा वाली पर वस्त्र कामका कतरा धराया गया है। श्रीचरण कमलों में मोजड़ी लाल जरीकी, ठाड़ा वस्त्र पिला रंग के तथा पिछवाई लाल जरी की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार पन्ना व मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-परज लाल तुम पाये हो जू जान।। तुम सों कोन बलैया बोले, निपट कपट की खान।।१।। औरन सों तुम हँसत खेलत हो, हमसे रहत मुख तान।। "सूरदास" प्रभु अपनी गरज को, हियत पर सुजान।।२।।

श्रृंगार में राग-परज/ललित आईये जू कैसे आवन पाये, भले आये जू नवललाल।। तुम तो जान सुजान बुझत हों गुनगान, जानी सुरति अति रसाल।।१।। जो लों इन नैनन दरसन पेहों, तो लो रही बेहाल।। "तानसेन" के प्रभु इतनी बिनती सुनी, दीजिये दरस कीजिये निहाल।।२।।

राजभोग आते समय राग-धनाश्री लाड़ली और लाल जेवत दोऊ।। रतन जटित चौकी धरी सनमुख, तापर कंचनथार रहे लस।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई, पुरी दूध मलाई।। प्यारी सहित हरी जेवन बैठे "रामदास" बल जाई।।२।।

राजभोग में राग-धनाश्री देखत ब्रजनाथ बदन मदन कोटी पारों।। (यह पूरा पद पेज ३१ पर पढ़े।)

भोग में राग-नट हँसत हँसत लालन आये री मेरे आंगन।। हौं तो तेरो रूप देख ठगीसी रही मेरी आली, जो पे कछु कहि आवे छबि देख भई मगना।।१।। जियकी रिस गई अधिक रूचि बाढ़ी, मोहन मोही री भयो री मन लगना।। करसों कर गही हृदयसों लगाय लई मिले री "गोविंद" प्रभु, सब सुख निस जगना।।२।।

संध्या में राग-गौरी राधेजु के वदन की बल जैहों।। कोटि मदन वसंत, रवि ससि कर न्योछावर दैहौं।।१।। ललित लोल कपोल श्रवनन, खुभी खूटला चार।। अलक झलकत झलमनि अति, नील सीर पर सार।।२।। हँसत हँसत रसत दामिनी, अधर बिंब रसाल।। नासिका सुक मुक्ताफल, छबि तिलक मृगमद भाल।।३।। भ्रकुटिभंग, अनंग जीते, चिबुक साँवल बिंद।। "व्यासस्वामिनी" नैन सैनक, बस किये गोविंद।।४।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौ सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-अडानो पिय तोहे नयनन ही में राखूँ।। तेरी एक रोमकी छबि पर, जगत वार सब नाखूँ।।१।। भेटौं सकल अंग साँवल कूँ, अधर सुधारस चाखूँ।। "रसिकप्रीतम" संगम की बातें, काहुसों नहीं भाखूँ।।२।।

मान में राग-ईमन दौरी दौरी आवत मोहि को मनावत, दाम खरच कछु, मोल लईरी।। (यह पूरा पद पेज २६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाड़ली संग लै।। (यह पूरा पद पेज ३० पर पढ़े।)

माघ शुक्ला ४

श्री मुकुन्द राय जी का पाटोत्सव

(श्री दामोदर दास जी हरसानी जी का जन्म दिवस)

श्रृंगार - क्रीट मुकुट का।

वस्त्र - रूपेरी जरीके सुनेरी कोरके। शुथन लाल जरी की वागो चाकदार रूपेरी जरीके। श्रीमस्तक पर हीरा का क्रीट मुकुट। ठाड़ीलर-मोतीकी तथा शीरपेच तथा शीशफुल कुंडल सभी हीराके। श्रीचरणकमलों में हीरा की झड़ी हुई मोजड़ी, ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम रंग के तथा पिछवाई जरी ताश की तथा हीरा झड़ा हुवा चोखटा धराया गया है।

आभरण - नित्यानुसार हीरा-पन्ना-माणक व मोती धराये गये है।

मंगला में राग-खट आज नंदलाल सखी प्रेम मादिक पियें, संग ललना लिये, यमुना तीरें।। फूली केसर कमल मालती सघन वन, मंद सुगंध सीतल समीरें।।१।। नीलमणि वरणतन, कनक मंडित वसन, परम सुन्दर चरन, परस माला।। मधुर मृदु हास, प्रकास दसनावली, छबि भरे इतरात, दृग विसाला।।२।। कियें चंदनखोर वदनारविंद, मकरंद लुब्ध भ्रमर, कुटिल अलकें। हलत कुंडल लटक, चलत जब स्यामघन, मणिनकी कांति, गलगंड झलकें।।३।। एक चंपक तनी, कृष्ण रसमाती, करे राग पंचम, संग लागि सोहें।। एक हरि मुख निरख, धर रही ध्यान मन, चित्रसम भई हरि हिये मोहें।।४।। एक दामिन सी, भुज मेल ग्रीवा, बात कहन मुख सों, मुख मिलायों।। एक नवकुंज में, खेंच रही कटिबंध आपनो, लाल चित चोर पायो।।५।। एक स्यामहिं हेर, सुभग लोचन फेर, बिहस बोली, भले कान्ह कपटि।। एक सोंधे भरी, छुटे बारन खरी, एक बिन कंचुकी, रीझ लपटी।।६।। एक स्यामा, कनक-कंज-वंदनी प्रेम-मकरंद भरी, हरि निरख विकसी।। ताके रसलुब्ध रहे, लपट साँवरों भ्रमर, प्राणप्यारी भुजन बीच, जु लसी।।७।। रसिकमणि रंगभरे, बिहरत वृंदाविपिन संग, सखी मंडली प्रेम पागी।। कहत “भगवान हित रामराय” प्रभु, सोई जाने जाही लगन लागी।।८।।

श्रृंगार में राग-खट नवल ब्रजराज को, लाल ठाडो सखी, ललित संकेत वट, निकट सोहे।। देख री देख, अनिमेष या वेषको, मुकुट की लटक, त्रिभुवन जू मोहे।।१।। स्वेद कण झलक, कछु झूकी सी रहत पलक, प्रेम की ललक, रसराज किये।। धन्य बडभाग,

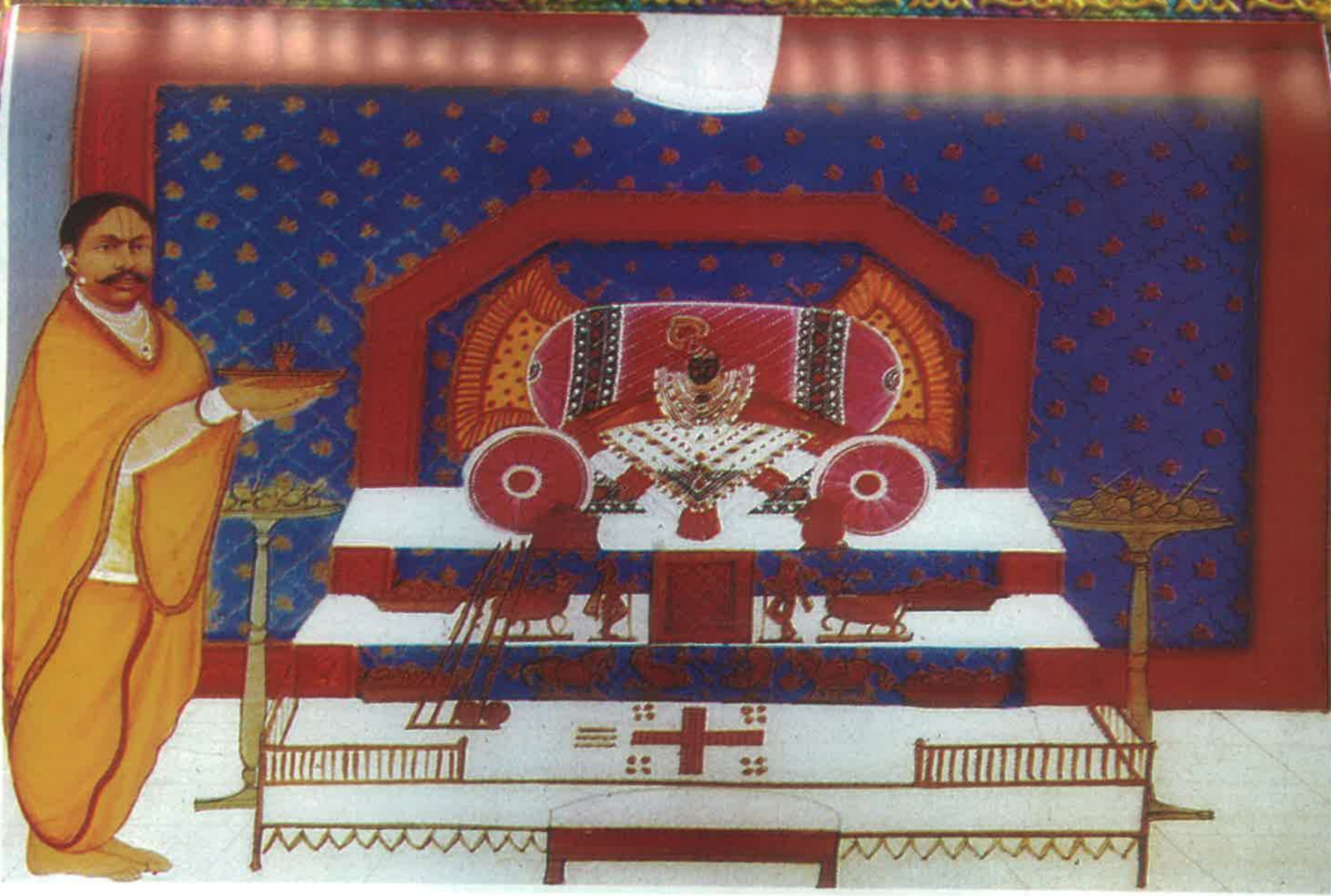

श्री मुकुन्दरायजी, काशी ।

प्रवीणा बेन राजेश भाई नागर, मुम्बई का जयश्रीकृष्ण

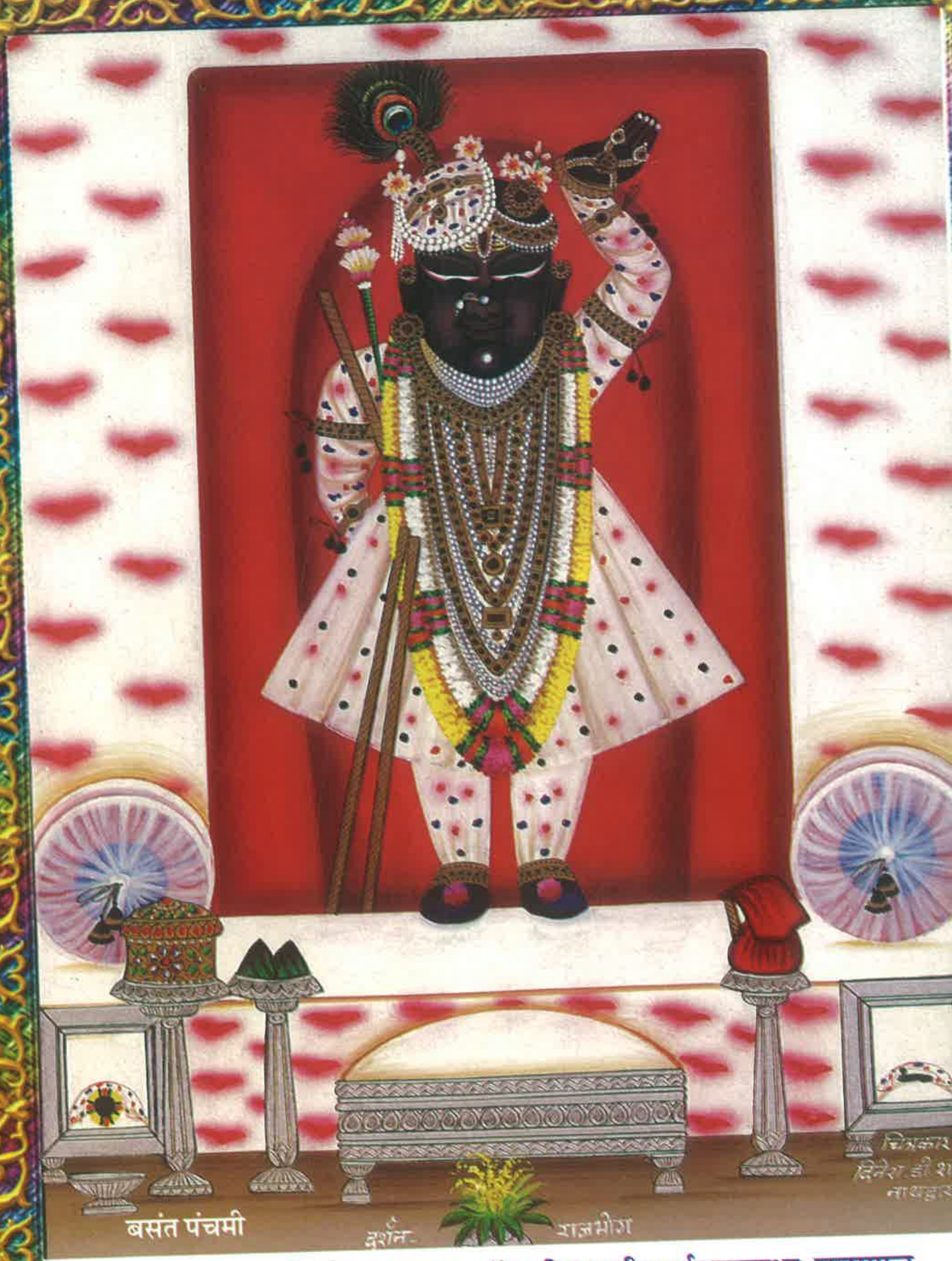
दर्शन- राजभोग
चित्रकार
दिनेश डी शर्मा
नाथद्वारा

बसंत पंचमी

भंवरलाल गुर्जर, जिला अध्यक्ष, ऑल इण्डिया वीर गुर्जर महासभा, राजसमन्द,
प्रोपराईटर रघुनन्दन मिनरल्स प्रा.लि. का सपरिवार जय श्रीकृष्णा

वृषभाननंदिनी राधिका अंश पर, बाहु दिये।।२।। मणि जटित भूमि पर, नवलता रही झुम, कुंज छबि पुंज, बरनी न जाई।। नंदनंदन चरण, परस हित जान यह, मुनिन के मनन, मिल पांत लाई।।३।। परम अद्भुत रूप, सकल सुख भूप, यह मदनमोहन, बिना कछु न भावें।। धन्य हरिभक्त, जिनकी कृपा तें सदा, कृष्ण गुण, "गदाधर मिश्र" गावें।।४।।

राजभोग आते समय राग-धनाश्री लाडली और लाल जेवत दोऊ।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े।)

राजभोग में राग-मालकौंस (पंचम) बोलत श्याम मनोहर बैठे कदंबखंड और कदंबकी छैयाँ।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

भोग में राग-गौरी बेनु माई बजेश्री बंशीबट।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी लटकत चलत जुवती सुखदानी।। संध्या समे सखा मंडल में सोभित तन गोरज लपटानी।।१।। मोर मुकुट गुंजा पीयरो पट, मुख मुरली गुंजत मृदु बानी।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधारी आये बनतें, ले आरती वारत नंदरानी।।२।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौ (ब्यारू) सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-ईमन आलीरी कर श्रृंगार सांयकाल, चली व्रज बाल पियदरशवे को मद द्विरद गेन।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

राग-बिहाग (सारंग) मनावत हरि परी री माई।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंगमहल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

माघ शुक्ला ५

श्री बसन्त पंचमी

(देहरी, बन्दन माल, अभ्यंग)

श्रृंगार - पाग चन्द्रिका को।

वस्त्र - आज वस्त्र सफेद बीना कोरके, शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर खीड़कीदार पाग के ऊपर मोर की सादी चन्द्रिका, ठाडिलर मोतीकी, शीरपेच, शीशफुल, कर्णफुल सभी हरा मीनाके-माणक के, लुमक मोती की। श्रीमुखारवृंद पर तिलक माणक का, अलंकार कटाक्ष नखवेशर माणक-मोती के, चिबुक हीरा को। श्रीअंग में श्रृंगार मध्य का हार हरे-लाल, मीना के व मोती के, गुंजामाला तथा फूल की माला। श्रीहस्त में नखावली मोतीपड़ा की मुद्रिका हस्तपान पोंची बाजुबन्द सभी हरे व लाल मीनाके। श्रीचरण कमल में मोजड़ी हरे रंग की साटन की धराई गई है। कड़ा, पायल, पेंजनी सभी लाल हरे मीना के तथा पिछवाई सफेद व ठाड़ा वस्त्र सफेद धराये गये है। राजभोग में श्रीजी बसंत, चौवा चंदन गुलाल अबीर से खेले।

विशेष - श्रीजी राजभोग में आज से डोल तक बसंत खेलेंगे तथा उत्सव भोग की सामग्री आती है तथा सनमुख में बसंत का कुंभ आया उत्सव भोग के बाद आरती की गई तथा उत्सव भोग के सरने के बाद में वापस दर्शन खुले। राजभोग आरती आवे तब फूल उड़ाने की रीत है। अनोसर में खेल सामग्री में नित्य मेवा व साकगर की सामग्री आवे।

मंगला में राग-भैरों **मंगल आरती गोपाल की माई।। नित्य प्रति मंगल होत** निरख मुख, चितवन नयन विशाल की।।१।। मंगल रूप **श्यामसुन्दर को, मंगल भृकुटी सुभाल की।।** "चतुर्भुज" प्रभु सदा मंगल निधि, बानिक गिरिधरलाल **की।।२।।**

राग-ललित/आशावरी **माई मेरों मोहन सों मन मान्यों।।** (यह पूरा पद पेज १५ पर पढ़े।)

मंगला में राग-बिलावल (बसंत पंचमी के दिन) **आज की बानिक पर हो लाल,** हों बलि बलि गई।। बिगलित कच सुवन पाग, ढरकी रही **वाम भाग, अंग अंग अलसही।।१।। अरून नैंन झपक जात, कछु जँभात वार वार, पीक कपोल छही।। धनि सुहाग भाग जाको, "सूर" के प्रभु संग सब निस बितई।।२।।**

श्रृंगार में राग-बिलावल माईरी आज और काल और दिन दिन प्रति ओर ओर।। (यह पूरा पद पेज १५ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-बसंत (बसंत के पद) आई बसंत ऋतु अनूप नूत कंत मोरै।। बोलत वन कोकिला मानो, कुहु कुहु रस ढ़ोरै।।१।। फूली वनराई जाई, कुंद कुसुम घोरे।। मद रस कै मातै मधुप फिरत दौरे-दौरे।।२।। हम-तुम मिलि खेलें लाल कुंज भवन चौरे।। “गोविंद” प्रभु नंद सुवन खेले इक ठौरे।।३।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। विलसति करिणी गण वृत वारण वर इव रति पति मान भंगे।।ध्रु.।।१।। विभ्रम संभ्रम लोल विलोचन सूचित संचित भावं।। कापि दृगंचल कुवलय निकरै रंचति तं कलरावं।।२।। स्मित रूचि रूचि रतरानन कमल मुदीक्ष्य हरे रतिकंदं।। चुंबति कापि नितंबवती करतल धृत चिबुकममंदं।।३।। उद्भट भावविभावित चापल मोहन निधुवन शाली।। रमयति कामपि पीन घनस्तन विलुलित नव वनमाली।।४।। निज परिरंभ कृतेनुद्रुतम भिवीक्ष्य हरिं सविलासं।। कामपि कापि बलाद करोदग्रे कुतुकेन सहासं।।५।। कामपि नीवीबंध विमोकस संभ्रम लज्जित नयनां।। रमयति संप्रति सुमुखि बलादपि करतलधृत निजवसनां।।६।। पियपरिरंभ विपुल पुलकावलि द्विगुणित सुभग शरीरा।। उद्गायति सखि कापि समं हरिणा रतिरस रणधीरा।।७।। विभ्रम संभ्रम गलदं चल मलयांचित मंगमुदारं।। पश्यति सस्मित मपि विस्मित मनसा सुदृशः सविकारं।।८।। चलति कयापि समंस करग्रह मलसतरं सविलासं।। राधे तव पूरयतु मनोरथ मुदित मिदं हरिरासं।।९।।

राग-बसन्त श्री पंचमी परम मदन दिन मंगल महोच्छव आज।। बसंत बनाय चली व्रज सुन्दरी, ले पूजा कौं साज।।१।। कनक कलश जलपूरि पढ़ति रति, काम मंत्र रस मूल।। ता पै धरी रसाल मंजुरी, ढांपि सु पीत दुकूल।।२।। चोवा चन्दन अगर कुंकुमा, नव केसरि घनसार।। नाना धूप दीप निरांजन, विविध भांति उपहार।।३।। बाजति ताल मृदंग मुरलिका, बीना पटह उपंग।। सरस वसंत मधुर सुर गावति, उपजत तान तरंग।।४।। छिरकति अति

अनुराग मुदित, गोपीजन मदन गोपाल।। मानों सुभग कनक कदली मंडल मधि, राजति तरून तमाल।।५।। यह विधि चली ऋतुराज वधावन, सकल घोष आनन्द।। "हरिजीवन" प्रभु गोवर्धनधर, जय जय गोकुलचंद।।६।।

संध्या में राग-बसन्त कुसुमित कुंज विपिन वृन्दावन, चलिये नन्द के लाला।। पाडर जाई जुही केतुकी, चंपक बकुल गुलाला।।१।। अंब दाख दाड़िम नारंग फल, जांबू परम रसाला।। ओर बहोत फूले द्रुम देखियत, कहत मुदित ब्रजबाला।।२।। कोकिल कीर चकोर मोर खग, जमुनातट निकट मराला।। त्रिगुन समीर बहत अलि गुंजत, नीकी ठौर गुपाला।।३।। सुनि मृदु वचन चलै गिरिवरधर, कटि तटि किंकिनि जाला।। नाना केलि करत सखियन संग चंचल नेन विसाला।।४।। तहँ बीनत कुसम राधिका भामिनि, ग्रथित मनोहर माला।। "कृष्णदास" प्रभुके उर मेलत, भेंटत स्याम तमाला।।५।।

शयन में राग-बसंत श्रीगोवर्धन की शिखर चारूपर फूली नवमाधुरी जाई।। मुकलित फल दल सघन मंजुरी, सुमन सु सोभा बहोत हि भाई।। सुसमित कुंज पुंज द्रुमवेली, निर्झर झरत अनेक ठांई।। "छीतस्वामी" व्रज जुवति जूथ में, विहरत हें गोकुल के राई।।२।।

मान में राग-वसंत ऐसो पत्र लिखि पठ्यौ नृप बसंत।। तुम तजो मान मानिनी तुरंत।।ध्रु.।। कागद नव दल अंब पांति।। द्वात कमल मसि भंवर गति।। लेखन कामके बान चाँप।।१।। लिखि अनंग ससि दई छाप।। मलयानिल पठ्यो करि विचार।। बाँचे सुक, पिक, तुम सुनों नारि।। "सूरदास" थों वदत बान।। तू हरि भजि गोपी तजि सयान।।२।।

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। चोवा चंदन अगर कुंकुमा, झारत फिरत सकल अंग अंग।।१।। बाजत ताल मृदंग अघोंटी, बीना मुरली तान तरंग।। "कुंभनदास" प्रभु यह विधि क्रीडति, जमुना पुलीन लजावत अनंग।।२।।

नोटः- आज से होरी रोपण से पहले तक सभी समय राग बसन्त ही गाया जाता है। दूसरे राग नहीं गाये जाते है।

माघ शुक्ला ६

श्रृंगार - कुल्हे घेरा का।

वस्त्र - गुलाबी झांईके, रूपेरी कोरके शुथन तथा वागो चाकदार श्रीमस्तक पर कुल्है पर सोनेरी वादला को घेरा। ठाड़ीलर मोतीकी, शीरपेच, शीशफुल लाल मीना को, कुन्डल सफेद मीनाके, वेणीश्याम मीनाकी, श्रीमुखारवृन्द पर तिलक माणक का।

आभरण - माणक-मोती, लाल मीना के तथा सोने के धराये गये है।

मंगला में राग-बसन्त खेलत बसन्त निस पीय संग जागी।। सखी वृंद गोकुल की सीमा, गिरधर पिय पदरज अनुरागी।।१।। नवल निकुंज में गुंजत मधुप पिक, विविध सुगंध छींट तन लागी।। “कृष्णदास” स्वामिनी युवति-जूथ चुड़ामणि, रिझवत प्राणपति राधा बड़भागी।।

श्रृंगार में राग-बसन्त रिंगन करत कान्ह आंगन में, कर लिये नवनीत।। शोभित नील जलद तन सुंदर, पहरे झगुली पीत।।१।। रूनझुन, रूनझुन, नूपुर बाजे, त्यों पग ठुमकि धरे।। कटि किंकिनि कलरव मनोहर, सुनि किलकार करें।।२।। दुलरि कंठ कनिक द्रुम कानन, दीयो कपोल दिठोना।। भाल विशाल तिलक गोरोचन, अलकावली अली छोना।।३।। लटकन लटकि रह्यो भ्रुव ऊपर, कुलह सुरंग बनी।। सिंघ-पोरि तें उझकि उझकि, छबि निरखत हे सजनी।।४।। नंद नंदन उत तन चितवत ही, प्रेम मगन मन आई।। कंचन थार साजि घर घर तें, बोहो विधि भोजन लाई।।५।। मनि मंदिर मूढा पै सुंदरि, आछे वसन बिछावें।। बालकृष्ण कौं जो रूचि उपजै, अपने हाथ जिमावें।।६।। जल अचवाई वदन पोंछत ओर, बीरि देत सुधारि।। हिये लगाय वदन चुंबन करि, सर्वस डारत वारि।।७।। नेनन अंजन दें लालन कें, मृगमद खोरि करें।। सुरंग गुलाल लगाय कपोलन, चिबुक अबीर भरें।।८।। चौवा चंदन छिरकि अबीर, गुलाल फेंट भराई।। तनक-तनक सी मोहन कों भरि, देत कनक पिचकाई।।६।। आपुन मांझ परस्पर छिरकत, लालन पे छिरकावें।। न्हेनी न्हेंनी मुठी भराई रंगन सो, सेनन नैन भरावे।।१०।। निरखि निरखि फूलति नंदरानी, तनमन मोद भरी।। नित्य प्रति तुम मेरे घर आवो, मानो सुफल घरी।।१।। देत असिस सकल व्रज वनिता, जसुमति भागि तिहारे।। कोटि बरख चिरूजियो यह “व्रजजीवन” प्राणहमारो।।१२।।

राजभोग आते समय राग-बसंत (बसंत के पद) खेलत मदन गोपाल वसंत।। नागर नवल रसिक चूडामनि, सब विधि सुघर राधिका कंत।।१।। नेन नेन प्रति चारू विलोकन, वदन वदन प्रति सुंदर हास।। अंग अंग प्रति प्रीति निरंतर, रति आगम निस जाहि विलास।।२।। बाजत ताल मृदंग अघोटी, डफ-बांसुरी कुलाहल केलि।। "परमानंद" स्वामी के संग मिलि, नाचति गावति रंग रेलि।।३।।

राग-बसंत वृंदावन फूल्यो नव हुलास।। गोवर्धनगिरी के आसपास।।ध्रु.।। चली सलज कदली पुंज झोप।। तरू तरूल तरूनता अरून कोप।। जुबती जन विहरत मदन चोंप।। तन-मन-धन जोबन हरिहि सोंप।।१।। सित असित कुसम मंडपन छांह।। कल कमोद मंदार तांह।। खेलत वसंत गिरिधरन जांह।। वृषभान सुता के कंठ बांह।।२।। भयो अनंग अंग विन सिकके ताप।। सोई फेरी अब थिर रही थाप।। भई मगन मिट्यो अब, सब संताप।। "श्रीवल्लभसुत" पदरज प्रताप।।३।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बसंत गावत चली बसंत वधावन नंदराय दरबार।। बानिक बनि ठनि चोखमोख सों, व्रजजन सब इक सार।।१।। अंगिया लाल लसत तन सारी, झूमक नव उर हार।। बैनी ग्रथित रूरत नितंबपर, कहां कहूं वडेडवार।।२।। मृगमद आड़ि बडेरी अखियां, आंजी अंजन पूरि।। प्रफुल्लित वदन हंसत दुलरावत, मोहन जीवन मूरि।।३।। पग जेहरि केहरि कटि किंकिनि, रह्यो विथिकि सुनि मार।। घोष घोष प्रति गलिन गलिन प्रति, बिछुवनकी झनकार।।४।। कंचन कुंभ सीस पै लीने, मदन सिंधुतें भरिकें।। ढांपे पीत वसन जतनन रचि, मोर मंजुरी धरिकें।।५।। अबीर गुलाल अरगजा सोंधो, विधि न जात विस्तारी।। मेनसेन ज्योनार देनकों कमलन कमलनि थारी।।६।। पोहोंची जाय सिंघपोरी जब, विपुल युवति समुदाई।। निजमंदिरतें निकसि जसोदा सन्मुख आगें आई।।७।। भई भीर भीतर भवनन में, जहां व्रजराज किसोर।। भरत भाँवते प्रान पिया कों, घेरि फेरि चहुं ओर।।८।। व्रजरानी जब मुरि मुसिक्यानी, पकरन भई जब करकी।। लै संग सखी लखी कछु बतियां, मिसही मिस उत सरकी।।९।। कुमकुम रंगसों भरि पिचकारी, छिरकें जे सुकुमारी।। बरजत छीटें जात द्रगन में, धनि वे पोंछन हारी।।१०।। चंदन वंदन चोवा मथिकें, नीलकंज लपटावे।।

अलक सिथल ओर पाग सिथल अति, पुनि वे बांधि बंधावे।।११।। भरत निसंक भरे अंकवारी, भुजन बीच भुज मेलें।। उनमद ग्वाल वदत नहीं काहू, झेल खेल रस रेलें।।१२।। कियों रगमगों ललित त्रिभंगी, भयो ग्वालिनी मन भायो।। टकझक में झुकि एकही बिरियां, लालन कंठ लगायो।।१३।। ताल मृदंग लीयें श्रीदामा, पोहोंचे आय सहाई।। हलधर सुबल तोक मधुमंगल, अपनी भीर बुलाई।।१४।। खेल मच्यो मनि खचित चोक में, कविपे कहा कहि आवे।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधरनलाल छबि, देखेंही बनि आवे।।१५।।

भोग में राग-बसंत मदन गोपाल लाल सब सुख निधि, खेलत बसन्त निकुंज देश।। जुवतीजन सोभित समूह तहां, पहरें भूषन नाना वेष।।१।। मुकलित द्रुम नव मंजुरी, कोकिल कल कूजत विशेष।। फूली नव मालती मनोहर, मधुप गुंजारत ता मधेस।।२।। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, आवज बीना किन्नरेस।। निर्तत गुनी अनेक गुनभरे आवत, जीय व्हे-व्हे आवेस।।३।। कुंकुम रंगसों भरि पिचकाई, तकत नेन ओर सीस केस।। रंग रंग सोभा अंग अंग प्रति, निरखी विरह भाज्यो विदेस।।४।। जानत नहीं जाम घरी बीतत, अति आनंद हियै प्रवेश।। दास "चत्रभुज" प्रभु सब सुखनिधि, गिरिवरधर जुवती नरेश।।५।।

संध्या में राग-बसंत कुसुमित कुंज विपिन वृन्दावन, चलिये नन्द के लाला।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

शयन भोग आते समय राग-बसंत ऐसे रीझे भीजे आये री लाल, गावत है धमारी।। होंजु गइ री भोर वृंदावन, भर लीये अंकवारि।।१।। सुथरी अलक बदनपर बिथुरी, निजकरसों अली आप सकोरी।। "हरिदास" के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी, मिलि है बिरह हिरदौरी।।२।।

राग-बसंत सहज-प्रीति गोपालै भावै।। मुख देखे सुख होय सखीरी, प्रितम नैनसों नैन मिलावे।।१।। सहज-प्रीति कमल ओर भानें, सहज-प्रीति कुमोदनी ओर चंदे।। सहज-प्रीति कोकिला बसंते, सहज-प्रीति राधा नंदनंदे।।२।। सहज-प्रीति चात्रक ओर स्वाते, सहज-प्रीति धरनी जल धारे।। मन क्रम वचन दास "परमानंद", सहज-प्रीति कृष्ण अवतारे।।३।।

मान में राग-वसंत ऐसों पत्र लिखि पठ्यौं नृप वसंत।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी राधे नवल लाल (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

माघ शुक्ला ७

शृंगार - फतवी को।

वस्त्र - वस्त्र सफेद बीना कोरके सुथन तथा वागो घेरदार। आज के दिन प्रतिवर्ष श्रीजी वागा पर श्री विट्ठलनाथजी के तरफ से गुलाबी झाई की फतवी धारण करते है। सोनेरी कोर की पाग उसपर मोर पिछ के काम का कतरा ठाड़ीलर मोतीकी। श्रीचरण कमल में मोजड़ी केशरिया साटनकी। फूल की छड़ी, ठाड़ा वस्त्र श्याम तथा पिछवाई सफेद धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार श्रीअंग में शृंगार लाल-सफेद मीना के धराये गये है।

विशेष - श्रीजी राजभोग में बसंत खेले तथा श्रीविट्ठलनाथजी की तरफ से गुडकल आरोगे है।

मंगला में राग-बसन्त **सहज प्रीति गोपाले भावे।।** (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-बसन्त **गावत चली वसंत वधावन नंदराय दरबार।।** (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-बसन्त **चलो चलोरी वृंदावन वसंत आयो।। फूली रहे फूलन कैं झोंरा, मरूत मकरंद उडायौ।।१।। मधुकर कीर कोकिला और खग, कोलाहल उपजायो।। नाचत स्याम नचावत स्यामा, राधा जू राग जमायौ।।२।। चौवा चंदन बूकाबंदन, लाल गुलाल उडायो।। "व्यास स्वामिनी" की छबि निरखत रोम रोम सुख पायो।।३।।**

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) **हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

लालन संग खेलन फाग चली।। चोवा चंदन अगर कुंकुमा, छिरकत घोष गली।।१।। ऋतु बसंत आगम नवनागरि, जोबन भार भरी।। देखन चली लाल गिरिधर कों, नंदजू के द्वार खरी।।२।। राती पीयरी चौली पहरें, नौतन झूमक सारी।। मुखहि तंबोल नेन में काजर, देत भामती गारी।।३।। बाजत ताल मृदंग बांसुरी, गावत गीत सुहाये।। नवल गुपाल नवल व्रजवनिता, निकसि चोहटें आये।।४।। देखो आई कृष्णजु की लीला, विहरत गोकुल माहीं।। कहत न बने दास "परमानंद", यह सुख अनत जु नाहीं।।५।।

नवल बसंत नवल वृंदावन, नवल ही फूलें फूल।। नवल हे कान्ह नवल सब गोपी, निर्तत एकही तूल।।१।। नवल गुलाल उड़े नव बुका, नवल बसंत अमूल।। नवल ही छींट बनी केसर की, मेटत मनमथ सूल।।२।। नवल ही ताल पखावज बीना, नवल पवन कैं झूल।। नवल ही बाजे बाजत “श्रीभट्ट” कालिंदी के कूल।।३।।

भोग में राग-बसन्त नवल बसंत बीच वृन्दावन, मोहन रास रचायौं।। सुर विमान चढ़ि देखन आये, निरखी निरखी सुख पायौं।।१।। नाँचति लाल पग नूपुर बाजैं, मुरली सब्द सुहायौं।। ताल मृदृंग, झांझ, ढफ बाजति, सब इक तार मिलायौं।।२।। साँवल, स्याम, गौर हैं प्यारी, मिलि रससिंधु बढायौं।। गोपी ग्वाल परस्पर नाँचति, अद्‌भुत रंग जमायौं।।३।। कहा कहौं लीला राधाबर की, किनहुं अंत न पायौ।। या लीला पै वार वारनैं, “रामदास” जस गायौं।।४।।

संध्या में राग-बसन्त श्रीगिरिधरलाल की बानिक ऊपर, आज सखी तृन टूटेरी।। चोवा चंदन अगर कुंकुमा पिचकाइन रंग छूटेरी।।१।। लालके नैना रगमगे देखियत, अंग अनंगन लूटेरी।। “कृष्णदास” धनि धन्य राधिका, अधर सुधारस घूँटेरी।।२।।

शयन भोग आते समय राग-बसन्त खेलत बसन्त गिरिधरन लाल।। जहाँ लाग्यौ अबीर, गुलाल भाल।।१।। केसर छिरकति नवल बाल।। लपटावत चोवा अति रसाल।।२।। पाग ढरक रही अर्ध भाल।। देखत मनमथ अति भयौ विहाल।।३।। चन्दन लाग्यो दुहुँ गाल।। तव मुरलीधर रिझवत गोपाल।।४।। श्री गोवर्धनधर रसिक राय।। “चत्रभुज दास” बलिहारी जाय।।५।।

शयन में राग-बसन्त केसर सों भीज्यों वागो, भर्यो है गुलाल।। कहूं कहूं कृष्णागर सोहे तन मोहे मन, अति ही सुन्दर वर बने नंदलाल।।१।। सरस फुलेल अरगजा भीने, कच ढ़रकि रही जु पाग अर्ध भाल।। “जगतरायके” प्रभु मुखहि तंबोल छवि, उरस बनी सोहे सुमन माल।।२।।

मान में राग-वसंत ऐसों पत्र लिखि पढ्यौं नृप वसंत।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

माघ शुक्ला ८

श्रृंगार - ग्वाल पगा का।

वस्त्र - गहरा गुलाबी शाटेन के रूपेरी कोरके सुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर ग्वाल पगा पर रेशम के कामकी मोरशिखा धराई गई है। श्रीचरणकमलों में मोजड़ी श्याम रंग की शाटनकी, ठाड़ा वस्त्र पीला रंगके तथा पिछवाई सफेद रंगकी धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार हरा-लाल-पीला मीना के धराये गये है।

विशेष - श्रीजी बसन्त खेले तथा खेल सामग्री नित्सानुसार धराई गई।

मंगला में राग-बसन्त श्रीगिरिधरलाल **की बानिक ऊपर..** (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बसन्त **जसोदा नहीं बरजे अपनो बाल।। अपनो बाल रसिया गोपाल।।ध्रु.।। स्नान करन गई जमुनातीर।। करकंकन आभरन धरे चीर।। मेरी अल प्रवाह तन गई दीठ।। पाछेतें कान्ह मेरी मलत पीठ।।१।। यह अन्न न खाय, मुख पीवे न खीर।। यह केतीक वार, गयो जमुना तीर।। हों वारोंरी ग्वालिन तेरो ग्यान।। यह पलना झूले मेरो बारो कान्ह।।२।। वृंदावन देखे में तरून कान्ह।।२।। घर आये केसें भये अयान।। उठि चलीरी ग्वालिन जिय उपजी लाज।। "सूरदास" प्रभु के ये काज।।३।।**

राजभोग आते समय राग-बसन्त **आज मदन मोहन बने उपमा कौं को हैं।। रतिपति राजा पाय बांध्यो हू न सौहै।।१।। कोटि सुधा निधि सीतल जो है।। देखत बदन त्रेताप नसौहैं।।२।। ऐसी कोन नागरी जो निमिष बिछोहैं।। प्रभु "रघुनाथदास" ब्रजजन मोहै।।३।।**

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) **हरिरिह ब्रजयुवती शतसंगे।। हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

श्रीवृन्दावन खेलत गोपाल।। बनि-बनि आई ब्रजकी बाल।।१।। नवल सुंदरी नवत माल।। फूले नवल कमल मधि नव रसाल।।२।। अपने कर सुंदर रचित माल।। अवलंबित नागर नंदलाल।।३।। नव गोंप वधू राजत हें संग।। गज मोतिन सुन्दर लसत मंग।।४।। नव केसरि मेद अरगजा घेरि।। छिरकत नागरि कों नवकिशोर।।५।। तहां गोपीग्वाल सुन्दर सुदेश।। राजत माला विविध केस।।६।। नंद नंदन को ध्रुव विलास।। सदा रहो मन "सूरदास"।।७।।

भोग में राग-बसंत आई है आज बसंत पंचमी, खेलन चलो गोपाल।। संग सखा लेहों मनमोहन, हम लै हें व्रजबाल।।१।। चोवा चंदन अगर अरगजा, केसरि माट भराई।। अबीर गुलाल की झोरी भरि-भरि, लेहों हाथ पिचकाई।।२।। छिरकत हंसत चलत वृन्दावन, करत कुलाहल देत हें गारी।। ग्वालन संग लिये नंदनंदन, सखियन संग राधिका प्यारी।।३।। एक नाचत एक धाय मिलावत, ढ़फ मृदंग बजावत तारी।। यह सुख देखि सुरलोक आनंदित, "स्यामदास" बलिहारी।।४।।

संध्या में राग-बसंत जन्म लियौ रीतुराज आज, अति आनंद में बन राई।। रति पति नृपत सदन लरका सुनि, भई पंचमी दाई।।१।। नव पल्लव के मृदुल बिछौना, साखा सुभग प्रयंक।। झगुली कुसुमनुत पहराई, झुलवे विपुन निसंक।।२।। गावत हरिख लड़ाय कोकिला, मोर कीर बतरावे।। प्रातः ही उठि गुलाब चुटकी दे, करि चुचकार खिलावे।।३।। झुक झुक कुंज कली नव डारन, ओढ़े लता सिर सारी।। खिर खिर पड़त कली नव डारन, राई-लोन उतारी।।४।। भंर गुंजार लिये कर झूझना, किलक बजावत गाढ़ी।। दे उसीस द्विज हंसन, बंस बखानत चात्रग ठाढ़ी।।५।। ऐक मेक निस दिवस असित सित, रति रस बन ढाऐ।। मानो हों सेन बांटत तिल चांवर, मनमथ हाथ दिवाऐ।।६।। बाजे विविध बिहंग मदिलरा, कल कुजत बरबानी।। नाम करन विख्यात जगत, सुनत बसंत नर ग्यानी।।७।। ऐसे मदन मोद में भामिन, पिय सों मान न करिये।। मंगल मान बधाई कर जिय, अंग संग भुज भरिये।।८।। यह सुन बिहस चली मंथर गति, हित चित सुकल पली।। मित्र मधुप सुख करन "गदाधर", बिकसी कमल कली।।९।।

शयन भोग आते समस राग-वसंत हो हो हरि खेलत बसन्त।। मुकुलित कोकिल कल कुजति, प्रमुदित मन राधिका कंत।।१।। विविध सुंगध छीट नीकी सोभित, सुरति केलि लीला लसंत।। "कृष्णदास" प्रभु गिरिधर नागर ब्रज भामिनि हिलामिल हंसत।।२।।

शयन में राग-बसन्त केसरी छीट रूचिर बंदन रज, स्याम सुभग तन सोहें।। बिच बिच चोवा लपटानों, उपमा कों कहि को हें।।१।। यह सुख नव वसंत के औसर, राधा नागरि जोहें।। "चत्रभुजप्रभु" गिरिधरनलाल छबि, कोटिक मन्मथ मोहें।।२।।

मान में राग-वसंत ऐसों पत्र लिखि पढ़्यौं नृप वसंत।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

माघ शुक्ला ९

श्रृंगार - पाग तथा बन्द धराया गया है।

वस्त्र - सफेद शुथन तथा वागो घेरदार तथा आज वागा के ऊपर लाल शाटन का बन्द धराया गया है। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर रूपेरी जरी का कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम तथा पिछवाई सफेद।

आभरण - लाल-सफेद मीनाके तथा सोनेके नित्यानुसार धराये गये है।

मंगला में राग-बसन्त जन्म लियौ रीतुराज आज, अति आनंद में बन राई।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बसन्त बन फूले द्रुम कोकिला बोली मधुप झंकारन लागे।। सुन भयो सोर रोर बंदीजन, मदन महीपति जागे।।१।। तिनह दीने अंकुर पल्लव, जे द्रुम पहले लागे।। मानो रति पति रीझ जाचकन, बरन बरन दीये बागे।।२।। नये पात नई लता पहोप, नये नये रस पागे।। नवल केलि बिलसति मोहन संग, "सूर" रंग नये अनुरागे।।३।।

राजभोग आते समय राग-बसंत (बसन्त का पद) श्रीवृन्दावन खेलत गुपाल।। (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह व्रजयुवती शतसंगे।। हरिरिह व्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

स्याम सुभग तन सोभित छीटें, नीकी लागी चंदन की।। मंडित सुरंग अबीर कुंकुमा, ओर सुदेश रज वंदन की।।१।। "कुंभनदास" मदन तन मन बलिहार कीयो नंदनंदन की।। गिरिधरलाल रचि विधि मानों युवतिजन मनफंदन की।।२।।

राजभोग में राग-बसन्त केसरी छीट रूचिर बंदनरज स्याम सुभग तन सोहें।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

भोग में राग-बसंत बहुर बसंत समें ऋतु आयी सुन्दर बर ललना।। सकल सिंगार बनाय सुन्दरी, कमल नयन पे आयो।।१।। सिसरित सीतल बहत मंद गति, रब उतर दिस

आयो।। प्रेम उमंग कोकिला जू बोली, बिरह रैन बिरह जगायो।।२।। द्वादिस बाण रतनारे देखियत, दूह दिस केसू फूले।। मोरे अम्ब और द्रूम बेली, मधुकर पर भ्रम भूले।।३।। इत श्री राधा उत गिरधर, पिय इत गोपी उत ग्वाल।। खेलत फाग रसिक वृंदावन, सुन्दर स्याम तमाल।।४।। चोवा साख जवाद कुंकुमा, छिरकत भर पिचकारी।। उड़त अबीर जोत रवि, दिस दीपक उजियारी।।५।। ताल पखावज बेन बांसुरी, गावत गीत सुहाऐं।। रसिक गुपाल नवल ब्रजवनिता, निकस चोहटे आए।।६।। कुंकुम कुंकुम कसब गावे, बोलत मधुरी बानी।। देत परस्पर गारि मुदित मन, तरूणी बाल सयानी।।७।। सुरपुर, नरपुर, नागलोकपुर, तीहू लोक सुख पायो।। प्रथम बसंत पंचमी लीला, "सूरदास" जस गायों।।८।।

संध्या में राग-बसंत **श्रीगिरिधरलाल की बानिक ऊपर आज सखी तृन टूटेरी।।** (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े।)

शयन में राग-बसंत कुच गडुवा जोबन मोर कंचुकी, बसन ढांपि राख्यों है बसंत।। गुन मंदिर अरू रूप बगीचा, तामधि बैठी है मुख लसंत।।१।। कोटि काम लावण्य बिहारी जू, जाहि देखें ते सब दुख नसंत।। ऐसे रसिक "हरिदास" के स्वामी, ताहि भरन आई प्रभु हंसत।।२।।

मान में राग-बसन्त तु चल श्याम बुलावे भामिन।। यह सुन देखि बेन मधुरे सुर, तेरो नाम ले ले गावे।।१।। देख वृन्दावन की सोभा, ठौर-ठौर द्रुम फूले।। कोकिल नाद सुनति मन आनंन्द, मिथुन विहँगम झूले।।२।। उनमद जोबन मदन कुलाहल, यह औसर हे नीकौं।। "परमानन्द" प्रभु प्रथम समागम, मिल्यो भांवतो जीको।।३।।

पोढ़वा में राग-बसंत **खेलत खेलत पोढ़ी राधे नवललाल गिरिधर पीय संग।।** (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

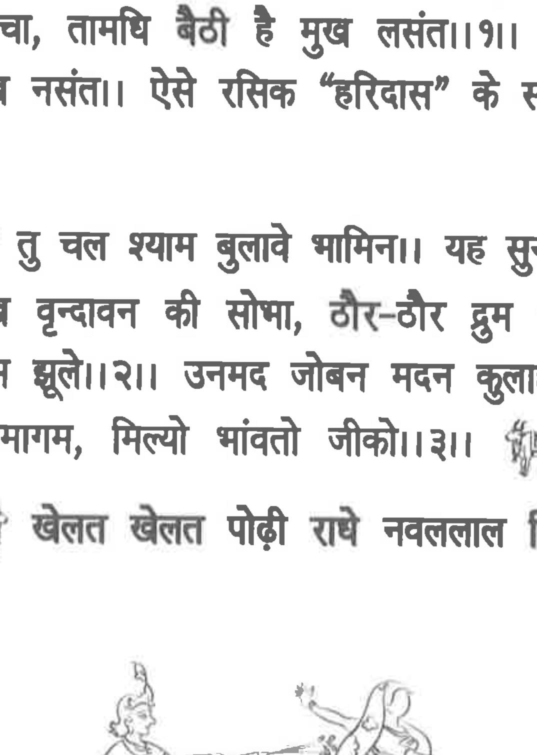

माघ शुक्ला १०

श्रृंगार - केशरियां पाग छोर वाली मोरकी सादी चन्द्रिका

वस्त्र - सफेद शुथन तथ वागो घेरदार कटि में केसरियां पटको रूपेरी कोरका, श्रीमस्तक पर केशरिया रंग की छोर वाली पाग पर मोर की सादी चन्द्रिका धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र लाल रंग के तथा पिछवाई सफेद।।

आभरण - नित्यानुसार हरा-सफेद मीना के धराये गये है।

मंगला में राग-बसंत मधु ऋतु वृन्दावन आनंद न थोर।। राजत नागरी नव किशोर।।१।। जूथिका जुथ रूप मंजुरी रसाल।। बिथकित अलि मधु लाल गुलाल।।२।। चंपक बकुल, कुल, विधि सरोज।। केतकी मेदनी मुदित मनोज।।३।। रोचक रूचिर बहे त्रिविध समीर।। पुलकित निरतत आनंदीत कीर।।४।। पावन पुलिन घन मंजुल निकुंज।। किसलय सैंन रचित सुख पुंज।।५।। मंजिर मुरज ढ़फ मुरली मृदंग।। बाजत मधुर बिना मुखचंग।।६।। मृगमद मलयज कुंकुम अबीर।। चंदन अगर सों चरचित चीर।।७।। गावत सुंदर हरि सरस धमारि।। पुलकित खगमृग बहत न वारि।।८।। "हितहरिवंस" हंस हसनी समाज।। एसें ही करो मिली जुगजुग राज।।९।।

श्रृंगार में राग-बसंत नवल बसंत नवल वृंदावन, खेलत नवल गोवर्धनधारी।। नव पल्लव बन भाम बिराजत, नवल नवल बनी गोकुल नारी।।१।। छिरक सुगंध कुंकुमा केसर, लाल गुलाल बने अति भारी।। देख सुरनर कौतुक भूले मिटत, ताप तन मदन बिथारी।।२।। नवल जमुना जल कमल बिकासत, नवल पवन लागत सुखकारी।। "सूरदास" प्रभु रसिक मुकट मनि, नवल रसिकनी राधा प्यारी।।३।।

राजभोग आते समय राग-बसंत (बसंत के पद) खेलत वसंत वर विट्ठलेश।। आनंदकंद गोकुल सुदेस।।ध्रु.।। श्रीगिरिधर गोविंद संग।। श्रीबालकृष्ण लज्जित अनंग।। श्रीगोकुलनाथ अनाथ नाथ।। रघुनाथ नवल जदुनाथ साथ।।१।। श्रीघनश्याम अभिराम धाम।। कल्यानराय परिपूरन काम।। मुरलीधर आदि समस्त बाल।। सेवक विचित्र सेवा रसाल।।२।। तहां बाजत ताल मृदंग चंग।। जहां उडत गुलाल अबीर रंग।। श्रीगिरिवरधारी जहां खेलत आई।। तहां "लघु गुलाल" बलिहारी जाई।।३।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-बसंत खेलत बसंत वल्लभकुमार।। सोभा समुद्र बाढ्यों अपार।।१।। श्रीगिरिधर गिरिधरन साथ।। भरि रंग कनक पिचकाई हाथ।।२।। श्रीगोविंद बालकृष्णजी संग।। छिरकत डारत बहु भांति रंग।।३।। रस खेलत खेल गोकुलके नाथ।। केसरी रंग सोहत पाग माथ।।४।। श्री रघुपति जदुपति अति सुदेश।। घनश्याम सुभग सुंदर सुवेश।।५।। श्रीकल्यान राय लीला रसाल।। मुरलीधर दामोदर कृपाल।।६।। श्रीगोपीनाथ बालक विनोद।। सेवकजन निरखत मन प्रमोद।।७।। श्रीगोकुल परम सुदेश धाम।। मिलि गावत गीत विचित्र वाम।।८।। बाजत मृदंग मुख चंग रंग।। बीना कठताल पिनाक उपंग।।६।। केसरी चोवा मृगमद फुलेल।। व्रज भामिनि छिरकत रेल पेल।।१०।। झोरी भरि-भरि उड़वत गुलाल।। मुख बोलत हो हो होरी ग्वाल।।११।। यह सुख शोभा मोपे कही न जाय।। “जनदास” निरखि बलिहारी जाय।।१२।।

राग-बसंत खेलत बसंत गिरधरनलाल।। मनमोहन सोहन दृगविशाल।।ध्रु.।। संग सोहत सुन्दर अनंग ग्वाल।। भीने रंग केसरि करत ख्याल।। उडत अबीर पंचरंग गुलाल।। बाजत मृदंग डफ झांझ ताल।।१।। आई बनि बनि मिलि व्रजकी वाम।। श्रीराधा ललितादिक सु नाम।। गावत पंचम बंधी प्रेम दाम।। सोभा पावत भयो नंद धाम।।२।। रंग भरत भरावत करत रंग।। रंग भरे बसन राजत सुअंग।। लुब्धे सुगंध भये मत्त भृंग।। मृदु बोलत डोलत संग संग।।३।। भरि लियो अबीर मुट्ठी सुहेत।। दोऊ तज्यों चाहत पुनि राखि लेत।। दृग मूंदन चमकनि व्है सुचेत।। बाढ़त छबि सोगुनी सुख निकेत।।४।। ले वरन वरन रंग अमोल।। छिरकत हि तुव पिय हित कलोल।। फबि रही बूंद सोहत दुकूल।। मानो फूलि रहे बहु बरन फूल।।५।। भरे नवल वाम गिरिधर हि धाय।। रहे विविध भेद-रंग-अंग छाय।। जहां निरखत सोभा कही न आय।। तहां स्याम रंग जान्यों न जाय।।६।। भई मोहित सुर वनिता विमान।। मोहे गंधर्व सुनि मधुर गान।। रंग भर्यो पिय अति सुजान।। यह राखि हियें “कृष्णदास” ध्यान।।७।।

भोग में राग-बसंत यह देखि पंचमी ऋतु वसंत।। जहां द्रुम अरू वेली सब फलंत।।१।। तहां पठई ललिता करि विचार।। नव कुंजन में करि हैं विहार।।२।। ले आई सब सिंगार साज।। हसः दोरि मिले मानों मदन राज।।३।। नव केसरि चोवा अंगराग।। खेलत गोपाल बढ़्यों अनुराग।।४।। कुल कोकिल कलरव सुख समाज।। अलि गुंजन पुंजन कुंज गाज।।५।। रति कुंभ लई ठाडी निहारी।। मधि राजत सरस सब वेस वारि।।६।। सखी ताल मृदंग बजाय गाय।। तहां "द्वारिकेश" बलिहारी जाय।।

संध्या में राग-बसंत जन्म लियौ रीतुराज आज, अति आनंद में बन राई।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

शयन में राग-बसंत श्रीगोवर्धन की शिखर चारूपर फूली नवमाधुरी जाई।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

मान में राग-वसंत ऐसों पत्र लिखि पढ़्यौं नृप वसंत।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

माघ शुक्ला ११

श्रृंगार - गऊ कर्ण - टीपारो।

वस्त्र - लाल साटेन के रूपेरी कोरके शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर लाल वस्त्र को टीपारो, लाल गऊ कर्ण तथा सोनेरी वादला को घेरो धरायों गयो है। ठाड़ा वस्त्र हरे रंग के तथा पिछवाई सफेद धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार लाल हरे मीना के धराये गये है।

मंगला में राग-बसंत देखीयत लाल लाल द्रुग डोरे।। काके संग खेले, वसंत करि निहोरे।।१।। सजलताई प्रगट मानों, कुंकम रस बोरे।। अरूनताई भई गुलाल, वदन सित छोरे।।२।। अंजन छबि लागत, मानों चोवा छबि चोरे।। वरूनी मानों नूतन पल्लव, अधर भये सिधोरे।।३।। कबहू रस मत्त नाचत, दोऊ कटाक्षन कोरे।। गान सुरति भई मानों, विविध तान तोरे।।४।। देखियत अति सिथिलताई, मांझ झकझोरे।। काहे कूं कहत, कछु जाने मन मोरे।।५।। सनमुख व्हे कबहू मुख, फेरि जात लजोरे।। "रसिक" प्रीतम मेरे, तुम आए काके भोरें।।६।।

श्रृंगार में राग-बसंत चलो चलोरी वृंदावन वसंत आयो।। (यह पूरा पद पेज ५० पर पढ़े।)

संध्या में राग-बसंत नवल वसंत उनए मेघ मोरकी कुहकानी।। पिक बानी सरस बनी कुहु कुहु कुहकानी।।१।। दंपति मधुपन की पाँति अंकुर महुकानी।। "कृष्णदास" प्रभु गिरिधर मदन जिति कोकिला टहुकानी।।२।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-बसंत निर्तत गावति तथा बजावति मधुर मृदंग, सप्त स्वसुरन मिलि राग हिंडोल।। पंचम स्वर ले अलापत उघटत है, सप्ततान मान थेई ता थेई, ता थेई थेई कहति बोल।।१।। कनकवरन टिपारो सिर कमलबरन कछिनी कटि, छिरकत राधा करत कलोल।। "कृष्णदास" वृंदावन नटवत गिरिधर पिय, सुर बनिता वारत अमोल।।३।।

भोग में राग-बसंत कुंज बिहारी प्यारे के संग, खेलत बसंत श्रीवृन्दावन में।। गौर श्याम सोभा रस सागर, मोद विनोद समात न मनमें।।१।। तनसुख की चोली कुमकुम रंग, भिजि लगी न देखियत तनमें।। उरज उघारे से अनियारे, गडि रहै नागर के लोचन में।।२।। धाय धरी कामिनि पिय मोहन, हिये लसति ज्यों दामिनि घन में।। "व्यास स्वामिनि" जुवति जुथमथी, प्रतिबिम्बत मोहन आनन में।।३।।

संध्या में राग-बसंत नवल वसंत उनए मेघ मोरकी कुहकानी।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े।)

शयन भोग आवता राग-बसंत विविध वंसत बनाऐं चलौ, सब देखन कुंवर कन्हाई।। गिर घटिया द्रुम लता सुंगध, अलि ठाडे सजि सुखदाई।।१।। बागो केसरी चोवा सौहे, सुंरग गुलाल उड़ाई।। ब्रज बालक गावत कोलाहल, धुनि "ब्रजाधीस" मन भाई।।२।।

शयन में राग-बसंत ऋतु वसंत तरू लसंत, मन हंसत कामिनी, भामिनी सब अंग अंग, रमत फागरी।। चर्चरी अति विकट ताल, गावत संगीत रसाल, उरप तिरप लास्य, तांडव लेत लागरी।।१।। चन्दन बूका गुलाल, छिरकत तकि नैन भाल, लाल गाल मृगज लेप, अधरन दागरी।। गिरिवरधर रसिकराय, मेचक मुदरी लगाय, कंचुकी पर छापदीनी, चकित नागरी।।२।। बाजत रसना मंजिर, कूजत पिक मोर कीर, पवन भीर यमुना तीर, महल बागरी।। "विष्णुदास" प्रभु प्यारी, भेटत हँसि देत तारी, काम कला निपट निपुन, प्रेम आगरी।।३।।

मान में राग-बसन्त तु चल श्याम बुलावे भामिन।। (यह पूरा पद पेज ५५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

माघ शुक्ला १२

श्रृंगार - सोनाकी गुंडि नाके के वस्त्र छोड़वाली लाल पाग कतरा।

वस्त्र - सफेद सुथन तथा वागो घेरदार, सोनेके गुन्डि वाला धराया गया है। श्रीमस्तक पर लाल पाग छोर वाली पर सोनेरी जरी का कतरा। मोजड़ी लाल साटन की। पिछवाई सफेद तथा ठाड़ा वस्त्र पीले रंग का।

आभरण - हरे लाल मीना तथा सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-बसंत **सब अंग छींटै लागी, नीको बन्यो बान।। गोर अगर अरगजा छिरकत खेलत गोपी कान्ह।।१।। हाथन भरें कनिक पिचकाई, भरि भरि देत सुजान।। सूरनर मुनिजन कौतुक भूले, जय जय यदुकुल भान।।२।। ताल पखावज बेनु बांसुरी, राग रागिनि तान।। "विमलचंद" दास बलि वंदित, नहि उपमाकों आन।।३।।**

श्रृंगार में राग-बसंत **केसरी छीट रूचिर बंदन रज, स्याम सुभग तन सोहें।।** (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-बसन्त **खेलन आई हम, मोहन तुम संग।। बेगि मंगाओ जु अबीर अरगजा, और केसर को रंग।।१।। धाई गहि बैया गिरिधर की, चौवा चन्दन लपटावती अंग।। "हरिवल्लभ" प्रभु दिजे फगुवा जानति तुम्हारे ढंग।।२।।**

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) **हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-बसंत **श्याम सुभग तन शोभित छींटे निकी लागी चन्दन की।।** (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

भोग में राग-बसंत **बन फुले द्रुम कोकिला बोल मधुप झंकारन लागे।।** (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

संध्या में राग-बसंत **तु चल श्याम बुलावे भामिन।।** (यह पूरा पद पेज ५५ पर पढ़े।)

शयन भोग आते समय राग-वंसत छिरकत छीट छबिली राधे, चंदन भरि भरि बोरी रे।। अबीर गुलाल विविध रंग सोंधो, लोचन परि गई रोरी रे।।१।। सर्वस्व बस कियो रसिक कुमारी, प्रेमफन्द हिण्डोरी रे।। "सुर" प्रभु गिरिधरन लाल को, दे रही प्रेम अकौरी रे।।२।।

शयन में राग-बसंत मधु ऋतु वृन्दावन आनंद न थोर।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े।)

मान में राग-बसन्त मानिनी मान छुड़ावन कारन, मदन सहाई वसंत ले आयो।। चतुरंगनि सेना सजि सुलभ, पराग अटपटो छायो।।१।। नीलकमल दल सहस्त्र मानो, गज कदली कुसुम रथ बेगी बनायो।। चंपक जुही गुलाल और कुंज, बहुरंग तुरी सेन सजि धायो।।२।। कुंद कनेर मालती जाती पायक दल आगें जु सुहायो।। नागकेत ध्वजा अरून चंवर इव, स्वेत छत्र मोरि कुसुम धरायो।।३।। अंकुश, किंशुक, सीखण्ड, केतुकी, कुरबक निसान बजायो।। त्रिगुण समीर सुजान छुट धर, जसबंदी अलिकुल मिलि गायो।।४।। कटक संवारि कामिनि अंगअंग, मोहन सों सर चाप चढ़ायो।। "कृष्णदास" गिरिधर सों मिली, रति करि रतिपति हार मनायो।।५।।

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

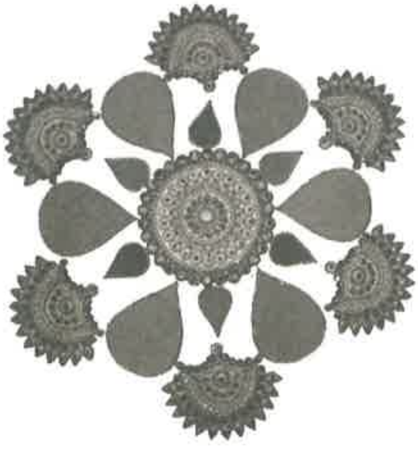

माघ शुक्ला १३

श्रृंगार - सेहरा को।

वस्त्र - आज वागा (जन्माष्टमी वालें) केसरिया जामदानी के रूपेरी कोर के शुथन, वागा चाकदार तथा पटका केसरिया रंग का, श्रीमस्तक पर दुमाला पर लाल हरा सफेद मीना का सेहरा धराया गया है। श्री चरण कमल में मोजड़ी केसरिया साटन की तथा ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम रंग का व पिछवाई सफेद धराई गई है।

आभरण - लाल सफेद मीना तथा सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-बसन्त **केसर सों भीज्यों वागो, भर्यो है गुलाल।।** (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बसंत **भामिनी चम्पेकी कली।। बदन पराग मधुर रस लम्पट, नवरंग लाल अली।।१।। चोवा चन्दन अगर कुमकुमा, करिजू सिंगार चली।। खेलत सरस बसन्त परस्पर, रवि की कान्ति मली।।२।। ताल मृदंग झांझ ठफ बीना, बीच बीच मुरली।। "कृष्णदास" प्रभु नवरंग गिरिधर, हिलमिल रंग अली।।३।।**

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) **हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-बसंत **देखो राधा माधो सरसजोर।। खेलत बसंत पिय नवलकिशोर।।ध्रु.।। इत हलधर संग समस्त बाल।। मधि नायक सोहे नंदलाल।। उत जुवती जूथ अद्भुत स्वरूप।। मधि नायक सोहें स्यामा अनूप।।१।। बहोरि निकसि चले जमुनातीर।। मानों रति नायक जियको धीर।। देखन रति नायक पिय हैं जाय।। संग ऋतु वसंत ले परत पांय।।२।। बाजत ताल, मृदंग, तूर।। पुनि भेरि निसान रवाब धूर।। ढ़फ, सहनाई, झांझ, ढोल।। हँसत परस्पर करत कलोल।।३।। चोवा चंदन मधि कपूर।। सोंख जवाद, अगरजा, चूर।। जाई, जुही, चंपक, रायवेलि।। रसिक सघन में करत केलि।।४।। ब्रज बाढ्यो कोतिक अनंत।। सुंदरि सब मिलि कियो मंत।। तुम नंदनंदन को पकरि लेहु।। सखी संकरषन को गारि देहु।।५।। नवलवधु कीनों उपाई।। चहुँदिशतें सब चली धाई।। श्री राधा पकरि स्याम कों लाई।। सखी संकरषन जिन भाजि जाई।।६।। अहो संकरषन जू सुनो बात।। नंदलाल छांडि तुम कहां जात।। दे गारी बोहो**

विधि अनेक।। तब हलधर पकरे सखी एक।।७।। अंजन हलधर नेन दीन।। केसर कुंकुम मुख मंज्जन कीन।। हलधरजू फगुवा आनि देहु।। तुम कमलनेन कों छुडाई लेहु।।८।। जो मांग्यो सों फगुवा दीन।। नवललाल संग केलि कीन।। हसत खेलत चले अपने धाम।। व्रज जुवती भई पूरन काम।।९।। नंदरानी ठाडी पोरि द्वार।। नोछावरि बहु देत वार।। वृषभान सुता संग रसिकराय।। “जन मानिकचंद” बलिहारी जाय।।१०।।

राग-बसन्त देखो वृन्दावन श्री कमल नैन।। आयो आयो मदन गुन गुदर देन।।ध्रु.।। द्रुम नव दल सुवन अनेक रंग।। प्रति ललित लता संकुलित संग।। कर धरे धनुष कटि कसि निषंग।। मानों बने सुभट साजी कवच अंग।।१।। कोकिल, कुंजर, हय, हंस, मोर।।२।। रथ, सैल, शिला, पद, चर चकोर।। वर, ध्वज, पताक, तरू, तारकेर।। निर्झर, निसान, बाजे भमर भेरि।।२।। जहां नेम सुमति अति मलय वात।। मानों तेज वसन वाने उडात।। रूचि राजत विपिन विलोल पात।। धपि धाय धरत छबि सुरंग गात।।३।। “सूरदास” इम वदन बाल।। आयो काम कृपन शिव क्रोध काल।। फिर चितयो चपल लोचन विसाल।। अब अपनों करि थापिये गुपाल।।४।।

भोग में राग-वसंत खेलि खेलि हो लडेती श्रीराधे, तोही को फब्यों है बसन्त।। सुनि भामिनि दामिनि सी हो तुम, पायो श्याम घन कंत।।२।। जमुना के तट श्रीवृंदावन, परम अनूपम ठाऊँ।। कुंजन कुंजन केलि करो मिलि, सुवस बसो बलि जाऊँ।।२।। मदन गुपाल लाल रसिया को रस तेंई ले जान्यो।। अपनो मन और वा मोहन को, एकमेक करि सान्यों।।३।। उड़त गुलाल धूंधरि मधि, राजत राधा अंग लपटनि।। कहि “भगवान हित राम राय” प्रभु यह छबि हृदय समानी।।४।।

संध्या में राग-बसंत और राग सब भये बराती, दुल्हे राग बसन्त।। मदन महोत्सव आज सखिरि, बिदा भयौ हेमंत।।१।। मधुरे सुर कोकिल कल कुजत, बोलति मोर हँसत।। गावति नारि पंचम स्वर ऊँचे, जैसें पिक गुणवंत।।२।। हाथन लई कनक पिचकाई, मोहन चाल चलंत।। “कुंभनदास” श्यामा प्यारी को, मिल्यों है भाँमतो कंत।।३।।

शयन भोग आते समय राग-बसंत केसरी छींट रूचिर बंदनरज स्याम सुभग तन सोहें।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

शयन में राग-बसंत चंपो, गुलाब, केतकी, जाई, मोलसरी ले आईरी, कामन मोर बधावन कंत।। केसर, चन्दन, कृष्णागर, कपूर, कुमकुमा मेल अरगजा, भरत लालन अंग विकसंत।।१।। रंग रंग के अम्बर गात सोहेरी, भेख धरे क्रीड़त, बन ता आसपास, लालन भांवर लेत, रीधान भयो री नसंत।। विचित्र महर खेले धमार, लाल गिरिधर पिय, मानी री ऋतु बसंत।।२।।

मान में राग-बसन्त मान तजो भजो कंत, ऋतु बसंत आयो।। वन शोभा निरखी निरखी, पथिकन सुख पायो।।१।। फूल बनराई जाय, मधुकर लपटायो।। अब मोर ठोर ठोर, वृंदावन छायो।।२।। अति सुगंध बहत वायु, बस पराग उडायो।। उनमद झंकार करति, विरही जन डरायो।।३।। तिहारैं हित कारन मैं, यह सब्द सुनायौ।। "रसिक" प्रितम जाय मिलौं, युवतिन मन भायौ।।४।।

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

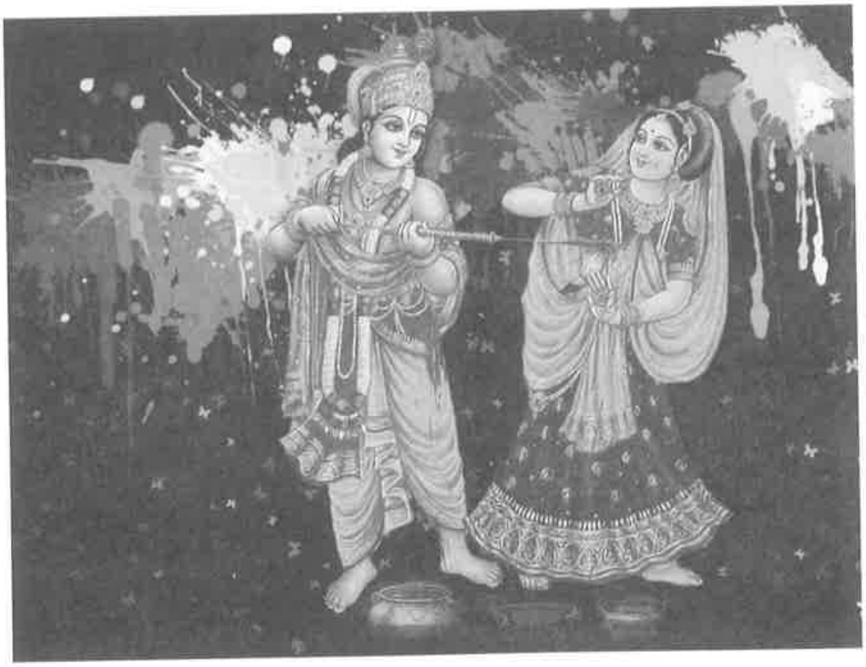

माघ शुक्ला १४

श्रृंगार - पाग गुलाबी छज्जेदार, खिड़कीदार उसपर जरी काम का कतरा।

वस्त्र - सफेद शुथन तथा वागो चाकदार, कटिमें पटको गुलाबी। श्रीमस्तक पर पाग गुलाबी, छज्जेदार खिड़कीदार उस पर जरि के काम का कतरा धराया गया है। श्रीचरणकमलों गुलाबी साटन की मोजड़ी, ठाड़ा वस्त्र हरा रंग के तथा पिछवाई सफेद धराई गई है। अनोसर में फगवा के अनेक प्रकार के भोग आये है।

आभरण - लाल मीना व सोनेके आभरण धराये गये है।

मंगला में राग-बसंत एक बोल बोलों नन्द नन्दन, तो खेलों तुम संग।। परसी जिन काहूकौं प्यारे, आन अंगना अंग।।१।। बरजत हों बीरि काहू की, जसुमति सुत जिन लेहू।। परिरंभन आलिंगन चुंबन, नैन सेन जिन देहु।।२।। मेरे खेल बीच कोऊ भामिनि, आय लाल को भरि हैं।। प्राणनाथ हौं कहे देती हों, मो पै सही न परि हैं।।३।। प्रभु मोहि भरो भरौं हौं प्रभु को, खेलो कुंज बिहारी।। "अग्र स्वामि" सों कहत स्वामिनी, रंग उपजेगो भारी।।४।।

श्रृंगार में राग-बसंत कुसमित कुंज विपुन वृन्दावन चलिये नन्द के लाला।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

राग-बसंत श्रीगोवर्धन की सिखर चारू पर फूली नवमाधुरी जाई।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-बसंत चटकिली चोली पहेरे तन, बिच बिच चौवा लपटानों।। परम प्रिय लागत प्यारी कों, अपने प्रीतम को बानो।।१।। देखत शोभा अंग अंग की, मनसिज मन ही लजानो।। "सुघरराय" प्रभु प्यारी की छबि, निरखत मोह्यो गोवर्धन रानो।।२।।

राग-बसंत छीट छबीली तन सुख सारी, प्यारी पहेरे सोहै।। नवल लाल रसरूप छबिलो, निरखत मनमथ मोहै।।१।। केलि कला रस कुंज भवन में, क्रीडत अति सुख होहै।। "हरिदास" के स्वामी श्यामा कुंज बिहारी, उपमा को कहि कोहै।।२।।

भोग में राग-बसंत देखन बन ब्रजनाथ आज अति बाढ्यो है अनुराग।। मानो मदन बसन्त मिलि दोऊ, खेलत डोलत फाग।। द्रुमगन मध्य पलाश मंजुरी, उठत अगिन की न्याई।। अपने अपने महेल मनोहर, होरी हरखि लगाई।।२।। केकी कीर कपोत और खग, करत कुलाहल भारी।। जन जन खेलत ग्वाल परस्पर, देत दिवावत गारी।।३।। झील्ली झांझ निर्झर निशान डफ, भेरि भंवर गुंजार।। मानो मदन मंडली रची, पुर बीथनि विपिन बिहार।।४।। नवदल सुवन अनेक वरन वर, विपटन भेख धरे।। जनु राजत ऋतुराज सभा में, हंसि बहु रंग भरे।।५।। कुंज-कुंज कोकिल कल कूंजत, बानीक विमल बढ़ी।। जानो कुल बधु निलज्ज भई है, गावत अटन चढ़ी।।६।। कुसुमित लता जहां देखियें, अलि तह तहीं चली जात।। मानो बिपट सबही अवलोकत, परसत गणिका गात।।७।। लीने पुष्प पराग परस्पर, फिरत चहू दिश धारा।। अति आसक्ति संयोगिनी बिरहिनि, छांडत करि भर भारा।।८।। और कहा लगि कहों कृपानिधि, वृंदा विपुन समाज।। "सुरदास" प्रभु सब सुख क्रिडत, ब्रह्म तुमारो राज।।९।।

संध्या में राग-बसंत बहुर बसंत समें ऋतु आयी सुन्दर बर ललना।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

शयन भोग आते समय राग-बसन्त श्याम सुभग तन शोभित छीटें नीकी लागत चन्दन की।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

शयन में राग-बसंत श्री गोवर्धन की शिखर चारू पर फुली नव माधुरी जाई।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

मान में राग-वसंत ऐसों पत्र लिखि पढ्यौं नृप वसंत।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

माघ शुक्ला १५

होरी रोपणी का उत्सव

(नक्षत्र अनुसार चर्तुदशी या पूर्णिमा को होता है)

श्रृंगार - पाग चन्द्रिका तथा चौवा की चोली का।

वस्त्र - सफेद शुथन तथा वागो घेरदार कटीमें पटका मोठड़ादार, चौवा की चोली धराई गई है। श्रीमस्तक पर पाग श्याम खीड़की की उसपर मोर पिछ का कतरा। मोजड़ी श्याम पिछवाई सफेद धराई गई है।

आभरण - सोना, माणक-मोती के आभरण नित्यानुसार धराये गये है।

मंगला में राग-बसंत सांची कहो मनमोहन मोसों तो खेलौ तुम संग होरी।। आजकी रैन कहां रहे मोहन, कौन करी बरजौरी।।१।। मुखपैं पीक, पीठिपैं कंकन, हियें हार बिन डोरि।। जिय में और ऊपर कछु औरें, चाल चलत कछु औरी।। मोहि बतावत मोहन नागर, कहा मोहि जानत भोरी।। भोर भयै आये हों मोहन, बात कहत कछु जौरी।।३।। “सूरदास” प्रभु ऐसी न कीजे, आय मिलो कहा चोरी।। मन मानै त्यों करत नंदसुत, अब आई है होरी।।४।।

श्रृंगार में राग-बसंत चटकिली चोली पहेरे तन बिच बिच चौवा लपटानो।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-बसंत लान संग खेलनफाग चली।। (यह पूरा पद पेज ५० पर पढ़े।)

भोग में राग-बसंत देखत बन ब्रजनाथ आज अत उपजत है अनुराग।। (यह पूरा पद पेज ६७ पर पढ़े।)

संध्या में राग-बसंत बेगि चलो बन कुंवरि सयानी।। समय बसन्त, विपिन मधि हय गज, मदन सुभट नृप फोज पलानी।। चहूं दिस चांदनी चमू चय, कुसुम धरी धूंधरी उड़ानी।।

सोरह कला छिपांकर की छबि, सोहत छत्र सीस कर तानी।।२।। बोले हंस चपल बंदी जन, मनौं प्रंससित पीक वर बानी।। धीर समीर रटत बन अलिगन, मानौ काम कर मुरली सुठानी।।३।। कुसुम सरासन बनि हि बिराजति, मनो मान गढ़ आन भानी।। "सुरदास" प्रभु की वेई गति, करौ सहाय राधिका रानी।।४।।

शयन भोग आते समय राग-गौरी ऋतु बसन्त सुख खेलीयें हो, आयो फागुन मास।। होरी डांडो रोपियो, सब व्रजजन मन उल्लास।।१।। गोकुल के राजा।।ध्रु.।। रजनी मुख व्रज आईयो, गोधन खिरक मंझार।। सखा नाम सब बोलकें, घर घर ते देत बगार।।२।। बडे गोप वृषभान के, आये सब मिल पोरि।। श्रवण सुनत प्यारी राधिका, चढि चित्रसारी दौरि।।३।। उझकि झरोखा झांकियो, दोऊन मन आनंद।। ऐसी छबि तब लागियो, मानों निकस्यों घटातें चंद।।४।। वासर खेल मचाईयो, नेरे आयो फाग।। झूमक चेतव गावही, मनमोहन गौरी राग।।५।। नरनारी एकत्र भये, घोषराय दरबार।। चहुं दिसतें सब दौरियो, भूषण वसन सिंगार।।६।। अगणित बाजे बाजही, रूंज मुरज निसान।। ढ़फ दुंदुभी ओर झालरी कछुव न सुनियत कान।।७।। पिचकाई कर कनक की, अरगजा कुंकुम घोर।। प्राणपिया को छिरक ही तकि तकि नवल किसोर।।८।। बहुरी सखा सब दौरियो आगै दै बलवीर।। युवती जन पर बरख हीं नवल गुलाल अबीर।।६। ललिता विसाखा मतो मत्यों, लीनों सुबल बुलाय।। चेरी तेरे बाबा की, नेंक मोहन को पकराय।।१०।। तबें सुबल कौतुक रच्यों, सुनो सखा एक बात।। इने जू भीतर जानदेहु, बोलत जसोदा मात।।११।। हरैं हरैं सब रगि चली, नेरें निकसी आय।। सैन सबैं दे दौरियो, पकरे बल मोहन जाइ।।१२।। प्यारी को अंचल लियौ, और पियको पटपीत।। सकत ही गँठजोरों कियो, भले बने दोऊ मीत।।१३।। फगुवा में मुरली लई, ओर कंठ को हार।। श्री राधा को पहिराईयो, हँसत वदन तन हेर।।१५।। यह विध होरी खेल ही, ब्रज वासिन संग लगाय।। युगल कुंवर के रूप पै, जन "गोविन्द" बलि बलि जाय।।१६।।

मान में राग-बसंत मान तजो भजो कंत ऋतु बसंत आयो।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

फाल्गुन मास की विशेषताएँ

१. **वसन्तोत्सव के ४० दिन की व्याख्या:-** चालीस दिन की सेवामें वसन्त दस दिन। ये १० दिन श्रीयमुनाजी के है। पूर्णता में डंडा रोपण का उत्सव आप श्रीयमुनाजी को ही है। दस दिन धमार तथा दस दिन फाग व दस दिन होरी के है। वसंत के १० दिन प्रिया-प्रीतम को बैठाकर शांत भाव से सूक्ष्म खेल खिलाया जाता है।

२. **धमार:-** ये दस दिन चंद्रावलीजी के हैं। फाल्गुन कृष्णा १ से धमार को प्रारंभ, इसमें ब्रजभक्त कन्हैया को पकरिवे का यत्न करें। समस्त मंडली जो समान अधिकारों वाले है, वे अपने टोल को लाकर खेलते है।

३. **फाग:-** प्राणनाथ श्रीकृष्ण रस देकर फाग खेलते है। गोकुल की गली में, बरसाने की गली में घूम-घूम कर मस्ती से गाते, बजावते, नाचते पधारे है।

४. **होरी:-** इसमें दो दल बने, गाँव के बाहर चौक में यह खेल होता है। एक दल दूसरे दल के खिलवैयाकों अपने दल में ले जाय, मुरली छीनके साड़ी पहराय, सखी बनावें तथा अपने दल से बाहर जाने न दें तथा जब हा हा खाय तब छोड़े।

५. **डांडा रोपण को उत्सव:-** फागण वदी एकम से पन्द्रह दिन काम चढ़े व पन्द्रह दिन काम उतरे। ब्राह्मण से स्वस्ती वाचन कराकर रोपण की विधि संपन्न की जाती है। इसमें गठजोर कराय विविध प्रकार की रसलीला, क्रीड़ा, हास्य-विनोद का प्रारंभ होता है।

६. **श्रीनाथजी का पाटोत्सव:-** मथुरा (सतधरा) में वि.सं. १६२७ फाल्गुन कृष्णा ७ गुरूवार को श्रीजी को पाट बैठाये सो यह उत्सव सर्वत्र प्रसिद्ध हुआ। श्रीजी को सिंहासन पर विराजमान करना पाट उत्सव कहा जाता है।

७. **फाल्गुन शुक्ला १०** को गो.ति. श्री इन्द्रमन को जन्मोत्सव सं. २००६ में हुआ सो इसे उत्सव रूप में माना जाता है। सेहरा को श्रृंगार (सोना को) अधरंग किनारीदार चाकदार वागा को भारी श्रृंगार होता है। आज का शृगार सेवा श्री विसाखाजी की है। गुलाल कुंड का मनोरथ होता है। होलकाष्टक फाल्गुन शुक्ला ८ से प्रारंभ होता है।

८. **कुंज एकादशी:-** बारह महिनों में कुंज एकादशी के नाम से पुष्टिमार्ग में मानी जाती है। चार दिन पृथक युथ के डोल झूले। डोल के कीर्तन होवे। श्री नवनीय प्रियजी आज श्रीनाथजी की गोद में विराजते है। द्वादश वन चौबिस उपवन की भावना से केल के खम्भ बांधे जाते है।

९. **फाल्गुन शुक्ला १५ :-** होरी का उत्सव माना जाता है।

फाल्गुन कृष्णा १

श्रृंगार - पाग कतरा का।

वस्त्र - सफेद बिना कोर के। शुथन तथा वागो चाकदार श्रीमस्तक पर पाग सफेद उस पर सोनेरी जरी काम का जमाव का कतरा। मोती का। शीरपेच, शीश फूल, कर्ण फूल, सभी लाल मीना के। ठाड़ीलड़ लुम सोनेरी बादलाकी, श्रीमुखारविन्द पर तिलक, मोजड़ी लाल शाटन की, ठाड़ा वस्त्र श्याम, पिछवाई सफेद धराई गई है।

आभरण - अनवट नहीं धराई जाती है।

श्रीमुखारविंद पर तिलक माणक का, अलंकार कमलाक्ष नखवेशर माणक मोतीकी तथा चिबुक हीराको।

श्रीअंग में श्रृंगार मध्य का हार लाल मीना तथा सोने के, गुंजामाला तथा फूल की माला हस्तपान, पोंची, बाजुबन्द सभी लाल मीना के।

श्रीचरण कमलों में नुपुर सोना के। वेणुवैत्र लाल सफेद मीना के तथा फूल की छड़ी व गेंद।

विशेष - श्रीजी बसन्त खेलें गुलाल-अबीर उड़ाये गये तथा आरती हुई तथा फूल बरसाये गये।

मंगला से श्रृंगार तक राग-बिलावल **धोष नृपतिसुत गाईयें, जाके बसिये गाम।। लाल बलि झूमका हो।।ध्रु.।। बहुरी सुहागिनी गाईये, जाको श्रीराधा नाम।।लाल।।१।। चलीहैं सकल व्रजसुन्दरी, नवसत साजि सिंगार, गावत खेलत तहां गई, जहां घोषराय दरबार।।२।। जाय नैन भरी देखिये, सुन्दर नन्दकुमार।। नील पीत पट मंडिता, उर गज-मोतिन हार।।३।। सखा संग अति रस भरे, पहरे विविध रंग चीर।। गीत विचित्र कुलाहल, ओर व्रज वासिन भीर।।४।। डिमडिम दुंदुभी झालरी, रूंज मुरज ढ़फ ताल।। मदन भेरी राय गिडगिड़ी, बिच-बिच बैनु रसाल।।५।। अति रस भरी व्रजसुन्दरी, देत परस्पर गारि।। अंचल पट मुख दे हँसी, मोहन वदन निहारि।।६।। पहलो झूमक ताही कों, जाको मोहन पूत।। देखी परे सिर मोहनी, युवती जनमन धूत।।७।। दूजो झूमक ताही कों, जाकी राधा नारि।। पिय प्यारी रोके गये, मन में चौंप विचारि।।८।। जुवति कंदब सिरोमनी, राधा वर सुकुमारी।। उत व्रज सिसुगन नायिका, बलि और गिरवरधारी।।६।। एकन कर बुका लिये, एक गुलाल अबीर।। प्रमदा गन पैं बरख ही, कूके देत अहीर।।१०।। रतन खचित पिचकाईयाँ, नव कुंकुम जल घोरि।। पिय सनमुख व्है छिरकहीं, तकि तकि नवल किशोरी।।११।। श्याम सुभग तन सोहही,**

नव केसरि के बिन्दु।। ज्यो जलधर में देखियतु, मानो उदित बहु इंदु।।१२।। युवति यूथ मिली धाइयो, पकरे मोहन जाय।। नव केसरि मुख माँडिके, छांडे आँखि अँजाय।।१३।। यह विधि होरी खेलही ज्ञाति बंधु संग लाय।। पूरण शशी निस डहडही, पून्यो होरी लगाय।।१४।। परिवा सकल सुघो जन, भानुसुता चले न्हान।। अरगजा अंग चढाईयों, विमल वसन परिधान।।१५।। दुतिया बंदन बांधियों, सिंघासन युवराज।। छत्र चंवर "गोविंद" गहे, श्रीवल्लभ कुल सिरताज।।१६।।

राजभोग आते समय राग-बिलावल नन्द सुवन व्रज भांवते, फाग संग मिलि खेलो जू।। आज हमें तुमें जान लीजों, युवती दल पेलो जू।।१।। रसिक सिरोमनी सांवरे, श्रवन सुनत उठि धाए जू।। बली समेत सब टेरि कें, घर घरते सखा बुलाये जू।।२।। बाजे बहु विधि बाजहीं, ताल मृदंग उपंगा जू।। डिम डिमी दुंदुभी झालरी, आवज कर मुख चंगा जू।।३।। उततें नवसत साजिके, निकसी सकल व्रज नारी जू।। झुंडन आई झुमि कैं, कल गावत मीठी गारी जू।।४।। केसरी कुंकुम घोरिके, भाजन भरि भरि लाई जू।। छूटी सनमुख स्याम के, करन कनिक पिचकाई जू।।५।। उतही समाज गोपाल सों, भरे महारस खेले जू।। चोवा मृगमद सानि कें, युवती यूथ पर मेलें जू।।६।। शोभित वालिक वृंद में, हरि हलधर की जोरी जू।। उतही चतुर चंद्रावली, सब गुणनिधि राधागोरी जू।।७।। सोंह वदे ललिता कहे, कोउ पग न पिछोंडे डारें जू।। इत नायक उत नायिका, को जीते को हारे जू।।८।। टिके परस्पर देखिके, खेल मच्यो अति भारी जू।। इत उत ओट न मानही, चौंकी परे नरनारी जू।।९।। युवती यूथ दल पेलि कें, छेकि सुबल गहि लीने जू।। कण्ठ उपरना मेलिके, खेंचि आप बस कीनें जू।।१०।।

नोटः- इसके आगे का आधा पद राजभोग में अष्टपदी के बाद गाया जाता है।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह व्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

बाकी का पद राग-बिलावल सुनो सुबल सांची कहूं, तो भले छूटन पाओ जू।। छलबल बानिक बानिके, नेक हलधर को पकराओ जू।।११।। बहोरी सिमिटि व्रज सुन्दरी, संकरषण गहि घेरे जू।। फेंट गहि चंद्रावली, तब उलटि सखन तन हेरे जू।।१२।। सोंधों नावें सीसते, एक काजर ले आई जू।। मोहन हंसी मुरियों कह्यो, देखो दाऊ जू आंखि अंजाई जू।।१३।। फिर प्यारी नागरि राधिका, तके स्याम जहां ठाडे जू।। ओर सखिन की ओट व्हे, गहे ओचका गाढे जू।।१४।। देख सखी चंहु औरतें, दौरी आय लपटानी जू।। अंग-अंग बहु

रंग सो रंगे, करत बात मनमानी जू।।१५।। केसरि सों पट बोरिके, श्रीमुख मांड्यो रोरी जू।। तारी हाथ बजाय कें, बोलत हो हो होरी जू।।१६।। मगन भई ब्रज सुन्दरी, नवरस भीज्यो हियो जू।। इत अग्रज उत स्याम पे, दुहुं दिस फगुवा लीयो जू।।१७।। परसि परम सुख उपज्यो, भयो तियन मन भायो जू।। सादर चारू चकोर ज्यों, मानो विधु प्रीतम पायो जू।।१८।। नागरि अति अनुराग सो, मुदित वदन तन हेरे जू।। सर्वस्व वारे वारने, एक अंचल हरि पे फेरे जू।।१९।। "चत्रभुज" प्रभु संग खेल ही, यह विधि घोष कुमारी जू।। सब व्रज छायो प्रेम सों, सुख सागर गिरिधारी जू।।२०।।

भोग व संध्या राग-गौरी ऋतु वसंत सुख खेलिये हो.... (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

शयन में राग-कल्याण नवल कुँवर वृजराय के, लाल खेलत रस भरे होरी हो।। गौर स्याम तन राज हीं, ओर बल मोहन की जोरी हों।। ऊँचे चढ़ जब टेरियो, सुबल श्रीदामा भाई।। श्रवण सुनत सब धाइयो, ओर बोलत कुंवर कन्हाई।।२।। मंदिर ते सब सजि चले, जाय जुरें सिंघ पोरी।। मोहन मुरली बजाइ, सुनत व्रजवधू दोरी।।३।। चहुंदिशते बाजे बजे, रूंज मुरज ढ़फ ताल।। दुंदुभी डिमडिम झालरी, बिच बिच वेणु रसाल।।४।। व्रजजन सब एकत्र भये, एक ओर व्रजनारी।। गावत गीत सुहावने, हंस हंस दे सब गारी।।५।। अरगजा भरि भरि पिचकाई, अंचल बीच दुराई।। बलराम कृष्ण को छिरकहिं वदन मोरि मुस्काई।।६।। गोप सखा सन्मुख भये, अरगजा कुंकुम घोरी।। घेरि सकल व्रजसुंदरी, एक एक कर बोरी।।७।। युवती यूथ मध्य राधिका, उत व्रजराज किशोरा।। युग शशि रूप किरण पीवें, लोचन चारू चकोरा।।८।। सब सखियन मिल मतो मत्यो, मोहनको पकराई।। छल बल सों नहीं पाइये, किहिं मिस पकरें जाई।।९।। ललिता आगे ले दोरी मोहन लीने घेरि।। पियप्यारी गठ जोरियो, हँसत वदन तन हेर।।१०।। गाल बहुत तुम मारत, सुनो सखा बल भाई।। जाय कहों व्रजराज ते, मोहन लेहुँ छुडाई।।११।। यह विध होरी खेलहीं, देत सकल आनन्द।। "गोविन्द" बलबल बलजाई, जय जय गोकुलचंद।।१२।।

मान के पद राग-बसंत खेलि खेलि हो लडेती राधे, हरि के संग बसंत।। मदन गोपाल मनोहर मूरति, मिल्यो है भांवतो कंत।।१।। कोन पुन्य तप को फल भामिनी, चरण कमल अनुराग।। कमल नेन कमला को वल्लभ, तोकूं मिल्यों सुहाग।।२।। यह कालिंदी यह वृंदावन, यह तरूवर की पांति।। "परमानन्द" स्वामी संग क्रीड़ति, द्योंस न जानी राति।।३।।

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा,.... (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

फाल्गुन कृष्णा २

श्रृंगार - पाग कतरा व गुलाल की चोली।

वस्त्र - हरा रंग की शुथन व वागों घेरदार उस पर लाल गुलाल की चोली धराई गई है। कटि में लाल पटको रूपेरी कोर को तथा पाग लाल खीडकीदार धराई है। उस पर लाल रेशम काम का कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र वादली रंग का व श्रीचरण कमलों में मोजड़ी लालसाटन की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार मध्य को श्रृंगार।

विशेष - आज श्रीअंग में गुलाल की चोली धराई गयी है।

मंगला में राग-बिलावल **नन्द सुबन वृज भांवते फाग संग मिलि खेलोजु।।** (यह पूरा पद पेज ७२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल **बदत नाहिन ग्वालिनी, जोबन के गारे।। या व्रजमें अेंडी फिरे, मनमथ उपचारे।।१।। पहिरें रातो पोमचा, लहेंगा हरि किनारैं।। अति रसते निकरी फिरे, अचरा ढिंग डारै।।२।। नकवेसरि गजरा बने, चोकी खग वारै।। अंगिया खमकि खयें बनी कुच सूं भरवारें।।३।। फुफुंदी डोरी के झबा, सोहें फोंद फुंदारै।। सोनेकी वांकी बिंदुली, सोहे ललित लिलारै।।४।। दीरघ लोचन छबि छटा, कजरा अनियारै।। “जगन्नाथ” कविरायके प्रभु, मोही कान्हर कारै।।४।।**

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) **हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

धमार का पद राग-धनाश्री **रिझवत रसिक किसोर कों खेलत प्यारी फाग।। पहिरे नवरंग चूनरी अंगिया, आछे अंग लाग।।१।। कनक खचित खुभिया बनी, दुलरी मोतिन बिच लाल।। किंकिनी नूपुर मेखला, लोचन सुख सुखद विसाल।।२।। गौर गात की कहा कहूं, बेसरि रही कच अरूझाय।। सब सुंदरि मिलि गाव ही, देखत मनमथहि लजाय।।३।। मृदु मुसकनि मुखपट दयो, पिचकाई कर लई दुराय।। वंदन बूका अंजुली, नागरि दई हे उडाय।।४।। मींडत लोचन नागरि, पकर्‍यो पीतांबर धाय।। सबे सखी जूरि आय गई, घेरेहो मोहन बलि आय।।५।। मुरली छीनि, चुंबन दीयो, कीनों अधरामृत पान।। कमल कोस ज्यों**

भृंगकों छांडत, नहीं बिन भये बिहान।।६।। मानो बहुरंग विकसत कमल, मधुकर मन मोहनलाल।। नयनन स्वाद सबे गहे, पीवत मकरंद रसाल।।७।। ऋतु वसंत वन गहगह्यो कूजत शुकपिक अलि मोर।। तान मान गति भेदसों, गावत गिरिधर पिय जोर।।८।। बेनु झांझ ढ़फ झालरी, गोमुख ताल मुरज मुखचंग।। युवती यूथ बजावही, निर्तत मधि सामल अंग।।९।। त्रिगुन समीर तहां बहे, सुंदर कालिंदी कूल।। सुर सुपति सुर अंगना, डारत जयजय कहि फूल।।१०।। निरखि निरखि सचु पावही, हम न भये खग मृग ब्रजवास।। श्रीवल्लभ पदरज प्रतापबल, गावत “विष्णुदास” रसरास।।११।।

भोग संध्या में राग-गौरी मुरली अधर धरे नन्द नन्दन हो हो होरी बोले जू।। लियें सखा संग देत कूंक सब, ब्रज खोरिन में डोले जूं।।१।। पहरें वसन अनेक वरण तन, नील पीत सित राते।। सुरंग गुलाल अबीर फेंट भरि, फिरत महारस माते।।२।। बाजत ताल मृंदग झांझ डफ, और बांसुरी ध्वनि थोरी।। गावत सरस धमार नयो रंग, रसिक मंडली जोरी।।३।। श्रवण सुनत सब गोकुल नारी, घर घर तें उठि दौरी।। सजे समाज सबै मिलि आई, नंदराय की पौरी।।४।। पहरे दिव्य कटाव की चौली, नौतन झूमक सारी।। मुनियन जैसे झुंडन गावत, परम भामती गारी।।५।। विविध सिंगार बने सबहिन अंग, भूषण नाना वेशा।। मुख हि तंबोल नयन काजर, सिर सेंदूर मांग सुदेशा।।६।। कंठसरी मखतूल पोति उर, गज मोतिन के हारा।। कर कंकण कटि किंकिणी की छबी, और नूपुर झनकारा।।७।। अलकावली आड मृगमद की, वरनि सके को भांती।। खुटिला खुभी रूचिर नकवेसर, दूर करत रवि कांति।।८।। इनमें मुख्य राधिका नागरि, सबहिन ऊपर सोहें।। कुटिल कटाक्ष फागके अवसर, प्रीतम को मन मोहे।।९।। कनक वरण वृषभान किशोरी, नव घन नंद किशोरा।। प्यारी चाव चौगुनों चित भयो, चितवति पिय की ओरा।।१०।। बालक वृंद नक्षत्रन महिया, छबि लागत गोविंदा।। ग्वालिनी मानो चकोर की सेना, हेरत पूरण चंदा।।११।। छुटी तरूणी महा मदमाती, कुल अंकुश नहीं मानें।। सोंधो बहुत गुलाल लाल के, नैननि तकि तकि तानें।।१२।। उत बूका वंदन अंजुली भरि, सम्मुख ग्वाल उडावत।। दुहूं दिश माच्यों खेल परस्पर, जित तित भरत भरावत।।१३।। नर नारीन के चोंप बढी जिय, कमलन मार मचाई।। रूपे सुभट रनधीर मानो, कोऊ इत उत ओट न जाई।।१४।। युवति युथ पेलि सन्मुख व्है, जित तित सखा भजाये।। जाय गह्यो पट पीत श्याम को, जीत के बाजे बजाये।।१५।। कोऊ कर तें मुरली ले भाजी, कोऊ मणि मोतिन माला।। कोऊ फेंटा गहि कहत हमारो, फगुवा देहु गोपाला।।१६।।

चंद्रावलि चोवा चंदन ले, सीस स्याम के नावत।। ललिता विसाखा नयन आंज मुख, रोरी हरद लगावत।।१७।। कोऊ प्यारी को अंचल लेकें, पिय के पट सों जोरें।। कोऊ कहे करो जुहार लड़ेते, कोऊ हंसत मुखमोरे।।१८।। मगन भई तनकी सुध भूली, उर आनंद न समाई।। आलिंगन दे श्रीमुख चितवत, मानो रंक निधि पाई।।१६।। वरन वरन भये वसन भीजि रंग, कीच धरणि पर बाढी।। टूटे हार छूटी अलकावली, फटी कंचुकी गाढी।।२०।। सम्मुख जीत चलीं व्रजयुवती, गई यमुना के कुलन।। लीला ललित निहारि देवगण, बरखनि लागे फूलन।।२१।। इहिं विध फाग संग मिल खेले, उत गोविंद इतगोरी।। "चत्रभुजदास" रहो व्रज अविचल, राधा गिरिधर जोरी।।२२।।

शयन भोग आते समय राग-गौरी आओ मिल व्रज की नारी, होरी धूम मचाओ।। चंदन वंदन कुमकुम ले, मोहन मुख लगावो, तारी दे गारी गावो।।१।। केसर कनक पिचकारी, भर लै करन धाऔ।। "हरिकिसोरी" सन्मुख होय, धार सौ धार मिलाऔ।।२।।

शयन में राग-गौरी कमल नयन के कौतुक, सुनो सहेली आय।। आज हमारे आये, नख सिख भेष बनाय।।१।। बैठे आय अचानक, जहां सोवत अधरात।। अंगूठा मोर जगाई, चोंक परी सब गात।।२।। हबक उठी जो उनींदी, भावर भोरें जान।। चुप चुप कर निरवारत, सुन सीतल भये कान।।३।। उत्तर न आवे रही सखी, दांत अंगुरिया चांप।। तन मन सकुच संकानी, गुरूजन लाजन कांप।।४।। बीरी वर ही देत मुख, हंसत सुरंजित गात।। प्रेम उमग दोऊ जन फूले, आनंद उर न समात।।५।। कंचुकी कसन करख उर, कुच अंतर नख दान।। आलिंगन परिरंभन, करत अधर रसपान।।६।। लेत उठाय अंक भर, राखत कंठ लगाय। मगन भई रस सागर, कहत कहि नहीं जाय।।७।। "मोहनदास" स्याम घन, सुंदर प्रेम पसाय।। छिन छिन ग्वालि विचारत, भवन काज बह्यों जाय।।८।।

मान में राग-बसंत खेली खेली हो लड़ेंती राधे हरि के संग वसंत।। (यह पूरा पद पेज ७३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

फाल्गुन कृष्णा ३

श्रृंगार - फेंटा का

वस्त्र - गुलाबी रंग के रूपेरी कोर के शुथन तथा वागा चाकदार, श्रीमस्तक पर फेंटा पर रूपेरी जरी के कतरा व कलंगी। ठाड़ीलर मोती को, शीरपेच शीशफूल, कर्णफूल सभी हरे मीना के। ठाड़ा वस्त्र हरा रंग के तथा पिछवाई सफेद व हरे मोजा साटन के धराये गये है।

आभरण - नित्यानुसार हरे तथा लाल मीना के धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल **बदत नाहि ग्वालिनी जोवन के गारे।।** (यह पूरा पद पेज ७४ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल **फाग खेलन व्रजसुंदरी, नंदराय घर आई।। जसुमति आदर देत, रोहिणी लेत बुलाई।।१।। गावत गीत सुहावने, हंसि हंसि दे तब गारी।। दुरिये न, होरी खेलिये, नंदकुंवर गिरिधारी।।२।। सुनि मृदुवचन त्रियन के, निकसे हैं मोहन लाला।। मनहुं कनक कमल ढिंग, आवत मधुप रसाला।।३।। ताल मृदंग उपंग चंग, बीना डफ राजे।। दुंदुभी डिम डिम झालरी, बिच बिच मुरली बाजे।।४।। कनक कलस केसरि भरे, संग लिये सत गोरी।। चोवा मृगमद गोरा, चंदन वंदन रोरी।।५।। अरगजा भरि भरि पिचकाई, फेंटन सुरंग गुलाला।। छिरकत भरत परस्पर, हो हो बोलत ग्वाला।।६।। मोहन गोपिन छिरकत, केसू केसरि नीरा।। इततें तकि तकि दृगन, भरत मुठी अबीरा।।७।। घिरी आई व्रजनारी, नंदलाल गहि लीने।। एक अधर रस पीवही, एक आलिंगन दीने।।८।। प्यारी काजर देत हे, ललिता गहे कर दोऊ।। चंद्रावलि मुख मांडत, हँसत सखी सब कोऊ।।९।। हरद कपोल लगावत, उढ़वत पीत पिछोरी।। हँसत दे दे कर तारी, बोलत हो हो होरी।।१०।। यह विधि पिय संग खेल हीं, आनंद उर न समाई।। देखत देव थकित भये, पोहोपन वृष्टि कराई।।११।। न्हान चले जमुना सब, सोभा अति बनि आई।। राधा गिरिधर देखि कें, "सूरदास" बलिजाई।।१२।।**

राजभोग में राग-बसन्त **हरिरिह व्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-धनाश्री **खेलत बलि मोहना, रितु वसन्त संग होरी हो।। सखा मंडली संग लिये, बलराम कृष्ण की जोरी हो।।१।। भेरि मृदंग डफ झालरी, बाजत कर कठताला।। सब तन**

मदन प्रगट भयो, नाचत ग्वालिनि ग्वाला।।२।। व्रजजन सब एकत्र भये, घोखराय दरबारा।। इत बनी नवल कुमारिका, उत बने नवल कुमारा।।३।। युवती युथ चंद्रावली, अपने यूथ श्रीराधा।। झूमक चेतब गावही, बाढ्यो रंग अगाधा।।४।। बलि मोहन एकत्र भये, सुबल तोक एक कोदा।। दुहूं दिस खेल मचाइयो, बाढ्यों हें मनसिज मोदा।।५।। चमकि चली चंद्रावली, सुबल तोक पर आई।। उतही कोपि प्यारी राधिका, बलिराम कृष्ण पर धाई।।६।। कमलन मार मचाइयो, जुरे दुहूंन के टोला।। मधु मंगल पकरि कढेरियो, बांधि गुदी में ढोला।।७।। बहोत हँसे बलि मोहना, हँसे सकल व्रजवासी।। छोरे हूं छूटें नहीं, परि गई गाढ़ी पासी।।८।। हँसत हँसत सब आइयो, गावति गारी सुहाई।। सेना बेनी करि सबे, बलि मोहन पकरे धाई।।९।। बलिजू की आंखि जु आंजीयो, पीय की मुरली छीनी।। मन मान्यो फगुवा लियो, पांछे जाय वह दीनी।।१०।। यह विधि होरी खेल ही, व्रज वासिन सब सुख पायो।। भक्तन मन आनंद भयो, "गोविंद" यह जस गायो।।११।।

राग-बिलावल नंदराय लला व्रजराय लला, तुम राधा रस बस किने हो।। नंदराय लला व्रजराय लला, गुन प्रेम रूप रस भीने हो।।१।। यह सुरति समागम नीकी।। हों कहत तिहारे जीकी।।२।। यह कोक कला सबजाने।। ताते तुमरे मनमाने।।३।। यह प्रति छिन नौतनलागे।। भयो मदन विकल फिरि जागे।।४।। यह गौर वरन तन सोहे।। मुरलीधर को मन मोहे।।५।। नख सिख परम सुदेसा।। यह मदन मनोहर वेसा।।६।। यह भागि सुहाग की पूरी।। घनस्याम सुजीवन मूरी।।७।। यह खेलत पियसंग होरी।। वर संग लियें सत गोरी।।८।। मिलि बंसीवट तर आई।। सब सौंज फाग की लाई।।९।। तब पुलिन तिरोंछी धाई।। कर लियें कनिक पिचकाई।।१०।। गिरिधरन कल्प तरू तीरा।। संग गोप कुंवर बलवीरा।।११।। डफताल बांसुरी बाजे।। कोऊ खेलत हँसत न लाजे।।१२।। नवसत सजि आई गोरी।। पति मात पिता की चोरी।।१३।। कल गावत मीठी गारी।। रस खेल मच्यो अतिभारी।।१४।। तहां ऊडत गुलाल अबीरा।। चोवा चंदन अरगजा नीरा।।१५।। तहां भरत भरावत नारी।। रंग रंजित भीनी सारी।।१६।। एक हो हो होरी बोलें।। लटकत पियके संग डोलें।।१७।। एक नाचत गावत धावें।। पकरन पियकों नहीं पावें।।१८।। चंद्रावलि पीय संग दौरी।। राधा पकरे भरि कोरी।।१९।। श्रम छूटि गई उर गाती।। सुंदर मोहन रंग राती।।२०।। तब सुगह गहे गोपाला।। छीनी मुरली ओर माला।।२१।। नैना आंजि मांडि मुख रोरी।। हँसि तारी देत किसोरी।।२२।। एक कुच कपोल कर परसे।। सब सुख पिय प्यारी विलसे।।२३।। एक अंचल

सों पट जोरे।। ललितादिक सखी त्रन तोरे।।२४।। मनको मान्यो हम करि हैं।। नहीं लोक वेद तें डरि हैं।।२५।। तुम इन नेनन के तारे।। धन जीवन प्राण हमारे।।२६।। सब सखा छुडावन आये।। मिलि सुबल श्रीदामा धाये।।२७।। फगुवा ले मोहन मेले।। मिलि फाग भली विधि खेले।।२८।। वृखभान कुमारी जीती।। यह प्रकट प्रेम रस रिती।।२९।। विथुरी मनी मोतिन माला।। फिरि मुदित मदन गोपाला।।३०।। कंचुकी कसि टूटी लर छुटी।। मानो मदन सुरति पथ लूटी।।३१।। अंग अंग अनंगन मोहे।। ललिता प्रिय के संग सोहे।।३२।। व्रजगोपिन को धन जीयो।। राधा बस मोहन कियो।।३३।। यह लीला त्रिभुवन भावे।। "जनमाधो" जुग जुग गावे।।३४।।

भोग में राग-गौरी ऋतु वसन्त सुख खेलियें हो आयो फागुन मास।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी गोकुल गाम सुहावनों, सब मील खेले फाग।। मोहन मुरली बजावें, गावे गोरी राग।।१।। नरनारी एकत्र व्हे, आये नंद दरबार।। साजे झालर किन्नरी, आवज ढफ कठतार।।२।। चोवा चंदन अरगजा, और कस्तुरी मिलाय।। बल गोविंद कों छिरकत, शोभा बरनी न जाय।।३।। बूका वंदन कुंकुमा, ग्वालन लिये अनेक।। युवती यूथ पर डारही, अपने अपने टेक।।४।। सुर कौतुक जो थकित भये, थक रहे सूरज चंद।। "कृष्णदास" प्रभु विरहत, गिरिधर आनंद कंद।।५।।

शयन भोग आते समय राग-गौरी खेलत मदन मोहन पिय होरी।। लरिका संग सकल गोकुल के, करत कुलाहल ब्रज की खोरी।। भवन भवनते निकसि द्वार व्हे, अति प्रफुल्लित मन नवल किशोरी।। सोंधो लिये कनक बेलाभर, अरगजा कुंकुम सों घसी घोरी।।२।। एक गुवालि गुलाल लिये कर, एकन लई बहुत कर रोरी।। एक पलास कुसुम रंग बरखत, एक लियें बीरा भर झोरी।।३।। बाजत ताल मृदंग झांझ ढ़फ, बिच बिच मोहन मुरली ध्वनि थोरी।। मधुर वचन हंस कहत परस्पर, "गोविन्द" प्रभु लीनों चितचोरी।।४।।

शयन में राग-गौरी सब व्रज कुल के राय, लाल मनमोहना।। निकसे खेलन फाग, लाल मनमोहना।।धृ.।। नवल कुंवर खेलन चले, लाल मनमोहना।। मुदित सखा संग लाय, लाल मनमोहना।। स्याम अंग भूषण सजे, विमल वसन पहराय।।१।। निकसद्वार ठाडे भये,

मुरली मधुर बजाय।। श्रवण सुनत सब व्रजवधू, जहां तहांते चली धाय।।२।। विविध भांत बाजे बजे ताल मृदंग उपंग।। रूंज मुरज डफ दुंदुभी, कर कंठताल सुरंग।।३।। युवति यूथ मिल धाइयो, भर पिचकाई हाथ।। चहुं दिस तें वे छिरक हीं, भरत कुंवर गोपीनाथ।।४।। बहुरि सखा सन्मुख भये, आगें दे बलबीर।। युवती गण पर बरख हीं, कुंकुम सुरंग अबीर।।५।। बहोरि सिमिट सब सुंदरी मोहन लीने घेर।। एक जु मुरली ले भजी, एक कहें देहु फेर।।६।। एक पीत पट गहि रही, फगुवा देहु कुमार।। एसे हम न पतीज हीं, दे गहने मोती हार।।७।। ललिता ललित वचन कहे, तुम सुनो गोकुल के राय।। तो हम तुमकों जानदें, प्यारी राधा कों सिरनाय।।८।। प्यारी कर काजर लियो, आंजे पियके नयन।। अंचलपट सुख दे हंसी, मिलवत कर दे सेन।।९।। आलस अरूण अति रसमसे, अंजन खरे विराज।। युगल कमल कर मुकुलिता, मानें बैठे युगल अलि राज।।१०।। अति रस भरि व्रज सुंदरी, कछूब न अंग संभार।। खसत बलय कटि किंकिणी, पिय संग करत विहार।।११।। कुच पर कच लर लटक हीं, लागत परम सुदेश।। मानो भुजंगन चुहुं दिसा, अमी पीबत राकेश।।१२।। यह विध सब मिल खेल हीं, गावत गोरी राग।। नवल कुंवरपर अति बढ्यो, प्रति छिनु नव अनुराग।।१३।। युवती यूथ मिल उलटियो, अपने अपने टोल।। पिय मुख देखे फूल ही, प्रमुदित लोचन लोल।।१४।। यह विध होरी खेल हीं, व्रजजन संग लगाय।। घोष नृपति सुत वदन की, "गोविंद" बलबल जाय।।१५।।

मान में राग-वसन्त राधे देखि बन कैं चैन।। भृंग कोकिल सब्द सुनि सुनि, प्रकट प्रमुदित मैन।।१।। जहां बहति मंद सुगंध सीतल, भांमिनी सुख सैन।। कौन पुन्य अगाध कौं फल, तूं जो बिलसति ऐंन।।२।। लाल गिरिधर मिल्यौ चाहति, मोहन मधुरे बैन।। "दास परमानंद" प्रभु हरि, चारू पंकज नैन।।३।।

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

फाल्गुन कृष्णा ४

श्रृंगार - पाग चंद्रिका का।

वस्त्र - केसरिया रूपेरी कोर के शुथन तथा वागो घेरदार। कटि में पटको, श्रीमस्तक पर पाग केसरी उस पर मोर की सादी चन्द्रिका। ठाड़ी लड़ मोती की। श्रीचरणकमलों में केसरिया साटन की मोजड़ी, ठाड़ा वस्त्र लाल रंग के व पिछवाई सफेद रंग की धराई जाती है।

आभरण - नित्यानुसार सोना तथा सफेद मीना के धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल **हो हो बोलत डोलत, मोहन खेलत होरी।।** सुर धुनि सुनि व्रजसुंदरी, घर घर तें सब दोरी।।१।। नागरि गुन आगर, रस सागर वेस किसोरी।। तिनमें सरस सुहागिनि, राजत राधा गोरी।।२।। उत बलि मोहन गोहन, गोपकुंवर लख कोरी।। सबही तन तन रूप वेष, भूषन सजनो री।।३।। लाल मृदंग उपंग चंग, सब ही डफ होरी।। डिम-डिम दुंदुभी मदन भेरि, नांहिन धुनि थोरी।।४।। चंदन वंदन बूका, भरि-भरि लीने झोरी।। भरत भरावत गावत, मुख लपटावत रोरी।।५।। मृगमद मलय कपूर, कुण्डी सत केशर घोरी।। अरगजा सोंधे सींच, सुगंध करी ब्रज खोरी।।६।। लाज गई सब भाज, सो गावे गारीन भोरी।। इत राधा ललितादिक, उत बल मोहन जोरी।।७।। भामा चंद्रभगा बलि जू, पकरै भरी कोरी।। पकर पैज सों आई, करी झकझोरा झकझौरी।।८।। कुच कपोल कर परसत, रज आरज की चोरी।। गहे गिरिधर राधाजू, भुज बल बाँह मरोरी।।९।। छीनी मुरली माला अरू, कटि पीत पिछौरी।। गोपीन गोप हवाई, गहे बलि मोहन तो री।।१०।। बंस लिये गोपी हाथ, भरे रंग भाजन फोरी।। मार परी मुरि आये, टिके ब्रजराज की पोरी।।११।। बलि को बल जो बिगोवे, कोऊ बरज्यो न रह्यो री।। स्वांग सबै जु बनावे, न पावें जान गहो री।।१२।। नैन आंज मुख मांड्, श्याम सिर गूंथी मोरी।। हो हो हो हो व्है रही, उडवत पीत पिछौरी।।१३।। मोहन कों पहिरावत, अपने भूषण छोरी। बागो आप बनाय, पाग बांधी तजि डोरी।।१४।। भूल रह्यो सब गोकुल, लोचन लगी ठगौरी।। पलटे तन तनसुख अंग, सब दीसत नोरी।।१५।। रह्यो रस खेलत फाग, जुगलवर केलि करोरी।। संतत "माधो" को मन, मदन गुपाल हरोरी।।१६।।

श्रृंगार में राग-बिलावल तुम बेगी स्याम भलें आये हो, होरी खेलन रंग भरी।। चौवा चंदन और अरगजा, केसरी गागर भरी धरी।।१।। उड़त गुलाल लाल भये बादर, पिचकाईन लागी झरी।। "सूरदास" प्रभु तुम बहुनायक, चेरी व्है पायन परी।।२।।

राजभोग आते समय राग-जेतश्री ऋतु बसन्त के आगम हो, प्रचुर मदन को जोर।। केलि रस झुमकरा रे झुमकरा।।ध्रु.।। राधा गोरी सुंदरी सुंदर नंद किसोर।।१।। झुंडन मिलि गावत चली, झूमक नंद के द्वार।। नृत्य करें ब्रज सुंदरी, मोहि लियो मनमार।।२।। बिपिन गली सुंदर बनी, ललित लवंगन मेलि।। अंब मनोहर मोरियो, करन केतुकी बेलि।।३।। गोकुल गाम सुहावनो, वृंदावन सो ठोर।। खेलहिं ग्वालन ग्वारिया, रसिक कान्ह सिरमोर।।४।। एक गोरी एक सांवरी, एक चंदवदन सोहे बाल।। एकन कुंडल जगमगे, एकन तिलक सुभाल।।५।। एकन चोली अधखुली, एक रहे बंद छुटि।। एक अलकावलि उर धरे, एक रही लट खूटि।।६।। एकन चीर जो खसि परे, एकन लटकन लूम।। एक अधर रस घूंट ही, एक रही कंठ झूम।।७।। ताल पखावज बाज ही, बीना बेनु रसाल।। महुवरि चंगजो बांसुरी, बजावत गिरिधर लाल।।८।। चोवा चंदन कुंकुमा, उडत गुलाल अबीर।। सुरनर मुनि मन मानियो, व्योम विभानन भीर।।९।। सुरति समागम रस रह्यो, मनहुं महागज मंत।। "परमानंद" प्रभु श्रीपति, रसिक राधिका कंत।।१०।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि) हरिरिह ब्रजयुवती. (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-धनाश्री हरि संग खेलन जाय अरी चल बेग छबीली।।ध्रु.।। निकस्यों मोहन सांवरो हों, फाग खेलन ब्रज मांझ।। घुमड्यो अबीर गुलाल गगन चढ़ि, मानो फूली सांझ।।१।। बाजत ताल मृदंग मुरज ढफ, कहि न परत कछु बात।। रंस-रंग भीने ग्वाल बाल सब, मानो मदन बरात।।२।। उतते सब सुन्दरी जुरि आई, करि करि अपनो ठाट।। खेलत नहीं कोऊ कान्ह कुंवर सौं, चाहत तिहारी बाट।।३।। बिनु राजा दल कौन काम, बलि उठिये छांडिये ऐंड।। उमड्यो निधि ज्यों नवल नंद कौ, रोके हैं रावरी मेंड।।४।। उठी विहसी वृषभान नंदिनी, कर पिचकाई लेत।। सहि न सकत कोऊ महा सुभट, सुनत समर संकेत।।५।। आई रूप अगाधा राधा, छबि बरनी नहीं जाही।। नवल किशोर अमल चन्द मानों, मिलि है चन्द्रिका आई।।६।। खेल मच्यौ ब्रज बिथिन महीयां, बरसत प्रेम आनंद।। दमकत भाल गुलाल भरे मांनो, बंदन भुरके चंद।।७।। दुरि मुरि भरन बचावन छबि, सों बढ़यो है रंग अपार।। मैन मुनीसी बोलत डोलत, पग नुपूर झनकार।।८।। और रंग पिचकाईन भरि-भरि, छिरकत हरि तन तीय।। कुटिल कटाक्ष प्रेम रंग भरि-भरि, भरत पियको हीय।।९।। शिव सनकादिक नारद सारद, बोलत जै जै जै।। "नंददास" अपने ठाकुर की, जीव हुं बलैया लै।।१०।।

भोग व संध्या में राग-गौरी खेलत नंद किशोर ब्रज में, अतिरस बाढयो हो हो होरी।। गौरी राग अलापत गावत, मधुर मुरली कल घोरी।।१।। कटि पियरो पट फेंट बनी, छबि सीस चंद्रिका मोर।। मन्मथ मन-हरन हँसि चितवत, चपल नयन की कोर।।२।। बालक वृंद स्यामसंग शोभित, उत सोहत ब्रजनारी।। विविध सिंगार सजे मिल झुंडन, देत भामती गारी।।३।। देख समाज मदन मोहन को, भयो मन उल्लास।। तिन में मुख्य राधिका नागरि, सकल सुखन की रास।।४।। दुंदुभी झांझ मुरज डफ बाजे, मृदंग उपंग तार।। दुहुं दिस माच्यो खेल परस्पर, घोषराय दरबार।।५।। चोवा साख अरगजा चंदन, केसर सुरंग मिलाय।। तक तक तरूणी गोपालें छिरकत, करन कनिक पिचकाय।।६।। उत मन मुदित लिये कर सोंधो, सखन सहित बलबीर।। युवती कदंबन ऊपर बरसत, सुरंग गुलाल अबीर।।७।। युवती यूथ पेल सम्मुख व्है, मोहन पकरे जाय।। काजर नयन आंज प्रीतम के, मुरली लई छिनाय।।८।। पिय प्यारी की जोट बनाई, अंचल सों पट जोर।। सेन हिं सेन परस कर सों कर, हसत सबे मुख मोर।।९।। मगन भई तन की सुध विसरी, हरदे बढ़ूयौ अनुराग।। यह सुख तीन लोक में नाहीं, गोपिन को बड़ भाग।।१०।। चीर हार अंग अंगन भीजे, कीच मची ब्रजखोर।। मनहुं प्रेम समुद्र अधिक बल, उमग चल्यो मित छोर।।११।। "चतुर्भुजदास" विलास फाग को, कहत न वरन्यो जाय।। लीला ललित देवगण मोहे, गिरि गोवर्धन राय।।१२।।

शयन में राग-गौरी गोकुल सकल ग्वालिनी, सब मिल खेलें फाग।। तिन में श्रीराधा लाडिली, जाको परम सुहाग।।१।। झुंडन मिल गावत चली, झूमक नंद के द्वार।। आज परव मिल खेलें, हम तुम नंद कुमार।।२।। रसिक कुंवर सुंदर वर, राधा जीवन प्राण।। मोहन वदन दिखाव हो, दुरो तो नंद की आन।।३।। प्रगट प्रीति गोकुल भई, अब कहा करो दुराव।। हम न दरस बिन जीवें, कोऊ करो चवाव।।४।। जसोदा के सुत चित चुभि रही, यह तुमरी मुस्कान।। अब न अनत रूचि उपजे, सहज परि यह बान।।५।। दुरत लाल भलें पाये, राधा भर अंकबार।। कनक कुंडी केसर भरी, ले दोरी ब्रजनार।।६।। भरो भरो सखी स्याम की, पीत पिछोरी पाग।। देह गेह सुधि भूली, नंदनंदन अनुराग।।७।। चोवा साख कुंकुमा, गोरा मेद जवाद।। हँस हँस हरि पर डारत, और नाना फुलवाद।।८।। छूटे केस कंचुकी बंद, टूटी मोतिन माल।। करतल ताल बजावें, गावें गीत रसालं।९।। गगन विमानन छायो, सूरनर कौतुक भूल।। जयजय शब्द उच्चारे, आनंद बरखें फूल।।१०।। लाल गोपाल कृपा बिन, यह रस लहे न कोय।। "हरि" वृषभान किशोरी की, कथा मगन मन होय।।११।।

मान में राग-बसन्त मान तजो भजो कंत ऋतु आयौ।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा...... (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

फाल्गुन कृष्णा ५

श्रृंगार - पाग कतरा का।

वस्त्र - केसरी घेरदार चोली शुथन दोहेरा कीनारी के, लूम व छज्जेदार पाग। ये वस्त्र दोहरा मण्डान (भलका चौथ) के श्रृंगार ही पुनः धराये जाते हैं। यदि तिथि का क्षय हो तो केसरी पाग पटका धरते हैं। पटका (केसरी डोरीया के वस्त्र) लाल ठाडे वस्त्र केसरी। आभरण लाल मीना के तथा एक सफेद किलंगी फुगर वाली बादला की।

मंगला में राग-बिलावल **आनंदराय खेले फाग, हो हो होरी आयी।। लाल गिरिधर** के काज, अपने ग्रह न्योति बुलाई।।१।। को याको आदर देहे, को याको बैठन देहे।। जसुमति आदर देहे, फूल दे बेठन कहे हें।।२।। कासों राची आनि तो, काके संग खेलि हें।। गिरधर सो राची आनि, तो दाऊ संग खेलिहें।।३।। डांडो रोपन चले नंद, ओर गिरिवर धारी।। बाजे बहुत बजावत, ताल पखावज थारी।।४।। नदी जमुना के तीर, जाय रोपी हे होरी।। कुंवर धरी बनाय सबन, ता सब पाछे जोरी।।५।। पूजा करि पाय लागि, ओर परिक्रमा दीनी।। विप्रन वेद पढ़ाय, बेठि सब ही विधि कीनी।।६।। खेलत है नंदलाल, कमल हाथ गहि लीने।। सुंदरि लई हें बुलाय, रहसि उनके कर दीने।।७।। अबीर गुलाल उडावत, ब्रजरानी के लाला।। सुंदर मुख झलकत, पहरें उर फूलन माला।।८।। केसरी सोंधे भीजी, पहिरें झूमक सारी।। गिरिधर पिय संग खेलें, घोष सकल ब्रजनारी।।९।। होरी धरि घर आये, नंदराय ब्रज वासी।। गोप ग्वाल सब भीने, ओर लालन सुखरासी।।१०।। रानी जू देखि सिहाय, करत न्योछावरि भारी।। धन्य जन्म करि मान्यो, वारति नौतन सारी।।११।। चंद्रावलि राधाजू, भीजि रही रस हीयें।। एको पल नहीं छांडत, डोलत लालन लीये।।१२।। यह जो बड़ो त्योहार, तो नित नित तुमही आवो।। सकल घोष के राय, नंद गिरिधारी कहावो।।१३।। चिरंजीओ ब्रजराज, देखि ढोटन सुख पावो।। "श्रीविट्ठल गिरिधर" को, हंसि हंसि फाग खिलावो।।१४।।

श्रृंगार में राग-धनाश्री **रंगीले री छबिले नैना रस भरे, नैना नाचत मुदित अनेरे** रे।। खंजरीट मानो महामत दोऊ, केसे हूं घिरत न घेरे रे।।१।। स्याम सेत राते रंग रंजित, मानो चित्र चितेरे रे।। "कुम्भनदास" प्रभु गोवर्धनधर, स्याम सुभग तन हेरे रे।।२।।

राजभोग आते समय राग-जेतश्री **खेलत बलि मन मोहना..**(यह पूरा पद पेज ७७ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बसन्त हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-बिलावल हरिसंग खेलन जांय अरी चल बेग छबीली (यह पूरा पद पेज ८२ पर पढ़े।)

भोग में राग-मारू **खेले नंद को नंदन होरी, अपने रंगीले व्रज में।। बने है ग्वाल बाल** संग, जनु अनेक मेन।। आपन मदन मोहन सोहन, कहा कहुं छबि एन।।१।। उतते आई युवती वृंद, चंदमुखी एक दांई।। चंचल तन की दमक जनु, दामिनि पट झांई।।२।। जुरे हें कंचन चोहटे, अपने अपने टोल।। आनंदघन ज्यों गाजत राजत, बाजत दुंदुभी ढ़ोल।।३।। सुरमंडल किन्नरी डफ, बाजत रंग भीने।। बीच बीच बांसुरिया, वश कीने हे मन दीने।।४।। बजत चटसों पटतार, ग्वार गावत संग।। नाचत हें मधु मंगल, संगीत बढ्यो हे अति रंग।।५।। कुंकुम चंदन वंदन साख, मृगमद मथि घोरी।। छबिसों छबीलो भरत डोलत, बोलत हो हो होरी।।६।। रंग रंग की छींटन भरी, सोहत त्रिय नवेली।। वरन वरन फूलन मानो, फूली आनंद वेली।।७।। घुमड़ घुमड़ कर गुलाल को, तामें दुरि दुरि आवे।। भर भागत हरि कों भानिनि दामिनी, सी छबि पावे।।८।। घेर लिये हैं नवल त्रियन, सांवरे सिरमोर।। यह छबि सों भ्रमत जैसे, कमल कोश भोंर।।९।। पकरें है छबिसो आन मोहन, राधिका वर जोरि।। कहीन परे प्रेम की छबि, छाई झकझोरा झकझोरि।।१०।। व्हे ठाडे विवश सबे, काहू न रही संभार।। छूटी हैं छबिसों अलक लर, टूटे हें मुक्ताहार।।११।। क्योंही लुकत लाजपें अति, प्रेम की उरेंड।। "नंददास" निधि न रूकत, वारू की मेंड।।१२।।

संध्या में राग-गौरी **खेलत फाग गोवर्धनधारी, हो हो होरी बोलत ब्रज बालक संगे।।** आई बन नवल बृज सुंदरि, सुभग संवार सुठ सेंदूर मंगे।।१।। बाजत ताल मृदंग अघोटी, आवज डफ सुर बीन उपंगे।। अधरबिंब कुंजे वेणु मधुर ध्वनि, मिलत सप्तस्वर तान तरंगे।।२।। उडत अबीर कुंकुमा वंदन, विविध भांत रंग मंडित अंगे।। "कुम्भनदास" प्रभु त्रिभुवन मोहन, नवल रूप छबि कोटि अनंगे।।३।।

शयन दर्शन राग-कल्याण गिरिधर यमुना तट कुंजन में, खेलत फाग सुहावनों।। ग्वाल मंडली बन संग लीने, आनंद प्रेम बढ़ावनो।।१।। परम रूचिर उज्वल वसनन ले, अंग अंग भेख बनावनो।। अगर सहित मृगमद चोवासों, अरगजा घोर लगावनो।।२।। अति सुंरग

केसर के रससों, हाटक घट भर लावनो।। रत्न जड़ित पिचकाई भरले, व्रज वघूवन पर धावनो।।३।। नवसत साज सिंगार राधिका, रूप अनूप दिखवनो।। ब्रजनारी सब जोर साथ ले, सन्मुख गुलाल उडावनों।।४।। सौरभ अधिक अबीर सेत सों, भर भर मुठी चलावनो।। हो हो हो हो बोल सखिन संग, लाल गुलाल उडावनों।।५।। पटह झांझ झालर आवज डफ, ताल मृदंग बजावनों।। राग कल्याण जमाय सप्त स्वर, तान मान सों गावनो।।६।। मधुमंगल बोल्यो हलधर सों, अब कहा मतो उपावनों।। ब्रज वनितन की सैना आगें, केसेंक होय बचावनों।।७।। तब बलदाउ मतो रच्यों मन, ललिता नेंक बुलावनों।। वदिये चतुर जो दाव विचारे, चित कों यह सिखावनों।।८।। सुन मधु मंगल ललिता टेरी, नेंक यहां लौ आवनो।। मो जिय मांझ उपाय बनायो, करिये तुम मन भावनो।।९।। तब हरि हित ही बोली हसकें, यह निश्चय ठहरावनों।। तुम सब दूर रहो ठाडे व्है, हम ही स्याम पकरावनों।।१०।। छल बल कर पकरेजु अचानक, कीनों सकल खिलावनों।। सुबल श्रीदामा आदि सखा सब, याही को जो मिलावनों।।११।। मन मोहन संभ्रम सन्मुख व्है, बोलत बोल सुहावनो।। सखा यूथ में देखी ललिता, ठाडी करत जनावनों।।२।। प्रीतम को पकरन दोरी राधा, गह्यो श्याम सुख छावनों।। नयनन नेक मिलत मुसिकानी, रहत न नेह दुरावनों।।१३।। युवती सब मिल झुंडन गावत, गारी द्वंद मचावनों।। सुर ललना सब देख थकित भई, कोन पुन्य ब्रज पावनों।।१४।। प्रमुदित मनसों अष्टयाम जुर, राधा पति हि लगावनों।। यह रस तज जे और जो चाहे, सो तो जन्म गवावनों।।१५।। को कवि वरणि सके या सुख कों, देखत दुख विसरावनों।। शुक पिक मोर मधुपगण बोलत, ॠतु वसंत हुलसावनों।।१६।। सुन बिनती सुत नंदराय के, फगुवा बहुत मंगावनों।। यह जोरी अविचल चिरजीयो, व्रज नित होहु बधावनों।।१७।। राधाकृष्ण अमृत रस सागर, क्यों घट होय समावनों।। "गोकुलचंद" चरण पंकजरज, निशदिन तन लपटावनों।।१८।।

मान में राग-केदार सो ईन दिन कैसें निबहेगो मान तेरो, आयो फाल्गुन मास कह्यो तू मान।। तज हठ कपट हठीली नागरि, सुनि सांची जिय जान।।१।। आयेरी लाल मनावन तोकों, भाग आपुने ऊर आन।। ऊठ चलि हिल मिल "हरिदास" के स्वामी सों, अब भ्रोंहे जिन तान।।२।।

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

फाल्गुन कृष्णा ६

श्रृंगार - पाग गोल चन्द्रिका का।

वस्त्र - फिरोंजी रंग के रूपेरी कोर के शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर पाग पर रूपेरी जरी काम की गोल चंद्रिका। श्रीचरणकमलों में फीरोंजी रंग की मोजड़ी, ठाड़ा वस्त्र सिन्दुरी रंग का तथा पिछवाई सफेद धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार लाल मीना के धराये गये हैं।

मंगला में राग-धनाश्री **रंगीलेरी छबिले नैना रसभरे नैना मुदित अनेरे हो।।** (यह पूरा पद पेज ८४ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल **नंदराय लला ब्रजराय लला तुम राधा रस बस किने हो।।** (यह पूरा पद पेज ७८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) **हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-धनाश्री **खेलत मदन मोहन फाग सुहावनों।। व्रज जीवन नंद को लाल, अनंग लजावनो।।१।। सुबल सुबाहु श्रीदामा, सखा संग राज हीं।। बहु आवज रूंज मुरज, मुरली डफ गाज हीं।।२।। करन कनक पिचकाई, फेंट अबीर की।। बहु भाव सों भरि कांवरि, केसरी नीर की।।३।। सजिकें साज समाज, चले वृष भान कें।। मुनि मनसा गई भूलि, सुनत धुनि कान कें।।४।। उतते जुरि झुंडन, आंई ब्रज बासिनी।। तिनमें कुवरि किसोरी, नित्य बिलासनी।।५।। रंग रंगीलो साज, लिये नवनागरी।। बरन बरन लीये राजत, फूलन की छरी।।६।। जुरिआये दोऊ टोल, पौरी ब्रजराय की।। इतही चेत उत गारी देत, बहु भाय की।।७।। जे कबहूं बधू नव दरसी, रवि नेंक हू।। ते गुरजन की लाज करत, नहीं एक हूं।।८।। खेलन कों हरि सों हुलसी, सब आव ही।। भरि कुंकुम कनिक कटोरन, ओट दुराव ही।।९।। छिरकी जाय परस्पर, मोहन भामिनी।। उडत गुलाल अबीर, कियो दिन जामिनी।।१०।। संग सखा नहीं सुझत, कींधो कहां गये।। सब सखीयन मिलि स्याम, अचानक गहि लये।।११।। घिरी आई सब वाम, ठोर दस वीस तें।। दीयो हे अरगजा ढ़ारि, मनोहर सीस तें।।१२।। ले ललिता दई गांठि, नील पटपीत सों।। घन दामिनी ज्यों राजत, मोहन मीत सों।।१३।। फगुवा**

मांगत रंग रह्यों, न कह्यो परे।। यह सुख देखत कौन, अब धीरज कों धरे।।१४।। खेलि
फाग नरनारि, भये अनुराग सों।। ब्रजबासिन में स्याम संग, बड़ भाग सों।।१५।।

भोग तथा संध्या में राग-गौरी हो हो हो हो होरी बोले।। गोरस को मदमातो
डोले।।ध्रु।। ब्रज के लरकन संग लिये डोले।। घर घर के री खिरका खोले।।१।। जो कोऊ
डरप जाय घर पैठे।। कर बरजोरि ताही के बेठें।।२।। आय अचानक अंखिया मीचे।। रूपसुधा
रस नयनन सिंचे।।३।। गनत नांहि प्रमुदित नर नारी।। बचत नाहि बिनु दिने गारी।।४।।
अति निसंक डरत नहीं काहु।। भरि छांडे गहि पाऊ जाऊ।।५।। जो को भरत गवत छुटि
भाजे।। धावत मत्त गयंद विराजे।।६।। कुंकुम कीच मची अति भारी।। उडि गुलाल अटे अटा
अटारी।।७।। अलकावलि शिथिल अति राजत।। धावत मत्त गयंद लजावत।।८।। ब्रज में
डोलत फूल्यो फूल्यो।। भ्रमर उडे मानो अंबुज फूल्यो।।६।। युवतीजन मोहन गहि आने।।
कुमुदिन वन वन भ्रमर लुभाने।।१०।। तारी देय घेर जब लिनें।। क्यों छूटो बिन फगुवा
दीनें।।११।। गुंजावली मुक्तावलि टूटे।। पीतांबर गहने दे छूटे।।१२।। सखी सखा मिल खेले
होरी।। वरनो कहा मो लों मति थोरी।।१३।। निश वासर बाढ्यो सुख सागर।। "सूरदास"
प्रभु मोहन नागर।।१४।।

शयन में राग-गौरी खेलत मदन मोहन पिय होरी।। (यह पूरा पद पेज ७६ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग लाडिली मान न कीजे होरी के दिन में, कौन तिहारी बान।। चार
दिवस को खेल मच्यो है बेठी है, श्रोहें तान।।१।। मान मनाय लेहूं बलैया, हों जोरि जुग पान।।
गुन निधान पीय पास उठि चलो, केलि खेलि की जान।।२।।

पोढ़वा में राग-बसंत खेलत खेलत पोढ़ी श्रीराधा, नवललाल गिरिधर पिय संग।। (यह
पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

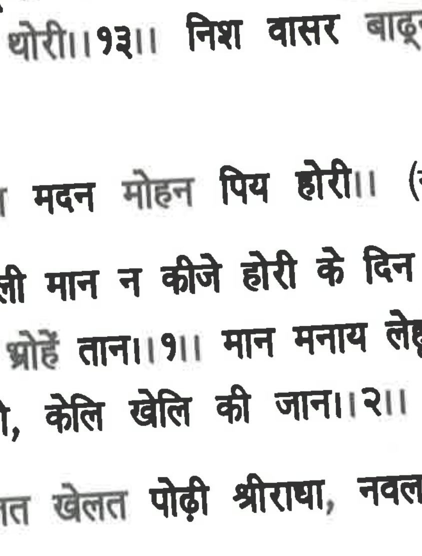

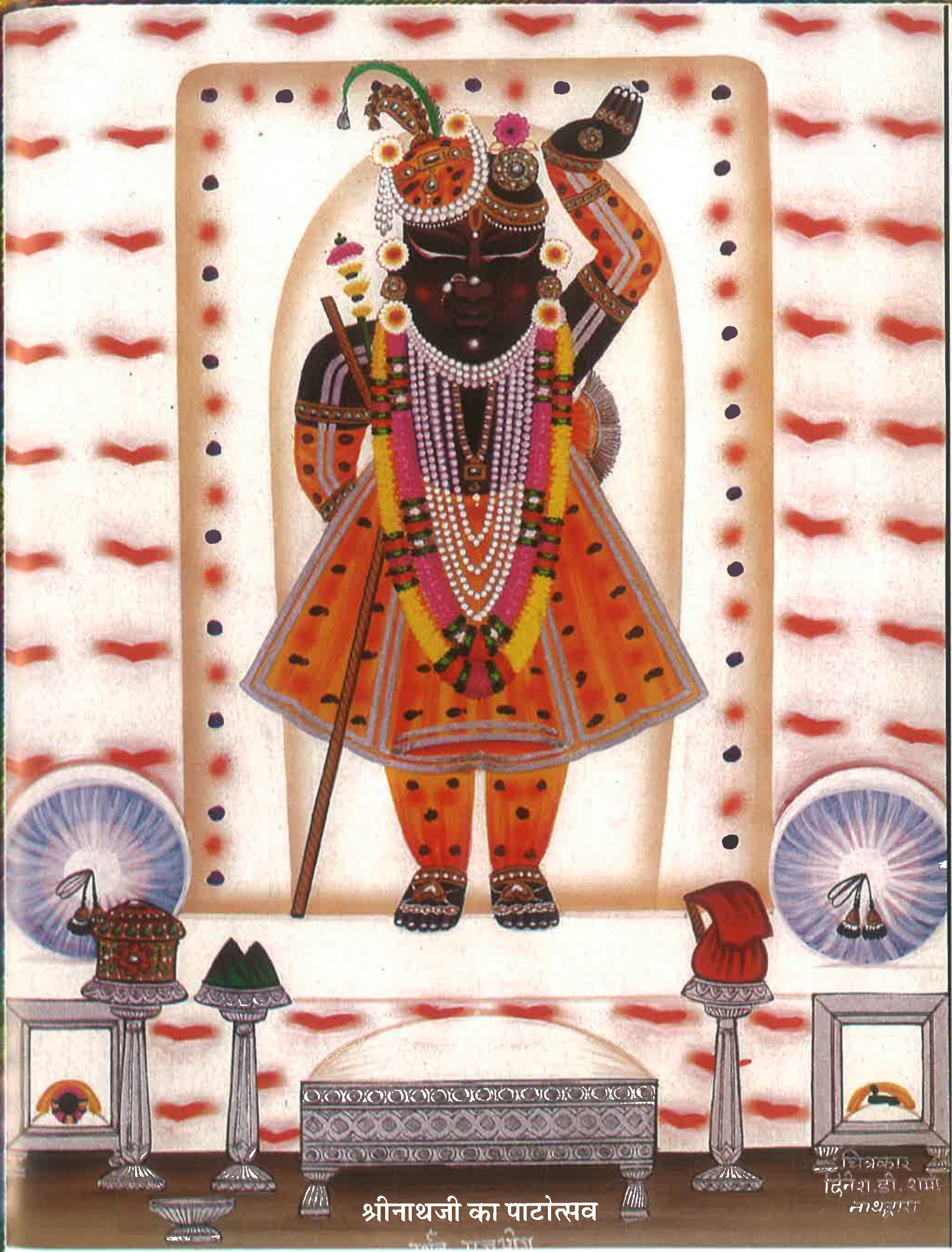
चित्रकार
दिनेश डी. शर्मा
नाथद्वारा

श्रीनाथजी का पाटोत्सव

मुन्नीकुमारी गोपाललाल स्वर्णकार, नि. उदयपुर का जय श्रीकृष्ण

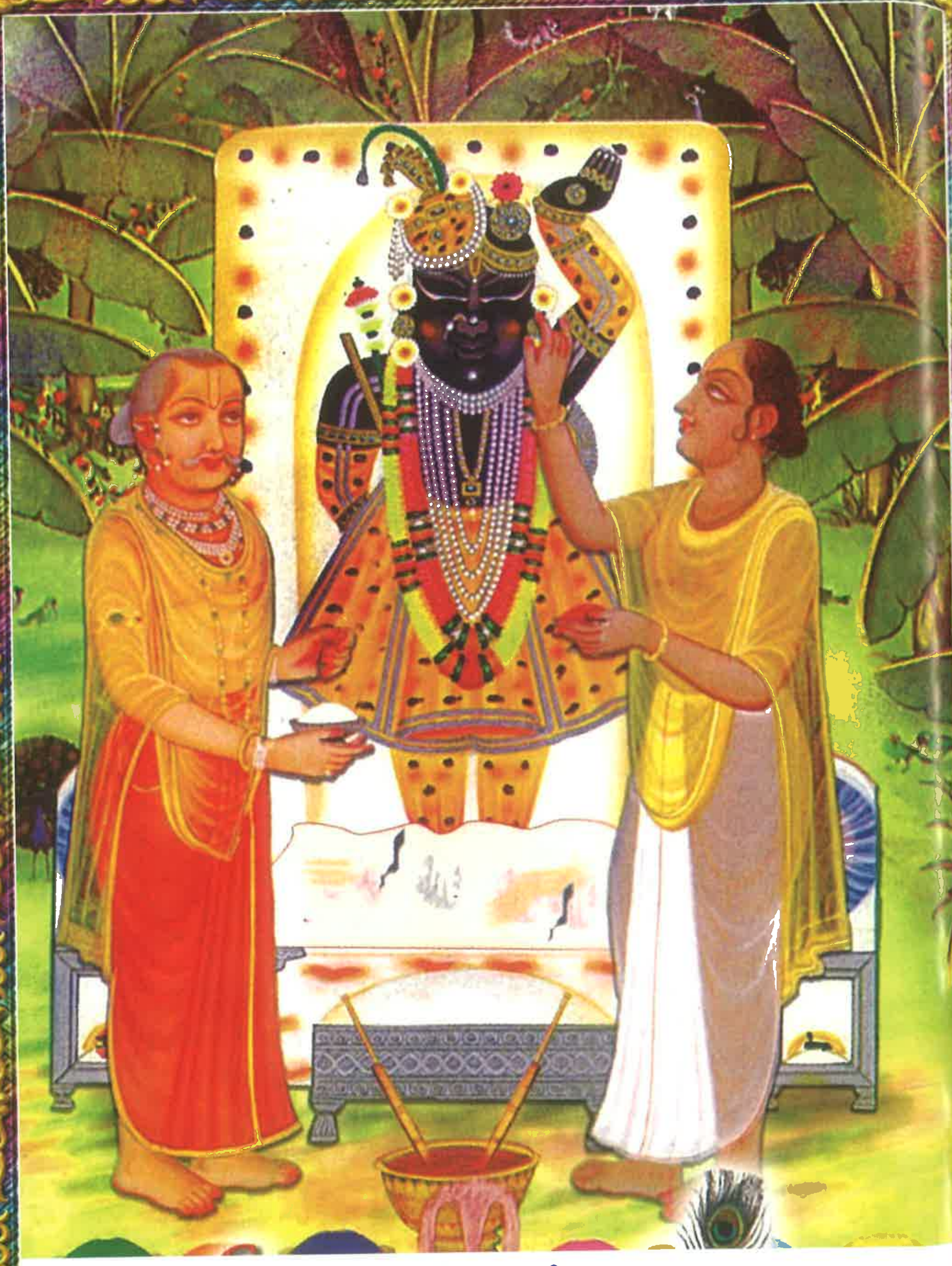

कुंज एकादशी

वरदीबाई नन्दाजी गुर्जर निवासी बामनटुंकड़ा का जय श्रीकृष्ण

फाल्गुन कृष्णा ७

श्रीनाथजी का पाटोत्सव

(श्रीनाथद्वारा में फाल्गुन कृष्ण सप्तमी वि.सं १७२८ में पाट बिराजे)

(देहरी बन्दनमाल तथा अभ्यंग स्नान)

श्रृंगार - पाग कतरा को, चोवा की चोली।

वस्त्र - केसरिया रूपेरी कोर के शुथन तथा वागो घेरदार। कटि में पटका। श्रीअंग में श्याम चोली चोवाकी रूपेरी किनारी की। श्रीमस्तक पर केसरिया पाग तथा उसपर मोरपिछ जरीकाम का कतरा धराया गया है। श्रीचरण कमलों में श्याम मोजड़ी, ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई सफेद धराई गई है।

नोट- श्रृंगार के बाद मोजाजी वड़े हो जाते हैं। आज से सभी राग प्रारंभ हो जाते है।

मंगला में राग-पंचम/देवगंधार हो हो होरी खेलन जैये।। आज भलो दिन है मेरी प्यारी, नित ही सुहाग बढ़ैये।।१।। सोवत जाय जगाय सुंदरी, करी उबटनों सीस न्हवैये।। सादा चूरी खुभी नकवेसरी, राधा कुंवरि बनैये।।२।। चोवा चंदन और अरगजा, अबीर गुलाल उड़ैये।। नव मटुकि भरी केसरि घोरी, प्रथम कुंज छिरकैये।।३।। धावत सब इततें व्रजनारी, कमलन मार मचैये।। ताल मृदंग ढ़ोल ढ़फ महुवरी, झांझन झमक मिलैये।।४।। इत राधा उत मोहन प्यारो, मुरली शब्द सुनैये।। कुंज ओट ललिता "हरिदासी", राग दामोदर गैये।।५।।

अभ्यंग के समय राग-बिलावल होरी खेलिये सुंदरलाल, चंचल नेन विसाल।। तुम ब्रजजन के प्रतिपाल, तुम लीला नट गोपाल।। गहि ठोड़ी जसुमति कहे, तुम संग लेहु व्रजबाल।।१।। विविध सुगंधन उबटनों, सब अंग बेठि उबटाऊं।। चंदन अंग लगाय के, फिरि ताते नीर न्हावाऊं।।२।। अंग अंगोछों प्रीति सों, घसि मृगमद तिलक बनाऊं।। अंजन नैनन आंजि के, अरू मसि बिंदुका भ्रौं लाऊं।।३।। अलकावलि अति सोहनी, मोतिन लर सरस गुथाऊं।। मधि लटकन लटकाय के, हों देखत अति सुख पाऊं।।४।। पगिया पेच बनाय कें, खिरकिन की सीस धराऊं।। मोर चंद्रिका तनक सी हों, दिस दाहिनी धराऊं।।५।। झीनी झगुली अति बनी, सो तो स्याम अंग पहराऊं।। अति सुगंध पहोपन बस्यो, वर फुलेल

चुपराऊं।।६।। सूथन गाढे अंग की, लाल चरन पहराऊं।। फेंटा कटि तट बांधि के, ओर सुरंग गुलाल भराऊं।।७।। आभूषन बहु भांति के, पहराऊं तिहिं तिहिं ठाऊं।। फूलन की माला गरे धरी, देखत नेन सिराऊं।।८।। घर घर ते सब गोप के, लरिकनकों पठै बुलाऊं।। केसरि के मटुका भरों, पिचकारी हाथ धराऊं।।९।। सिंघद्वार ठाडे रहो तुमें, संग देहु बलदाऊं।। आगे व्हे मेरे लाडिले ललना, सबहिन को छिरकाऊं।।१०।। बड़रे गोप बुलाय के, रखवारे संग रखाऊं।। मनमानें तहां खेलिये, सब व्रजजन संग नचाऊं।।११।। विविध भांति व्रजराज सों, कहि बाजे बजवाऊं।। फगुवा देवे कौं अबे, बहुभूषण वसन मंगवाऊं।।१२।। सब व्रज युवतिन को अब, घर घरते पठै बुलाऊं।। मेरे लाल के चावसों, फगुवा के गीत गवाऊं।।१३।। रगमगे बागे देखि के, अपने द्रगन सिराऊं।। मुक्ताफल थारी भरों हौं, ले आरती उतराऊं।।१४।। आंको भरिले गोद में, घर भीतर ले जाऊं।। व्रजयुवतिन में बेठिके नेक, फूली अंग न समाऊं।।१५।। माय मनोरथ यों कहै, जाकौ हे जसुमति नाऊं।। दीये यह फल "रसिक" कों, हों श्रीवल्लभ गुनगाऊं।।१६।।

श्रृंगार में राग-देवगंधार आज माई मोहन खेलत होरी।। नौतन वेष काछि ठाडे भये, संग राधिका गौरी।।१।। अपने भामते आई देखन को, जुरि जुरि नवल किसोरी।। चोवा चंदन ओर कुंकुमा मुख मांडत ले रोरी।।२।। छूटी लाज तब तन न संभारत, अति विचित्र बनी जोरी।। मच्यो खेल रंग भयो भारी, या उपमा कों कोरी।।३।। देत असीस सकल व्रज वनिता, अंग अंग सब भोरी।। "परमानंद" प्रभु प्यारी की छवि पर, गिरिधर देत अकोरी।।४।।

राजभोग आते समय राग-धनाश्री या गोकुल के चोहटे रंग राची ग्वाल।। मोहन खेलें फाग, नैन सलोने री रंगराची ग्वाल।। नरनारी आनंद भयो, सामल के अनुराग।।नैन. ..।।१।। दुंदुभी बाजे गहगहे, नगर कुलाहल होय।। उमड्यो मानस घोखको, भवन रह्यो नहीं कोय।।रंग....।।२।। डफ बांसुरी सुहावनी, ताल मृदंग उपंग।। झांझ झालरी किन्नरि, आवज कर मुख चंग।।नैन...।।३।। उतहि समाज गोपाल के, बलियुत नंदकुमार।। इत गोपी नव जोबना, अंबुज लोचन चारू।।रंग...।।४।। गारीदेत सुहावनि, प्रमुदित गोप कदंब।। युवति यूथ एकत्र भये, गावत मदन विटंब।।नैन...।।५।। रतन जटित पिचकाईयां, कर लीये गोकुलनाथ।। तकि छिरकें बनिताबृंद को, जे राधा के साथ।।रंग...।।६।। केसू कुसम निचोयके, भरत परस्पर आनि।। मृदमद चोवा कुंकुमा, चारू चतुर सब सानि।।नैन...।।७।। सुरंग गुलाल

उडावही, बूका बंदन धूलि।। चढ़ि विमान सुर देखहीं, देह दिसा गई भूलि।।रंग...।।८।। खेल मच्यो अति गहगह्यो, चितवत व्रज बधू धाय।। राधा रसिक गुपाल की, आसकरन बलिजाय।। नैन सलोने री रंगराची ग्वाल।।६।।

श्री गुसाईजी की अष्टपदी हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-आसावरी धनि धनि नंद जसोमति हो धन्य श्री गोकुल धाम।। धन्य कुंवर दोऊ लाडिले, बलि मोहन जाको नाम।।१।। छबीले हो ललना।। श्री वल्लभ राजकुमार, छबीले हो ललना।। श्री गिरिवरधारी लाल, छबीले हो ललना।। तुम या गोकुल के चंद, छबीले हो ललना।।ध्रु.।। सखा नाम ले बोलियो, सुबल तोक श्रीदाम।। श्रवन सुनत सब धाइयो, बोलत सुंदर स्याम।।२।। भेष बिचित्र बनाइयो, भूषन बसन सिंगार।। मंदिर ते सब सजि चले, बालिक बलि बनवारि।।३।। गिरिवरधर अति रस भरे, मुरली मधुर बजाई।। श्रवन सुनत सब ब्रजवधू, जहाँ तहाँ ते चलि धाई।।४।। रूंज मुरज डफ झालरी, बाजे बहु विधि साजि।। बिच बिच भेरि जु बाज हि, रह्यो धोख सब गाजि।।५।। पिचकाई कर कनिक की, अरगजा कुंकुम घोरि।। प्रान पिया को छिरक हीं, तकि तकि नवल किसोरी।।६।। एक ओर जुवती भई एक ओर बलवीर।। कमलन मार मचाइयो रूपे सुभट रनधीर।।७।। उलटि आई ठाड़ी भई, अपने अपने टोल।। झूमक चैतब गांव ही, बिच बिच मीठे बोल।।८।। हंसत हंसत सब आइयो, लीनों सुबल बुलाय।। हा हा काहू भांति सौं, नेक मोहन कों पकराय।।६।। बहोरि सिमिटि सब धाइयो, मोहन लीनें घेरि।। नैनन अंजन आँजि के, हंसत बदन तन हेरि।।१०।। यह विधि होरी खेलहि, सकल घोष संग लाय।। गोवर्धनधर रूप पैं, "गोविंद" बलि बलि जाय।।११।।

राग-सारंग ग्वालिन सौधें भीनीं अंगीया सोहै, केसर भीनीं सारी।। लहेंगा छापेदार छबीलो, छीन लंक छबि न्यारी।।१।। अधिक बार रिझावर फाग, खिलवार चलत भुज डारी।। अतर लगाय चतुर नारि तब, गावत होरी की गारी।।२।। बड़ी-बड़ी वरूणी तरूणी करिणी, रूप जोबन मतवारी।। छबि फुलेल अलकें झलकें, ललकें लख छैल बिहारी।।३।। हाव भाव के भवन केधों, भ्रूहन की उपमा भारी।। वसीकरण केधों जंत्रमंत्र, मोहन मन की फंदवारी।।४।। अंचल में न समात बड़ी, अखियां चंचल अनियारी।। जानो गांसी गजवेल, कामकी श्रूति खरसान संवारी।।५।। वेसर के मोती की लटकन, मटकन की बलिहारी।। मानो मदन मोहन

जू को मन, अचवत अधर सुधारी।।६।। बीरी मुख मुसकान दशनन, चमकत चंचल चौका री।। कौंधि जात मानो घन में दामिनि, छबि की पुंज छटारी।।७।। स्याम बिन्दु गोरी ठोड़ी में, उपमा चतुर विचारी।। जनो अरविंद चुम्यो न चले, मचल्यो अलि को चिकुलारी।।८।। पोती जोति दुलरी तिलरी, तरकुली श्रवण खुटिलारी।। खयन बने कंचन विजांइठे, करन चूरी गजरा री।।६।। चंपकली चोकी गुंजा, गज मोतिन की माला री।। करे चतुर चित की चोरी, डोरी के जुगल झवा री।।१०।। पैने सुख दैने कंचन कुच, खुभी कंचुकी कारी।। काम कुटी कर दीनी हे, कीनी शिव सों फिर यारी।।११।। एडी लाल महावर जेहर, तेहर बाजन वारी।। घायल किये पाय पायल करि, सायल नंद लला री।।१२।। जोर दीठ सों दीठ ईठ, मंजीठ रंगन रंग भारी।। लगी लाल के पगी खगी, चित चितवनि की पिचकारी।।१३।। मोहन मदन गोपाल लाल पर, पढ गुलाल जब डारी।। संग लग्यो डोले रसीया सों, वृंदावन में बनवारी।।१४।। छबि दौरन मोरन मरोर पिय, जाय भरे अंकवारी।। प्रेम फंद पकरे जकरे, गोरी नें गिरिवर धारी।।१५।। छीन लई मुरली कर तें, पटुका पट पीत उतारी।। ग्वालिन अधर धरी बंसी, बरखी रस सिंधु सुधा री।।१६।। जौ भावे सो लै ललना, कलना पलना मोहि प्यारी।। तोहि ददा की सौं, है ग्वालिनी दे बंसी हा हा री।।१७।। बाहन में बाहें चाहें, मुख चंद चकोर पियारी।। मोहन स्याम तमाल बाल, लपटानी हेम लतारी।।१८।। गांठ जोर गोविंद चंद सों, दीनीं सखिन संवारी।। तारी दे दे गारी गावें, ग्वाल देत किलकारी।।१६।। वशीकरण बतियन रस वरखत, बरसानैं की नारी।। प्रभु “घनश्याम” दियो मन मेवा, फगुवा प्रानन प्यारी।।२०।।

राग-सुघराई फगुवा के मिस छलबल, लाल को रगमगौ कीजै।। यह औसर होरी को गोरी सुख लै, सुख किन दिजै।।१।। करत सैंत को संकोच सकुच जिय, इन सकुचन कही धों कहा कीजै।। घर को छांडि धाय “गिरिधर” पिय कौ, निधरक व्है रसपीजे।।२।।

भोग व संध्या में राग-काफी श्री गोकुल राजकुमार लाल रंग भीने हैं।। खेलत डोलत फाग सखा संग लीने हैं।।१।। चित्र विचित्र सुदेस सबै अनुकूले हैं।। राजत रंग बिरंग सरोज से फूले हैं।।२।। एकन के कर कंकण जेरी जराय की।। एकन के पिचकाई सु हेम भराय की।।३।। कुंकुम घोर भरे घट हाटक के घने।। पंकज पुंज पराग सु मृगमद सों सने।।४।। ढोलकी ढोल निसान मुरज डफ बाज हीं।। मेन के मेघ मानो रस वृष्टि सों गाजहीं।।५।। धुनि

सुनि कें अकुलाई चली नव नागरी।। एक ते एक महागुण रूप की आगरी।।६।। राधा के संग सुहाई अनेक सहेली हैं।। काम के कानन की मानों कंचन बेली हैं।।७।। भेष बनाये अनेक भांति न जात बखानी हैं।। जेती तेती उपमा मन में बिलखानी हैं।।८।। कोयल कूक कहा सुर भेदहि जानही।। कुंजर कापर कौन कहा गति ठानही।।९।। केरन को जु सुभाव परयो अति कंपकों।। हेम लियो हठ नेम सु पावक झंप कों।।१०।।खंजन कंजसो लगि रहे गति लास तैं।। केहरि कंदर मंदिर में दुरयो त्रास तें।।११।। पंक में पंकज मूल रह्यो छिपी लाजतें।। नित्य प्रकाश विलास मिटयौ द्विज राज तें।।१२।। ताल पखावज आवज बाजे जंत्र है।। गान मनोहर मेन के मोहन मंत्र है।।१३।। सो इतकी उतकी धुनी लागे सुहाई है।। मानो अनंग के आंगन बाजे बधाई है।।१४।। गोकुल गोरिन खोरिन खेल मचायो है।। रंग बिरंग अबीर सों अंबर छायो हैं।।१५।। लाल गुलाल की धुंधर में मुख यौं लसें।। प्रात पतंग प्रभा बिच कंचन कंज से।।१६।। दृष्टिकरी पिचकारी भरी अनुराग सों।। जाय लगी व्रजराज लला बड़ भाग सों।।१७।। उज्जवल हास कपूर की धूर उठाव हीं।। सुंदर स्याम सुजानसों नयन जुडाव हीं।।१८।। गावत गारिन नारि सबे झुकि प्रीति की।। बात बनावत अपनी अपनी जीत की।।१९।। घिरी आई अबला सब लाल गोपाल सों।। हेमलता लिपटी मनौं स्याम तमाल सों।।२०।। कोऊ गहें पटपीत कोऊ बन दाम कों।। कोऊ निसंक व्है अंक भरे घनश्याम को।।२१।। स्याम के सीस तें स्यामा जू केसर ढोरी हैं।। देकर तारी कहें सब हो हो होरी है।।२२।। ऐसो ही ध्यान सदा हरि को जीय जो रहे।। तौं पें "गदाधर" याके भागि की को कहे।।२३।।

शयन भोग आवे तब राग-रायसों सकल कुंवर गौकुल के, निकसे खेलन फाग।। हरि हलधर मध्य नायक, अंतर अति अनुराग।।१।। ओलन बुका वंदन, रोरी हरद गुलाल।। बाजत मधुरे महुवर, मुरली ओर डफ ताल।।२।। कनक कलश केशर भरे, कांवर किंकर कंध।। ओर कहाँ लग कहिये, भाजन भरे हैं सुगंध।।३।। हँसत हँसावत गावत, छिरकत फिरत अबीर।। भीज लगे तन शोभित, रंग रंग रंजित चीर।।४।। फूलन की कर गेंदुक, करत परस्पर मार।। छूटत फेंट लटपटी, बिखरि परत घनसार।।५।। कोलाहल ग्वालन को, सुनि गोपिका अपार।। टोलन टोलन निकसी, कर सोल्हे श्रृंगार।। रूप माधुरी जिन की, कवि पें वरणी न जाय।। तिन्हे सची रती रंभा, पगहू परत लजाय।।७।। अति सरस स्वर गावत कोऊ झील कोऊ घोर।। तिन्हे सुन्यौ नहीं भावत, वीना नाद कठोर।।८।। ललित गली गोकुल की,

होत विविध विध केल।। अगर सहित कुंकुम की, चली धरणी पर रेल।।९।। गयो गुलाल गगन चढ़, भये सुर सदन सुरंग।। मानो खुर खेह उड़ी है, सेना सजी अनंग।।१०।। बन्यों वनिता वदनन पर, कृष्णागर को पंक।। परिपूरण चंद्रन ते मानो, चुई चुई चल्यो कलंक।।११।। छिरकत हरि नाना रंग, शोभित गोपिन गात।। मानो उमग्यो अंतरतें, अंचल प्रेम चुचात।।१२।। बोले ग्वाल बराती, हमारे हरि को ब्याह।। दुलहनि गोप किशोरी, मोहन सब कौ नाह।।१३।। यह सुन गोपी कोपी, हलधर पकरै जाई।। अंजनदे दृग छाँडे, मृगमद मुख लपटाई।।१४।। बहोर सिमिट सब सुंदरी, घेरे मदन गोपाल।। कनक कदली मंडल में, शोभित तरूण तमाल।।१५।। तब वृषभान किशोरी, हरि भर लीने अंक।। कही न जात ता सुख की, मानो निधि पाई रंक।।१६।। वरण सके को हरिके, अगणित चरित्र विचित्र।। जेहीं तेहीं भांत "गदाधर", रसना करों पवित्र।।१७।।

शयन में राग-कल्याण श्री गोवर्धन राय लाला, प्यारे लाल तिहारे चंचल नयन विसाला, तिहारे उर सोहे वनमाला, यातें मोहि रही ब्रजबाला।। खेलत खेलत तहां गये जहां पनिहारिन की बाट।। गागर ढ़ोरें सीसतें, कोऊ भरन न पावे घाट।।१।। नंदराय के लाड़िले, बलि ऐसो खेल निवार, मन में आनंद भर रह्यो, मुख जोवत सकल ब्रजनार।।२।। अरगजा कुंकुम घोर के, प्यारी लीनो कर लपटाय।। अचकां अचकां आय कें भाजी, गिरिधर गाल लगाय।।३।। यह विधि होरी खेल हीं, व्रज वासिन संग लाय, गोवर्धन धर रूप पर, जन "गोविंद" बल बल जाय।।४।।

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हो भांवते रस ऐन।। खेल फाग अनुराग भरे दोऊ, मत्त द्विरद गति गैन।।१।। सोभित बसन गुलाल सगवगे, अति आलस युत नेन।। "रसिक" बिहारी बिहारिन कीनों, नव निकुंज मधि सैन।।२।।

फाल्गुन कृष्णा ८

श्रृंगार - सेहरा को।

वस्त्र - केसरियां रूपेरी कोर के शुथन तथा वागो चाकदार। पटको केसरी श्री मस्तक पर केसरी दुमाला पर लाल सफेद मीना का सेहरा। श्री चरणकमलों में मोजड़ी केसरिया, ठाड़ा वस्त्र वादली तथा पिछवाई सफेद धराई गई है।

आभरण - मीना की वेणी, कुण्डल, लुम, हंसुली, पदक, सारे आभरण मीना के। श्री चरणारविंद में नुपुर, जेहर धराये जाते हैं।

मंगला में राग-आशावरी धन धन नंद यशोमती हो धन्य श्री गोकुल धाम।। (यह पूरा पद पेज ६१ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-काफी मिलि खेले फाग बनमें श्री वल्लभबाला।। संग खरे रस रंग भरे नवरंग त्रिभंगी लाला।।१।। बाजत बांसुरी चंग उपंग पखावज आवज ताला।। गावत गारी दै-दै ब्रजनारी मनोहर गीत रसाला।।२।। कंचन बेलि करे जानों केलि, परे बिच श्याम तमाला।। धाई धरें हसि अंक भरें, छूटे केस टूटी उर माला।।३।। सींचत अंगन रंग भरे, बाढ्यों प्रेम प्रवाह रसाला।। मैन सैन खुर रैणु उडी नभ, छायो अबीर गुलाला।।४।। देखि थकी भँवरी सबरी, मृगी मोरी चकोरिन जाला।। राधाकृष्ण बिलास सरोज, "गदाधर" मन्न मराला।।५।।

राजभोग आवता राग-काफी श्री गोकुल राजकुमार लाल रंग भीने हैं।। (यह पूरा पद पेज ६२ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-सारंग नंद किशोर-किशोरी की जोरी, हो हो हो कहि खेलत होरी।। ग्वाल बजावत डफ मृदंग, मोहन मुरली धुनि थोरी।।१।। इत ब्रजनारी गारी देत परस्पर, रंग बढ्यो दुहुं औरी।। गिरिधर दौर आय बदन लगावत, चंदन बंदन रोरी।।२।। वचन बांधि के छलकर, लाई गांठ सों जोरी।। तेल चढ़ावत गीत ब्याह के, सबै सयानी भोरी।।३।। मोर मुकुट को मोर बनायो, दई है चंद्रिका की मोरी।। दूल्हे "पर्वतसेन" कों प्रभु, दुलहनि राधा गोरी।।४।।

भोग संध्या में राग-गौरी श्रीगोकुलराय कुमार।। कमल दल लोचना।। ठाडे हें सिंघ दुवार।। कमल दल लोचना।। नख सिख भेस बनाय।। सुंदरता अति सार।।१।। रसभरे नंदकिशोर।। निकसे खेलन फाग।। मधुर बेणु कर धरे।। गावत गोरी राग।।२।। आये व्रजके चोहटें।। लिये सखा सब संग।। नव भूषण नव वसन।। शोभित सामल अंग।।३।। उपमा कहीं न जाय।। सुंदर मुख आनंद।। बालक वृंद नक्षत्र।। प्रगटे पुरण चंद।।४।। बाजत ताल मृदंग।। आवज डफ मुख चंग।। मदन भेरि सुर बीन।। गिडगिडि झांझ उपंग।।५।। श्रवण सुनत चली दौर।। गृह गृह ते व्रज नारि।। तिनमें परम सुदेश।। राधा अति सुकुमारि।।६।। बने चीर आभरण।। सब तन विविध सिंगार।। कंकण कटि किंकिणी।। उरगज मोतिन हार।।७।। नक बेसर ताटंक।। कँठसरी अनु भांति।। चोकी बनी जराय।। दूर करत रवि कांति।।८।। सेंदुर तिलक तंबोल।। खुटिला बने विसेख।। शोभित केसर आड।। कुंकुम काजर रेख।।।।६।। प्रफ्रुल्लित अति आनंद।। चितवत हरि मुख ओर।। मानो विधु प्रीतम मिले।। सादर चारू चकोर।।१०।। रूप नयन रसभरे।। वारंवार निहारि।। गावें झूमक चेत।। बीच सुहाई गारि।।११।। चोवा चंदन अरगजा।। सोंधें सजे अनेक।। पिचकाई कर लिये।। धाई एकते एक।।१२।। अति भरि बांधे फेंट।। सुरंग अबीर गुलाल।। दुहुं दिश माच्यो खेल।। इत गोपी उत ग्वाल।।१३।। नर नारी परी चोंक।। छिरकत तकि तकि जेह।। भरत भई अति भीर।। मानों बरखत मेह।।१४।। वरण वरण भये वसन।। अंग रहे लपटाय।। क्रीडा रस वस मगन।। आनंद उर न समाय।।१५।। व्रज युवतिन मतो मत्यो।। मुख न जनाबत बेन।। पकर लेहु घनस्याम।। मिलवत इत उत सेन।।१६।। युवती यूथ तब पेल।। दीने सखा भजाय।। कहत कहा मतो करें।। अब तो कछू न सुहाय।।१७।। कहत न बाचें कछू।। वचन गार ओर गीत।। झुंडन जुर चहुं ओर।। जाय गह्यो पट पीत।।१८।। नवल कुंवर जानिये।। अब जो मुरली लेहु।। राधे करहु जुहार।। के हमारो फगुवा देहु।।१६।। फगुवा देहु न देहु।। छांड हु ओर उपाय।। हमारो भायो करहु।। के छूटो सिर नाय।।२०।। प्यारी पिय सों कहे।। अति मीठे मृदुबोल।। काजर आंजे नयन।। रोरी हरद कपोल।।२१।। मुख मांडें छबि भई।। कोटि मदन सिरताज।। त्रिभुवन सौभग लियें।। मानों ब्याहन आयो आज।।२२।। क्रीडत अविचल रहो।। युग युग यह ब्रजवास।। श्रीगिरिधर को यशगान।। नित करहु "चतुर्भुजदास"।।२३।।

शयन भोग आते समय राग-रायसो मिल जु डंडा रस खेलहीं, नंदराय जू की पोरि।। आनंद सों मन भरि रह्यो नवल किशोर किशोरी।।१।। लटकत फिरत रगमगे, इत गोपी उत ग्वाल।। मानो छुटी मदन की, मत्त गजन की ढाल।।२।। गारी देत सुहावनी, इत सब गोपिका नार।। उत सब हो हो बोलें, बालक नंदकुमार।।३।। बाजे बहु विध बाजें, ताल मृदंग उपंग।। झांझ झालरी किन्नरी, मुरली ढ़फ मुखचंग।।४।। चोवा चंदन छिरक हीं, अबीर गुलाल सुरंग।। खेलत खेल गह गह्यो, लाडली लालन संग।।५।। मृगमद केसर घोरि कें, लीने कर लपटाय।। ओचकां आवत दूरतें, भाजत मुख हि लगाय।।६।। तब वृषभान दुलारी, पकरे मदन गोपाल।। मानो कंचन बेली, लिपटी स्याम तमाल।।७।। झूम रही चहुं दिश तें, नेंक न राखत लाज।। मानो भूतल उदयो, नक्षत्र सहित उडुराज।।८।। काजर लोचन आंज कें, कटि पट लेंहि उतार।। आलिंगन पिय देत हें ये सब व्रजकी नार।।६।। गिरिधर अधर सुधा कों, कोऊ पीवत न अघाय।। हा हा खाउं तों छांडें, प्यारी कों सिर नाय।।१०।। झटकत गहि मोतिन लर, बूझत चिबुक उठाय।। मन मान्यों फगुवा लियो, पीतांबर दियो आय।।११।। श्रीगोकुल गाम सुहावनों, कीनी बहु विध केलि।। चीरजीयो दुल्हे दुलहनि, मिलि मन्मथ दल पेलि।।१२।। सिमिट सकल व्रजवासी, सुरसुता चले नहान।। विमल वसन तन पहरे, देत विप्रन बहु दान।।१३।। कुसुम वृष्टि सुरपति करें, लीला देखें आय।। श्रीवल्लभ चरण प्रतापतें, "कृष्णदास" मुख गाय।।१४।।

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

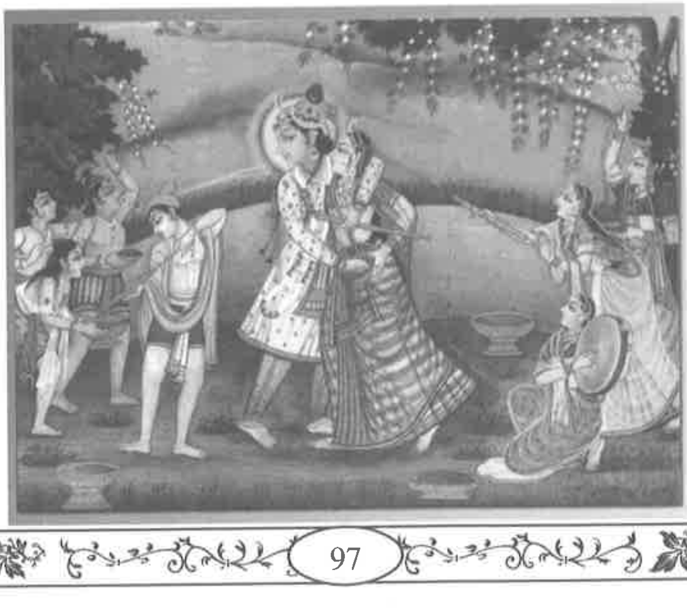

फाल्गुन कृष्णा ९

श्रृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - सफेद शुथन तथा वागो घेरदार, कटि में मोठड़ादार पटको। श्रीमस्तक पर सफेद पाग पर सोनेरी जरिका कतरा। श्री चरणकमल में लाल शाटन की मोजड़ी, ठाड़ा वस्त्र श्याम तथा पिछवाई सफेद धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार माणक मीना का श्रृंगार धराया गया है।

मंगला में राग-काफी **मिल खेले फाग बनमें श्रीवल्लभ बाला।।** (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-टोड़ी **हो हो होरी खेलें, नन्द को नवरंगी लाला।। अबीर भरि भरि झोरी, हाथन पिचकाई रंगन बोरी, तैसीय रंगीली ब्रजकी बाला।।१।। मूरति धरें अनंग गावत तान तरंग, ताल मृदंग मिलि बजावे बीना बेनु रसाला।। "नंददास" प्रभु प्यारी के, खेलत रंग रह्यो छबि बाढ़ी, छूटी हे अलक टूटी हे माला।।२।।**

राजभोग आते समय राग-धनाश्री खेलत फाग संग मील दोऊ, आनंद भरे पीय प्यारी हो।। नवल किसोर रसिक नंद नंदन, नव वृषभान दुलारी हो।।१।। नव ऋतुराज लता द्रुम फूले बरन बरन छवि न्यारी हो।। गुंजत मधुप कीर पीक कुंजत, श्रवन सुनत सुखकारी हो।।२।। तेसे ई सुभग गौर सामल तन, बनी जोट इकसारी हो।। कमल नेन पर बूका मेलत, हंसि सकुचत कुमारी हो।।३।। भरी अरगजा कनक पिचकाई, धांई सबै ब्रज नारी हो।। भरत भाँवते मदन गुपाले, बढ्यो रंग अति भारी हो।।४।। बोहोर्यो मिलि दस पांच अली, गोविंद भरे अंकवारी हो।। चोवा चंदन अगर कुंकुमा, दियो सीस तें ढारी हो।।५।। प्रेम मगन मोहन मुख निरखत, तन सब दसा बिसारी हो।। "चतुर्भुज" प्रभु सुर नर मुनि मोहे, गुन निधान गिरिधारी हो।।६।।

राजभोग में राग-बसन्त **हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी या गोकुल के चोहटे रंग राची ग्वालि।। (यह पूरा पद पेज ६० पर पढ़े।)

भोग संध्या में राग-काफी निकस कुंवर खेलन चले, रंग हो हो होरी।। मोहन नंद के लाल, रंगन रंग हो हो होरी।। संग लीने रंग भीने ग्वाल बाल, वे गुन रूप रसाल।।१।। कंचन माट भराय, सोंधे भरी है कमोरी।। रतन जटित पिचकाई करन, अबीर भरें भर झोरी।।२।। सुरमंडल डफ झांझ ताल, बाजत मधुर मृदंग।। तिनमें परम सुहावनी, महुवरी बांसुरी चंग।।३।। खेलत खेलत जब रंगीलो लाल, गये वृषभान की पोरि।। जे हुती नवल किसोरी भोरी, ते आंई आगें दोरि।।४।। सुनि निकसी नव लाडली, श्रीराधा राज कीसोरी।। ओलिन पोहोप पराग भरे, रूप अनुपम गौरी।।५।। संग अली रंग रली सोहें, करन कनक पिचकारी।। मोहन मन की मोहनी, देति रंगीली गारी।।६।। तिनकों छिरकत छबीलो लाल, राजत रूप गहेली।। मानों चंद सींचत सुधा, अपने प्रेम की वेली।।७।। नवल वधुन के रंगीले वदन, अबीर घुमड में डोले।। छूट हि निसंक अरून अरून घन में, हिमकर निकर कलोलें।।८।। इतने मांझ छिपि छबीली कुँवरी, पकरे हें मोहन आन।। छबि सों परस्पर झकझोरत, कापे परति बखान।।६।। गुप्त प्रीति प्रगटित भई, लाजत निकसी तोरी।। ज्यों मदमाते चोर भोर, भलकत निकसी चोरी।।१०।। सखियन सुख देखन के काज, गांठ दुहुन की जोरी।। निरख बलैया ले सबें, छबि न बाढ़ी कछू थोरी।।११।। कोऊ छल छकि छबिले लाले, छिरकत रंग अमोल।। कोऊ कमल कर ले पराग, परसत रूचिर कपोल।।१२।। बने हे पिया के कमल लोचन, जब गहि आंजे अंजन।। जनु अकुलात कमल मंडल में, फंदन फंदे युग खंजन।।१३।। देखि विवस वृषभान घरनि, हंसत हंसत तहां आई।। वरजी आन नवल वधू, भुज भरि लिये कन्हाई।।१४।। पोछत मुख अपने अंचल, पुनि पुनि लेत बलाय।। मुसकि मुसकि छोरत सुगांठि, छवि बरनी नहीं जाय।।१५।। छोड़न न देंही नवल वधू, मांगे कुंवर पें फाग।। जोपे फगुवा दियो न जाय, प्यारी राधा के पाय लाग।।१६।। ओर कहां लगि वरनिये, बढ्यो सुख सिन्धु अपार।। प्रेम कलोल हलोलन में, किन हूं रहिन संभार।।१७।। रंग रंगीली व्रजवधु, रंगीले गिरिधर पीय।। यह रंग भीने नित बसो, "नंददास" के हीय।।१८।।

शयन भोग आवता से शयन दर्शन तक (एक ही पद गाया जाता है) धमार राग-नायकी/कान्हरो होरी खेलत लाल ललना संग।। विविध बन बन आंई, जुरि व्रज युवती बहु रंग।।१।। प्रथम देख हरि तन विथकित भई मूरतिवंत अनंग।। नयन बाण लागत उर अंतर, भई विकल सब अंग।।२।। तज कुल लोक लाज तन की सुध, कर मर्यादा भंग।। उमग उमग विलसें प्रीतमसों, बांध गुलाल उछंग।।३।। कर विचार मति चारू सबे मिल,

अपने अपने संग।। जुरी जाय हरि सुधा सिंधुसों, बढ़ी प्रवाह मानों गंग।।४।। कोऊ कर पै पिय कोकर, नृत्य करे थेई थुंग।। कोऊ पिय निज भुजसों भुज भर, भेटे उरज उतंग।।५।। कोऊ बजावत बैनु मधुर सुर, कोउ सरस उपंग।। कोउ कर कठताल बजावत, कोउ मृदुल मृदंग।।६।। कोऊ ठाड़ी पिय मुख निरखत, गहि भुज लता लवंग।। कोऊ लैंन उगार धरत मुख, पीय कपोल पर अंग।।७।। कोऊक निकट जाय प्रीतम के, मृदु बजाई मुख चंग।। कर कटाक्ष हँस हँस उत चितवत, जीत्यो दृगन कुरंग।।८।। चंचल चपल कहांलों वरणों, मेटयो मान तरंग।। अंग नख सिख प्रकट देखियत, सिर मुक्ताफल मंग।।९।। कब हुक देख देख पिय को मुख, नाचत सकल सुधंग।। बीच बीच वचन विविध मुख बोलत, कूजत मानों विहंग।।१०।। कबहुंक मुख सरसिज पर फेरत, अति चंचल द्रग भृंग।। कबहुंक धाय अधर रस पीवत, चित उपज्यो रति रंग।।११।। यह विधि पिय संग खेलत मेट्यो, डसी जू मैंन भुजंग।। अति रसमद कछुहि नहिं जानत, भई भाव पर पंग।।१२।। यह लीला सुमिरत रसिकन मन, हरि पद रति अति संग।। "श्रीवल्लभ" पद कमल विमल मति गावत उठत तरंग।।१३।।

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

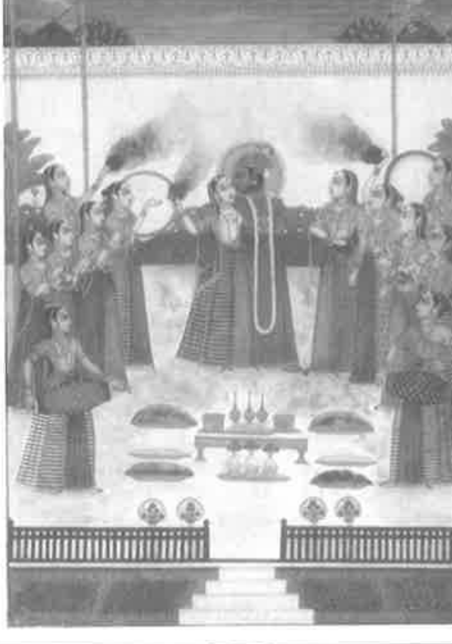

फाल्गुन कृष्णा १०

श्रृंगार - ग्वाल पगा को।

वस्त्र - सफेद शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर गुलाबी रंग का पगा पर रूपेरी जरीके काम की मोरशिखा धराई गई है। लुमक सोनेरी वादला की, श्रीचरणकमलों में गुलाबी शाटन की मोजड़ी, ठाड़ावस्त्र हरा रंग के पिछवाई चित्राम की तथा राजभोग में सफेद पिछवाई धराई गई है।

मंगला में राग-बिलावल श्रीलक्ष्मणकुल गाईये, श्री वल्लभ सुवन सुजान।। लाल मन मोहना हो।।ध्रु.।। गुन निधि गोपीनाथ जू, निर्गुन तेज निधान।।१।। पुरूषोत्तम आनंद में, श्री विट्ठल व्रजके भूप।। कोटि मदन विधुवारनें मुख शोभा सुख-रूप।।२।। भूतल द्विज वपु धारि कें, श्रुतिपथ कियो प्रचंड।। मारग पुष्टि प्रकासि कें, माया मत कियो खण्ड।।३।। श्रीगिरिधर गुन आगरे, पूरन परमानंद।। राज सिरोमनि लाडिले, करूणामय गोविंद।।४।। श्रीबालकृष्ण मुख चंद्रमा, पंकज नैन विसाल।। श्रीवल्लभ गोकुलनाथ जू, प्रिय नवनीत दयाल।।५।। श्रीपति श्रीरघुनाथ जू, जगजीवन अभिराम।। रूप रासि जदुनाथ जू, कमला पूरन काम।।६।। नवकिशोर घनश्याम जू, अंग-अंग सुखदाय।। बालक सब ब्रह्म जानिकें, वेद विमल जसगाय।।७।। वृंदा विपिन सुहावनो, ब्रजलीला सुखसार।। "मानिकचंद" प्रभु सर्वदा, श्रीगोकुल करत विहार।।८।।

श्रृंगार में राग-धनाश्री खेलत बलि मनमोहनां रितु बसंत सुख होरी हो।। (यह पूरा पद पेज ७७ पर पढ़े।)

राजभोग आवे तब राग-धनाश्री/जेतश्री खेलत फाग संग मिली दोऊ आनंद भरी पिय प्यारी।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राग-बसन्त (अष्टपदि) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-धनाश्री खेलो होरी फाग सबे मिलि, झूमक गावों।ध्रु.।। संगसखा खेलन चले, वृषभान गोपकी पौरी।। श्रवन सुनत सब गोपिका, गई हें कुंवरि पे दौरी।।१।। मोहन राधा कारनें, गुहि लीनों नौसर हार।। हार हेत दरसन भयो, सब ग्वालन कियो जुहार।।२।। राधा ललिता सों कह्यो, नेंक हार हाथ तें लेहुं।। चंद्रभगा यो सों कह्यो, नेंक इनहीं बेठन देहु।।३।।

बहोत भांति बीरा दिये, कीनो बहोत सनमान।। राधा मुख निरखत हरि, मानो कमल करत मधु पान।।४।। मोहन कर पिचकाई लीये, बंस लीये व्रजनारि।। जीती राधा गोपिका, सब ग्वालन मानी हारि।।५।। फगुवा कों पट ऐंचते, मुरली आई हाथ।। फगुवा दीये ही बनें, सुनि गोकुल के नाथ।।६।। मधुमंगल तब टेरियो, लीनो सुबल बुलाय।। मुरली तो हम देइंगी, प्यारी राधा कों सिर नाय।।७।। ढोल मुरज डफ बाजही, ओर मुरली की घोर।। किलकत कोतुहल करे, मानों आनंद निर्तत मोर।।८।। राधा मोहन विहरहीं, सुंदर सुघर सरूप।। पोहोप वृष्टि सुरपति करें, धनि धनि व्रज के भूप।।९।। होरी खेलत रंग रह्यो, चले जमुना जल न्हान।। सिंघ पोरि ठाडे हरी, गोपी वारि दें दान।।१०।। नरनारी आनंद भयो, तनमन मोद बढाय।। श्रीगोकुलनाथ प्रताप तें, जन "स्यामदास" बलि जाय।।११।।

भोग में राग-गौरी खेलत फाग गोवर्धनधारी हो हो होरी बोलत वृजबालक संगे।। (यह पूरा पद पेज ८५ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी ललनाँ खेलत फाग बन्यौ ब्रज, सखा लिये नंद नंदना।। बंसी धरें कहत हो होरी, युवती जन मन फंदनाँ।।१।। घर घर ते सुन्दरी चलीं, देखन आनंद कंदनां।। बाजे ताल मृदंग झांझ डफ, गावत गीत सुछंदनाँ।।२।। ठांय ठांय अगर अबीर लियें कर, ठांय ठांय बूका वंदनाँ।। हाथन धरें कनक पिचकाई, छिरकत चौवा चंदनाँ।।३।। क्रीड़ा रस बस भये मगन मन, मो तन मन आनंदनाँ।। दास "चतुर्भुज" प्रभु सब सुख निधि, गिरधर विरह निकंदनाँ।।४।।

शयन में राग-कल्याण श्री गोवर्धन राय लाला, प्यारे लाल तिहारे चंचल नयन विशाला।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग सो यह दिन कैसे निबहेगो मान तेरो आयो फाल्गुन मास कह्यो तू मान।। (यह पूरा पद पेज ८६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

फाल्गुन कृष्णा ११

श्रृंगार - मुकुट कांछनी का।

वस्त्र - पीला बसन्ती शुथन तथा कटि में कांछनी मोटो पिताम्बर। श्रीअंग में चोली श्याम सोनेरी कोरकी। श्रीमस्तक पर मीनां का मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र व पीछवाई सफेद।

आभरण - माणक-मोती के धराये गये है।

विशेष - आज शयन दर्शन में मेघश्याम रंग का घेरदार रूपहारी कोर का धराया गया है। विशेष सामग्री अरोगी तथा दर्शन के समय गुलाल खेली।

मंगला में राग-खट **आज भोर ही नन्द पौरी व्रज नारिन धूम मचाई।। पकरि पानि गहि डारि पौरीया, जसुमति पकरि नचाई।।१।। हरि भागे हलधर हू भागे, नंद महर हूं हेरे।। तबही मोहन निकासे द्वार व्हे, सखा नाम ले हेरे।।२।। द्वार पुकार सुनत नहीं कोऊ, तब हरि चढ़े अटारी।। आओरे आओ सखा संगी सब, घर घेर्यों व्रजनारी।।३।। सुनत टेर संगी सब दौरे जब, अपने अपने धाम।। अर्जुन, तोक, कृष्ण, मधुमंगल सुबल, सुबाहु, श्रीदाम।।४।। ग्वालिनी दौरी पौरि जब रोकी, आन न पाये नेरे।। चंद्रावलि ललितादि आदि दै, श्याम मनोहर घेरे।।५।। कित जैहों बस परे हमारे, भजि न सको नंदलाल।। फगुवा में मुरली हम लेहें, पीतांबर वनमाल।।६।। केसरी डारी सीस तें मुख रोरी मांडत राधे।। "विष्णुदास" प्रभु भुज गहि गाढ़े, मनवांछित फल साधे।।७।।**

श्रृंगार में राग-काफी **पीताम्बर काजर कंहां लग्यो हो ललना, कौन के पोंछे हें नयन।ध्रु.।। कोनके गेह नेह रस पागे, वे गोरी कोउ ओर।। देहूं बताय कान राखत हों, एसे भये चित चोर।।१।। अधरन अंजन, लिलाट महावर, राजत पीक कपोल।। घूमि रहे रजनी जागे से, दुरत न काम कलोल।।२।। नख निशान राजत छतियन पर, निरखो आपु निहार।। झूम रहीं अलकें अलबेली, पाग के पेच संवार।।३।। हम डरपें जसोदाजी के त्रासन, नागरनंद किशोर।। पाय परें फगुवा प्रभु देहो, मुरली देहु अकोर।।४।। धन्य-धन्य गोकुल की गोपी जिन हरि लीने हराय।। "नंददास" प्रभु किये कनोड़े, छांडे नाच नचाय।।५।।**

राजभोग आते समय राग-धनाश्री माई मेरो मन मोह्यो साँवरे, अब घर मोपे रह्यो न जाय।। चपल तिरछी भ्रोंह सों सर्वस्व, मेरो लियो है चुराय।।१।। माई हों गोरस लै निकसी, श्रीवृंदावन ही मंझार।। आय अचानक औचका, मटुकी हो मेरी दीनी ढार।।२।। गहि अचरा मोसों यों कह्यों, कोन तू काकी नारि।। कै बिरियां यह मग गई, दान हमारो मारि।।३।। कंचुकी पट नीवी गही लई, बहुत केतिक मोल।। कनक खुभी के ब्याज में, परसे मेरे पान कपोल।।४।। हंसि बीरी मुख में दई, ग्रीवा हो मेरे मेली बांह।। मिस ही मिस मोहि लै चले, गहवर हो अंधियारे मांह।।५।। जिय औरे मिस दान के बतीयनहो मेरे परसे पाय।। करत बसीठी मिलनकी, सनमुख री मेरे नेन चलाय।।६।। ओर कहां लगि बरनीये, कहत मोहि आवे लाज।। “जन त्रिलोक” प्रभु सों रमी, देखि सखी मेरे तन को साज।।७।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-सारंग ललना तुम मेरे मन अति बसो, सुंदर चतुर सुजान।।ललनां।। कर गहि मोंहन मुरलिका, नीकें सुनावो तान।।ललनां।।१।। मोर मुकुट सोभा बनी, सुंदर तिलक सुभाल।। मुख पर अलकावलि बिथुरी, मनहुं कमल अलि माल।।२।। अधर दशन बर नासिका ग्रीवा चिबुक कपोल।। पीतांबर क्षुद्रघंटिका, लाल काछनी डोल।।३।। नखसिख अंग वरनों कहा अंग-अंग रूप अतोल।। पटतर को कोऊ नहीं, अति मीठे मृदुबोल।।४।। एक दिना सैननि मिले, नवल कुंवर व्रजराज।। घर ते आवन ना बन्यों, भई बेरिन कुल लाज।।५।। घर ते गोरस मिस चली, लाज छांड कुल ऐन।। वे मुसिकनि हिरदे बसी, अति अनियारे नयन।।६।। कहा जानें तुम कहा कियो, घर अंगना न सुहाई।। बिन देखें नागर प्यारो, युग समान पल जाइ।।७।। सकल लोक मोहि वरज ही, पचिहारे समझाय।। नहीं भावे मोहि कुल कथा, मोहि तिहारी चाह।।८।। ग्वालिन पर गिरिधर रीझे, लीला कही न जाय।। “दास गोपाल” प्रभु लाल रंगीलो, हंस लीनी उर लाय।।६।।

राजभोग में राग-सारंग छांडो छांडो हमारी वाट, लंगर सांवरे।। जिन फोरो ढोरो मेरी गागर, भरन देहु यह घाट।।१।। जिन झगरो पकरो मेरो अचरा, देख विचारो ठोर।। तुम होरी के राते-माते, बोलत ओर की और।।२।। लेहों घेर निवेर सबन पें, करि हों न काहू की कान।। “श्रीविट्ठल गिरिधरन” लाल तुम, जीते हो मुसिकान।।३।।

राग-काफी एरी सखी निकसे मोहनलाल।। खेलन व्रज में फागरी।। रंग हो हो होहो होरियां।।ध्रु.।। एरी सखी घुमड्यो अबीर गुलाल।। मानो उनयो अनुरागरी।।१।। शोभित मदन गोपाल।। कटि बांधे पट सोहनों।। काछनी काछें लाल।। लाल निचोय रंगी मानों।।२।। मोर मुकुट छबि देत।। बंक दृगन हँसि देखनों।। सब ही को मन हर लेत।। एन मेन मानो पेखनों।।३।। पट आवज सुर बीन।। अनाघात गति गाज ही।। ताल मृदंग उपंग।। रूंज मुरज डफ बाजही।।४।। घिर आई व्रजनारि।। मृगनयनी गजगामिनी।। रोके हें सांवरे लाल।। घन घेर्‍यो मानो दामिनी।।५।। छिरकत पिय नंदनंद।। त्रियपट ओट बचाव हीं।। मानो घन पूरनचंद।। दुरि निकसें पुनि आवहीं।।६।। बने हें त्रियन के अंग।। छिरकी छींट छबि छेल की।। मानो फूली रंग रंग।। ललित लता जनु प्रेम की।।७।। बढ्यो परस्पर रंग।। उमग उमग रस भरनमें।। निरख भई मति पंग।। पीतांबर फरहरन में ।।८।। जग गहि रंगन भरे।। मोहन मूरति सांवरे।। हर हर हर हँसि परे।। मुनि मन व्हे गये बावरे।।९।। भई सरस्वती मति बोर।। ओर खेल कहां लों कहें।। रस भरे सांवल गौर।। "नंददास" के हिय रहें।।१०।।

भोग में राग-नट बहोरी ढ़फ बाजन लागे हेली।।ध्रु.।। खेलत मोहन सांवरो हों, किहीं मिस देखन जाय।। सास ननंद बैरिन भई, अब कीजे कौन उपाय।।१।। ओजत गागर ढ़ारीये, यमुना जल के काज।। यह मिस बाहर निकसि कें, हम जाय मिलें तजि लाज।।२।। आओ बछरा मेलिये वनको देही बिडार, वे देहें हमही पठैं, हम रहेंगी घरी द्वे चार।।३।। हा हा री हों जात हों, मोपे नाहिन परत रह्यो।। तूं तो सोचत हीं रही, तें मान्यों न मेरो कह्यो।।४।। राग रंग गहगड़ मच्यो, नंदराय दरबार।। गाय खेल हँस लिजिये, फाग बडो त्योहार।।५।। तिनमें मोहन अति बने, नाचत सबै ग्वाल।। बाजे बहु विध बाज हीं, रूंज मुरज ढफ ताल।।६।। मुरली मुकुट बिराज हीं, कटि पट बांधे पीत।। नृत्यत आवत "ताज" के प्रभु, गावत होरी गीत।।७।।

संध्या में राग-सोरठ हों किहिं मिस पनघट जाऊरी, मेरी गैल न छांडे सांवरो।। हो लाजन डरपत रही, मोहि धरे न कोऊ नाउं री।।१।। जित देखों तित देखिये री, रसिया नंद कुमार।। इन बातन कैसें भरों, मोहि पलकन करत जुहार।।२।। लकुट लिये आगे चलेरी, पंथ संवारत जाय।। मोहि निहोरो लायकें, नेंक फिर चितवे मुसिक्याय।।३।। यमुना जल गागर भरों री, जब सिर धरों उठाय।। हों अचरा ढांकत रही, मेरो हियरा तकि ललचाय।।४।। गागर

मारे कांकरी री, एड़ी छिवावे लात।। मारग में ठाडो रहे, मोहि टोके आवत जात।।५।। कैहू मिस हा हा करे री, लंगर मोहि निहार।। ओढन के मिस ओढ़नी, पीतांबर मोपें वार।। मोतन लगि लागे नहीं री, वाको मन ललचाय।। तब हँस मेरी छांह सों, नेंक छांहे चलत छुवाय।।७।। अब लग कछु सकुचत रह्योरी, प्रगट करत अनुराग।। अब कहो केसें छुटि हों, जब सिर पर आयो फाग।।८।। घर घर व्रज चाचर मचि री, विवस भये नर नारि।। मंत्र फाग दूती दियो, दोऊ उमग चले डर डारी।।९।। जब लगि मन मिलयों नहीं री, नच्यो चोंप को नांच।। "सिरोमणि" प्रभु दोऊ मिले ताते, करत मनोरथ सांच।।१०।।

शयन भोग तथा शयन दर्शन का पद, राग-बिहाग होरी दे ख्याल वीच, ये क्या किता।। मेनू लगाय छरी फूलोंदी, सिरदाँ घूंघट खोलवे लीता।।१।। पाया गुलाल आंखों विच मैड़े, देखन दा सुख छीता वे छीता।। सखी देखोंदी लाज मरोंदी, चुंबन गालों पे दीता वे दीता।।२।। ऐसी न कीजे निगड़ नंद दे, कहेलांदा व्रज जनदा मीता।। "रसिक" प्रीतम नाल हा हा खांदी, हों हारी तू जीता वे जीता।।३।।

मान में राग-बिलावल लाडिली मान न कीजे होरी के दिन में, कौन तिहारी बान।। (यह पूरा पद पेज ८८ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

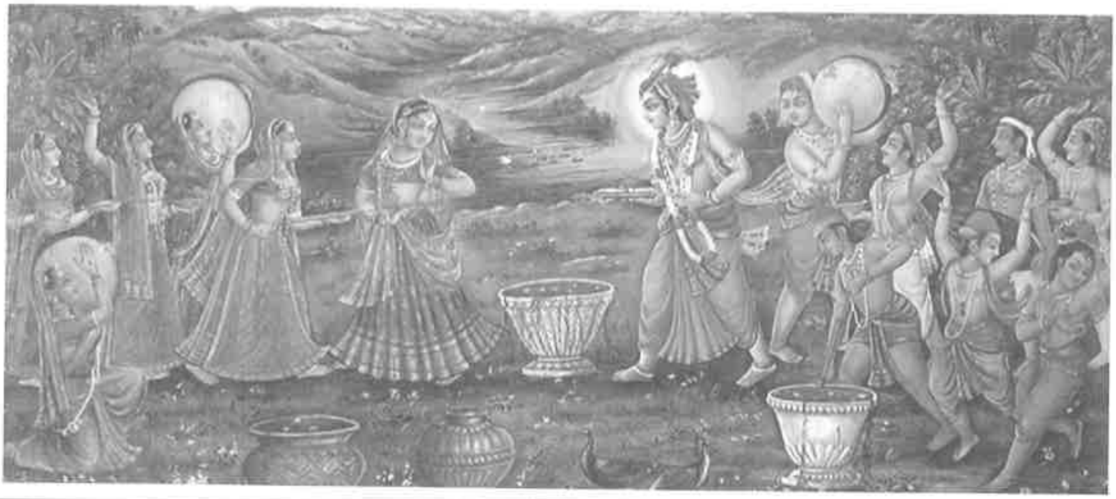

फाल्गुन कृष्णा १२

श्रृंगार - खीड़कीदार पाग, कतरो।

वस्त्र - पतंगी रंग के शुथन तथा वागो घेरदार। कटि में केसरिया पटको रूपेरी कोर को। श्रीमस्तक पर सफेद पाग केसरियां खीड़कीदार पर सोनेरी जरी के काम का कतरा, लुमक और ठारीलर मोती की। ठाड़ा वस्त्र हरा रंग के तथा पिछवाई सफेद धराई गई है। अबीर से रंगी चोली धराई है।

आभरण - नित्यानुसार भारी श्रृंगार किया गया है। हरा व सफेद मीना के आभरण धराये गये हैं।

विशेष - नित्य बसंत फाग खेले तथा आम के मोर नित्य आते हैं।

मंगला में राग-काफी पिताम्बर काजर कंहां लाग्यो हो ललना, (यह पूरा पद पेज १०३ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल बदत नाहिन ग्वालिनी जोबन के गारे।। (यह पूरा पद पेज ७४ पर पढ़े।)

राजभोग आते तब राग-जेतश्री ऋतु बसंत के आगमहो प्रचुर मदन कौ जोर।। (यह पूरा पद पेज ८२ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-सारंग ग्वालिनि सोंधे भीनी अंगिया सोहे केसर भीनी सारी।। (यह पूरा पद पेज ६१ पर पढ़े।)

भोग संध्या में राग-गौरी मोहन जान न दै हों।। लाल तेरी सुख की सोंज सब लेहों।। मथ मथ सोंधो धर्‍यो भवन में, सो अंगन लपटे हौं।। ये निज संगी सखा तिहारे, सब देखो अबै भजे हौं।।१।। क्यों क्यों कर फागुन दिन आयो, करहूं मनको भायो।। छांडौं क्यों सुन छैल छबीले, सूनी बाखर पायो।।२।। यह वागो अनुरागो झीनों, पाग रूचिर सुख दायक।। ताही तें हों कहत रँगीले, यह छिरकवे लायक।।३।। इत उत हेरत कहा लाडिले, चलो गेहके महियाँ।। सूधें सूधें कह्यौ करो किन, नातर गहि हों बहियाँ।।४।। आज सबेर हों उठ बैठी, कुचन कंचुकी दरकी।। ओर केसर घोरन में मेरी, फर फर भुज द्वे फरकी।।५।। सोइ अब

आन बनीं है प्यारे, आगम अगम जनायो।। देहुँ न जान अजानी व्है हौं, यह मूरत निधि पायो।।६।। निपुण नागरी गुणन आगरी, पीतांबर गहि लीनो।। भर अंकवारी कछु न विचारी, भरक द्वार तब दीनों।।७।। कछूक भेद श्रीदामा हू को, नातर कहा बल इनको।। जित तित फिरत अकेलो व्रजमें, मिलनियां गोपिन को।।८।। भीतर भीतर करत भांमतौ, सुनियत कछू किलकारी।। चित्र विचित्र झरोखा मोखा, चलत निकर पिचकारी।।९।। अबीर गुलाल घुमड़ि मड़हा पर, घुमड़ि रही घुमड़ाई।। ऋतु वर्षा वर्षन को बदरी, अरूण श्वेत व्है आई।।१०।। गोप वृंदमें हलधर ठाड़े, रोक रही निज गोरी।। उपर तें कृष्णागार भरि भरि, डारत कनक कमोरी।।११।। वरण वरण भये वसन रगमगे, तब दाऊ अकुलाये।। तकि तब मन जो पाय उपाय कें, तोक अटा चढ़ि आये।।१२।। सुबल उतर घसि गयो दौरी के, कमलन मार मचाई।। तिहि अवसर सैना बैनी भई, घर में बहोत लुगाई।।१३।। तब अग्रज हँस कहत भैया हो, कहा मतो अब कीजे।। दियौ दरेर चलो यह खिरकी, छूडाय स्याम कों लीजे।।१४।। भरभर पिचका फेंटन बंदन, कूद परे सब ग्वाला।। युवति यूथ में युवति वेष धरि, राजत हे नंदलाल।।१५।। वसन गहे तबही कर नवला, चपला ज्यौं लपटांई।। पकरि लये महाबली कहावत, भेदत भेदत आंई।।१६।। भेख रेख शोभा की सीमा, कवि पें वरणी न जाई।। मांडि मांडि मुख शिथल विथल, कर भये एक सम भाई।।१७।। बैठि कें सब वदन सुधारत, एक चढ अटा निहारें।। सैनन में पुन टेरि देत हें, अंचल हरि पर वारें।।१८।। फगुवा देन कह्यो मन भायो, मेवा बहुत मंगायो।। आगेंई काज साज रही नींकें, अब लालन छिटकायो।।१९।। "छीतस्वामी" तिहिं अवसर को सुख, क्यों हूं कहत न आवे।। देखत बावा नंद उजागर, गिरिधर वदन दुरावे।।२०।।

शयन भोग आने से शयन दर्शन तक एकही पद गाया जाता है। राग-गौरी अरी चल नवल किशोरी गोरी भोरी होरी खेलन जाय।। अरी एसी नव यामिनी देखें भामिनी, तोहि क्यों भवन सुहाय।।१।। जहाँ व्रज वर नर नारिन के, यूथ जुरे हें आय।। श्रीनंद नंदन पुनि आए, रंगीले रसिक मणिराय।।२।। आली तिन में तु नहिं देखी, तब रहि गये नयना नाय।। तब इत उत तक मोहन पिय, मोतन तकि अरगाय।।३।। तब नयनन हीं में कह्यो कहां, में कह्यो ग्रीव ढुराय।। अब रंगीले कुंवर तोहि पैयां, सेनन दईं हों पठाय।।४।। तू न कर गहर नागरि तिय, आन भलों बन्यों दाय।। यह सुन नवल नवेली सहचरी, मुसकी नयन दुराय।।५।। इतनेइ परम निपुण सखी जिन प्यारी, भुज भर लई उठाय।। गहि नव कंचुकी

सोंधें बोरी, बीरी दई बनाय।।६।। पुनि पट पीत पटोरन पोंछ कें, आगें धरि समुहाय।। चली नवसत सजि स्वामिनी कामिनी, सखी के अंस भुज लाय।।७।। जानों कनक धातु परवत तें, तड़ित लता चमकाय।। नव गुण नवल रूप नव जोबन, नवल नेह हुलसाय।।८।। झूमक सारी प्यारी पहरे, चलत चलत लरकाय।। जानो नव रूप जोति जगमग सी, पवन लगे झुकराय।।९।। कमल फिरावत कर वर, माला उरसि रूराय।। ललितादिक सखियन में सुंदर, शोभित हे यह भाय।।१०।। जानों नव कुमुदिन के मंडल में, इंदु पगन चल्यो जाय।। कबहु वदन दुराय उघारति, पुनि हंसि लेत दुराय।।११।। मंजुल मुकुर मरीचिन सी मानों, छिन छिन छबि अधिकाय।। पुनि एक लट जो छबीली की, छबिसों वेसर रही अरूझाय।।१२।। जानों प्रीतम मन मीन की बड़सी, भख मुक्ता लटकाय।। ओर एसें नवमत्त गयंदन, मलकत वहाँ दुराय।।१३।। शोभित श्रवणन स्वेद मुदित के, मानो पट चुचाय।। चंचल अंचल छोर बिराजत, नेंक चलत जब धाय।।१४।। नीवी बंधन फुंदवा घंटा, किंकिणी घन घहराय।। नूपुर ऊपर चूरा रूरा, जनु शृंखल झनकाय।।१५।। सखियन के कर कुसुम छरिन तें, अगड बने चहुं धाय।। मदन महावत को बल नाहीं, अंकुश देत डराय।।१६।। सखियन में हि तू विशेष विसाखा, जानो तनकी परछांय।। सो नंदनंदन नेरे जानकें, सहज उठी कछु गाय।।१७।। सबहिन जान्यों श्रीराधा जू आईं, भये चौगुने चाय।। जे हुती नवल किशोरी की संगिन, ते दोरी समुहाय।।१८।। तिन संग मोहन धाये आये, जानों रंक महा निधि पाय।। प्रथम ही लाल जुहार कियो, मृदु मुरली मांझ बजाय।।१९।। इत तें कुटिल कटाक्षन पिय तन, चितई मृदु मुसिकाय।। चाचर देन लगी व्रज वीथन, रंगीलो रंग उपजाय।।२०।। गावन लागी ग्वालिनी गारी, सुंदर ललहीं लगाय।। राधाजू गारिन सुनि सुनि हँस हँस, हरि तन हेरि लजाय।।२१।। ललन अबीर भरत गोरी ग्वालिनी, प्राण पियाहि बचाय।। सो सुख पिय नयना पहचानें, सो मन में न समाय।।२२।। ओर जो प्रेम विवश रस को सुख, कहति कह्यो नहि जाय।। यह सुख कहिवे कों सरस्वती की, कोटिक सुमति हराय।।२३।। शेष महेश सुरेश न जानें, अज अजहुँ पछिताय।। यह सुख रमा तनक नहीं पायो, जदपि पलोटत पाय।।२४।। श्रीवृषभान सुता पद अंबुज, जिनके सदां सहाय।। यह रस मगन रहत जे तिन पै, “नंददास” बलि जाय।।२५।।

मान में राग-बिहाग सो ईन दिन कैसें निबहेगो मान तेरो, आयो फाल्गुन मास कहूयो तू मान।। (यह पूरा पद पेज ८६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

फाल्गुन कृष्णा १३

श्रृंगार - दुमाला को।

वस्त्र - सफेद शुथन तथा वागो चाकदार, कटि में लाल पटको श्रीमस्तक पर लाल दुमाला पर कलंगी। ठाड़ीलर मोती की धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र श्याम रंग के तथा पिछवाई सफेद। आम के मोड़ पास में तथा पिचकारियाँ भर कर पधराई गई है।

आभरण - सोना-माणक-मोती के नित्यानुसार धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल **बदत नाहिन ग्वालिनी जोबन के गारे।।** (यह पूरा पद पेज ७४ पर पढ़े।)

श्रृंगार राग-बिलावल तुम बेगी स्याम भलें आये हो, होरी खेलन रंग भरी।। (यह पूरा पद पेज ८१ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-जेतश्री फाग खेलै राधा गोरी, श्री वृषभानु जु की पौरि हो।। नंदलाल वृषभानु नंदनी, भली बनी यह जोरी हो।।१।। चारू, अबीर, गुलाल, लसत तन, बिच बिच राजति रोरी हो।। झख कर दम हरि रहसि भरै तब, केसर कुंमकुम घोरी हो।।२।। तन सुख चारू छींट छिरकति तन, डगमगात डोरी हो।। अंचल पट सोभित ऊरू कुच पै, उपमा श्रीफल कोरी हो।।३।। स्याम सुभग के वाम अंस पै, राजति नवल किसोरी हो।। नूपुर रूनति कुनित कटि मेखला, निरखि मदन मति भोरी हो।।४।। रीझि-रीझि तब "रसिक राई" कों, मृदु मुसिकनि मुख मोरी हो।। प्रेम गाँठि परि जू परसपर, छुटत नहिं क्यौं हुँ छोरी हो।।५।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-बिलावल आंनंदराय खेले फाग सो हो हो होरी आई।। (यह पूरा पद पेज ८४ पर पढ़े।)

भोग संध्या में राग-गौरी ए चल जांए जहां, हरि खेलत गोपिन संगा।। आनक बहु बाजे, ताल मुरज मुख चंगा।। गावत सुन भावत, मंद मधुर स्वर बानी।। जानों हरख परस्पर, मानो मदन गति ठानि।। ए चल जाय जहां क्रीडत नंदनंदन, झांझ प्रणव डफ भारी।। बीन

मृदंग उपंग चंग, बहु देत परस्पर गारी।।१।। कर पिचक विकच मुख, कटि पट भेष बनायो।। जानों गुदर देन गुण, बन बसंत व्रज आयो।। हाटक मणि गण खचित, विविध कर जेरी साजें।। रूंज मुरज सहनाई, ढ़ोल ढ़ोलक छबि छाजें।। आवज अति आतुर बजे, गावत ब्रजजन फाग।। तान तरंगन बाहुज बांध्यो, छाय रह्यो अनुराग।।२।। ध्वनि सुनत पियारी, कुंकुम मज्जन कीनों।। बहु रंग वसन तन, यावक चरणन दीनों।। कबरी कर जु संवारि, निरख उपमा कों हारी।। मानो हाटक लता रही खग पन्नग नारी।। श्रवण तार उर हार छबि, उर मुक्ता सजल सुढार।। जनु युग गिरि विच देखिये छबि, धसी सुरसरी धार।।३।। रचि तिलक भाल पर, मृगमद रेख संवारी।। जानों युगल जीभ धर, पन्नग पीतव सुधा री।। खंजन मीन आधीन देखि, दृग सारंग लाजे।। वदन चंद भ्रुव चांप स्वांति, सुत नासा राजें।। उपमा कों अवलोक कें छबि, या समान नहि ओर।। मानों कीर उडुगण गहें, चुगत नहीं सुनि बौर।।४।। अति अरूण अधर छबि, अरू दशनन द्युति पाई।। जनु बिजुरी बीज की, विद्रुम बाड बनाई।। कंठ कपोत लजात, करन अंगद जगमग यों।। मानों जरद मृणाल शरद, शशि बालक लजयों।। पोंहोंचन अति पोंहोंची सघन, सुंदर स्याम सु पास।। मानो कंज के कंठ लाग कें, भृंग रहे मधु आस।।५।। बन चली सकल त्रिय, पग नूपुर सुर भारी।। जानों विविध केलि, कलहंस करत किलकारी।। साख जवाद सुंगंध, कुंकुमा केसर घोरी।। भाजन भरिले चली, सकल त्रिय गावत होरी।। नख शिख ते अवलोक, छबि नागर रीझे गान।। मानो संगीत शाला पठी, घट बढ परत न तान।।६।। छबि सिंधु ललन तन, देखत लोचन भूले।। चितवत चित चोरत, अंग अंग अनुकूले।। वरण वरण सिरपाग, श्रवण कुंडल मणिमय अति।। मनहूं स्याम नग शिखर, तरणि युग रमत तरल गति।। उर वनमाल विशाल अति, विविध सुमन बहुवेष।। मानो जलद में प्रगट देखियत, सत मख सारंग रेख।।७।। रचि तिलक मलय कों, पिय कर खोंर बनाई।। मानो युगल अहिन राशि, घन पर दई दिखाई।। घन तन देख लजात कंज, दृग क्यों सम पावें।। मुख छबि स्याम सुजान देख, अहि वपु हि लजावें।। नख सिखतें अवलोक कें, छबि कटिपट पीत सुदेश।। मानो जलद धुर्वा सखीरी, दामिनि रही प्रवेश।।८।। छवि सिंधु मोहन तन, लघु मति वरणी न जाई।। चितवत चित चोरत, मन्मथ रह्यो लजाई।। त्रियन परस्पर हरख, विविध कर डांगन राजें।। गोप उठे किलकार, दुहूं दिशते बाजत बाजें।। एकन कर कुंकम लियो, एकन घोर गुलाल।। चली सकल व्रज सुंदरी, पकरन मदन गोपाल।।९।। सेनन स्यामा जू, हलधर दिये हें बताय।। गहि नील वसन तन, दोऊ बंद दिये छटकाय।। सब मिल

पकरे स्याम, मुरलिका लई छिनाई।। तबहि तरूणी मुसिकाय, साख भर भाजन लाई।। छांटत छिरकत हसत, परस्पर प्रेम छके नंदनंद।। मानो अवनि पर मेघ कों, घेर रहे बहु चंद।।१०।। निरखत विथकित भये, तहां अंबर विमान।। बरखत सुर कुसुमन, ओर बजाये निसान।। रह्यो परस्पर रंग सकल, त्रिय भवनन आईं।। तब हिं तिनें व्रजराज, विविध पट दई मिठाई।। बहुरि तरणि तनया सलिल, मज्जन कर बल बीर।। पहर वसन आये घरैं, संग सकल आभीर।।११।। दुतिया मोहन तन राजत, सुंदर पीत सुवास।। बैठे कनक सिंघासन, बल बल "राघोदास"।।१२।।

शयन भोग आने से शयन दर्शन तक एक ही पद गाया जाता है। राग-कल्याण व्रजराज लडैतो गाइये लाल, मनमोहन जाको नाम।। खेलत फगु सुहावनों, रंग भीज रह्यो सब गाम।।१।। ताल पखावज बाज हीं, ढ़फ सहनाई भेरि।। श्रवण सुनत सब व्रजबधू, झुंडन आई घेर।।२।। उतही गोप सब राज हीं, इत सब गोकुल नारि।। अति मीठी मन भावती, देत परस्पर गारि।।३।। चोवा चंदन छिरक हीं, उडत अबीर गुलाल।। मुदित परस्पर खेल हीं, होरी बोलत ग्वाल।।४।। एक सखी मोहन गहि आने, प्यारी पकरे हाथ।। गोपी भेष बनाय के, रच बेनी गुंथी माथ।।५।। बहुरि मतो कर सुंदरी, हलधर पकरे जाय।। नव केसर मुख मांडकें, आये हैं आंख अंजाय।।६।। पीतांबर मुख मूंद कें, निरख हँसे नंदलाल।। दाऊ जू आज भले बने, कूकें देत गुवाल।।७।। सिमटि सकल व्रजसुंदरी, व्रजपति पकरे धाय।। करत सबे मन भामतो, नेंक न राखत काय।।८।। तब नंदरानी बीच कियो, मेवा दियो मंगाय।। पट आभूषण पहरायकें, "ऋषीकेश" बलि जाय।।९।।

मान में राग-बिहाग लाडिली मान न कीजे होरी के दिन में, कौन तिहारी बान।। (यह पूरा पद पेज ८८ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

फाल्गुन कृष्णा १४

शिवरात्री

श्रृंगार - पाग तथा सोनेरी चन्द्रिका

वस्त्र - लाल रूपेरी कोरके शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर सोनेरी वादलाकी चमकनी चन्द्रिका धराई जाती है। ठाड़ा वस्त्र पीला रंग के तथा पिछवाई सफेद रंग की धराई जाती है। शयन में स्वांग में महादेव जी बनकर नाचते गाते हैं।

नोटः- आज मुकुट-कांछनी का भी श्रृंगार आता है तथा सारे आभरण सोने के होते है।

आभरण - नित्यानुसार भारी श्रृंगार धराया गया। सोने के आभरण धराये गये।

विशेष - भोग आरती के बाद प्रातः के श्रृंगार वड़े करके श्याम रंग का घेरदार सुनहरी कोर का वागा धराया गया तथा सुथन व पाग प्रातः श्रृंगार की धराई जाकर विशेष सामग्री आरोगी तथा शयन दर्शन के समय गुलाल खैलाई गई।

मंगला में राग-बिलावल **तुम बेगी स्याम भलें आये हो, होरी खेलन रंग भरी।।** (यह पूरा पद पेज ८१ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-धनाश्री **रंगीले री छबीले नयना रस भरे नयना नाचत मुदित अनेरे।। खंजरीट मानों महामत्त दोऊ केसे हूं घिर तन घेरे।।१।। स्याम सेत राते रंग रंजित मानों चित्र चितेरे।। "कुंभनदास" प्रभु गोवर्धनधर स्याम सुभग तन हेरे।।२।।**

राजभोग आते समय राग-काफी **एरी सखी निकसे मोहनलाल।।** (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

राग-काफी **बाघंबर ओढें सांवरो हो या में, जोगी को हुनर कौंन।।ध्रु.।। संख शब्द ध्वनि सुन जित-तित तें, घिरि आंई व्रज नार।। वदन विलोकि कुंवरि राधे को, बेठे हें आसन मार।।१।। हँसि बूझत वृषभान नंदिनी, रावल उत्तर देह।। कारन कोन रूप तपसी को, वन तजि ढूंढत गेह।।२।। कौन देसते आए हो रावल, कहां तेरी मनसा जाइ।। आपुन साधि मौन धरि बेठे, दक्षिन दिसा बताइ।।३।। सींगी पत्र विभूतिन बटुवा, सिर चंदन की खोर।। मेरे**

जिय ऐसी आवति हें, संकर बिसरी गौर।।४।। चुटकी भभूत दई राधा कों, चले हें बाघंबर झारि।। मन हरि लियो तनक चितवन में, गोहन लागी सकुमारि।।५।। नगर नगर प्रति भवन भवन प्रति, निशदिन फिरत उदास।। नयन चकोर भये राधा के, हरि दरसन की प्यास।।६।। जतन जतन कर मन मोह्यो हो, निरख नयन की कोर।। "जगन्नाथ" जीवन धन माधो, प्रीति लगी दुहुं ओर।।७।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-सारंग कर तारी दै दै नाँच ही, बोलें सब होरी हो।।ध्रु.।। संग लिये बहु सहचरी, वृषभान दुलारी हो।। गावत आवत साज सों, उत तें गिरिधारी हो।।१।। दोऊ प्रेम आंनद सों, उमगे अति भारी।। चितवन भरि अनुराग सों, छूटी पिचकारी।।२।। मृदंग ताल डफ बाज हीं, उपजे गति न्यारी।। झूमक चैतव गावही, ये मिठी गारी।।३।। लाल गुलाल उडावहीं, सोधें सुखकारी।। प्यारी मुख हि लगाव हीं, प्यारो ललन बिहारी।।४।। हरें हरें आंई दूरि करि, अबीर अंधियारी।। घेरि ले गई कुंवर कों, भरिके अंकवारी।।५।। काहु गहि बेनी गुही, रचि मांग संवारी।। काहू अंजन सों आंज दई, अंखिया अनियारी।।६।। कोऊ सोंधे सों सानि कें, पहिरावत सारी।। करते मुरली हरि लई, वृषभान दुलारी।।७।। तब ललिता मिलके कछू, एक बात विचारी।। प्रिया वसन पियकों दिये, पियके दिये प्यारी।।८।। मृगमद केसर घोर कें, नख सिख तें ढारी।। सखियन गठजोरो कियो, हँस मुखकाय निहारी।।९।। याही रस निबहो सदा, यह केलि तिहारी।। निरख "माधुरी" सहचरी, छबि पर बलहारी।।१०।।

भोग संध्या में एक ही पद गाया जाता है राग-गौरी खेलत हें हरि हो हो होरी।। व्रज तरूणी रस सिंधु झकोरी।।१।। बाला वयस ओर नव तरूणी।। जोबन भरी चपल, दृग हरिणी।।२।। नव सत सज गृहगृह तें निकसी।। मानो कमल कलीसी विकसी।।३।। पिक वचनी तन चंपक वरनी।। उपमा कों नही मनसिज घरनी।।४।। वरण वरण कंचुकी ओर सारी।। मानो काम रची फूलवारी।।५।। द्वादस आभरण सज कंचन तन।। मुख शशि आभूषण तारागण।।६।। मानो मनोभाव मनते कीनी।। ओर त्रिभुवन की शोभा लीनी।।७।। देखत दृष्टि छिन न ठहराई।। ज्यों जल झलमलात जल झांई।।८।। ताल मृदंग उपंग बजावत।। ढ़फ आवज स्वर एक मिलावत।।९।। मधु ऋतु कुसुमित वन नौ नौरी।। गावत फाग राग रति

गोरी।।१०।। आईं सकल नंद जू के द्वारें।। अगणित सकल सुगंध संवारें।।११।। झूम झूम झूमक सब गावें।। नमत भेद दुहुं दिश तें आवें।।१२।। रस सागर उमड्यो न संमाई।। मानो लहर चहुंदिश धाई।।१३।। खोर खिरक गिरि जहां ही पावें।। धाय जाय ताही गहि लावें।।१४।। करि छांडत अपनो मन भायो।। उडत गुलाल सकल नभ छायो।।१५।। घर में ते मनमोहन झांके।। दूरि भये तब युवतिन ताके।।१६।। एक ही बेर सबें जुरि धाईं।। पौरि तोर रावर में आईं।।१७।। मोहन गहत गहत छुटि भागे।। पीतांबर तजि तन भये नागे।।१८।। दौरि अटा चढ़ि दई हे दिखाई।। उतते स्याम घटा जानों आई।।१९।। सुंदर स्याम मणि गण तन राजें।। गिरा गंभीर मेघ ज्यों गाजें।।२०।। टेर टेर पीतांबर मांगें।। गोपी कहत आय लेहु आगें।।२१।। पीतांबर वर राधिका उढ़ायो।। हरिजू निरख परम सुख पायो।।२२।। पीतांबर तहां शोभा पाई।। घन तज दामिनि खेलन आई।।२३।। तब ही अरगजा स्याम मंगायो।। अपने कर बर घोर बनायो।।२४।। ऊंचे चढि घन ज्यों बरखायो।। धारा धर जानों उवैं आयो।।२५।। तब इन जसुमति ठाडी पाई।। सोंधे गागर सिरतें नाई।।२६।। उतते निरख रोहिणी आई।। बीच छांड व्हे महरि बचाई।।२७।। आंगन भीर भई अतिभारी।। जसुमति देत दिवावत गारी।।२८।। गोपिन नंद दुरे गहि काढ़े।। कंचन गिरि से आगे ठाढ़े।।२९।। जानों युवती ऐरावत लाईं।। पूजत हस्त गोरी की नाईं।।३०।। नंद जसोदा गोरा गोरी।। छिरकत चंदन वंदन रोरी।।३१।। पूजि-पूजि वर मांगत मोहन।। बिन पाये छांडत नहिं गोहन।।३२।। एक कहे मोहन हिं बतावो।। तो तुम हम पे छूटन पावो।।३३।। एक सिखावत एक बतावत।। तारी देदे एक नचावत।।३४।। एक गहे कर फगुवा मागे।। एक नयन काजर दे भागे।।३५।। बसन आभूषण नंद मंगाये।। दये वसन जेसे जाहि भाये।।३६।। देत असीस सकल व्रजबाला।। युगयुग राज करो नंदलाला।।३७।। मदन मोहन पिय के गुण गावे।। "सूरदास" चरणन रज पावे।।३८।।

शयन भोग आने से शयन दर्शन तक एक ही पद गाया जाता है राग-बिहाग चली हें कुंवरि राधे खेलन होरी।। पंकज पराग भरि लीने भरि झोरी।।१।। रंग रली संग सोहे अनगन अली।। सुफल करि हें सब, गोकुल की गली।।२।। गावत सरस सुर, आछी मिठी धुनी।। हरजो जारयो मनोज, जीयो चाहे सुनी।।३।। बाजे डफ ताल झांझ मृदंग सुहाये।। मदन सदन मानो मंगल बधाये।।४।। सोहे मुख कछू-कछू अंबरन दुराये।। आधे-आधे विधु मानो बदरन छाये।।५।। अबीर धूंधर मध्य राजै रंग भीनी।। मानों ढींठ डरि मार सार ढांक लीनी।।६।।

उत तें आये हें मोहन भीने रंग रंगा।। चरण पलोटत आवे कोटि अनंगा।।७।। रंगीली गलिन बिच खेल मच्यो भारी।। इत हरि उत वृषभान की दुलारी।।८।। कनक जंत्रन मिल शोभा भई भारी।। छबिसों छूटत मानों मेंन फुलवारी।।९।। छिरकी छबिले आय प्यारी त्रिया गन।। रंग बरसे मानो नोतन घन।।१०।। त्रियन के अंग रंगकन गण सोहें।। कंचन छरि जराय जरी छबि कोहें।।११।। इतते रंग की धारें सांवरे कों मेली।। आतुर उलहीं मानों प्रेम नवेली।।१२।। अबीर गुलाल मध्य मंडित गगन।। मानो प्रेम रवि अब चाहत उगन।।१३।। कामिनी वृंदन स्याम घेर लिये ऐसे।। दामिनी निकर मानो नव घन जेसे।।१४।। लपटी सांवरे अंग सोहे सब अेसी।। सिंगार कल्पतरू मानो छबि लता जैसी।।१५।। हँसत-हँसत चंद्रावली उत गई।। लालसो कहत हों तिहारी दिश भई।।१६।। मुरली छिनाय लई छ्ल किशोरी।। तारी दै दै हँसी हे सब, बोले हो हो होरी।।१७।। राधाजू अधर धरी बांसुरी बिराजी।। ऐसी कबहुं सांवरे पिय पे न बाजी।।१८।। बंसी देन मिस प्यारी राधिका बुलाये।। हँसत-हँसत लाल अकेले हीं आये।।१९।। गावत व्रजकी वधू कीरति तिहारी।। चिरजियो प्यारो लाल अटल बिहारी।।२०।। फगुवा कुंवर कान्ह बहुत जो दीनो।। सब सखि प्रेम प्रीति माथे मान लीनों।।२१।। "नंददास" यह सुख कहांलों बखाने।। विधि हू कह्यो हे ऐसै जाने सोई जाने।।२२।।

मान में राग-बिहाग यह दिन होरी को, तू जिन मान करे।। मेरो कह्यो तू मान हठीली काहें कु गर्व करे।।१।। उठ चल हिल मिल गिरिधर पीयसों, तो सब काज सरे।। तेरे री बस हैं "व्रजपति" अब तेरोई ध्यान धरें।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

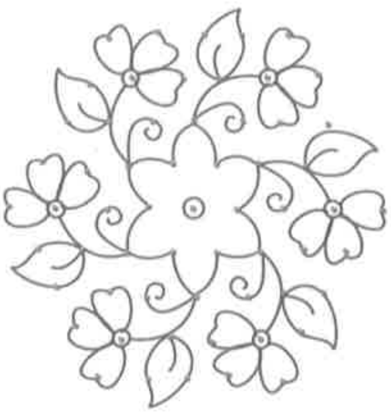

फाल्गुन कृष्णा ३० (अमावस्या)

श्रृंगार - पाग तथा गोल चन्द्रिका का

वस्त्र - चौवा में रंगाये गये शुथन व वागा घेरदार। कटि में पटका, श्रीमस्तक पर श्याम पाग उस पर सोनेरी जरी के काम की गोल चन्द्रिका धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र हरा रंग के है। पिछवाई सफेद धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार लाल सफेद मीना के आभरण धराये गये है।

मंगला में राग-विभास **अनोखे होरी खेलन लागे।। मिस ही मिस रंग भरत सांवरो कछु सोवत कछु जागे।।१।। लाल गुलाल लियें कर ललना नंदनंदन अनुरागे।। "कृष्ण जीवन लछीराम" के प्रभु प्यारे बने हें मरगजे वागे।।२।।**

श्रृंगार में राग-बिलावल **तुम बेगी स्याम भलें आये हो, होरी खेलन रंग भरी।।** (यह पूरा पद पेज ८१ पर पढ़े।)

राजभोग आवे तब राग-सारंग **ललना तुम मेरे मन अति बसो, सुंदर चतुर सुजान।।ललनां।।** (यह पूरा पद पेज १०४ पर पढ़े।)

राग-सारंग **अरे कारे प्यारे रतनारे भौंरा, वदन कमल के लोभी।। फिरत पराग हेत तब ही तें, उपजत कलिका गोभी।।१।। फूल रहे द्रुम डारि-डारि झुकि, भार कुसुम मकरंद।। ताहि छांडि पियो चाहत तुम, सुधा किरण मुखचंद।।२।। जो तू होहि तृषा आतुर तौ, रहें अलक लर लाग।। पुनि विश्राम कियौ चाहे तौ, चिबुक गाढ़ खग खाग।।३।। जो उन्मत्त गान करें तो श्रुति पथ लगि गुंजार।। क्यों भटकें "ब्रज" बन बन बीथन, यह निश्चय उर धार।।४।।**

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) **हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-सारंग **श्यामा नकवेंसर अति बनी छबि, कवि पें बरनी न जाय।। सोने सरस सुनार गढ़ी हे, हीरा लाल लगाय।।१।। आधे अधर बिराजत मोती, लाल रहे ललचाय।। ताकी शोभा अति बाढी हे, भयो गुंज को सुभाय।।२।। तनसुख सारी रातो लहेंगा क्यों, न स्याम मन भाइ।। शोभा "हित हरिवंस" सांवरे, चिते चली मुसिक्याइ।।३।।**

भोग राग-काफी मन मोहन ललना मन हर्यो हो।। हर्यो मन-सकल सिरताज।।ध्रु.।। गृह गृह तें सुंदरि चली, देखन ब्रजराज कुमार।। निरख बदन विथकित भई, हरि ठाड़ें सिंघ दुवार।।१।। डिम-डिम पटह झांझ ढ़फ बीना मृदंग उपंग तार।। गावत चेत सुबल श्रीदामा, बाढ्यो रंग अपार।।२।। रत्न जटित पिचकाईं कर लियें, छिरकत घोख कुमार।। मदन मोहन पिय अति रस माते, कछु बन अंग सम्हार।।३।। इत राधा प्रभृति चंद्रावली, ललिता गोपी अपार।। उत हलधर मोहन दोऊ भैया, खेल मच्यो दरबार।।४।। शिथिल कटि तट बसन मेखला, उर गज मोतिन हार।। बिथुरी अलक बदन छबि राजत, गलित कुसुम सिर भार।।५।। मोहन प्यारी सेन दे, हलधर पकरे जाय।। आपुन हँसत पीत पट मुख दे, आये हें आंखि अँजाय।।६।। बहोर्‍यों सिमटि सकल सखियन मिलि, मोहन पकरे धाइ।। अधर माधुरी पीवत पिवावत, मुरली लई हे छिनाइ।।७।। परिवा सिमिटि सकल ब्रजबासी, चले जमुना जल न्हान।। वार कुंवर नंदरानी हो, देत विप्रन बहु दान।८।। द्वितीया पाट सिंघासन बैठे, छत्र चवर सिरताज।। राजत सभा सहित श्रीदामा, बल बल बल युवराज।।९।। स्याम सुभग तन अति राजत हें, अरगजा पीत सुवास।। "गोविंद" प्रभु पर सकल देवता, बरखत कुसुम अकास।।१०।।

संध्या में राग-गौरी/रागश्री खेलत फाग फिरत रस फूलै।। स्यामा स्याम प्रेम बस नाँचत, गावत सरस हिंडोरे झूलैं।।१।। वृंदावन की जीवनी दोऊ, नट नागर बंसीवट मूलै।। "व्यास स्वामिनि" की छबि निरखत, नैन कुरँग फिरत रस भूलै।।२।।

शयन भोग आने से शयन दर्शन तक एक ही पद गाया जाता है राग-बिहाग बरसाने की ग्वालिनी, ओर खेलत फाग बसंत हो।। शंक न मानें काहू की, मात पिता सुत कंत हो।।१।। चंद्रभागा चंद्रावली मध्य, नायक राजत राधा।। सहत स्वरूप सुहावनो, शोभा सिंधु अगाधा।।२।। सकल साज संग ले चली, आंई वट संकेत।। पठई सखी एक आपनी, नंद कुंवर के देत।।३।। चली सब चतुर सिरोमणि, ओर खेलनकों रस फाग।। रसिक कुंबरि वृषभान की, तुमसों अति अनुराग।।४।। राम कृष्ण हँस यों कह्यौ, सुनो हो सखा श्रीदाम।। हमपें आय सबे जुरीं, ओर तिनमें अतिशय भाम।।५।। वेग चलो सब ग्वाल ले, दिखाओ अपुने हाथ।। जैसें बहोरि न आव हीं, छांडि आपनों साथ।।६।। अनत अबीर गुलाल ले, देहु निसान घुराई।। बहुत कलश सोंधे भरें, कुंकुम भरि पिचकाई।।७।। दल बादर ज्यों देखिके, सन्मुख आंई धाई।। मेघ घटा

ज्यों बरख हीं, अदभुत खेल मचाई।।८।। कमलन ले ले नवला सी, कुसुम गेंद कर मारी।। मुरि भाजे बल मोहना, हो हो कहें व्रजनारी।।९।। चंद्रावलि बल जू गहे, स्याम गहे श्री स्यामा।। सखा गए सब भाज कें, लियो छिनाय दमामा।।१०।। संकरषण सोंधे भरे, स्याम भरे सुकुमारी।। आनन सीस सवारि कें, भेष बनायो नारी।।११।। रस बस भई व्रजसुंदरी, लीला कही न जाई।। "चतुर्भुज" प्रभु इन बस किये, गिरि गोवर्द्धन राई।।१२।।

मान में राग-बिहाग होरी के खेल में गुमान केसो, मान मान की ठोर।। जो तुम खेल खिलायो चाहो रंक राय मिलि तैसो।।१।। उत ते आई कुंवरी राधिका, इततें आये कान्ह।। "सूरदास" प्रभु रस बस कर लीने, राख्यों सबन को मान।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

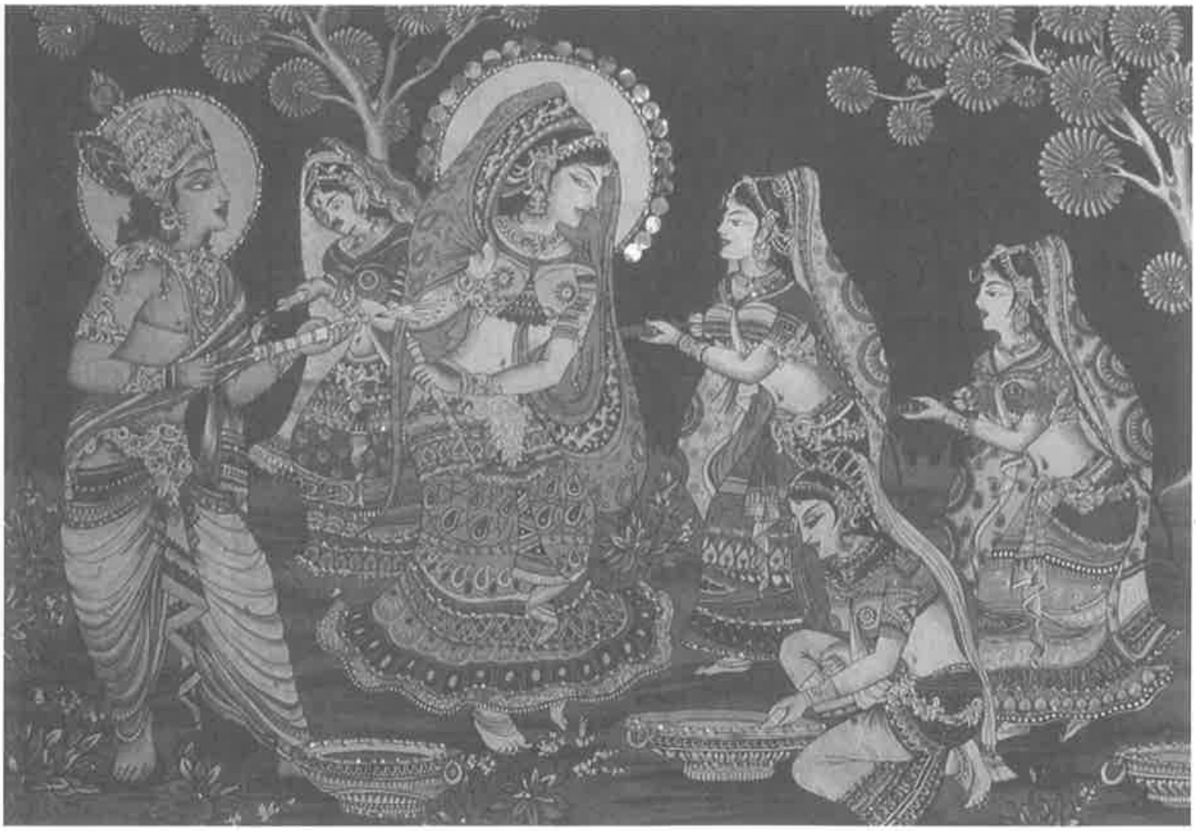

फाल्गुन शुक्ला १

श्रृंगार - ग्वाल पगाको।

वस्त्र - अंगुरी रंग का रूपेरी कोर का शुथन व वागा चाकदार, श्रीमस्तक पर ग्वाल पगा पर जरी कामकी मोर शिखा धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई सफेद धराई गई। अनोसर में आम के मोड़ तथा पिचकारियाँ भरकर पधराई गई है। खेल का साज व फगवा भोग धराया गया है।

आभरण - नित्यानुसार सोना, माणक-मोती के धराये गये हैं।

मंगला से श्रृंगार तक एक ही पद धमार का गाया जाता है राग-बिलावल परिवा प्रथम कुंवर अति, विहरत गोपिन संगा।। ताल मुरज बहु बाजे ओर, आवज मुख चंगा।।१।। ढोल भेरि ढोलक छबि, बेन मृदंग उपंगा।। रूंज मुरज ओर दुंदुभी, झालरी तरूल तरंगा।।२।। विविध पखावज आवज, झांझ बीना ढ़फ जोरी।। बिच बिच गोमुख सुनीयत, बिच मुरली की घोरी।।३।। ग्वाल परस्पर राजें, मनिमय जेरी हाथा।। बूका कनिक पिचकाई, भरि भरि छिरकत गाता।।४।। चलो सखी देखन जैयें, विहरत सिंघ द्वारा।। सुनि मन हरखि सकल त्रिय, लार्गी करन सिंगारा।।५।। नील वसन तन सारी, लहेंगा लाल सुरंगा।। कंचुकी ललित कुचन पर, मानो लज्जित अनंगा।।६।। सोंधे सीस सरस करि, बेनी सरस संभारी।। मानो कनिक खंभ लगि, झूमत पन्नग नारी।।७।। सीस फूल रचि तिलक, भृकुटी बिच वंदन रोप्यो।। मानों सरासन साजि बान, मनमथ मन कोप्यो।।८।। वंदन मांगन मधि अति, राजत कच सुढारे।। मानों शेष सीस पर ठाडो अक्षत डारें।।९।। नैन कुरंग श्रवन जुग, चारू चक्र बिराजे।। मान हुं शशि अवनि पर, देखियत रवि रथ साजे।।१०।। नख सिख तें जुवति बनि, गई सब सिंघ दुवारा।। हमारो फगुवा देहु, मोहन नंदकुमारा।।११।। काहे मोहनराय भाजो, काहे ओले लेहो।। कुमुद बंधु जो निकसत, नेंकु दिखाई देहो।।१२।। फगुवा को मिस झूंठो, हरि दरसन की आसा।। देखन कों जीय तरसत, लोचन मरत पियासा।।१३।। सुनि मन हरखि जसोमति, उनकों आसन दीनो।। कुंकुम जलसो घोरि, सबन मुख मज्जन कीनो।।१४।। वरन वरन पट दीये, गोदन भरी जु मिठाई।। यह विधि नंद घरनी, व्रज की तरूनी पहराई।।१५।। गान करत मनहरत, मुदित मन देत असीसा।। तुम्हारो कुंवर जसोमति, जीवो कोटि बरीसा।।१६।। जिन देखे नेंन सिरात, अघात न पीवत प्यासा।। तिनकी चरन कमल रज, पावे "माधोदासा"।।१७।।

राजभोग आवे तब राग-बिलावल/खट **हरि संग होरी खेलन आई।।** चंद्रभगा, चन्द्रावली भांमा, राधा परम सुहाई।।१।। चोवा चंदन अगर कुँमकुमा, सुरँग गुलाल उड़ाई।। रतन-जटित पिचकाईन भरि भरि, छिरकति कुँवर कन्हाई।।२।। ताल, मृदंग, पटह, ढ़फ बाजै, घोष नगारे धाई।। श्री मंडल, सहनाई सुंदर, बिच बिच बैनु बजाई।।३।। अरस परस खेलति पिय प्यारी, उपमा बरनि न जाई।। “सूरदास” बलि जाय वदन की, निरखि निरखि मुसिकाई।।४।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-बिलावल **गोपी हो नंदराय घर, मांगन फगुवा आई।।** प्रमुदित करहिं कुलाहल, गावत गारि सुहाई।।१।। अबला एक अगमनी, आगें दई पठाई।। जसुमति अति आदर सों, भीतर भवन बुलाई।।२।। तिनमें मुख्य राधिका, लागत परम सुहाई।। खेलो हंसो निसंक, संक मानों जिन कोई।।३।। बहु मोली माला, सबन देहुं पहराई।। मनि माला ले कहा करें, देहु मोहन दिखाई।।४।। बिनु देखें सुंदर मुख, नाहिन परत रहाई।। मात पिता पति सुत ग्रह, लागत री विष माई।।५।। सुनि कें प्रेम वचन, दामोदर दए दिखाई।। घरमें तें घनश्याम, भुजा भरि भामिनि लाई।।६।। नखसिख सुंदर सींवा, रूप लावन्य अधिकाई।। रही ब्रजबधू निहारि, रंक मानो निधि पाई।।७।। अरगजा चंदन वंदन, चहुं दिस तें ले धाई।। भरति भांवते लाले, करन कनिक पिचकाई।।८।। दरस परस पिय अतिसय, सुंदरि सब लपटाई।। कुच भुज बीच, कीच मची, अति श्रम की झपटाई।।६।। मंडित कर हिं कपोल, एक ले काजर आई।। आलिंगन चुंबन रस, नहीं सुरझत सुरझाई।।१०।। अंचल सों पटजोरें, रीझि सकुच सिर नाई।। दंपति सौभग संपति, कोऊ पीवत न अघाई।।११।। यह लीला अति ललित, सो तो नंदरानी भाई।। हरषित उदित मुदित, सबहिन की करत बड़ाई।।१२।। पट दुकूल आभूषन, चोली दिव्य मगाई।। जसुमति अति प्रफुलित मन, सुंदरि सब पहराई।।१३।। यह मेरे आंगन गृह, आवोरी नित माई।। नेन श्रवन सुख भयो, लाल जू की कीरति गाई।।१४।। निकसी देत असीस, जियो तेरो मोहन राई।। यह व्रज “माधोदास”, रहो नित नंद दुहाई।।१५।।

भोग व संध्या में राग-गौरी (पड़वा का पद) परिवा प्रथम कुंवर कों, देखन चली व्रज नारि।।अंग अंग छबि निरखत, लीयो लाल मनुहारि।।१।। दूज दाम कुसुमन की, पहरे श्रीगोपीनाथ।। रचि पचि गूंथ संवारीं, श्रीराधाजू अपने हाथ।।२।। तीज तरूनी तन तरलित, उरगज मोतिन हार।। कुच पर कच लर विलुलित, प्रिय संग करत विहार।।३।। चौथ चतुर दिश चंदन, चरचित सावंल अंग।। विविध भांत रूचि पहरें, नाना वसन सुरंग।।४।। पांचे प्रमदा प्रमुदित, सब मिल गावें गीत।। हाव भाव कर रिझवत, रसिक श्रीदामा मीत।।५।। छठ कों छेल छबीलो, छिरकत छींट अनूप।। शोभा बरनी न जाय, जय जय गोकुल के भूप।।६।। सातें सकल सखा सब, घर घर देवत गारि।। सुनत कुंवर कोलाहल, निकसी घोख कुमारि।।७।। आठें अति आतुर, अबलन लीनें पिय घेरि।। मुरली पीत पट झटकत, हंसत वदन तन हेरि।।८।। नोमी नवल नागरी, कुंकुम जल सों घोर।। पिय पिचकाइन छिरकत, तक तक नवल किशोर।।९।। दसमी दसों दिस देखियत, अति प्रफुलित वनराज।। मदन वसंत मिल खेलें, अलि पिक सैना साज।।१०।। एकादसि एक ओर, राधा संग सब नारी।। उतकी ओर बल मोहन, बालक यूथ मंझारी।।११।। द्वादशी दुहुं दिस मच्यो, खेल राय दरबार।। भेरि दमामा धोंसा, कोऊ काहू न संभार।।१२।। तेरस तरूणी गण पर, बरखत सुरंग अबीर।। ये इततें वे उततें, भई परस्पर भीर।।१३।। चौदस चहुं दिशातें, बरखत परिमल मोद।। गणत न काहू जगमें, व्रजजन मनसि प्रमोद।।१४।। पून्यो परिपूरण शशि, आनंदे सबलोग।। घोष राय व्रज छायो, करत सकल सुखभोग।।१५।। यह विध होरी खेलत, बरखत सकल आनंद।। “गोविंद” बलबल जाय, जय गोकुल के चंद।।१६।।

शयन भोग आवता से शयन दर्शन तक एक ही पद गाया जाता है राग-गौरी परिवा प्रथम हिं होरी खेलन, निकसे श्यामा श्याम।। फाल्गुन मास सुहावनो, नृपति भयो तहां काम।।१।। द्विज दुहुं दिसि गावत, अलि पिक कोकिल कीर।। नव बसंत द्रुम फूले, मलयजु मंद समीर।।२।। तीज तरूनी तन कंचुकी, सोभित मोतिन हार।। सेंदुर मांग संवारी, नवसत साज सिंगार।।३।। चोथ चतुर चली गावत, झूमक नंदजु के द्वार।। सुनि कामिनी कोलाहल, निंकसे हलधर ग्वार।।४।। पांचे पंच सबद अति, बाजत बाजे अपार।। इतकी ओर व्रज सुंदरी, उत श्रीनंदकुमार।।५।। छटकों छेंल छबिलो, निकस्यो खेलन फाग।। मोहन बेन बजावै, गावे गौरी राग।।६।। साते चंदन वंदन, केसरि घसी बनाय।। कृष्णागर कस्तूरी, केसु कलस भराय।।७।। आठें कंचन पिचकारी, भरि भरि लिने हाथ।। तकि तकि नवल किसोरी, छिरकी

कुंवर ब्रजनाथ।।८।। नवमी नवल राधिका, अरगजा दीयो डार।। हो हो बोलत डौलत, नांचत दै कर तारि।।९।। दसमी दसों दिसतें, अबलन पिय लीनें घेरि।। नैन आंजि मुख मांडति, हंसत वदन तन हेरि।।१०।। एकादशी एक सखी, डार्यो सुरंग गुलाल।। एक जु मुख चुंबन करे, एक गहे बनमाल।।११।। द्वादशी फगुवा मांगति, हंसि हंसि गारी देहि।। एक जु मुरली लै रही, एक कहे फेरि देहि।।१२।। तेरस तरूणी जन मिल, सुगह गहें बलवीर।। कुमकुम मुख लपटायो, छिरकत नवल अबीर।।१३।। चौदस चहूं दिस तें, लिने गांठव जोरी।। मदनमोहन नव दूल्हे, दुलहनी राधा गोरी।।१४।। पूरण ससि पून्यो निस, होरी हरखि लगाय।। परवा बसन जु साजे, चले जमुना जल न्हाय।।१५।। यह बिधि होरी खेल हीं, व्रजजन संग लगाय।। "सूरदास" बलि जाय, गिरि गोवरधनराय।।१६।।

मान में राग-बिहाग होरी के दिनन में, पिया मोसौं बोलत नाही, अब कछु जतन, बताय भटू री।। तपत मेरो मन, कबहु न छिरक्यों गुलाल, सुरंग चूनरी मेरी, पीत पटु री।।१।। अब कैसे जीवन, होई मेरी सजनी, जब निकसती स्याम, मो तन निहारत, वा गोरी सौं, भयो है लटू री।। मानति नाही, मोसौं सौंह खाई, "रसिक" प्रीतम पीय, नागर नटु री।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

फाल्गुन शुक्ला २

श्रृंगार - क्रिट मुकुट का।

वस्त्र - पीला रूपेरी कोर के शुथन पर हरा, लाल व सफेद मीना का किरीट मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र बादली रंग का तथा पिछवाई सफेद धराई गई है। राजभोग में गुलाल कुन्ड का मनोरथ है।

आभरण - सोना तथा मीना के धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल **आनन्दराय खेले फाग सो हो हो होरी आई।।** (यह पूरा पद पेज ८४ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-धनाश्री **रंगीलेरी छबिले नैना रसभरे नैना मुदित अनेरे हो।।** (यह पूरा पद पेज ८४ पर पढ़े।)

राजभोग आवे तब राग-बिलावल **हरि संग होरी खेलनि आंई।।** (यह पूरा पद पेज १२१ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि) **हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बिलावल **हो हो बोलत डोलत मोहन खेलत होरी।।** (यह पूरा पद पेज ८१ पर पढ़े।)

राग-काफी **ऐरी सखि निकंसें मोहन लाल।।** (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

भोग में राग-गौरी **गोकुल सकल ग्वालिनी सब मिलि खेलैं फाग।।** (यह पूरा पद पेज ८३ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी **हो हो होरी वेंणु मध्य गावें श्याम।। नृत्यत युवती समूह संग मिल, मधुर तान विश्राम।।१।। फूली लता नवल गहेवर वन, वरन वरन बहू भांत।। किलकत शुक पिक आनंद भरे, मनोहर मधुपन पांत।।२।। बाजत चंग उपंग मुरली ढ़फ, झालर झांझ मृदंग।। मदन गोपाल लेत गति सहजे, लजवति कोटि अनंग।।३।। कुंकुम चंदन वंदन, अरगजा**

सुगंधताई।। बिच-बिच तकि-तकि तानत हैं, नयनन की पिचकाई।।४।। फाटत चीर रहत द्रुमद्रुम प्रति, टूटत मोतिन हार।। क्रीडा रसवश भये मगनमन, तनकी तजी संभार।।५।। दास “चतुर्भुज” प्रभु चहुंदिश जुरि, गावें चेतन राग।। सुख समूह श्रीगोवर्धन तट, रच्यो रंगीलो फाग।।६।।

शयन भोग आते समय से शयन दर्शनों तक एक ही पद राग-गौरी कमल नयन के कौतुक सुनों सहेली आय।। (यह पूरा पद पेज ७६ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग लाल करत मनुहारी प्यारी, मान मनायो तेरौ।। मदन मोहन पिय नव निकुंज में, नाम रटत हैं तेरौ।। नव नागर गुन के जू आगर, ऋतुराज आयो नेरौ।। “रसिक” प्रीतम सों हिल मिल भामिनी, ज्यों रीझे चित्र चितेरौ।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

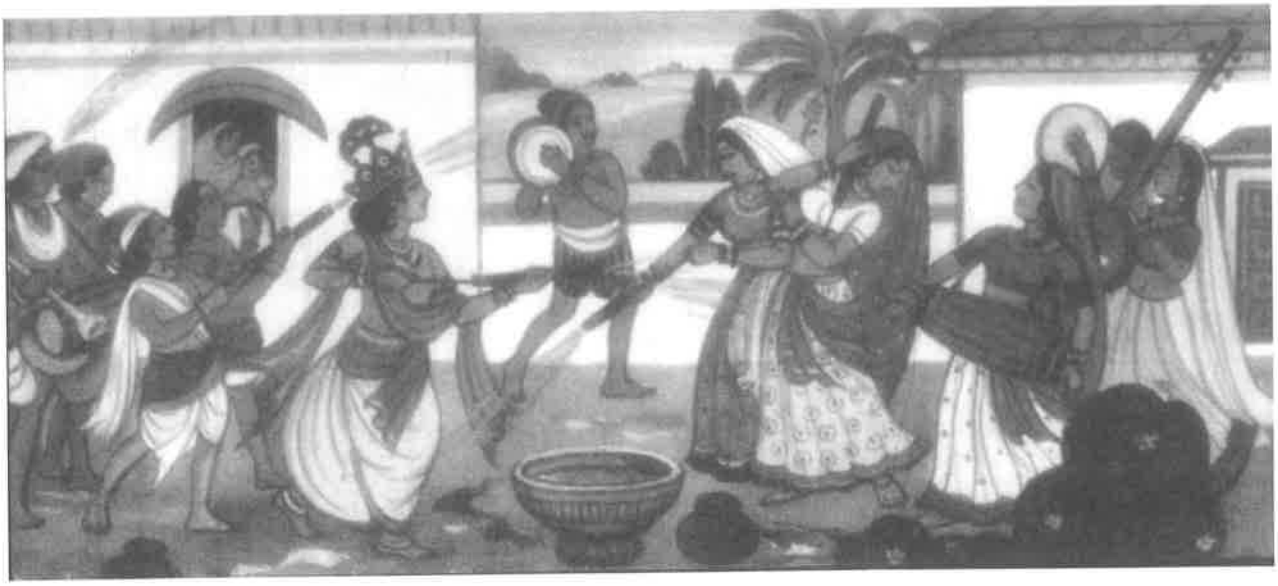

फाल्गुन शुक्ला ३

श्रृंगार - पाग कतरा का।

वस्त्र - सफेद शुथन तथा वागो घेरदार बीना कोरका। श्रीअंग में केसर की चोली धराई गई है। कटि में पटका केसरिया रूपेरी कोर का तथा श्रीमस्तक पर केशरिया पाग पर गुलाबी रेशम का कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र हरा तथा पिछवाई साज सारे सफेद।

आभरण - सोना तथा लाल मीना के धराये गये हैं।

मंगला में राग-बिलावल **गोपी हों नन्दराय घर मांगन फगुवा आई।।** (यह पूरा पद पेज १२१ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-आशावरी **बरसाने की नवल नार मिलि, होरी खेलनि आई हों।। बरबट धाय जाय जमुना तट, घेरे कुंवर कन्हाई हों।।१।। अति झीनी केसरि रंग भीनी सारी सुरंग सुहाई हों।। कंचन बरन कंचुकी उपर, झलकत जोबन झांई हों।।२।। केसरि कस्तुरी मलयागर, भाजन भरि भरि लाई हों।। अबीर गुलाल फेंट भरि भामिनी, करन कनिक पिचकाई हों।।३।। खेलत खेलत रसिक सिरोमनि, राधा जु निकट बुलाई हों।। "ऋषिकेस" प्रभु रीझि स्यामघन, बनमाला पहराई हों।।४।।**

राजभोग आते समय राग-बिलावल **बरसाने की गोपी, मांगन फगुवा आई।। कीयो जुहार नंदजू कों, भीतर भवन बुलाई।।१।। एक नाचत एक गावत, एकु बजावत तारी।। काहे मोहन राय दुरि रहे, मैया यै दिवावत गारी।।२।। आदर देत व्रजरानी, अब निज भागि हमारे।। प्रीतम सजन कुल वधू, पाये दरस तिहारे।।३।। सुन कुंवरि मेरी राधे, अब ही जिन मुख मांडो।। जेंवत स्याम सखन संग, जिन पिचकाई छांडो।।४।। केसरि बहोत अरगजा, कित मोहन पै डारो।। सीत लगे कोमल तन, तुम ही चित्त विचारो।।५।। अंचल ऊपर दे रही, दोऊ मैया त्रन तोरी।। बरजत भरत कुंकुमा, निर्भय नवल किसोरी।।६।। कहत रोहिनी जसोदा, ओली ओडति आगें।। जाय भरो व्रजराजे, मोहन दीजे मांगे।।७।। मोहन मांगे पैयें तो, दिन दस हम हिं देहो।। गोप कुंवर के पलटें, जो चाहो सो लेहो।।८।। सुबल सुबाहु श्रीदामा, सुनत अचानक आये।। कंचन माट भरे दधि, लें गोपिन सिर नाये।।९।। ग्वाल गुपाल सखा सब, हँसत करत किलकारी।। दूध लीयो भीतर तें, छिरकीं सब व्रजनारी।।१०।। जो सुख सोभा**

बाढी, कहत कहा कहि आवे।। ललिता कुंवरि कुंवर को, अंचल गहि गहि लावे।।११।। भये निरंतर अंतर, तजि वल्लभ व्रजबाला।। गिरि गिरि परत गलिन में, हार तोरि मनि माला।।१२।। प्रभु मुकुंद व्रजवासी, अटक कौन की माने।। कहत भैया "माधो" जन, चलो भरो वृषभाने।।१३।। इतनो मांग्यो पांऊं, देहु वृंदावन वासा।। कुंवर कुंवरि तहां विहरत, चरन कमलकी आसा।।१४।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-सारंग अहो पिय लाल लडैती को झूमका।। सरस सुर गावत मिल व्रजबाल, अहो कल कोकिल कंठ रसाल।। लाल बलि झूमका हो।।ध्रु.।। नव जोबनी शरद शशि वदनी, युवती यूथ जुर आईं।। नवसत साज सिंगार सुभग तन, करन कनक पिचकाई।। एकन सुवन यूथ नवलासी, दामिनि सी दरसाईं।। एक सुगंध संभार अरगजा, भरन नवल कों आई।।१।। पहरें वसन विविध रंग रंगन, अंग महारस भीनी।। अतरोटा अंगिया अमोल, तनसुख सारी अति झीनी।। गजगति मंद मराल चाल, झलत किंकिणी कटि छीनीं।। चौकी चमक उरोज युगल पर, आन अधिक छबि दीनी।।२।। मृगमद आड ललाट श्रवण, ताटंक तरणि द्युति हारी।। खंजन मान हरण अखियां, अंजन रंजित अनियारी।। यह बानिक बन संग सखी, लीनी वृषभान दुलारी।। एक टक दृष्टि चकोर चंद ज्यों, चितये लाल बिहारी।।३।। रूरकत हार सुढार जलज, मणि पोत पुंज अति सोहें।। कंठसरी दुलरी दमकनि, चोका चमकनि मन मोहें।। बेंसर थरहरात गजमोती, रति भूली गति जोहे।। सीस फूल श्रीमंत जटित नग, वरणि करन कवि कोहें।।४।। नवल निकुंज महल रस पुंज, भरे प्यारी पिय खेलें।। केसर और गुलाल कुसुम जल, घोरि परस्पर मेलें।। मधुकर यूथ निकट आवत, झुक अति सुगंध की रेलें।। प्रीतम श्रमित जान प्यारी तब, लाल भुजा भरि झेलें।।५।। बहु विधि भोग विलास रास रस, रसिक बिहारिणि रानी।। नागर नृपति निकुंज बिहारी, संग सुरत रति मानी।। "जुगल किशोर" भोर नहीं जानत, यह सुख रेन विहानी।। प्रीतम प्राण प्रिया दोऊ विलसत, ललितादिक गुणगानी।।६।।

राजभोग में राग-सारंग तैं प्यारी चित हर लियौ हो, तो बिनु कछु न सुहाई लाल।। तलफत जल बिनु मीन ज्यौं हो, चंद चकोर दिखाई लाल।।१।। फिर-फिर बात वेई बूझे, बूझि-बूझि पछिताई लाल।। कोकिल इंदु तपत करै, लग्यौ मदन सरजाई लाल।।२।। देखैं ही

सब जानि हौं, हो बैंनन कछु न कहाई हो लाल।। यह सुनि स्याम कुंज चलि ठाड़े, पाछैं आई री लाल।।३।। सखन सहित प्यारे जहाँ, सैंनन सबै समुझाई लाल।। जुगल हस्त अखियाँ मिचीं, पुनि मुरली उर लाई हो लाल।।४।। जब तैं कह्यौ यह को है री, जुगत चतुर्भुज राई लाल।। यौं कहि रीझई लाड़िली, सनमुख है हरखाई लाल।।५।। छिरकति चोवा, चंदना, अबीर, गुलाल उड़ाई लाल।। प्रफुलित मन तब तैं करे, उर आनंद न समाई लाल।।६।। रीतिहार ललिता दयौ, प्यारी कछूक मुसिकाई हो लाल।। चरन कमल बंदन करै, "द्वारिकेस" बलि जाई हो लाल।।७।।

भोग में राग-काफी तुम चलो सबे मिलि जांय, खेंलन होरियां।। अपनी अपनी सुरंग चूनरी मोतिन, मांग भरोरियां।।१।। थरहरात अधरन पर मोती, अंगिया केसर बोरियां।। चोवा चंदन अगर कुंकुमा, भरि भरि देत कमोरियां।।२।। अंग सों अंग गुलाल बिराजत, भली बनी यह जोरियां।। केहरि लंक नितंब विराजत, गज गति चाल चलोरियां।।३।। पिचकाई मोहन पर डारत, बिहसी घूंघट खोलियां।। बाजत ताल मृदंग ओर ढ़फ पढ़ि पढ़ि बोलत बोलियां।।४।। नयन आंज मुख मांडिं श्याम को, सब मिलि करत कलोरियां।। "सूरदास" प्रभु सब सुख क्रीडत, बिहरत व्रजकी खोरियां।।५।।

संध्या में राग-गौरी गौरी गोरी गुजरिया भोरी सी प्यारी, तें मोहे नंदलाल।। खेलन में हो हो जु मंत्र पढ़ि, डार्यों तें जु गुलाल।।१।। तेरी सोंधे सनी अंगिया उरोजन पर, ओर कटि लहेंगा लाल।। उघर जात कबहुंक चलन में, जेहर ढिंग ऐडी लाल।।२।। तू सकल त्रियण में यो राजत है, ज्यो मुक्तन में लाल।। न्याय "चतुर्भुज" को प्रभु मोह्यों, अधर सुधारस लाल।।३।।

शयन में राग-गौरी/बिहाग मोहन जान न देहौं।। (यह पूरा पद पेज १०७ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग लाल करत मनुहार री प्यारी मान मनायौं तेरौं।। (यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हौं भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

फाल्गुन शुक्ला ४

श्रृंगार - ग्वाल पगा कों

वस्त्र - सफेद शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर लाल रंग का ग्वाल पगा रूपेरी कोरको उस पर रूपेरी जरी की मोर शीखा धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र बादली रंग का तथा पिछवाई सफेद रंग की धराई गई है।

आभरण - सोना, माणक मोती के धराये गये हैं।

मंगला में राग-आशावरी **भयौ मदन प्रचंड ए हरि, खेलिए मिलि आई।। गोप सब मिलि मतो मतिए, रोकिए ब्रज जाई।।१।। तरनि-तनयातट बिपिन में, घेरि सकल समाई।। रैन दिन इकु ठौर रहिए, छाँडिए बन गाई।।२।। साजिए कर कनक-पिचकाई, विविध रतन जराई।। तकि तकि चलाई सनमुख, डारिए मुसिकाई।।३।। जोरिए किन साज आपनौं, एक एक सिखाई।। लै गुलाल मुँठिन भरि भरि, भाजिए किलकाई।।४।। घोरि केसू कुँमकुमा रस, सीस कलस चढ़ाई।। ताल, बीना, झांझ, किन्नरि, लेहु ढ़फ मढ़वाई।।५।। दौरिए ब्रज बाल ऊपरि, देहु तिन हि हराई।। कुसुम पल्लव माल, अपने उर पहिराई।।६।। घोख काहु न जान कहिए, दीजिए जु दुहाई।। लीजिए अचरा पकरि कैं, कीजिए मन भाई।।७।। अंग अंग अनंग प्रकट्यौं, बिबसता कौं पाई।। भवन भवन निसाँन लै लै, फिरति उनमद माई।।८।। तान कोऊ तोरि नाँचै, फागु गीत गवाई।। जाई पनघट एकुठे व्है, बाल बृंद लराई।।९।। भयो ब्रज में अतुल आनंद, कहा रसना गाई।। देव गन निज गेह भूलै, केलि लखि सुखदाई।।१०।। बसन भूषन दए रूचि सौं, मोल सरस मँगाई।। पढ़ति स्तुती परसपर मिलि, जियौ ब्रज के राई।।११।। विविध कुसुमनि होत बरखा, सुर बिमानन छाँई।। कमल बदन निहारि ब्रज जन, रहति मन अरूझाई।।१२।। देति सरबसु वारि मुख पै, धरति चित में चाई।। कांनि करत न गुरू जनन की, लसति भुज लपटाई।।१३।। बजे बाजे मुरझ, आवज, ढ़ोल अरू सहनाई।। गारी गावैं दिहुँ दिसातैं, हाव भाव बताई।।१४।। रगमगे नँदलाल हरखे, हियो अधिक सिराई।। कहा बरनौं बाल मति सौं, जाति सुधि बिसराई।।१५।। श्रीविट्ठलेश प्रताप कौं बल, लेहु निस दिन गाई।। यह लीला देखि "जन गिरिधर" गहे जिन कैं पाँई।।१६।।**

श्रृंगार में राग-बिलावल **तुम बेगी स्याम भलें आये हो, होरी खेलन रंग भरी।। (यह** पूरा पद पेज ८१ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-काफी गोपकुमार लिये संग हो हो होरी, खेलें व्रजनायक।। इत व्रज युवती यूथ मधिनायक श्रीवृषभान किशोरी।।१।। मोहन संग डफ दुंदुभी, सहनाई सरस धुनि राजें।। बीच बीच युवती मनमोहन, महुवर मुरली बाजें।।२।। स्याम संग मृदंग झांझ आवज आन भांत बजावें।। किन्नरी बीन आदि बाजे, साजे गनत न आवें।।३।। इत व्रज कुंवर करन कर राजत, रत्न खचित पिचकाई।। उन कर कमल कुसुम नवलासी, गावत गारि सुहाई।।४।। तब मनमोहन युवती यूथ पर, विविध रंग वरखाये।। अति सुख फाग सोंझ लीने, उनये मानो नवघन आये।।५।। तव ललिता चंद्रावली मतो कर, सुबल सेनदे लीनों।। छल बल कर गिरिधर गहिवे कों, यह मन मतो जु कीनों।।६।। सखा भेद गिरिधर गहि पाए, भयो युवतिन मन भायो।। आंखि आंजि गूंथी बेनी, मृगनयनी भेष बनायो।।७।। फगुवा के गहने मोहन, मोतिन माल उतारी।। बंसी झटकि लई झुकि प्यारी, अधरन की विलसन हारी।।८।। दीने छांडि आप भायो कर, स्याम सखन में आये।। तब मोहन समसरि करवें कों, बलदाऊ पकराये।।९।। जब हलधर वस परे युवतिन के, केसर कलश नवाये।। जोई जोई बिध उपजी जाके जिय, तिहिं तिहिं भांत नचाये।।१०।। कीनो बीच सुबल श्रीदामा, दाऊ आनि छुडाये।। फगुवा देन कह्यो मन भायो, व्रजपति टेर सुनाये।।११।। तब व्रजराज वसन भूषण ले, युवती यूथ ढिंग आये।। अति आनंद वदन प्रफुल्लित, दिये सबन मन भाये।।१२।। देत असीस सकल व्रजवनिता, रसना नहीं लखे कोरी।। चिरजीयो “मदन मोहन” पिय, स्यामा गौर स्याम सम जोरी।।१३।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि का पद) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-बिलावल बरसाने की गोपी मांगन फगुवा आई।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े।)

भोग व संध्या में राग-गौरी (धमार) ए चल जांए जहां हरि खेलत गोपिन संगा।। (यह पूरा पद पेज ११० पर पढ़े।)

शयन भोग आवे तब से शयन दर्शन तक राग-गौरी मानो ब्रजते करिणी चली मदमाती हो।। गिरिधर गजपें जाय, ग्वालि मदमाती हो।। कुल अंकुश मानें नहीं, शृंखल वेद तुराय।।१।। अवगाहें यमुना नदी, करत तरूणी जल केलि।। छल सों छिरकत स्यामकों, शुंड

दंड भुज पेलि।।२।। नाग वेलि चरती फिरें, मादिक मध्य कपूर।। साख पटा श्रवणन बहे, मंडित माग सिंदूर।।३।। कुच कुंभ उर स्थल ऊपरें, मुक्ता हार रूराय।। जनु जुग गिरि बिच सुरसरी जुगल प्रवाह बहाय।।४।। वृंदावन वीथन फिरें, केलि कला ए जान।। अंचल पट बेरख उडें, घूंघरू घंट समान।।५।। घूमत गल बैयां गहें, लोक लाज त्यज कान।। निकसत शंक न मानही, प्राण एक पिय जान।।६।। सन्मुख धावें हुलस कें, केलि कला हि निधान।। मानो महावत पेलि कें, देत सुरत सुखदान।।७।। मानो करी अब करे बनी, घन दामिनि अनुहार।। कृष्ण सहित क्रीडा करें, “व्रजपति” व्रज की नार।।८।।

मान में राग-बिहाग/बसंत लाल करत मनुहार री प्यारी मान मनायो तेरों।। (यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

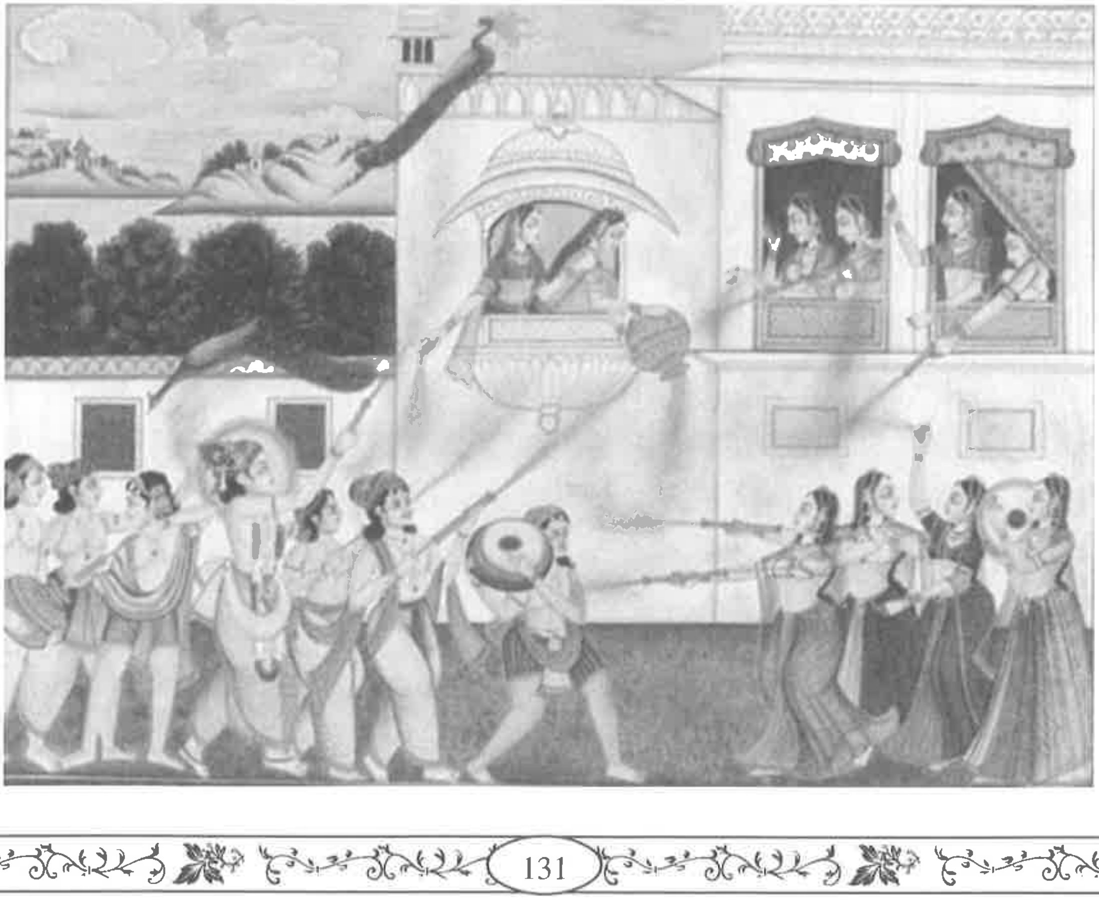

फाल्गुन शुक्ला ५

श्रृंगार - टिपारा को।

वस्त्र - सफेद शुथन व वागो चाकदार, कटि में पटकों गुलाबी रंगको। श्रीमस्तक पर टिपारों गुलाबी रग को उस पर साज सोनेरी जरी को। ठाड़ा वस्त्र हरे रंग के तथा पिछवाई एवं साज सफेद धरायें गये है।

आभरण - सोना, हीरा, माणक-मोती के तथा वेणु वैत्र लेहरदार मीना व फूल की छड़ी धराई गई है।

मंगला में राग-आशावरी **या गोकुलके चोहटे रंग राची ग्वालि।।** (यह पूरा पद पेज ६० पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-धनाश्री रंगीले री छबिले नयना रसभरे नाचत मुदित अनेरे।। (यह पूरा पद पेज ८४ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-बिलावल बंदों मुनसाई नंदके, जुवती झंडा केसें लेहो जू।। ये सब सुंदरि घोख की, क्यों परिरंभन देहों जू।।१।। फागुन मास देत फगुवा, अति क्रीडा रस खेलो।। तनकी गति ओरें भई, बोली ठोली मेलो।।२।। काहे कों अकुलात हो, हम मन को भायो करि हें।। हों भैया बलदेव को, पृथक पृथक करि धरि हें।।३।। पांच सखी मिलि एक व्है, बीच झंडा ले रोप्यों।। फरहर रति पति ऊपरे, बहोत नगन जट ओप्यों।।४।। सुनों पिया सांची कहूं, जो तुम्हारे जिय भावे।। अपने छलबल प्रेमके, जीते सो कहा पावे।।५।। हम समेत सब ताही को, यामें कहा कछू लालो।। अब जीतो तो जानि हें, पानि धरें प्रति पालो।।६।। पटह निसान मृदंग सो, दुहु दिस दुंदुभी बाजें।। इत जुवती बरजोर में, उत स्याम सखन संग भ्राजें।।७।। गावे चेत सुहावने, बिच बिच मीठी गारी।। चंग उपंग मधुर मुरली, राग मिल्यो कर तारी।।८।। केसरी कुंकुम घोरी कें, नव किशोर पर धाई।। नायक घेरी नायिका, चोली बसन रंगाई।।९।। काहूसों मिलवत सैंन दे, काहूसों मिलवत बोली।। काहूकों परिरंभन दे, काहूकी झटकत चोली।।१०।। रबकि रंगीली राधिका, पीताम्बर गहि झटक्यो।। हो हो हो कहि सुंदरी, गहि करसों कर पटक्यो।।११।। उत वर सुंदर लाडिलो, इत वृषभान किशोरी।। इत पिचकाई उत पिचका, पिय सनमुख ले दोरी।।१२।। सुरंग गुलाल अबीर सो, व्योम रसातल

छायो।। रस में नायक नायिका करत आप मन भायो।।१३।। गुलाल जंगाली छबि राज हीं, दंपति प्रेम प्रसंसा।। उपमा कों कोऊ नहीं, क्रीडत हंसी हंसा।।१४।। झंडा लियो ओर रस कीयो, प्रान पिया रस पेख्यो।। गिरधर क्रीडा नित नई, "सगुनदास" रस लेख्यो।।१५।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग होरी खेलत मोहन, उडत गुलाल अबीर।। बनि बनि चलीं सकल व्रज-वनिता, पैहेरि विविधि पट चीर।।१।। अगर जबाद कुंमकुमा-केसर, चरचैं स्याम सरीर।। मृदु मुसिकानी परस्पर सुंदरि, वसन झलक मुख हीर।।२।। प्रैंम-पतंग पिचकाई छूटत, और जमुना को नीर।। "सूरदास" प्रभु सरबसु वारौं, हरि हलधर के बीर।।३।।

राग-सारंग सुरंगी होरी खेले सांवरो, व्रज वृंदावन माँझ।। व्रज की नवल जु नागरी, घिर आईं सब सांझ।।सुरंगी..।।१।। सरस वसंत सुहाबनों, ऋतु आई सुख दैंन।। माते मधुपा मधुपनी, कोकिल कुल कल बैंन।।२।। फूले कमल कलिंदजा, केसू कुसुम सुरंग।। चंपक बकुल गुलाल के, सोंधे सिंधु तरंग।।३।। सुबल सुबाहु श्रीदामा, पठये सखा पढ़ाय।। बाजे साजे नवल रंगीले, लीने मोल मढ़ाय।।४।। झांझ मुरज ढफ बांसुरी, भेरिन की भरपूर।। फूंकन फेरी फेरि कें, ऊँची गई श्रुति दूर।।५।। व्रज को प्रेम कहा कहूं, केसर सों घट पूर।। कंचन की पिचकाईयां, मारत हें तकि दूर।।६।। आंधी अधिक अबीर की, चोवा की मची कीच।। फेली रेल फुलेल की, चंदन वंदन बीच।।७।। व्रजकी नवल जु नागरी, सुंदर सूर उदार।। खेलन आई सबें जुरी, श्रीराधा के दरबार।।८।। फूल डंडा गहि हाथ सों, मारत बांह उठाय।। चंचल अंचल फरहरे, पैनै नयन चलाय।।९।। श्रीराधा की प्रिय सखी, ललिता लोल सुभाय।। छल करि छैलें छिरक कें, हंसि भाजी डहकाय।।१०।। नारी भेष बनायकें, पठ्यो सखा सिखाय।। अति ही अधिक कहावती, ललिता भेटी जाय।।११।। गेंदुक कीनी फूलकी, दीनी श्रीराधा हाथ।। आय अचानक ओचका, तकि मारी व्रजनाथ।।१२।। व्रज की बीथनि सांकरी, उत यमुना को घाट।। बलदाउ कों बोलकें गाढे दये कपाट।।१३।। हलधर हें जु महाबली, सांचे हैं बलरास।। बलि को बल जो कहा भयो, गहि बांधे भुज पास।।१४।। नयनन अंजन आंजिके, सोंधो ऊपर डार।। पाय परि द्वारे पट दये, रसकी रास विचार।।१५।। फिर भाजी सब दे दगा, आनन दीने और।। मदन गोपाल बुलाय कें, गहि लाईं बर जोर।।१६।। गिरि धार्यो कर

वाम सों, खर मार्‍यो गहि पाय।। तिनको भार कहा भयो, ललिता लेत उठाय।।१७।। घर में घेर सबें चली, श्रीराधा को संग लेत।। दोऊ जन अेंच मिलाय कें, नयनन कों सुखदेत।।१८।। तब ललिता हँसि यों कह्यो, श्रीराधा कों सिरनाय।। नीलांबर सों ढांप कें, मुख मूंद्यो मुसिकाय।।१९।। उत श्रीदामा अचगरो, इत ललिता अति लोल।। बीच विसाखा साखि दे, मुरली मांगत ओल।।२०।। व्रजवासी वृषभान को, मदन सखा वाको नाम।। स्याम मते को मिलनिया, बस कीनों सब गाम।।२१।। पठ्यो मदन वसीठ हीं, ढ़ीठ महा मद लोल।। छिन ओर छिन ओर व्हे, छाक्यो छेल दुछोल।।२२।। मदना मदन गोपाल को, हलधर कों लेआय।। श्रीराधा की दिस जाय कें, चांपत हें हँसि पाय।।२३।। श्रीदामा हँसि यों कह्यो, मेवा देहु मंगाय।। नेंक हमारे स्याम कों, आनन को मधु प्याय।।२४।। भाग सुहाग सबें बढ्यो, खेलत फाग विनोद।। राधा माधो बैठारे, व्रजरानी की गोद।।२५।। भूषण देत यसोमति, पोहोंची पान पछेल।। टीको टीकी टीकावली, हीरा हार हमेल।२६।। श्रीविट्ठल पद पद्म की, पावन रेणु प्रताप।। "छीतस्वामी" गिरिधर मिले, मेटे तन के ताप।।२७।।

भोग में राग-मारू आज बनठन वृज खेलन फाग, निकस्यो नन्द दुलारो।। फब्यो हे ललित भाल लाल कें, जटित लाल टिपारो।।१।। बड़रे बंक विशाल, नयन छबि भरे इतराई।। बन्यों है मंजुल मोरचंद, चलत देखत छांई।।२।। उत बनी व्रज नवकिशोरी, गोरी रूप ही भोरी।। बोरी प्रेम रंग में मानो, एक ही डार की तोरी।।३।। व्रजकी बाल ले गुलाल, मोहनलाल छाये।। मानों नीलघन के ऊपर, अरूण अंबर आये।।४।। ताही धूंधर मदमत्त, भ्रमर भ्रमति एसें।। बनी हे छबि विशाल, प्रेम जाल गोलक जेसें।।५।। बन्यो हें जल जंत्र खेल, छुटी रंग की धारें।। मानो धनुर्धर सरन लरत, धारसों धार मारें।।६।। और कहां लगि कहिये, खेल परम रस की मूली।। गावत शुक सारद नारद, शिव समाधि भूली।।७।। जहीं जहीं हरि चरित्र, अमृत सिंधु सो रति मानी।। "नंददास" ताकों मुक्ति, लोन को सों पानी।।८।।

संध्या में राग-सोरठ मेरे नंदनंदन पाछे पर्‍यो हेली क्यों बचों।। सो सिख दे मेरी हितू सयानी, वाके रंगन रचों।।१।। कबहुक कर में ढफ गहेरी, उठे दोहरा गाय।। कबहुक देख नयन ललचावे, सेनन हा हा खाय।।२।। मेरे लिये बगर में री, आनि करे पहचान।। बार बार के आवने सखी, हों जु गई जिय जान।।३।। नाम ओर कों ले सखी री, टेरे मोहि सुनाय।। हों समझत जो वह कहे, सखी क्यों हीं रहे बताय।।४।। मोहि देख धुक पुर करेरी, गहरे लेत

उसास।। हों जिय डरपों आपने, सखी सास ननद को त्रास।।५।। ढिंग व्हे यों कहि जात है, सखी आवन दे धौं फाग।। तब कछूवै चलि हे नहीं री, नर नारिन अनुराग।।६।। ज्यों ज्यों होत जनाजनों री, त्यों त्यों बाढे प्रेम।। बार-बार के तावने सखी, ज्यों निखरत हें हेम।।७।। नयनन नयन हीं बनी री, बनत बनी कछु आन।। हों समझों जिय आपने, उत "जगन्नाथ" सु ग्यान।।८।।

शयन में राग-गौरी श्री वल्लभकुल मंडल, जन रंजन सुखकारी।। श्री विठ्ठलनाथ पधार्या पोते, गिरि गोवर्धनधारी।।१।। एकरूप बहुरूप धरीने, लीला बहु विस्तारी।। नित्य नित्य लीला नोतन, भाषे "हरिदास" बलिहारी।।२।।

मान में राग-बिहाग यह दिन होरी को, तू जिन मान करे।। (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

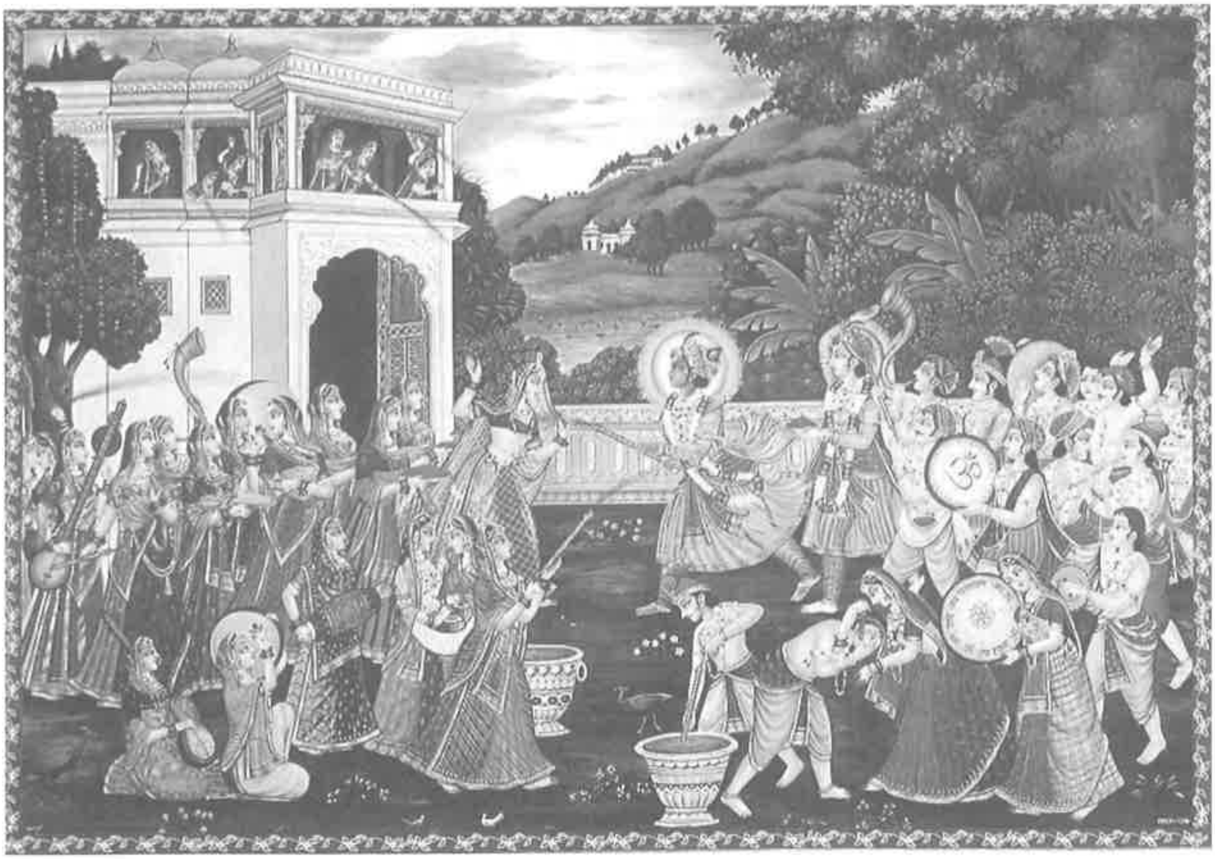

फाल्गुन शुक्ला ६

श्रृंगार - पीत पिछोरी पाग को।

वस्त्र - सफेद शुथन तथा वागो चाकदार कटि में पीत पिछोरी केसरिया छोरकी। श्रीमस्तक पर केसरिया पाग पर मोरकी सादी चन्द्रिका धराई है। ठाड़ा वस्त्र लाल, पिछवाई तथा सारे साज सफेद धराये है। राजभोग में गुलाल कुन्ड का मनोरथ।

आभरण - भारी श्रृंगार किया गया।

मंगला में राग-बिलावल **बरसाने की गोपी मांगन फगुवा आई।।** (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-धनाश्री **होरी के खिलार भाँमते, यौं ही जान न देहों।। मन भाये बागे बनि आये, जागे भागि हमारे।। नयनन हीं में भरि रस, लेन फगुवा लै हों।।१।। चोवा चंदन ओर अरगजा, केसरि कलस नबे हों।। “अग्रस्वामी” सों कहत स्वामिनी, मिलि तन की तपत बुझै हों।।२।।**

राजभोग आवता राग-आशावरी **बरसाने की नवल नारि मिली होरी खेलन आंई हो।।** (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि) **हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग **अहो पीय लाल लडेंती को झूमका।।** (यह पूरा पद पेज १२७ पर पढ़े।)

भोग में राग-काफी **तुम चलो सबे मिलि जांय खेलन..** (यह पूरा पद पेज १२८ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी **गोकुल सकल ग्वालिनी सब मिलि खेलैं फाग।।** (यह पूरा पद पेज ८३ पर पढ़े।)

शयन में राग-गौरी **मोहन जान न देहों।।** (यह पूरा पद पेज १०७ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग **यह दिन होरी को सो तू जिन..** (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग **चले हों भांवतें रस ऐन।।** (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

फाल्गुन शुक्ला ७

श्री मथुराधीशजी का पाटोत्सव

प.पू. गो. ति. श्री राकेशजी महाराज का जन्मदिन

श्रृंगार - सेहरा को।

वस्त्र - पतंगी रंग के वस्त्र रूपेरी कोरके शुथन तथा वागो चाकदार, कटिमें मोटो अंतर वस्त्र। श्रीमस्तक पर दुमाला पर सोने का सेहरा। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम रंग के तथा पिछवाई श्रृंगार में चित्राम की तथा राजभोग में सफेद गुलाल कुन्ड का मनोरथ।

आभरण - भारी हाँस-हार सोना के तथा मीना के, कमल की माला।

मंगला में राग-काफी **श्री गोकुल राजकुंमार लाल रंग भीने हों।।** (यह पूरा पद पेज ६२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-काफी **मिल खेलें फाग बनमें श्रीवल्लभ बाला।।** (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-धनाश्री **राधा कुंवरि रसिक मणी सों, हो हरि होरी खेलों जू।।ध्रु.।।** जमुना तीर सघन कुंजन में, मिलि युवती दल पेलो जू।। सरस गुलाल अबीर अरगजा, तकि आंखिन में मेलो।।१।। तब ब्रजके लरिका घर घर तें, टेरि-टेरि सब बोले।। आये अपने थोकन जुरि जुरि, मानो मदगज मोकल खोलें।।२।। जेसे मन भाये बागे ले, सबहिन कों पहराये।। तेसेई अपने काजें सब, सोंधे सहित मंगाये।।३।। पहले सबन कनिक पिचकाई, परम मुदित मन दीनी।। ता पाछे द्वे रतन जटित, बलदाऊ आपु कर लीनी।।४।। अति सुरंग केसर के रस सों, कनिक कलस भर लिने।। फेंटन सुरंग गुलाल अबीर, भराय भरे रंग भीनें।।५।। चोवा मेद जवादि साखि, गोरा मृगमद घसि घोरी।। चले लिवाय अरगजा कुंकुम, चंदन बंदन रोरि।।६।। भेरि, गजक, आवज, महुवरि, ढफ, झांझ, ताल मुख चंगा।। बीन, रवाव, किन्नरी, झालरी बाजत सरस मृंदगा।।७।। सब समाज लै जाय जुरे, वृषभान राय की पोरी।। तब राधा सों कहियत मुदित मन, जहां तहां ते उठि दौरी।।८।। श्रवन सुनत वृषभानु नंदनी, अति आतुर उठी धाई।। सखी सकल घेरे चहुं दिसतें, निरखी स्याम मन भाई।।९।। अंचल बीच दुराय, कनिक पिचकाई भरी लाई।। तकि तकि सुन्दर मुख ऊपर, छिरकी ओर छिरकाई।।१०।। बलि समेत सब सखा उमगि, तरूणी गण ऊपर धाये।। हो हो

करत पलास कुसुम रंग, भरि भरि कलस नवाये।।११।। करी विचार मन में ललिता, मधुमंगल के ढिंग आई।। तेरे पाय लागत हों, क्यों हूं नंदलाल पकराई।।१२।। तब मधुमंगल कह्यों सखन सों, सुनो एक विधि कीजे।। हम सब एक ओर व्है कें, पकराय स्याम को दीजें।।१३।। ले ले सुरंग गुलाल उडावत, अरूण अंबर कीनों।। देखत अचरज होत द्योंस, मानो रजनी कर लिनों।।१४।। एक दौरत बीसक दौरी, ले गई स्याम भरि कोरी।। सोधें सों मुख मांडि कहत, अब भली बनी यह जोरी।।१५।। पीताम्बर मुरली करतें ले, ललिता विशाखा भाजी।। तिहिं ओसर पकरें छल-बल सों, कर गहि अंखियाँ आंजी।।१६।। कहो कहा फगुवा देहो तुम, सुनों गोकुल के राई।। फगुवा देन कह्यों मुखसों तब, मुरली आनी गहाई।।१७।। केसें छूटन पैहों हम पें, बिन दिये बलि भाई।। रतन जटित आभूषण रंग के, अंबर मोल मंगाई।।१८।। अनुरागे पागे रस सों, सब नंद द्वार पें आये।। वारि आरती विविध भांति सों, जसुमति करत बधायें।।१९।। न्हान चले जमुना किलकत सब, शोभा बरनी न जाई।। देखत ही अमरेस थकित भये, पोहोंपन वृष्टि कराई।।२०।। खेली फाग अनुराग सिंधु बढ़्यों, व्रजजन संग लगाई।। सुंदर वदन कमल ऊपर, "रघुवीर" वारने जाई।।२१।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि) हरिरिह व्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-बिलावल नंदगाम को पांडे, व्रज बरसाने आयो।। अति उदार वृषभान जानि, सनमान करायो।।१।। पांडे जूके पायन कों, हँसि सीस नवायो।। पांय धुवाय न्हवाय, प्रथम भोजन करवायो।।२।। धाय आईं व्रजनारी, जिन यह सूधो पायो।। भानु भवन भई भीर, फाग को खेल मचायो।।३।। सीसी सरस फूलेल, अंग अंगन झलकायो।। हनूमान की प्रतिमा, मानों तेल चढ़ायो।।४।। काजर सों मुख मांडि, बदन बिंदा जु बनायो।। कारे कलस श्रवत, मानों चपरा चिपकायो।।५।। गजगामिनि गोंछन सों, तुक मलिया लपटायो।। देह धरें मानों फागुन, खेलन व्रज में आयों।।६।। कहुं चंदन कहुं वंदन, कहुं चोवा लपटायो।। ऋतु वसंत जानों टेसू को, द्रुम नव फूलन छायो।।७।। काहू गूलरी माला, काहू झगुला पहरायो।। मानो गज घंटान बीच, गजगाह बनायो।।८।। रंग रख्यो चोटियन, अंग रातो व्हे आयो।। गुंजन को गहनो, मानो प्रोहित पहरायो।।९।। माथे तें मोहनी नें, छाछ को माट ढरायो।। मानो काचे दूध सों, गिरि गोवर्धन न्हायो।।१०।। चोर भोर भई खोर मानो, गंगा जल ही चढायो।।

श्री मथुराधीश का पाटोत्सव, कोटा ।

रावत जितेन्द्रसिंह, हरिसिंह मेजा (भीलवाड़ा), मधबन कॉलोनी, अजमेर का जय श्रीकृष्ण

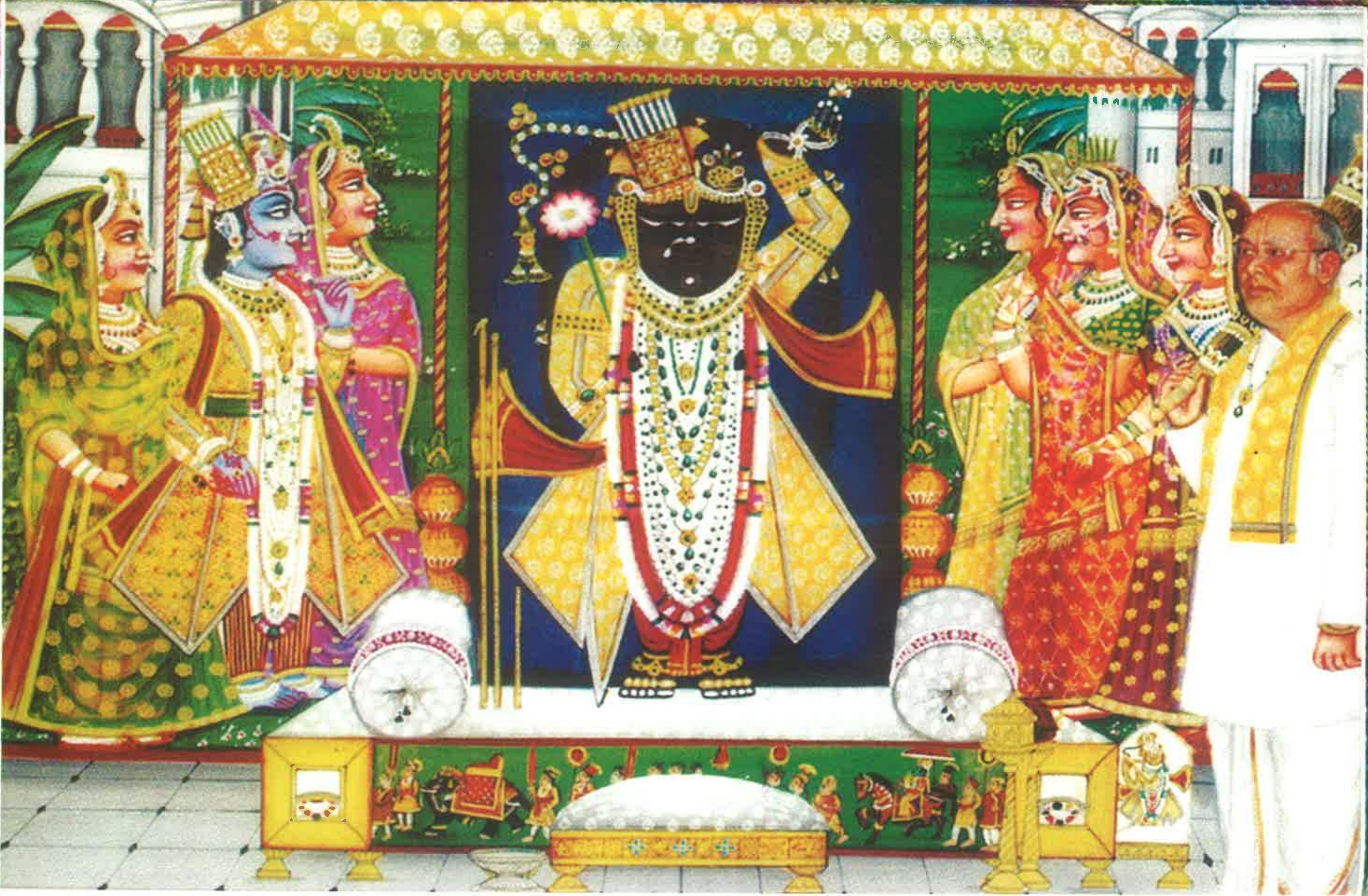

श्री राकेशजी महाराज का जन्मदिवस । रूक्मादेवी, भंवरलाल, किशनगढ़, जिला अजमेर का सपरिवार जय श्रीकृष्ण

महादेव की जटा चूरि, चरनोदिक आयो।।११।। लगत दंत सौं दंत, गिड़िगिड़ा अंग लगायो।। मानो सुघर संगीत, ताल कठतार बजायो।।१२।। श्रीराधा राधा राध कहि, अपनों बोल सुनायो।। अरी भानु की कुंवरि, सरनि हौं तेरी आयो।।१३।। सुनि कें प्रेम वचन, गरो राधा भरि आयों। बाबा जू को दगला ले, प्रोहित पहरायो।।१४।। कीरति जू पांय लागि, तातो पय प्यायो।। तोलों खेलत होरी, व्रज में दूल्हे आयो।।१५।। सांचे स्वांगन सजिकें, सबे समूह सुहायो।। तपा व्यास को पूत, धुत सुकदेव बनायो।।१६।। सनकादिक चार्‍यों निस, ज्यों सन्यास सुहायो।। घूमत आयो इंद्र, स्वांग उन्मत्त नचायो।।१७।। व्रजकी बीथनि बीच, कीच में लोट लुटायो।। चारि वदन को स्वांग, चतुर चतुरानन लायो।।१८।। पंचानन पांचों मुखसों, संगीत बजायो।। हरि को व्हे जु बावरो, नारद नाचत आयो।।१६।। देखि नंद के लाल, जंत्र धरि गाल बजायो।। महादेव पटतार देत, यह पट प्रभु भायो।।२०।। हो हो हो होरि, हरि हांसीन हँसायो।। माया निपुन भई सो, नारद हल हुलरायो।।२१।। काम कामनी भायो, सबन को चित्त चुरायो।। ललिता जोरी गांठि लाल को ब्याह रचायो।।२२।। गठजोरो वृषभानु कुंवरि सों, जाय जुरायो।। नवल अंब के बोरको, मोरी मौर बनायो।।२३।। पीत पिछोरी तानि, छबीलो मंडप छायो।। फागुन की गारीन को, साखा चार पढायो।।२४।। होरीकी अग्यारी करि, दूल्हे परनायो।। होरी को पकवान सो, भरि भरि झोरिन खायो।।२५।। फूलि फाग की फाग फल्यो, जिन यह जस गायो।। "कट हरीया" घनस्याम, वास बरसानें पायो।।२६।।

राजभोग में राग-सारंग नन्द महर को कुंवर कन्हैया, होरी खेल न जानें हो।। रस में विरस करे अरबीलों, लघु दीरघ न पहचानें हो।।१।। अंगुरी गहत गहे कर पोंहोंचो, भूज मूलन लगि आवे।। देखि विराने श्रीफल ऊपर, लालची मन ललचावे।।२।। आंज्यो चाहे और के नयना, अपने नयन दुरावे।। पकर्‍यो चाहे सुधानिधि हाथन, अधर सुधा क्यों पावे।।३।। तेल फुलेल उलेड़े सिरते, गांठ दुकुलन जोरी।। बहुत गुलाल डारि आंखिन में, हँस लंगर झकझोरी।।४।। कमल पत्रीका रचै कपोलन, मरवट मुख हि बनावै।। दुलहनी-सी करि पठवत उत तें, दुल्हे आप कहावैं।५।। जो हम रूठि जांय घर बेठें, तो सखी हमहि मनावै।। सकत सनेह करै युवतिन सों, सैंनन अरथ जनावे।।६।। राजा मित्र सुन्यो नहीं देख्यो, भयो उपखानों साचो।। "मुरारीदास" प्रभु सो जिन बोलो, कोटिक नाच किन नाचो।।७।।

भोग संध्या में राग-गौरी श्री गोकुल राज कुंमार।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

शयन भोग आने पर राग-रायसों खेलन कों श्यामा जू, चली गिरधर पीय पास।। नवसत साज सिंगार ही, चंद्र मुखी मृदु हास।।१।। सखी जुरी चहुं दिश तें, लै खेलन को साज।। ज्यों करिणी मदमाती, ढूंढत मद गजराज।।२।। बीन रवाब किन्नरी, बाजत मृदंग सुचंग।। ललितादिक मध्य स्यामा, गावत सब मिलि संग।।३।। श्रवण सुनत गिरिधर पिय, श्री स्यामा कौ राग।। अंक भरे प्यारी कों, लूटत परम सुहाग।।४।। कर सो कर जौरे, बेठे कुंज कुटिर।। ललित लता गुच्छन में, बोलत मधुकर कीर।।५।। केसर मृगमद रोरी, सुरंग गुलाल अबीर।। पिय प्यारी मिल खेलत, छिरकत चंदन नीर।।६।। बीरी खात खवावत, हरखत मुख हँसि देत।। आलिंगन अति रस सों, कंठ भुजा भरि लेत।।७।। कुंज महल में क्रीडत, दंपति अति सुख रास।। यह लीला नित गावे, अति बड भागी "दास"।।८।।

शयन में राग-रायसों होरी कौ सुख अद्‌भुत, मोपै बरन्यौ न जाई।। अति आनंद हुलसति मन, प्रेम परस्पर छाई।।१।। प्यारी राधा संग जुरि जुरि, सब ब्रजनारी आई।। ग्वाल बाल नँदलाल जु, मन में सब सुख पाई।।२।। अबीर गुलाल अरगजा, कुँमकुमा छिरकै रँग।। कुंज कुटिर में बैठे, राधा गिरधर सँग।।३।। ललिता श्रीमुख माँडे, अंजन नैन बनाई।। तारी दै सब नारी, मुख सौं होरी गाई।।४।। राधा प्यारी दुलहिनी, दुल्हे नंदकुमार।। सीस सेहरौ सोहै, छबि लागति जु अपार।।५।। गारी गावै हिलिमिलि, बरसाने की नारी।। बाजे बहु विधि बाजैं, सब मिलि दै कर तारी।।६।। कर सौं कर तब जोरे, फिरि भाँवर लेति।। अंचल लै दोऊन के, गाँठि सबै मिलि देति।।७।। आरती कर ललिता जु, सुख सौं मंगल गाई।। देति असीस सबै मिलि, "सूरदास" बलि जाई।।८।।

मान में राग-बिहाग यह दिन होरी को सो तू जिन मान करे।। (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

फाल्गुन शुक्ला ८

होलकाष्टक प्रारम्भ

श्रृंगार - मुकुट कांछनी का।

वस्त्र - गुलाबी रंग के रूपेरी कोरके शुथन तथा कांछनी, श्री अंग में श्याम चोली सोनेरीकोर की तथा गुलाबी बड़ा पिताम्बर। श्रीमस्तक पर पाग पर मीना का मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र तथा पिछवाई सफेद राजभोग में गुलालकुण्ड का मनोरथ आजसे कीर्तन में गारी गाई जाती है।

आभरण - सोना, माणक-मोती के।

मंगला में राग-बिलावल **नंदगाम को पांडे व्रज बरसाने आयो।।** (यह पूरा पद पेज १३८ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-देवगंधार/पंचम **देखो देखो वृजकी बीथन बिथन, खेलत हैं हरि होरी।। गीत विचित्र कौलाहल कौतुक, संग सखा लखि कोरी।।१।। आई झूमि झूमि झूंडन जुरि, अगनित गोकुल गौरी।। तिनमें जुवती कदंब सिरोमनि, राधा नवल किशोरी।।२।। छिरकत ग्वाल बाल अबलन पै, बूका बंदन रोरी।। अरून आकाश देखि संध्या भ्रम, मुनि मनसा भई बौरी।।३।। रपटत चरन कीच अरगजा, केसरि कुंकुम घोरी।। कही न जाय "गदाधर" पै कछु, बुध्दि बल मति भई थोरी।।४।।**

राजभोग आवता राग-सारंग **अहो पीय लाल लर्डेती को झूमका।।** (यह पूरा पद पेज १२७ पर पढ़े।)

राग-सारंग **नैक म्हौड़ौ मांडन दैहों, होरी के खिलैया।। जो तुम चतुर खिलार कहावत, अधरन कौ रस लैहो।।१।। उमड़े घुमड़े फिरत रावरे, सकुचित काहे हैहो।। "सुरदास" प्रभु होरी खेलो, फगुवा हमारौ दैहो।।२।।**

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि) **हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।।** (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-सारंग ललना तुम मेरे मन अति बसो सुंदर चतुर सुजान।।ललनां।। (यह पूरा पद पेज १०४ पर पढ़े।)

राग-सारंग हौंस नाइक खिलवार होरी की, कर लियें डफ ही बजावें हो।। पान भरे मुख चमकत चौका, ओर दिये बेंदी रोरी की।।१।। तनसुख सारी रातो लहेंगा, कहा कहो छबि गोरी की।। नीवी गढ़ जु रही नाभी पै, औ कसी गांठ दई डोरी की।।२।। चोवा की बेंदी तो इन पै, औ अँचरा ढिंग थोरी की।। उघरति अंगिया कठिन कुचन पै, आय मनोरथ जोरी की।।३।। जोबन रूप बनी सु बनी, मानों है वृषभान की ओरी की।। नंदलाल कौं गारी देत हैं, ग्वालिन सों गठजोरी की।।४।। भरत न डरत आंख आंजत हैं, करत दुहाई किशोरी की।। हो हो कहि "सुघर राय" प्रभु, नैन सैन चित चोरी की।।५।।

भोग में राग-नट बहोरि डफ बाजन लागे हैं ली।।ध्रु.।। (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

संध्या में राग-जैजैवन्ती माई आज तो मोहन संग, रंग भरी खेलोगी।। लोक लाज पायन सों, पिछोंडी पेलोंगी।।१।। निंदरोगी आरज पंथ, नैंकु न डरोंगी।। निधरक अंकवार, पिय को भरोंगी।।२।। केसर के रंगन, रंगीलों करोंगी।। बेसर के मोती काजें, फगुवा को अरोंगी।।३।। ललित त्रिभंगी रस, ढ़रन ढ़रोंगी।। रति पति रण, व्रजपति सों लरोंगी।।४।।

शयन भोग राग-बिहाग चली हैं कुंवरि राधे खेलन होरी।। (यह पूरा पद पेज ११५ पर पढ़े।)

शयन में राग-गोरी-बिहाग बरसाने की ग्वालिनी ओर खेलत फाग बसंत हो।। (यह पूरा पद पेज ११८ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग यह दिन होरी को सो तू जिन मान करे।। (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

फाल्गुन शुक्ला ९

श्रृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - सफेद सोनेरी कोर के शुथन तथा वागो घेरदार। कटि में पटको तथा श्रीअंग में चोली किनारी के धोराकी, श्रीमस्तक पर पाग पर मोर पीछ को जरी के जमाव को कतरो। ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई सफेद। फूल की गेंद तथा कटि में दोनों तरफ गुलाल व अबीर की पोटली धराई गई है।

आभरण - स्वर्ण, माणक-मोती व फूल की छड़ी।

मंगला में श्रृंगार तक एक ही पद गारी का राग-बिलावल सुंदर स्याम सुजान सिरोमनि, देहुं कहा कहि गारी जू।। बडे लोग के औगुन बरनत, सकुच होत जिय भारी जू।। को करि सके पिता को निर्णय, जाति पांति को जानें।। जिनके जिय जेसी बनि आवे, तेसी भांति बखानें।।२।। माया कुटिल नटी तन चितयो, कोन बडाई पाई।। उन चंचल सब जगत विगोयो, जहां तहा भई हंसाई।।३।। तुम पुनि प्रगट होई बारें तें, कोन भलाई कीनी।। मुक्ति वधू उत्तम जन लायक, ले अधमन कों दीनी।।४।। बसि दस मास गर्भ माता के, उन आसा करि जाये।। सो घर छांडि जीभ के लालच, ह्वे गये पूत पराये।।५।। बारें ही तें गोकुल गोपिन के, सूने ग्रह तुम डाटे।। ह्वै निसंक तहां पैठि रंकलों, दधि के भाजन चाटे।।६।। आपु कहाय बडे के ढोटा, भात कृपन लों मांग्यो।। मान भंग पै दूजें जाचत, नेंक संकोच न लाग्यो।।७।। लरिकाई तें गोपिन के तुम, सूने भवन ढंढोरे।। जमुना न्हात गोप कन्यन के, निपट निलज पट चोरे।।८।। बेनु बजाय विलास कियो वन, बोली पराई नारी।। वे बातें मुनि राजसभा में, ह्वै निसंक विस्तारी।।९।। सब कोऊ कहत नंद बाबा को, घर भर्‍यो रतन अमोले।। गरे गुंजा सिर मोर-पखौवा, गायन के संग डोले।।१०।। राज सभा को बेठन हारो, कोन त्रियन संग नाचे।। अग्रज सहित राज मारग में, कुब्जा देखत राचे।।११।। अपनी सहोद्रा आपु ही छल करि, अर्जुन संग भजाई।। भोजन करि दासी सुत के घर, जादों जाती लजाई।।१२।। ले ले भजे राजन की कन्या, यह धों कोन भलाई।। सत्यभामा जु गोत में ब्याही, उलटी चाल चलाई।।१३।। बहिन पिता की सास कहाई, नेक हु लाज न आई।। एते पर दीनी जु विधाता, अखिल लोक ठकुराई।। मोहन वसीकरन चट चेटक, जंत्र मंत्र सब जानें।। तातें भले भले करि जाने, भले भले जग मानें।।१५।। वरनों कहा यथा मति मेरी, वेद हू पार न पावे।। दास "गदाधर" प्रभु की महिमा, गावत हीं उर आवे।।१६।।

राजभोग आवता राग-बिलावल मोहन वृषभान कें आए जू।। तहां अतिरस न्योंति जिमाए जू।।१।। वृषभान पुरा की गोरी।। श्रीराधा कृष्ण पियारी।।२।। चढि दूल्हे ब्याहन आये।। सिंघासन दे बेठाये।।३।। नाना विधि भई हे रसोई।। तहां जेंवत अति सुख होई।।४।। तहां मिली युवती बड़भागी।। गावें कृष्ण चरित्र अनुरागी।।५।। तहां बोली एक व्रजनारी।। आवो देंहिं कृष्ण कों गारी।।६।। इने गारि कहा कहि दीजे।। गुन ओगुन सरस लहीजे।।७।। द्वे बाप सबै कोउ जाने।। जिने वेद पुरान बखाने।।८।। वसुदेव के सुत जु कहाये।। तुम नंद गोपकें आये।।६।। तेरी मैया आन जू जाती।। वे हिलि मिली बेठें पाती।।१०।। तेरी फूफी पंच भरतारी।। जाको जस पावन कारी।।११।। पति पांडु सबे जग जानें।। सुत आन आनकें आनें।।१२।। तेरी द्रुपद सुता सी भाभी।। वह पंच पुरूष मिलि लाभी।।१३।। जाकी जग वदत बड़ाई।। सोतो भक्त सिरोमनि गाई।।१४।। तेरी बहनि सुभद्रा कुमारी।। सोतो अर्जुन संग सिधारी।।१५।। श्रीकृष्ण तेरी महतारी।। वह पहरें तनसुख सारी।।१६।। रानी रातो लहंगा सोहे।। तेरी चितवनि मे जग मोहे।।१७।। तुम कहीयत हो ब्रह्मचारी।। जाके सोलह सहस्त्र ब्रजनारी।।१८।। तुम कहीयत हो दधि दानी।। जिन कुब्जा सों रति मानि।।१६।। श्रीकृष्ण तेरो बलबीरा।। जिन करष्यो कालिंदी नीरा।।२०।। अहो तुम वन वन धेनु चराई।। भये घोख सकल सुखदाई।।२१।। वृंदावन बेनु बजायो।। ब्रज सुंदरि रास खिलायो।।२२।। सूने भवन पराये आये।। चोरी करि माखन खाये।।२३।। गारीं गावें हरि जू की सारी।। वे हँसि हँसि दे हें तारी।।२४।। गारी गावें हरिजू की सासू।। वे ढरत प्रेमके आंसू।।२५।। गावो गावो सबे मिलि गारी।। तुम सुनहुं लाल बिहारी।।२६।। तुम करि करि अपनों भायो।। अपनों जस जगत सुनायो।।२७।। वें हँसि हँसि गावे गोरी।। पट ओट हंसी मुख मोरी।।२८।। छांडे दुर्योधन से राजा।। तेरे कुल हु न आवे लाजा।।२६।। ललिता यह मंगल गायो।। सुनि “सूरस्याम” सचुपायो।।३०।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि) हरिरिह ब्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-काफी तुम आवौरी तुम आवो।। मोहन जू को गारी सुनावो।। होरी रस रंग बढावो।।ध्रु.।। हरि कारो री हरि कारो।। यह द्वे बापन विच बारो।।२।। हरि नटवा री हरि नटवा।। राधा जू के आगें लटुवा।।३।। हरि मधुकर री हरि मधुकर।। रस चाखत डोलत घर घर।।४।। हरि खंजन री हरि खंजन।। राधा जु के मन को रंजन।।५।। हरि रंजन री हरि

जन।। ललिता ले आई अंजन।।६।। हरि नागर री हरि नागर।। जाको बाबा नंद उजागर।।७।। हम जाने री हम जाने।। राधा मोहन गहि आने।।८।। मुख मांडोरी मुख मांडो।। हरि हाहा खाय तो छांडो।।९।। हम भरि हैं री हम भरि हैं।। काहू ते नैंक न डरि हैं।।१०।। हरि होरी हो हरि होरी।। स्यामा जु केसरि ढोरी।।११।। हरि भावे री हरि भावे।। राधा मन मोद बढावे।। रंग भीनो री रंग भीनो।। राधा मोहन बस कीनो।।१३।। हरि प्यारो री हरि प्यारो।। राधा नयनन को तारो।।१४।। हम ले हैं री हम लें हैं।। फगुवा ले गारी न दे हैं।।१५।। यह जस "परमानंद" गावे।। कछु रहसि बधाई पावे।।१६।।

भोग में राग-नट होरी हो हरि खेलत आवत।। गोपिन कैं मन मोद बढ़ावत।।१।। ब्रज जुवतिन लै प्यारी आँईं।। उत तैं नंद कौं कुँवर कन्हाई।।२।। सुरंग गुलाल अबीर उड़ावत।। केसरि नीर जुवतिन सीस तैं नावत।।३।। बीन रबाब किन्नरी बाजत।। ताल मृदंग चंग सुर गाजत।।४।। बंसरि लै तरूनी-गन धाँईं।। गोपन लै कनक पिचकाई।।५।। फगुवा लैंन नँद-गृह आँईं।। भूषन बसन सबैं पहिराई।।६।। देत असीस चली ब्रजनारी।। इहि बिधि क्रीड़त कुंज-बिहारी।।७।। सो छबि देखि देव सचु पावत।। फूलन की बरखा बरखावत।।८।। जमुना न्हाँन चले जदुराई।। यह सोभा मोपै बरनि न जाई।।९।। राधा गिरिधर अविचल जोरी।। "प्राननाथ" जन नवल किसोरी।।१०।।

संध्या में राग-काफी आयो फागुन मास, कहें सब होरी होरा।। एक ओर वृषभान नंदनी, एक ओर हरि हलधर जोरा।।१।। ब्रजनारी गारी देवे कों, भजि भजि आवें तजि तजि कोरा।। जान न देहों पकरो री स्याम कों, सबे धरत जोबन को तोरा।।२।। रहि न सकत अपने घर कोऊ, मानों काम को फिर्यो ढंढोरा।। "कृष्ण जीवन लछीरामके" प्रभु सों, होत है झकझोरी झकझोरा।।३।।

शयन भोग आने से दर्शन तक एक ही पद गाया जाता है राग-गौरी अरी चल नवल किशोरी गोरी भोरी होरी खेलन जाय।। (यह पूरा पद पेज १०८ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग लाडिली मान न कीजे होरी के दिन में, कौन तिहारी बान।। (यह पूरा पद पेज ८८ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

फाल्गुन शुक्ला १०

श्रृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - गुलाबी सोनेरी कोर के शुथन तथा वागो घेरदार कटि में पटका। श्रीमस्तक पर पाग पर मोरपिछ का कतरा। ठाड़ा वस्त्र हरा, पिछवाई व सारे साज सफेद। कटि में गुलाल की पोटली धराई गई है।

आभरण - सोना, माणक-मोती के भारी आभरण धराये गये हैं।

मंगला में राग-विभास आज तो छबिलों लाल, प्रात ही खेलन चल्यों, सखा संग लाय लींये, प्रेम गारी गाय कें।। खेलत खेलत वृषभान जु की पौरी आये, हो-हो होरी बोले प्यारों मन भायके।।१।। छबीली रच्यो उपाय, स्याम को लीने बुलाय, मैया की दृष्टि बचाय, लीने उर लाय कें।। अरस परस दोऊ महारस भीने, सहचरी सुख पावें "रसिक" मुख गाय कें।।२।।

श्रृंगार में राग-काफी **आयो फागुन मास कहें सब होरी.** (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

राजभोग आवे तब राग-बिलावल रस सरस बसो बरसानों जू।। राजत खनीक खानो।। मनिमय मंदिर तहां सोहे।। रवि शशि उपमा कों कोहे।।१।। वृषभान गोप तहां राजें।। ताकी कीरति जग में गाजें।। नित परम कुलाहल भारी।। गावत गारी व्रजनारी।।२।। जब दिन होरी को आयो।। न्योंतौं नंदगाम पठायो।। सुनि कें मनमोहन धाये।। सब सखा संग ले आये।।३।। जब जसुमति न्योति बुलाई।। समधिन समध्यानें आई।। कीरति आदर कर लीनी।। मनुहार बहोत विधि कीनी।।४।। अति कृपा अनुग्रह कीने।। हम तो अपने करि लीने।। गुन गने न परें कछू गाथा।। कीनों व्रज सकल सनाथा।।५।। तुम तो सब की सुखरासी।। ये सुफल किये व्रजवासी।। आवो निज भवन बिराजो।। बरसानों सकल निवाजो।।६।। तुम तो सब की सुखदाई।। मुख कीजे कोन बड़ाई।। तुम तो यह निज व्रत लीनों।। जिन जो जाच्यो सो दिनों।।७।। यह जस तुमारो जग जानें।। मुख पर कहि कोन बखानें।। तब कर गहि ढिंग बेठारी।। गावत मंगल व्रजनारी।।८।। तुम सों पूछें एक बाता।। तुम सांची कहो सब गाता।। जब गर्ग तिहारे आये।। बहु नाम कृष्ण के गाये।।९।। मुनि वासदेव करि लेखे।। वसुदेव कहां तुम देखे।। यह सुनि सुनि बात तिहारी।। अचरज उपजे जीय भारी।।१०।। औरो संका जीय आवे।। ये भेद कोऊ नहीं पावे।। पति साधु परम तुम पायो।। यह पूत कहां ते जायो।।११।।

याके गुन रूप नियारे।। यह मिले न कुल हि तिहारे।। कछू कह्यो हमारो कीजे।। बसि कैं सब कौं सुखदीजैं।।१२।। रहियें कछू दिवस हमारे।। हम तो हैं सकल तिहारे।। यह दोऊ एक करि जानों।। नंदगाम सोई बरसानों।।१३।। जानत ज्यों नंद तिहारे।। तेसेई वृषभान हमारे।। ये दोऊ परम स्नेही।। ये एक प्रान द्वे देही।।१४।। सुनि सुनि जसुमति मुसिकानी।। बोली मधुरी एक बानी।। बसियें कछू दिवस तिहारे।। कीरति चलि बसो हमारे।।१५।। तब हँसी सकल व्रजनारी।। जसुमति की ओर निहारी।। ब्रज भयो कुलाहल भारी।। नांचत दे दे कर तारी।।१६।। यह रस बरसे बरसाने।। बिन कुंवरि कृपा को जाने।। कीरति जसुमति जस गायो।। व्रजवास "माधुरी" पायो।।१७।।

राजभोग में राग-बसन्त (अष्टपदि) हरिरिह व्रजयुवती सतसंगे।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राग-बिलावल सुंदर स्याम सुजान सिरोमनि देहुं कहा कहि गारीजू।। (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े।)

भोग में राग-गौरी/मालव हो हो हो हो हो हो होरी।। सुंदर स्याम राधिका गोरी।।१।। राजत परम मनोहर जोरी।। नंद नंदन वृषभान किशोरी।।२।। डफ और ताल मृदंग बजावत।। गोरी राग सरस सुर गावत।।३।। नवसत साज सकल व्रजनारी।। प्रमुदित देत भामति गारी।।४।। झूंडन जुर चहुं दिसते दौरी।। मदन गोपाल गहे भर कोरी।।५।। सोंधो बहुत सीसते नायो।। रंगे बसन कियो मन भायो।।६।। नवल अबीर सखा संग लीने।। फिरति उड़ावत फेंटन दीनें।७।। नयन आंज रोरी मुख मांडत।। प्रेम आलिंगन देदे छांडत।।८।। हरि मृदु भुजा कंठ ले लावत।। अंतर को अनुराग जनावत।।६।। मगन भई तब सुधि न संभारत।। प्राणनाथ पर सर्वस्व वारत।।१०।। "चतुर्भुज" प्रभु पिय सब सुख सागर।। सुरनर मोहे गिरिधर नागर।।११।।

संध्या में राग-काफी मेरो नवरंग बिहारी।। बल बल जाऊं तिहारी।।१।। बाजे बहु भांत बजावें।। नाना रस रंग बढ़ावें।।२।। गावे गुण गीत रसाला।। भावे मोहि नंदको लाला।।३।। लिये संग राधा गोरी।। बोले सब हो हो होरी।।४।। सोंधे सों भीनों वागो।। सारी रति रेन को जाग्यो।।५।। शोभा कहा बैन बखानें।। "माधुरी" के नयन ही जाने।।६।।

शयन भोग आये राग-अड़ानों गावत धमार आईं व्रज की सुकुमार नार।। चित्र अंकित ढ़फ संवार, तृण टकोर अंगुरी ढार, बजवत रिझवार ग्वार।।१।। सुन निकसे सुघरराय, अर्भक लीने बुलाय, शंख, शृंग, चंग उपंग, महुवर बंसी सहनार।। घुंघरू घंटा घडियाल, कंस ताल, कठ ताल, दुंदुभी मृदंग राग, रंग होत नंद द्वार।।२।। चोवा मृगमद गुलाल, मुख मंडित किये गोपाल, केसर केसु तन पुंज, कंचन कर सीसवार।। पिचकाई करन लाईं, धारा छूटत सुहाई, सहचरी समीप आय, छिरक रही हार हार।।३।। अति विचित्र बाल मित्र, विरहत मिल युवति युथ, गावत हें सुर संयुत, होरी के गीत गार।। “मुरारी दास” प्रभु गोपाल, फगुवा दीनो संभार, दे असीस उलट चली, रूप माधुरी निहार।।४।।

शयन में राग-अड़ानों आवें रावल की ग्वार नार गोकुल तैं खेलि।। शिथिल अंग लज्जित मैन, मोहन रंग रंगे नयन, पीक लीक अरचि एन, किये रति केलि।।१।। अंसन अवलंब पांति, प्रफुल्लित लपटात जात, हसन दशन कांति जुही, ज्यों न रही फेलि।। पुलकित इत रोम पांति, सोंधे सब सगबगाति, केसर के रंग सिंधु, प्रेम लहरि झेलि।।२।। सब वेश नव किशोरी, मन्मथ की मटक मोरी, प्रीतम अनुराग फाग, बाढी रंग रेलि।। “व्रजपति” रिझवार पाय, अचयो रस मन अघाय, भौन गौन काज राज, हंसन गति पेलि।।३।।

मान में राग-बिहाग लाडिली मान न कीजे होरी के दिन में, कौन तिहारी बान।। (यह पूरा पद पेज ८८ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

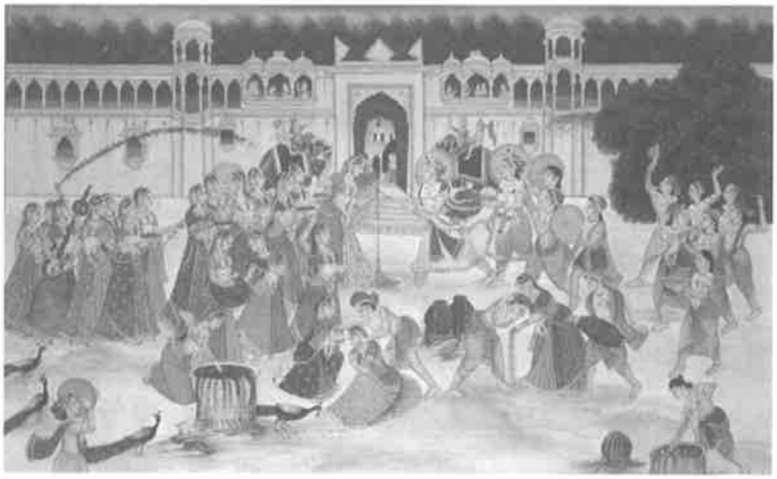

फाल्गुन शुक्ला ११

(कुंज एकादशी)

श्रृंगार - मुकुट कांछनी का।

वस्त्र - केसरिया रूपेरी कोर के शुथन तथा कांछनी में ऊपर का घेर केसरीया तथा निचे का घेर श्याम रंग का। श्रीअंग में श्याम चोली, श्री कण्ठ में केसरिया रूपेरी कोर को गाती को पटको तथा श्रीमस्तक पर केशरी पाग पर हरा व सफेद मीनाका मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सफेद, पिछवाई चित्राम की फाग निकुंज की। राजभोग में पिछवाई सफेद तथा फूलका मुकुट। निकुंज सिद्ध कर पधराया गया है। कटि में गुलाल अबीर की पोटली धराई गई है। पिचकारी, आम के मोर धराये गये हैं। राजभोग में श्री नवनीत प्रियाजी, श्रीजी में पधार कर गोद में बिराजे हैं। दोनों स्वरूप भारी फाग खेले हैं। पोटली से गुलाल अबीर उड़ाये गये हैं। आरती में फूल बरसाये गये। बाद में श्रीनवनीत प्रियाजी अपने मंदिर में पधारे तथा अपने मंदिर में वापस फाग खेले। श्रीजी व लालन में अनोसर में खेल भोग आये।

मंगला में राग-देवगंधार **रविजा तट कुंजन में गिरिधर, खेलत फाग सुरंग।। गोप बाल गोकुल के सब ही, लये जोरि सब संग।।१।। श्रीवृषभान सुता सों प्रमुदित, चले करन हित जंग।। सोभा अद्भुत बनी सबन की, निरखि लज्यो अनंग।।२।। नव सत साज सिंगार राधिका, सनमुख आई दौरि।। प्रेम सहित नेनन अवलोकत, साथ सखी सब जोरि।।३।। पिचकाई भरि लई कनिक की, केसरि रससों घोरी।। छिरकत, चोंप परस्पर बाढी, हंसत मृदुल मुख मोरि।।४।। चोवा मेद, फुलेल, अरगजा, लीयो सुभग बनाय।। भरि भरि बेला सब छिरकत हैं, उर आनंद न समाय।।५।। सरस सुगंध उड्यो अति बूका, दिनमनि लख्यो न जाय।। चहूं ओर रस सागर उमड्यो, श्रुतिपथ गयो बहाय।।६।। वचन विवेक ना बोलत तिहि छिन, सुधि भूली सब चेत।। सोर करत सब ही धावत हैं, हो हो शब्द समेत।।७।। राधा लाल गुलाल मुठी भरि, डारत अति सुख हेत।। बाहिर उर अनुराग दुहुँन कों, प्रगट दिखाई देत।।८।। पटह, झांझ, झालरि, डफ, आवज, वीना, सुरकल मंद।। ताल, पखावज, मुरली, महुवरि, बाजत मुरज सुछंद।।९।। गारी व्रज ललना मिली गावत, मनमें अति आनंद।। फगुवा मन भायो सब मांगत, पकरे आनंद कंद।।१०।। उलटि सखन तन चितये मोहन, बाढ्यो रंग**

अपार।। भयो मूढ मन शेष कहन कों, राधाकृष्ण विहार।।११।। सिव समाधि भूल्यो, पछितायो विधि हु बहुवार।। जों माग्यो फगुवा सो हसिकें, दीनो नंदकुमार।।१२।। कु संमति विपिन सुबल वहु विधि सों, दरस करन कों आयो।। ऋतु वसंत केकी, शुक, पिक मिलि, मधुपन बोल सुनायो।।१३।। थके देव किन्नर सुर वनिता, अति मनमें सुख पायो।। “गोकुलचंद” सरूप सुखद को, गुन संभ्रम सो गायो।।१४।।

श्रृंगार में राग-देवगंधार आज माई मोहन खेलत होरी।। (यह पूरा पद पेज ६० पर पढ़े।)

राग-बिलावल रहसि घर समधिन आई।। ए सब सजनन के मनभाई।।ध्रु.।। समधिन सों समधोरो कीजै, कीरति यह मन आई।। नंद गामते महरि जसोदा, समधिन न्योति बुलाई।।१।। समधिन आई सब मन भाई, निस समधी संग खेली।। खोलि हुलास आय ढिंग बेठी मोहोरन की सी थेली।।२।। अति सुरंग सारी समधिन की, लहेंगा अति ही सुढार।। फाटि रही सगरी समधिन, की चोली जोबन भार।।३।। समधिन कों हाथी को भावे, आछो नीको पूरो।। रंग रंगीलो ओर चटकीलो, हाथ भरे को चूरो।।४।। समधिन तो दीयो ई चाहे, खोलि डवा की गांठि।। अपने समधिन के नेगिन कों, हीरा पन्ना वांठि।।५।। समधिन की हे गली सांकरी, समधि आवन जोग।। आधो बाहिर आधो भीतर, बहोत बराती लोग।।६।। समधिन कें मेल्यो ही चाहे, गल फूलन को हार।। काढन कहे समधिन समधीसों, डोला के जु कहार।।७।। यह लीला सुरनर मुनि गाई, देखत रहे लुभाय।। चिरंजीवो दुलहे ओर दुलहिन, “सूरदास” बलिजाय।।८।।

राजभोग आवता राग-बिलावल रस सरस बसो बरसानों जू।। (यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-देवगंधार (डोल) मनमोहन, अद्‌भुत डोल बनी।। तुम झुलों हों हरख झुलाऊँ, वृंदावन चंद धनी।।१।। परम विचित्र रच्यो विश्वकर्मा, हीरा लाल मनी।। “चतुर्भुज” प्रभु गिरिधरनलाल छबि, कापें जात गनी।।२।।

राग-देवगंधार मोहन झूलत बढ्यो आनंद।। एक और वृषभान नंदिनी, एक और व्रजचंद।।१।। ललिता बिशाखा झुलवत ठाडी, कर गहि कंचन डोल।। निरख निरख प्रीतम अरू प्यारी, विहंस कहत मृदु बोल।।२।। उड़त गुलाल कुंकुमा बंदन, परसत चारू कपोल।।

छिरकत तरुणी मदनगोपाले, आनंद हृदें कलोल।।३।। कहा कहों रस बढ्यो परस्पर, त्रिभुवन वरन्यों न जाय।। “कुंभनदास” लालगिरिधर की, बानिक अधिक सुहाय।।४।।

राग-देवगंधार आज माई झूलत हें नंदलाल।। संग राजत वृषभान नंदिनी जोरी परम रसाल।।१।। श्रीगोवर्द्धन की सुभग शिखर पर रच्यो, जो डोल विशाल।। कदली, करण, केतकी, कुंजो, बकुल, मालती जाल।।२।। नूतन न्यूत प्रवाल रहे लस, माधुरी सों अरूझाय।। कमल प्रसून पराग पुंज भर, बहत समीर सुहाय।।३।। मधुप कीर कल कोकिल कुंजत, रस मकरंद लुभाय।। सुन सुन श्रवण पुलक पिय प्यारी, रहत कंठ लपटाय।।४।। निरझर झरत सुगंध सुबासित, रंग रंग जल लोल।। उभय कूल कलहंस मंडली, कूजत करत कलोल।।५।। युवतिजन समूह मिल गावत, प्रमुदित लोचन लोल।। बाजत ताल मृदंग होत रंग, विहसत चारू कपोल।।६।। चोवा चंदन छिरकत भामिनि, अवलोकत रस भाय।। श्रीविट्ठलनाथ आरती उतारत, “दास” निरख बल जाय।।७।।

राग-देवगंधार मदन गोपाल झूलत डोल।। वाम भाग राधिका बिराजत, पहरें नील निचोल।।१।। गौरी राग अलापत गावत, कहत भामते बोल।। नंद नंदन को भलो मनावत, जासों प्रीति अतोल।।२।। नीको वेष बन्यों मन मोहन, आज लईं हम मोल।। बलिहारी मनमोहन मुरति, जगत देहुं सब ओल।।३।। अद्‌भुत रंग परस्पर बाढ्यो, आनंद हृदय कलोल।। “परमानंद” दास तिहिं अवसर, उडत होलिका झोल।।४।।

राग-सारंग डोल झुलावत लाल बिहारी, नाम लेलें बोलें लालन प्यारी, हें दुलहा दुलहनि दुलारी, सुंदर कर सुकुमारी।। नखसिख सुंदर सिंगारी, केसु कुसम सुहस्त सम्हारी, स्याम कंचुकी सुरंग सारी, चाल चले छबि न्यारी।।१।। वारंवार बदन निहारी, अलक झलक झलमलारी, रीझ रीझ लाल ले बलिहारी, पुलकित भरत अंकवारी।। कोक कला निपुन नारी, कंठ सरस सुर भारी, सुयश गावत लाल “बिहारी”, बिहारिन की बलिहारी।।२।।

भोग में राग-गौरी मदन मोहन गहवरवन, खेलत, सरस धमार।। सेंदुर भर मांगे बहु, आई सकल व्रजनार।।१।। फूली लता चहूं दिश, वरण वरण बहुं भांत।। भयो हुलास सब जंतु ही, कोकिल कुल कल कांत।।२।। गुंजत मधुप सुहाये, श्रवण सुनत सुख होय।। वैभव निरख नयो रंग, उठ धाये सब कोय।।३।। बाजत ताल पखावज, आवज डफ मुखचंग।। वेणु मधुर

ध्वनि सुनियत, स्याम सुंदर ता संग।।४।। नृत्यत नाना बानी, गानी सुघर सुदेश।। बोलत हो हो होरी, भयो अधिक आवेश।।५।। चौवा अगर अरगजा, केसर मिली हे सुरंग।। छिरकत भर पिचकाई, शोभित छींट अनंग।।६।। तब सखि पांच सात मिल, मोहन पकरे जाय।। सोंधों छींट नयनन में, मुरली लई छिनाय।।७।। एक सखि कर मेलत, फिरत मंडली जोर।। तिनहीं मध्य व्रजपति गति, लेत चिते चित्तचोर।।८।। परसत कर उर चोली, बोली ठोली डारि।। मंदमंद मुसिक्याय कें, देत परस्पर गारि।।९।। रहत चीर द्रुम द्रुम प्रति, टूटत मोतिन हार।। मगन भयो मन सबको, तनकी तजी संभार।।१०।। अंचल फेरत हरि पर, सर्वस्व डारत वार।। प्रेम मगन रस बस भई, सबे मनोहर नार।।११।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधर संग, बाढ्यो रंग अपार।। देववधू अति लालच, चाहत घोष बिहार।।१२।।

राजभोग में राग-सारंग (आरती के समय) डोल झूलत हैं प्यारो लाल बीहारी, बिहारन ए राग रम रह्यो।। काहू के हाथ अघोटी, काहू के बीन, काहूके मृदंग को झप ले, ताल काहूके अरगजा, छिरकत रंग रह्यो।।१।। डांडी छर खेल मच्यो जो परस्पर, नहीं जानियत पग क्यों रह्यो।। "हरिदास" के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी, ऊनको खेल किंनहूँ न लह्यो।।२।।

संध्या में राग-गौरी **हो हो होरी बेंनु मध्य गावे श्याम।।** (यह पूरा पद पेज १२४ पर पढ़े।)

शयन भोग आने पर राग-गौरी नवल कन्हाई हो प्यारे।। ऐसो झगरो निवार।। दान काहे को हो लागे।। चले जाहु अपने मग।।ध्रु.।। आवत जात सदा रही, कबहु सुन्यों नहीं कान।। अब कछु नई ये चलाईये, दूध दही को दान।।१।। सदा सदा हम दान लियो, सुन हो नवल कुमारि।। ओर गेल हे तुम गई, दान हमारो मारि।।२।। ठाले ठूले फिरत हो, चलो हमें घर काम।। इनकी कछु न चलाईये, ख्याली सुंदरस्याम।।३।। स्याम सखन सों यो कह्यो, घेरो सबन कों जाय।। ढीठ बहुत ये ग्वालिनी, मटुकी लेहु छिनाय।।४।। गो चारन मिस विपिन में, लूटत हो परनारि।। कहेंगी जाय व्रजरायसों, ऐसो झगरो निवारि।।५।। मधु मंगल कह्यो कृष्ण सों, दान लेहु कछु छांड़।। इनसों दिन दिन काम हे, मति लेहु कछु आड़।।६।। सांची कहत के हँसत हो, हमको होत अवार।। सब सखियन सेना बनी कर, गहने देहो मोती हार।।७।। मदन मोहन पिय हरखि, लियो हस्त कर हार।। अपने कंठ ले पहेरियो, गज मोतिन अति चार।।८।। सब सखियन मिल मतो मत्यो, कीजे कहा उपाय।। राधा गहने दिजीये, और

नहीं कछु दाय।।६।। ललिता विशाखा भाजियो, राधा तजी हें अकेली।। “गोविंद” प्रभु नव कुंज में, प्रिया प्यारी की केली।।१०।।

शयन में राग-कल्याण डोल चन्दन को, झुलत हलधर बीर।। श्री वृंदावन में, कालिंदी के तीर।।१।। गोपी रही अरगजा छिरकत, उडत गुलाल अबीर।। सुरनर मुनिजन कौतुक भूले, व्योम विमानन भीर।।२।। वाम भाग राधिका बिराजत, पहरे कसुंभी चीर।। “परमानंद” स्वामी संग झूलत, बाढ्यो रंग शरीर।।३।।

मान में राग-बिहाग सो ईन दिन कैसें निबहेगो मान तेरो, आयो फाल्गुन मास कह्यो तू मान।। (यह पूरा पद पेज ८६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

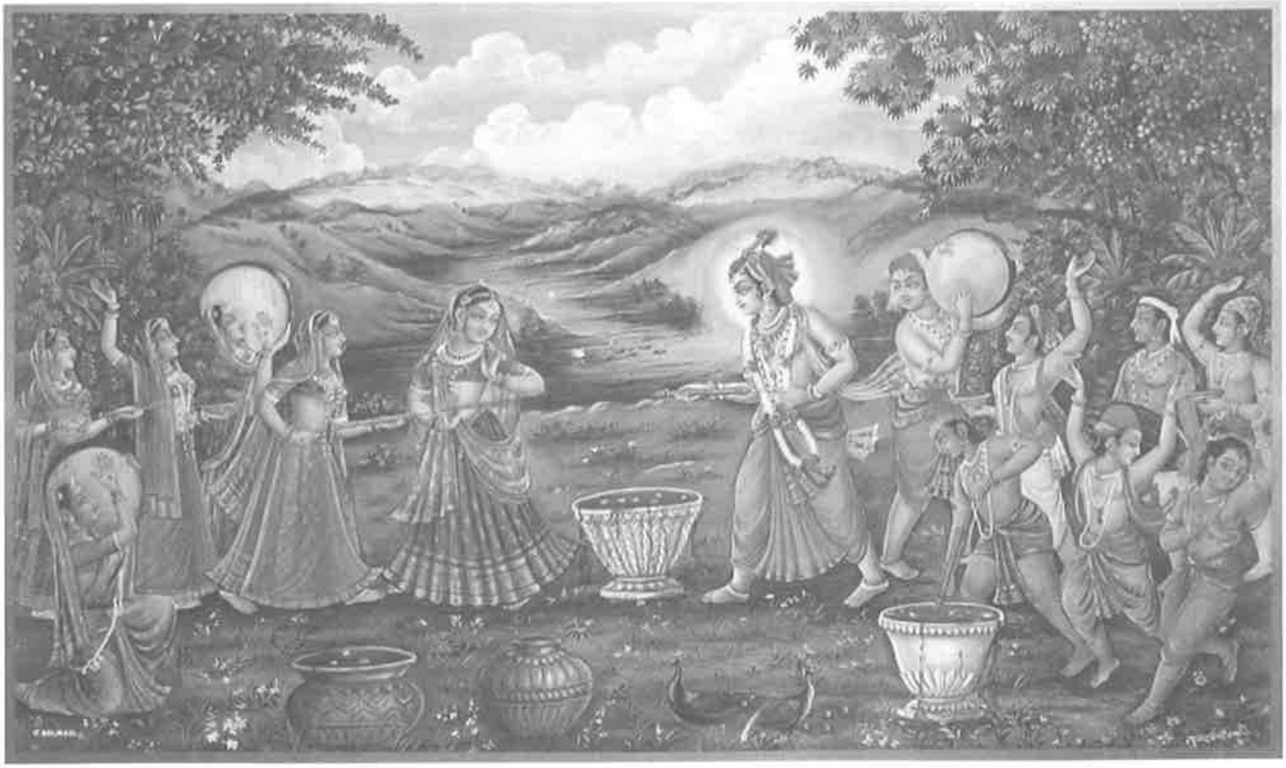

फाल्गुन शुक्ला १२

श्रृंगार - पाग कतरा का।

वस्त्र - सफेद सोनेरी कोर के शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर पाग पर सोनेरी जरी काम का कतरा। ठाड़ा वस्त्र सिन्दुरी तथा राजभोग में पिछवाई सफेद।

आभरण - माणक-मोती, सोना तथा मीना के धराये गये। फूल की छड़ि व गेंद, पिचकारियां सोने की तथा आम के मोड़ धराये गये।

मंगला में राग-काफी **आयो फागुन मास कहें सब होरी.** (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-काफी **तु जिन बोलेरी, दैन दै वाहि गारी।। वोंह हे लबार जिभार जगत कों, हम हें सुलक्षण नागर नारी।।१।। वाके जिय आवे सोई गावे, हम कहा करें लाज की मारी।। होरी में कहो कोन बिगोयो, "कृष्णजीवन लछीरामे" झँझारी।।२।।**

राजभोग आवता राग-सारंग **झूलत डोल राधिका संग।। गोवरधन पर्वत के उपर, खेलत अति रस रंग।।१।। प्रथम खेल राधे मन हर्यो, केसर लपटत अंग।। दुजो खेल रच्यो चंद्रावलि, अबीर गुलाल सुरंग।।२।। तीजो खेल कीयों ललितादिक, अग्नि कुमारी सग।। चौथो खेल कियों चन्द्रावली, पिय मोहे "रसिक" अनंग।।३।।**

राजभोग में राग-सारंग **हरि को डोल देख वृजवासी फूले।। गोपी झुलावें गोविंद झूलें।।१।। नंद-चंद गोकुल में सोहें।। मुरली मनोहर मन्मथ मोहें।।२।। कमल नयन कों लाड लड़ावें।। प्रमुदित गीत मनोहर गावें।।३।। रसिक शिरोमणि आनंद सागर।। "रामदास" प्रभु मोहन नागर।।४।।**

भोग व संध्या में राग-काफी **तुम आवौरी तुम आवो।।** (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

शयन में राग-कल्याण **डोल झुलत हैं गिरधरन झुलावत बाला।। निरख-निरख फूलत ललितादिक, श्रीराधावर नंदलाला।।१।। चोवा चंदन छिरकत भामिनी, उडत अबीर गुलाला।। कमलनयन कों पान खवावत, पहरावत उरमाला।।२।। बाजत ताल मृदंग अघोटी, कूजत वेणु रसाला।। "नंददास" युवती मिल गावत, रिझवत श्रीगोपाला।।३।।**

मान में राग-केदार/बिहाग **सो ईन दिन कैसें निबहेगो मान** (यह पूरा पद पेज ८६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग **चले हों भांवतें रस ऐन।।** (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

फाल्गुन शुक्ला १३

श्रृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - सफेद केसर की बुंटी की छाप का शुथन तथा वागों घेरदार, कटि में पटको। श्रीमस्तक पर पाग पर पिरोंजी रंग का जरी का कतरा। ठाड़ा वस्त्र श्याम, पिछवाई सफेद।

आभरण - नित्यानुसार।

मंगला में राग-काफी बोलैं सब हो हो होरी।। खेलैं श्री राधा गोरी।।१।। सहेली संग सुहाई।। बनी सब एकुई दाईं।।२।। भरै केसर कमोरी।। लालन के सीस ते ढोरी।।३।। सोंधो बहुत मंगायो।। प्यारीजू के अंग लगायो।।४।। बाजे ढ़फ ताल मृदंगा।। वीणा मुख चंग उपंगा।।५।। भरे फेंटन गुलाला।। आये उत नंद के लाला।।६।। सबै मिलि घात सों आई।। लालन कौ घेरि कें लाई।।७।। भरी रस दृष्टि निहारें।। जुरी अनुराग की धारें।।८।। गारी रस भेद की गावें।। तारी दे लाल नचावें।।९।। सहेली कौ भेष बनायो।। "माधुरी" के मन को भायो।।१०।।

राग-खट आजु भोर की नंद पौरि ब्रज नारिन धूम मचाई।। (यह पूरा पद पेज १०३ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-काफी मेरो नवरंग बिहारी।। बलि-बलि जांऊं तिहारी।।१।। बाजे बहुं भाँति बजावे।। गाना रसरंग बढ़ावें।।२।। गावें गुण गीत रसाला।। भावै मोही नंदको लाला।।३।। लिये संग राधा गौरी।। बोले सब हो हो होरी।।४।। सोंधे सों भीनों वागो।। सारी रति रैन कौ जाग्यौ।।५।। शोभा कहा बेन बखानें।। "माधुरी" के नयन ही जानें।।६।।

राजभोग आने पर राग-काफी माई बरसाने तें नंदगाम, प्रोहित वृषभानु कौ आयौ।। नंद भवन को वैभव अद्‌भुत, निरखि परम सुख पायौ।।१।। पाँय धुवाई कें जल अचवायौ, घिरि आईं व्रजनारी।। पा लागन कहि फूल-फूल, गावत होरी की गारी।।२।। एकन चोवा आन सान, ब्राह्मन के मुख लपटायौ।। एक कपोलन मारति मींडति, करत आप मन भायौं।।३।। एक घर घसी घोरि अरगजा, पाछे ते गहि नायौ।। एक तो पकर फेंट झक झोरत, इकलो करकें पायौ।।४।। एक चोंहोटिया लेत चोर चित, एक जु तारी बजावे।। एक तो पकर पोतिया

झटकत, हँसि हँसि वाख चढावे।।५।। एक अचानक व्हे पाछे ते, आंखिन में दियो हे गुलाला।। मींडत दृग यों कहत लुगाइन, मेरो पायो चाला।।६।। एकन वासी खाटी छाछि ले, माथे तें गहि नाई।। इत यह एक उते वे अनगिन, ब्राह्मण की न बस्याई।।७।। गिडगिडात मार्‍यो जाडे को, चितवत भ्रोहे तान।। हा हा हों हार्‍यो तुम जीती, छांडि देहु जिजमान।।८।। एक कहे याहि पकर पटकि, याके श्रवनन कों सुख दीजे।। एक कहे हा हा नीके व्हे, घरी एक गहि लीजे।।९।। कहत परस्पर ए व्रजनारी, सब मिल यह विचारी।। इतनी सुतन अथांई ते चलि, आये कुंज बिहारी।।१०।। जो देखे तो पाँडे कों, यहाँ घेर रहीं व्रजबाला।। मुख पटुका दे निरख निरख, मुसिकाने नंद के लाला।।११।। भली मानस हो भलो आदर कियो, भलो भोजन करवायो।। सुनों हो कुंवर जू सगरी लुगाइन, हौं तौ नाच नचायो।।१२।। एकन गुल गुलाय गुलचायो, एकन कोहुंनी दीनी।। जानत हों अपने जीय में जैसी पोहोंनाई कीनी।।१३।। किचकिचाय मेरे लियौ चौहोंटिया, पीठ व्है गई राती।। हों डरपत इन नर वाजिन तें, धुकर पुकर करे छाती।।१४।। तब ललिता गद गद गदकायौ, स्याम स्याम कहि टेर्‍यो।। पांडे जूकी ललित पीठपर, लाल कमल कर फेर्‍यो।।१५।। एकन मोकों नयन सेनदे, एकन अंजन कीनों।। एकन मनहर लियो चितें, आंखिन में बूका दीनों।।१६।। कह्यो स्याम अजहु बक्सो, तिहारे बहुत सुख पेहें।। जो चाहो सोई तुमकों, मनभायो फगुवा देहें।।१७।। तुमतो अति उदार हो ढोटा, तुमसे तुमही दानी।। जान जाउ जिय में जगजीवन, चीर हरण सुधि आनी।।१८।। जो सासुरे की दया कीजे, तो हा हा खाय छूडावो।। तौ हम छांडें पांडेकों, पांडे नाचे तुम गावौ।।१९।। काहे न पांडे गुन प्रगटो, हरि सेन देई दृग मोरी।। मगन भयो तब नाचन लाग्यौ, बोलत हो हो होरी।।२०।। बांधत रोटी पेट फुलायो, टेढी पाग बनाई।। अधिक बार बह्मनेंटा नरोतम, अद्भुत फाग मचाई।।२१।। जान बूझ अनबोली व्है कें, दुर देखत नंदरानी।। निरख निरख नयनन कौतूहल, मनहीं मन मुसिक्यानी।।२२।। इंद्रादिक ब्रह्मादिक शंकर, ये सब रहे लुभाई।। हम न भये व्रज ब्राह्मन, निरख निरख मनमें पछिताई।।२३।। भई विमान भीर व्रज ऊपर, पहोपन वृष्टि करावें।। निरख निरख यह सुख नयनन, सुर वनिता मंगल गावें।।२४।। धन्य ब्राह्मन धन्य धन्य नंद सुत, धन्य ये व्रज की नारी।। धन्य धन्य व्रजके ब्रजवासी, धन्य "स्याम" बलि वारी।।२५।।

राजभोग में राग-धनाश्री झुलत युग कमनीय किशोर, सखी चहुं ओर झुलावत डोल।। ऊंची ध्वनि सुन चकृत होत मन, सब मिल गावत राग हिंडोल।।१।। एक वेष एकवयस

एकसम, नव तरूणी हरणी दृग लोल।। भांत भांत कंचुकी करें तन, वरण पहरें वलिचोल।।२।। वन उपवन द्रुम-वेली प्रफुल्लित, अंबमोर पिकनि कर कलोल।। तैसेहीं स्वर गावत ब्रजवनिता, झूमक देत लेत मनमोल।।३।। सकल सुगंध संवार अरगजा, आंई अपने-अपने टोल।। एक तकि पिचकाइन छिरकत, एक भरत भर कनक कचोल।।४।। कबहूं स्याम पीय उतर डोलतें, कौतुक हेत देंत झकझोल।। तब प्रिया उर भरि स्वास कंप तन, विरम-विरम बोलत मृदु बोल।।५।। गिरत तरोना गह्यो स्याम कर, श्रवणदेन मिस छुवत कपोल।। तब प्रिय ईषद मुसक मंद हँस, वक्रचिते कर भ्रुंह सलोल।।६।। भेरि झांझ दुंदुभी पखावज, ओर डफ आवज बाजत ढोल।। आए सकल सखा समूह जुर, हो हो होरी बोलत बोल।।७।। रत्न जटित आभूषण दीने, ओर दीने मुक्ताहार अमोल।। "सूरदास" मनमोहन प्यारे फगुवा दे राख्यो मन ओल।।८।।

राग-जेतश्री शोभा सकल सिरोमणी, दंपति झुलें डोल।। मोहनराय झूलहीं।। कनक खंभ मरकत मणी, हीरा खचित अमोल।।१।। चोकी पन्ना पांच पिरोजा, रची रत्नन की पांत।। मुक्तामाल सुहावनी, कहा वरनों बहुभांत।।२।। झुले दुलहनि राधिका, दुल्हे नंदकुमार।। रतिरस केलि बिराज ही, बाढ्यो रंग अपार।।३।। ताल पखावज आवज, झांझ झनक सहनाय।। वीणा, वेणु, रबाब, किन्नरी, मध्य मुरली की भाय।।४।। सखा मंडली शोभित, गावत फाग धमार।। इत शोभित व्रजसंदरी, गावत मीठी गार।।५।। झकझोरें पिचका चलें, कहा वरनों यह बान।। चोवा चंदन छिरकहीं, गोपी गोप सुजान।।६।। जख कर्दभ उर मंडिता, उडत गुलाल अबीर।। करत विनोद कौतुहला, राजत अति सै भीर।।७।। खेलत वल्लव वल्लवी, प्रतिछिन नव अनुराग।। कमल खंड केसर मधुपगण, गुंजत पीत पराग।।८।। शिथिल वसन कटि मेखला, रही अलक लर छूट।। एक एक मिल धाव हीं, गई मोतिन लर टूट।।९।। चिंरजीयो सुंदरवर प्यारो, सकल घोष सिरताज।। नंद जसोदा को सुकृत फल, प्रकट भयो हे आज।।१०।। सुर कुसुमन वरखा करें, लीला देखें आय।। "आसकरण" प्रभु मोहन को यश, रह्यो सकल जग छाय।।११।।

राग-सोरठ हौं कैसे यमुना जल जाऊंरी, हरी मोतन हेरै।। मेरे संग की जानदे, तब मेरो ही मग घेरे।।१।। नीचो व्हे घूंघट तकै, मेरे सन्मुख दरपन लाय।। मुख प्रतिबिम्ब निरखि के, छिन छिन लेत बलाय री।।२।। डगर बुहारे कांकरी री, डारे दूरि उठाय।। मधुर बैन मोंसो

यों कहे, चरणन जिन चुभ जाय।।३।। जब ही हों गागर भरों री, तब ही पैंठ अन्हाय।। तूं जिन परसें सीत में, कही मोही पें जु भराय।।४।। हँसकर कलश उचाव ही री, मिस करि पकरे बांह।। क्यों हूं हटक्यो ना रहे, मेरी छल करि पकरै छांह।।५।। यद्यपि सकल व्रज सुंदरि री, सब सों खेले फाग।। मन वच क्रम “व्रजईश” के, नित मोही सों अनुराग।।६।।

भोग व संध्या में राग-नट गारि हरि देत दिवावत।। व्रजमें फिरत गोपिकन भावत।।१।। दूध दही कौ मातो डोलै।। काहे न हो हो होरी बोले।।२।। बगलन में पिचकाई बागे।। बांधत फेंट संभारत पागें।।३।। रूकि गये वगर न रहे पेंडे।। नव केसरके माट उलेंडे।।४।। छाजन तें छूटें पिचकारी।। रंग गये बाखरि भवन अटारी।।५।। चोवा चंदन कीच मचाई।। मानों व्रजमें वर्षा ऋतु आई।।६।। मोहन घेरि भरी व्रज नारी।। अबीर, गुलाल रंगी रंग सारी।।७।। गोपी ग्वाल सबैं रंग राचें।। वे सब सिंघ पोरि पें नाचें।।८।। न्हान चले यमुना के तीरा।। कृष्ण ओर हलधर दोऊ बीरा।।९।। प्रभु “मुकुंद माधो” सुख दायक।। युगल किशोर देखिवे लायक।।१०।।

शयन में राग-हमीर/कल्याण डोल झुलत हें गिरिधरन झुलावत बाला।। (यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

शयन में राग-कल्याण झूलत डोल नंदकुमार।। चहुं ओर झूलावत व्रजसुंदरी, गावत सरस धमार।।१।। वामभाग वृषभाननंदिनी, साजे सकल सिंगार।। छिरकत चोवा चंदन कुँमकुमा, करन कनक पिचकार।।२।। उडत गुलाल दुहूँ दिश, बाढ्यो रंग अपार।। “आसकरण” प्रभु मोहन झूलत, व्रज के प्राण आधार।।३।।

मान में राग-बिहाग यह दिन होरी को सो तू जिन मान करे।। (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

फाल्गुन शुक्ला १५

होरी का उत्सव देहरी, बन्दनमाल तथा अभ्यंग स्नान

श्रृंगार - पाग चन्द्रिका का।

वस्त्र - सफेद डोरीया के शुथन तथा वागों घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग के ऊपर सादी मोरकी चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई सफेद धराई है। कटि में गुलाल-अबीर की पोटली।

आभरण - लाल सफेद मीना तथा सोना-हीरा आदि के।

मंगला में राग-खट/पंचम हो हो होरी खेलन जैये।। (यह पूरा पद पेज ८६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-धनाश्री होरी के रंगीले लाल, गिरिधर रंग मचायो।। केसरी सुरंग गुलाल अरगजा, मदन वसंत जमायो।।१।। ताल मृदंग झांझ ढफ बीना, होरी राग बनायो।। सुनि निकसी घर घर ते सुंदरि, हाव भाव फल पायो।।२।। आवत भावत गारिन गावत, रस भरि लाल खिलायो।। "श्री विट्ठल गिरिधर" युवतिन सों, होरी त्योहार मनायो।।३।।

राजभोग आने पर राग-धनाश्री रहसि घर समधिन आई (यह पूरा पद पेज १४८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग डोल झूलत है पिय प्यारी।। नंद नंदन वृषभान दुलारी।।१।। कमल नयन पर केसर डारी।। अबीर गुलाल करी अंधियारी।।२।। झूले स्याम झूलावत नारी।। हँस हँस देत परस्पर गारी।।३।। गावत गीत दे दे कर तारी।। बाजत वेणु परम रूचिकारी।।४।। भींज लगी तन तनसुख सारी।। खेल मच्यो वृंदावन भारी।।५।। रसिक सिरोमणि कुंज बिहारी।। "कृष्णदास" प्रभु गिरिवरधारी।।६।।

राग-सारंग डोल झुलावत लाल बिहारी, नाम लेलें बोलें लालन प्यारी, हें दुलहा दुलहनि दुलारी, सुन्दर वरस कुमारी।। (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

भोग तथा संध्या में राग-गौरी कछु दिन ब्रज और रहो, हरि होरी हे।। अब जिन मथुरा जाओ अहो हरि होरी है।। परब करो घर आपने।।हरि।। कुशल केलि निबाहो।।हरि होरी है।।१।। परिवा पिय चलिये नहीं।।हरि।। सब सुखको फलफाग।।अहो।। प्रकट करो अब आपनो।।हरि।। अंतरको अनुराग।।२।।अहो।। मनों दुज दिन सोध के।।हरि।। भूपति कीयौ काम।।अहो।। शशि रेखा सर तिलकदे।।हरि।। सब कोऊ करत प्रणाम।।अहो।।३।। कनक सिंहासन बैठिकें।।हरि।। युवतिन के उर आन।।अहो।। अलक चंवर अंचल ध्वजा।।हरि।।

घुंघट आतप तान।।अहो।।४।। फागुन मदन महीपति।।हरि।। इहि विध कर हें राज।।अहो।। पंद्रह तिथि भरि वरणि हो।।हरि।। तुम करो कृपा समाज।।अहो।।५।। तीज तिहू पुर प्रगटियो।।हरि।। अपनी आन नरेश।।अहो।। सुन मृदंग ढफ दुंदुभी।।हरि।। सब करत सुरति देस।।अहो।।६।। चोथ चहुं दिश न चालिये।।हरि।। यह अपनी इक रीति।।अहो।। मेरे गुण कहुँ निर्लज्ज व्है।।हरि।। छांड सकुच कुल नीति।।अहो।।७।। पांचें परमित पर हरौं।।हरि।। चलहु सकल इक चाल।।अहो।। नारी पुरूष एकत्र करो।।हरि।। वचन प्रीति प्रतिपाल।।अहो।।८।। छठि छै राग छै रागिणी।।हरि।। ताल तान बंधान।।अहो।। चटुल चरित्र रति नाथ के।।हरि।। सिखवो अति अभिधान।।अहो।।९।। सातें सुन सब सजि भई।।हरि।। राजाकी रूचि जान।।अहो।। करत कृपा तै सीस बैं।।हरि।। आयुष माथे मान।।अहो।।१०।। आठे उर डर मान कें।।हरि।। सबन मतो मत्यो एक।।अहो।। नृप जु कहे सोई कीजिये।।हरि।। सब कोउ राखो विवेक।।अहो।।११।। नवमी नवसत साजके।।हरि।। कर सुगंध उपहार।।अहो।। मिल चली ससी सुमेर तैं।।हरि।। मनसिज भवन जुहार।।अहो।।१२।। दसैं दसौं दिश शोधि कें।।हरि।। बोले राजा राय।।अहो।। जग जीत्यो बल आपने।।हरि।। ज्ञान वैराग्य छुडाय।।अहो।।१३।। सुन आई एकादशी।।हरि।। बोल सबसिर नाय।।अहो।। ढोल भेरि डफ बांसुरी।।हरि।। पटह निसान बजाय।।अहो।।१४।। देख भले भटू आपने।।हरि।। द्वादशी द्योस विचार।।अहो।। काज करो रूचि आपनि।।हरि।। व्है निशंक नर नारि।।अहो।।१५।। रचे कवच आयुध सबै।।हरि।। खरन भये असवार।।अहो।। धूरि धातु घट रंग भरे।।हरि।। धारा यंत्र हथियार।।अहो।।१६।। जहां तहां सजि सैना चली।।हरि।। मुक्त काच्छ शिर केश।।अहो।। आप आपुन सूझे नहीं।।हरि।। राजा रंक आवेश।।अहो।।१७।। जहां सुनत तप संयमी।।हरि।। धर्म धीर आचार।।अहो।। छिरकें जाय निशंक व्है।।हरि।। पकरी तोरी किवार।।अहो।।१८।। जे कबहू देखी नहीं।।हरि।। कबहू सुनी नहिं कान।।अहो।। तिन नारिन कै डरन तैं।।हरि।। लागे पुरूष पराण।।अहो।।१९।। धाई गहें बलै कुल बधू।।हरि।। पर पुरूष नहिं पहिचान।।अहो।। मातपिता पति बंधुकी।।हरि।। छूट गई सब कान।।अहो।।२०।। भस्म भरें अंजन करें।।हरि।। छिरकि केसरि बार।।अहो।। मर्यादा राखें नहीं।।हरि।। कटि पट लेहिं उतार।।अहो।।२१।। तेरस चौदस मास में।।हरि।। जान्यो जीत्यो जुग जार।।अहो।। शठ पंड़ित वेश्या वधू।।हरि।। सबे भये एक सार।।अहो।।२२।। पून्यो प्रकट प्रताप तें।।हरि।। दुरि भये पांई लाग।।अहो।। जहां तहां तै होरी लागी।।हरि।। मानो मवासिन आग।।अहो।।२३।। मिलि नाचें गावें

एकसम, नव तरूणी हरणी दृग लोल।। भांत भांत कंचुकी कसें तन, वरण पहरें वलिचोल।।२।। वन उपवन द्रुम-वेली प्रफुल्लित, अंबमोर पिकनि कर कलोल।। तैसेहीं स्वर गावत ब्रजवनिता, झूमक देत लेत मनमोल।।३।। सकल सुगंध संवार अरगजा, आंई अपने-अपने टोल।। एक तकि पिचकाइन छिरकत, एक भरत भर कनक कचोल।।४।। कबहूं स्याम पीय उतर डोलतें, कौतुक हेत देंत झकझोल।। तब प्रिया उर भरि स्वास कंप तन, विरम-विरम बोलत मृदु बोल।।५।। गिरत तरोना गह्यो स्याम कर, श्रवणदेन मिस छुवत कपोल।। तब प्रिय ईषद मुसक मंद हँस, वक्रचिते कर भ्रुंह सलोल।।६।। भेरि झांझ दुंदुभी पखावज, ओर डफ आवज बाजत ढोल।। आए सकल सखा समूह जुर, हो हो होरी बोलत बोल।।७।। रत्न जटित आभूषण दीने, ओर दीने मुक्ताहार अमोल।। "सूरदास" मनमोहन प्यारे फगुवा दे राख्यो मन ओल।।८।।

राग-जेतश्री शोभा सकल सिरोमणी, दंपति झुलें डोल।। मोहनराय झूलहीं।। कनक खंभ मरकत मणी, हीरा खचित अमोल।।१।। चोकी पन्ना पांच पिरोजा, रची रत्नन की पांत।। मुक्तामाल सुहावनी, कहा वरनों बहुभांत।।२।। झुले दुलहनि राधिका, दुल्हे नंदकुमार।। रतिरस केलि बिराज ही, बाढ्यो रंग अपार।।३।। ताल पखावज आवज, झांझ झनक सहनाय।। वीणा, वेणु, रबाब, किन्नरी, मध्य मुरली की भाय।।४।। सखा मंडली शोभित, गावत फाग धमार।। इत शोभित व्रजसंदरी, गावत मीठी गार।।५।। झकझोरें पिचका चलें, कहा वरनों यह बान।। चोवा चंदन छिरकहीं, गोपी गोप सुजान।।६।। जख कर्दभ उर मंडिता, उडत गुलाल अबीर।। करत विनोद कौतुहला, राजत अति सै भीर।।७।। खेलत वल्लव वल्लवी, प्रतिछिन नव अनुराग।। कमल खंड केसर मधुपगण, गुंजत पीत पराग।।८।। शिथिल वसन कटि मेखला, रही अलक लर छूट।। एक एक मिल धाव हीं, गई मोतिन लर टूट।।९।। चिंरजीयो सुंदरवर प्यारो, सकल घोष सिरताज।। नंद जसोदा को सुकृत फल, प्रकट भयो हे आज।।१०।। सुर कुसुमन वरखा करें, लीला देखें आय।। "आसकरण" प्रभु मोहन को यश, रह्यो सकल जग छाय।।११।।

राग-सोरठ हौं कैसे यमुना जल जाऊंरी, हरी मोतन हेरै।। मेरे संग की जानदे, तब मेरो ही मग घेरे।।१।। नीचो व्हे घूंघट तकै, मेरे सन्मुख दरपन लाय।। मुख प्रतिबिम्ब निरखि के, छिन छिन लेत बलाय री।।२।। डगर बुहारे कांकरी री, डारे दूरि उठाय।। मधुर बैन मोंसो

यों कहै, चरणन जिन चुभ जाय।।३।। जब ही हों गागर भरों री, तब ही पैंठ अन्हाय।। तूं जिन परसें सीत में, कही मोही पें जु भराय।।४।। हँसकर कलश उचाव ही री, मिस करि पकरे बांह।। क्यों हूं हटक्यो ना रहे, मेरी छल करि पकरै छांह।।५।। यद्यपि सकल व्रज सुंदरि री, सब सों खेले फाग।। मन वच क्रम “व्रजईश” के, नित मोही सों अनुराग।।६।।

भोग व संध्या में राग-नट गारि हरि देत दिवावत।। व्रजमें फिरत गोपिकन भावत।।१।। दूध दही कौ मातो डोलै।। काहे न हो हो होरी बोले।।२।। बगलन में पिचकाई बागे।। बांधत फेंट संभारत पागें।।३।। रूकि गये वगर न रहे पेंडे।। नव केसरके माट उलेंडे।।४।। छाजन तें छूटें पिचकारी।। रंग गये बाखरि भवन अटारी।।५।। चोवा चंदन कीच मचाई।। मानों व्रजमें वर्षा ऋतु आई।।६।। मोहन घेरि भरी व्रज नारी।। अबीर, गुलाल रंगी रंग सारी।।७।। गोपी ग्वाल सबैं रंग राचें।। वे सब सिंघ पोरि पें नाचें।।८।। न्हान चले यमुना के तीरा।। कृष्ण ओर हलधर दोऊ बीरा।।९।। प्रभु “मुकुंद माधो” सुख दायक।। युगल किशोर देखिवे लायक।।१०।।

शयन में राग-हमीर/कल्याण डोल झुलत हें गिरिधरन झुलावत बाला।। (यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

शयन में राग-कल्याण झूलत डोल नंदकुमार।। चहुं ओर झूलावत व्रजसुंदरी, गावत सरस धमार।।१।। वामभाग वृषभाननंदिनी, साजे सकल सिंगार।। छिरकत चोवा चंदन कुँमकुमा, करन कनक पिचकार।।२।। उडत गुलाल दुहूँ दिश, बाढ्यो रंग अपार।। “आसकरण” प्रभु मोहन झूलत, व्रज के प्राण आधार।।३।।

मान में राग-बिहाग यह दिन होरी को सो तू जिन मान करे।। (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

फाल्गुन शुक्ला १५

होरी का उत्सव देहरी, बन्दनमाल तथा अभ्यंग स्नान

श्रृंगार - पाग चन्द्रिका का।

वस्त्र - सफेद डोरीया के शुथन तथा वागों घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग के ऊपर सादी मोरकी चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई सफेद धराई है। कटि में गुलाल-अबीर की पोटली।

आभरण - लाल सफेद मीना तथा सोना-हीरा आदि के।

मंगला में राग-खट/पंचम हो हो होरी खेलन जैये।। (यह पूरा पद पेज ८६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-धनाश्री होरी के रंगीले लाल, गिरिधर रंग मचायो।। केसरी सुरंग गुलाल अरगजा, मदन वसंत जमायो।।१।। ताल मृदंग झांझ ढफ बीना, होरी राग बनायो।। सुनि निकसी घर घर ते सुंदरि, हाव भाव फ्ल पायो।।२।। आवत भावत गारिन गावत, रस भरि लाल खिलायो।। “श्री विट्ठल गिरिधर” युवतिन सों, होरी त्योहार मनायो।।३।।

राजभोग आने पर राग-धनाश्री रहसि घर समधिन आई (यह पूरा पद पेज १४८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग डोल झूलत है पिय प्यारी।। नंद नंदन वृषभान दुलारी।।१।। कमल नयन पर केसर डारी।। अबीर गुलाल करी अंधियारी।।२।। झूले स्याम झूलावत नारी।। हँस हँस देत परस्पर गारी।।३।। गावत गीत दे दे कर तारी।। बाजत वेणु परम रूचिकारी।।४।। भींज लगी तन तनसुख सारी।। खेल मच्यो वृंदावन भारी।।५।। रसिक सिरोमणि कुंज बिहारी।। “कृष्णदास” प्रभु गिरिवरधारी।।६।।

राग-सारंग डोल झुलावत लाल बिहारी, नाम लेलें बोलें लालन प्यारी, हें दुलहा दुलहनि दुलारी, सुन्दर वरस कुमारी।। (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

भोग तथा संध्या में राग-गौरी कछु दिन ब्रज और रहो, हरि होरी हे।। अब जिन मथुरा जाओ अहो हरि होरी है।। परब करो घर आपने।।हरि।। कुशल केलि निबाहो।।हरि होरी है।।१।। परिवा पिय चलिये नहीं।।हरि।। सब सुखको फलफाग।।अहो।। प्रकट करो अब आपनो।।हरि।। अंतरको अनुराग।।२।।अहो।। मनों दुज दिन सोध के।।हरि।। भूपति कीयौ काम।।अहो।। शशि रेखा सर तिलकदे।।हरि।। सब कोऊ करत प्रणाम।।अहो।।३।। कनक सिंहासन बैठिकें।।हरि।। युवतिन के उर आन।।अहो।। अलक चंवर अंचल ध्वजा।।हरि।।

घुंघट आतप तान।।अहो।।४।। फागुन मदन महीपति।।हरि।। इहि विध कर हें राज।।अहो।। पंद्रह तिथि भरि वरणि हो।।हरि।। तुम करो कृपा समाज।।अहो।।५।। तीज तिहू पुर प्रगटियो।।हरि।। अपनी आन नरेश।।अहो।। सुन मृदंग ढफ दुंदुभी।।हरि।। सब करत सुरति देस।।अहो।।६।। चोथ चहुं दिश न चालिये।।हरि।। यह अपनी इक रीति।।अहो।। मेरे गुण कहुँ निर्लज्ज व्है।।हरि।। छांड सकुच कुल नीति।।अहो।।७।। पांचें परमित पर हरौं।।हरि।। चलहु सकल इक चाल।।अहो।। नारी पुरूष एकत्र करो।।हरि।। वचन प्रीति प्रतिपाल।।अहो।।८।। छठि छै राग छै रागिणी।।हरि।। ताल तान बंधान।।अहो।। चटुल चरित्र रति नाथ के।।हरि।। सिखवो अति अभिधान।।अहो।।९।। सातें सुन सब सजि भई।।हरि।। राजाकी रूचि जान।।अहो।। करत कृपा तै सीस बैं।।हरि।। आयुष माथे मान।।अहो।।१०।। आठे उर डर मान कें।।हरि।। सबन मतो मत्यो एक।।अहो।। नृप जु कहे सोई कीजिये।।हरि।। सब कोउ राखो विवेक।।अहो।।११।। नवमी नवसत साजके।।हरि।। कर सुगंध उपहार।।अहो।। मिल चली ससी सुमेर तैं।।हरि।। मनसिज भवन जुहार।।अहो।।१२।। दसैं दसौं दिश शोधि कें।।हरि।। बोले राजा राय।।अहो।। जग जीत्यो बल आपने।।हरि।। ज्ञान वैराग्य छुडाय।।अहो।।१३।। सुन आई एकादशी।।हरि।। बोल सबसिर नाय।।अहो।। ढोल भेरि डफ बांसुरी।।हरि।। पटह निसान बजाय।।अहो।।१४।। देख भले भटू आपने।।हरि।। द्वाद्वशी द्योस विचार।।अहो।। काज करो रूचि आपनि।।हरि।। व्है निशंक नर नारि।।अहो।।१५।। रचे कवच आयुध सबै।।हरि।। खरन भये असवार।।अहो।। धूरि धातु घट रंग भरे।।हरि।। धारा यंत्र हथियार।।अहो।।१६।। जहां तहां सजि सैना चली।।हरि।। मुक्त काच्छ शिर केश।।अहो।। आप आपुन सूझे नहीं।।हरि।। राजा रंक आवेश।।अहो।।१७।। जहां सुनत तप संयमी।।हरि।। धर्म धीर आचार।।अहो।। छिरकें जाय निशंक व्है।।हरि।। पकरी तोरी किवार।।अहो।।१८।। जे कबहू देखी नहीं।।हरि।। कबहू सुनी नहिं कान।।अहो।। तिन नारिन कै डरन तैं।।हरि।। लागे पुरूष पराण।।अहो।।१९।। धाई गहें बलै कुल बधू।।हरि।। पर पुरूष नहिं पहिचान।।अहो।। मातपिता पति बंधुकी।।हरि।। छूट गई सब कान।।अहो।।२०।। भस्म भरें अंजन करें।।हरि।। छिरकि केसरि बार।।अहो।। मर्यादा राखें नहीं।।हरि।। कटि पट लेहिं उतार।।अहो।।२१।। तेरस चौदस मास में।।हरि।। जान्यो जीत्यो जुग जार।।अहो।। शठ पंड़ित वेश्या वधू।।हरि।। सबे भये एक सार।।अहो।।२२।। पून्यो प्रकट प्रताप तें।।हरि।। दुरि भये पांई लाग।।अहो।। जहां तहां तै होरी लागी।।हरि।। मानो मवासिन आग।।अहो।।२३।। मिलि नाचें गावें

सबे।।हरि।। अति हि उडावें छार।।अहो।। साधु असाधु न देख ही।।हरि।। बोले बचन विकार।।अहो।।२४।। अति अनीत मति देखकें।।हरि।। परिवा प्रकटी आन।।अहो।। विमल वसन ज्यों स्यामके।।हरि।। करी मर्यादा कान।।अहो।।२५।। आवत ही बिनती करी।।हरि।। उठि जोरे हँसि हाथ।।अहो।। वरण धर्मं सब अपुने रहो।।हरि।। कृपा कर हु रति नाथ।।अहो।।२६।। आज्ञा दई रति नाथ ने।।हरि।। नृप समुझो मन मांह।।अहो।। जाय धर्म अपुने चलो।।हरि।। बसो हमारी छांह।।अहो।।२७।। "सूर" कहां लग वरणिये।।हरि।। मनसिजके गुणग्राम।।अहो।। सुनो स्याम यह मास में।।हरि।। करियो कहा अब काम।।अहो।।२८।। कान्ह कृपा कर घर रहो।।हरि।। वरजे मथुरा जात।।अहो।। सरस रसिक मणि राधिका।।हरि।। कही कृष्ण सों बात।।अहो।।२९।।

शयन भोग आने पर राग-गौरी ढोटा दोऊ रायके खेलत डोलत फाग हो।। लाले जो देखे सो मोहियो, ओर प्रतिछिन नव अनुराग हो।।१।। सखा संग सब बोल कैं, घर घर ते देति बगारी।। सुनत कुंवरि कोलाहल, निकसी घोष कुमारी।।२।। भूषण वसन जू साजियो, उर गज मोतिन हार।। झूमक चेतव गाव ही, घोष राय दरबार।।३।। बाजे बहुत बजाव हीं, ढ़फ दुंदुभी कठताल।। बल मोहन मध्य नायका, चहुं दिस नाचत ग्वाल।।४।। पिचकाई कर कनक की, अरगजा कुंकुम घोरि।। बलराम कृष्ण कों छिरक हीं, हँसिव चली मुख मोरि।।५।। कोलाहल सुन आइयो, वल्लभ कुलके राज।। सिंघ द्वार पें बैठियो, बडरे गोप समाज।।६।। व्रजरानी तहां आइयो, जहां बैठे नंद उपनंद।। सोंधे ड्योडी लीपियो, आंजत आंख सुछंद।।७।। यह विध होरी खेल ही, अरगजा पंक सुगंध।। विध सों होरी लगाइयो, पून्यो पूरनचंद।।८।। परिवा वसन जु साजियो, न्हाय धोय आनंद।। "गोविन्द" बल वंदन करें, जय जय गोकुल के चंद।।९।।

शयन आरती के समय राग-कल्याण डोल चंदन को झुलत हलधर वीर।। (यह पूरा पद पेज १५३ पर पढ़े।)

राग-ईमल/कल्याण कोऊ भलो बुरो जिनि मानों, अब रँगन रंग होरी है।। मनमोहन के मन मोहन कों, श्री वृषभानु किसोरी है।।१।। होरी में कहा कहा कहियतु, यामें कहा कछु चोरी है।। "कृष्णजीवन लछीराम" के प्रभुसों, जो कहिये सो थोरी है।।२।।

मान में राग-बिहाग यह दिन होरी को सो तू जिन..... (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

चैत्र कृष्ण पक्ष की भाव भावना

इस पक्ष में कुंज की लीला है। फाल्गुन में कामदेव को परास्त करके गोपीयों ने डोल झुलाये। फिर गोपियों ने फूल मण्डली की और द्वितीया-पाट को श्री ठाकुरजी को सिंघासन पर बैठाये और स्वागत कर फूलमण्डलीयां सीध की तथा अनेक सामग्रियां आरोगाई।

श्री डोलोत्सव - श्री चन्द्रावली जी को प्रधानोत्सव - यह अत्यन्त गोपनीय लीला है। श्री वृषभानजी कीरतिजी श्री ठाकुरजी को न्योता करे, अपने जमाई को बुलावे और नाना प्रकार की सामग्री अरोगावे। फेर गुलाल अबीर छिरके इसी भावसे श्री नवनीत प्रियाजी, श्रीनाथजी की गोद में बिराजे। आरती करें, भेंट धरें। पाछे नंदालय में प्रभु पधारे।

डोलोत्सव के मिस इन सब पुष्प-पत्रो को अंगीकार किये। वृक्षादि, वनस्पति आदि सभी भगवदीय है। इसलिये 'भक्त मनोरथ पूरकायनमः' ऐसे मनोरथ में सभी को अंगीकार कर उनके मनोरथों को पूर्ण किये - (१) श्री गोवर्धन पर डोल किये। (२) कुंजन में डोल किये। (३) गोकुल में डोल किये। (४) यमुना पुलिन में डोल किये।

सब सखियों ने मिलकर डोल सिद्ध कियो। कुंज रचना की। उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में डोल झुलाये। फिर समस्त व्रजललना, व्रजवासी, व्रजराज श्री यशोदाजी कीरतिजी आदि सभी ने मिलकर खूब खेल मचायों।

इसे महा महोत्सव कहा गया है। इस उत्सव में आठ दिन पहले नौबत की बधाई बैठती है, नित्य नये वस्त्र धराये जाते हैं, श्रृंगार भी नये होते हैं तथा नई नई सामग्री अरोगाई जाती है। दिन भर गुलाल-अबीर चौवा चंदन से खेलते हैं। ४० दिन पहले झांझन की बधाई बैठे। १५ दिन पूर्व सामग्री सिद्ध होय, सेवा श्रृंगार, भोग, रागादि में अधिकता रहे सो इसे 'महा महोत्सव' कहते हैं।

द्वित्तीया पाट को उत्सव - यह उत्सव डोलोत्सव के दूसरे दिन होता है। इस दिन चेत्री गुलाब की फूल मंडली, भारी वनमाला को श्रृंगार होता है। हीरा-पन्ना-माणक-मोती के आभरण धराये जाते हैं। बसन्त से लेकर डोलोत्सव तक प्रभु के संग व्रजभक्त, उद्दाम-उच्छंखल अमर्यादित खेल खेले। ब्रजराज कुंवर को प्रभु न मानकर, अपने समिपस्थ, अपने समान प्रभु को मानकर स्वामी भाव खोकर खेल खेलें। इसलिये पुनः पाट बैठाय, पूर्ववत् मर्यादा मानकर नित्य लीला उत्सव लीला में पुनः परिणित करते हैं। सो दुबारा इसको पाट बैठानो, इसे ही 'दुतिया-पाट' कहते हैं। आज से वैसाख शुक्ला ६ तक मेवा-भात अरोगते हैं।

कुंज लीला - यह वनों के वर्णन के साथ मानी जाती है। इस निकुंज में श्री कृष्ण, बलदेव, स्वामिनीजी, चन्द्रावलीजी, ललिताजी के राज्य सीमा को वन कहे जाते हैं। श्रीनंद बाबा, ब्रज के राज्य विस्तार और समूह के अधिश्वर होने से इन्हें 'ब्रजराज' कहे गये हैं।

श्री यमुनाजी के भाव से दस दिन 'कुंजलीला' चलती है। निकुंज में सदा साथ रहने वाले अथवा जिन्हें विशेष अधिकार है वे ही निकुंज दर्शन के अधिकारी हैं। इसमें प्रिया-प्रीतम की रस रंग लीला, चौपड़ आदि खेल हास्य-विनोद परस्पर युगल छबि में होते हैं। इस प्रकार द्वादश निकुंज की भावना से सेवा की जाती है। यह ४० दिन कुंज, निकुंज, निभृत निकुंज लीला को भाव है।

चैत्र कृष्णा १

डोल उत्सव - देहरी बन्दनमाल तथा अभ्यंग स्नान।

श्रृंगार - पाग चन्द्रिका का

वस्त्र - सफेद डोरिया के, शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर छज्जेदार पाग तथा उस पर मोर की चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र सिनुरी रंग के तथा पिछवाई सफेद व कटि में गुलाल-अबीर की पोटली धराई गई है।

आभरण - श्री मस्तक पर ठाड़ीलर मोती की, शीरपेच, शीशफूल, कर्णफूल आदि सभी सोना के तथा मीना के। श्रीमुखार वृंद पर माणक का तिलक, अलंकार कमलाक्ष नखवेशर माणक-मोती की चिबुंक हीरा की धराई गई है। श्रीअंग में भारी श्रृंगार-हांस, हार, सोना, मीना-मोती के सभी सम्मिलित, गुंजामाला व फूल की माला तथा श्रीहस्तकमल में नखावली मोती पड़ाकी, मुद्रिका, हस्तपान, पोंची-बाजुबंद सभी सोना के तथा हरा मीना के धराये गये है।

श्री चरण कमल में नखावली, मोतीपड़ाकी, मुद्रिका, पगपान, पायल, पेंजनी, जेहर आदि सभी मीनाके, नुंपुर सोना के फूल की छड़ी, फूल की गेंद आदि से भारी श्रृंगार धराया गया है।

आज का सेवाक्रम- आज डोल तिबारी में ध्रुव बारी के नीचे डोल सिध किया गया। बाद में राजभोग अरोगने के बाद श्री नवनीत प्रियाजी, साज समाज सहित श्रीजी के पास पधारें तथा श्रीजी की गोद में बिराजे। श्रीजी तथा श्रीलालन के डोल के सम्मुख दोनों तरफ भोग धराये गये। बादमें दर्शन खुलें, दोनो तरफ फाग खेलाया गया। गुलाल उड़ाई गई। प्रथम श्रीजी के आरती तथा बाद में श्रीलालन के आरती की गई।

डोल के दर्शन खुलने पर प्रभुको पान-बीड़ी आरोगाये गये तथा फाग खेले तथा इसी प्रकार तीन भोग आते हैं तथा डोल के तीन दर्शन खुलते हैं। आखरी दर्शन में आरती होने के बाद, राई-लॉन किये जाकर न्योछावर की जाती है। बाद में एक गांठड़ो जिसे 'राजूपगा' कहते हैं, उसे वारा जाता है।

इसके बाद कीर्तन-समाज को चौवा, चंदन, गुलाल, अबीर से खेलाया जाता है। उसके बाद महाराजश्री व समस्त मुखिया भितरिया डोलकी तीन परिक्रमा करते हैं तथा दण्डवत करत हैं। बाद में श्रीप्रियाजी को श्रीजी की गोद में पधराया जाता है।

बाद में दोनो स्वरूपों को आखरी फाग खेलाया जाता है। गुलाल-अबीर उड़ाई जाती है। आरती

सबे।।हरि।। अति हि उडावें छार।।अहो।। साधु असाधु न देख ही।।हरि।। बोले बचन विकार।।अहो।।२४।। अति अनीत मति देखकें।।हरि।। परिवा प्रकटी आन।।अहो।। विमल वसन ज्यों स्यामके।।हरि।। करी मर्यादा कान।।अहो।।२५।। आवत ही बिनती करी।।हरि।। उठि जोरे हँसि हाथ।।अहो।। वरण धर्म सब अपुने रहो।।हरि।। कृपा कर हु रति नाथ।।अहो।।२६।। आज्ञा दई रति नाथ ने।।हरि।। नृप समुझ्यो मन मांह।।अहो।। जाय धर्म अपुने चलो।।हरि।। बसो हमारी छांह।।अहो।।२७।। "सूर" कहां लग वरणिये।।हरि।। मनसिजके गुणग्राम।।अहो।। सुनो स्याम यह मास में।।हरि।। करियो कहा अब काम।।अहो।।२८।। कान्ह कृपा कर घर रहो।।हरि।। वरजे मथुरा जात।।अहो।। सरस रसिक मणि राधिका।।हरि।। कही कृष्ण सों बात।।अहो।।२९।।

शयन भोग आने पर राग-गौरी ढोटा दोऊ रायके खेलत डोलत फाग हो।। लाले जो देखे सो मोहियो, ओर प्रतिछिन नव अनुराग हो।।१।। सखा संग सब बोल कैं, घर घर ते देति बगारी।। सुनत कुंवरि कोलाहल, निकसी घोष कुमारी।।२।। भूषण वसन जू साजियो, उर गज मोतिन हार।। झूमक चेतव गाव ही, घोष राय दरबार।।३।। बाजे बहुत बजाव हीं, ढ़फ दुंदुभी कठताल।। बल मोहन मध्य नायका, चहुं दिस नाचत ग्वाल।।४।। पिचकाई कर कनक की, अरगजा कुंकुम घोरि।। बलराम कृष्ण कों छिरक हीं, हँसिव चली मुख मोरि।।५।। कोलाहल सुन आइयो, वल्लभ कुलके राज।। सिंघ द्वार पें बैठियो, बडरे गोप समाज।।६।। व्रजरानी तहां आइयो, जहां बैठे नंद उपनंद।। सोंधे ड्योडी लीपियो, आंजत आंख सुछंद।।७।। यह विध होरी खेल ही, अरगजा पंक सुगंध।। विध सों होरी लगाइयो, पून्यो पूरनचंद।।८।। परिवा वसन जु साजियो, न्हाय धोय आनंद।। "गोविन्द" बल वंदन करें, जय जय गोकुल के चंद।।९।।

शयन आरती के समय राग-कल्याण डोल चंदन को झुलत हलधर वीर।। (यह पूरा पद पेज १५३ पर पढ़े।)

राग-ईमल/कल्याण कोऊ भलो बुरो जिनि मानों, अब रँगन रंग होरी है।। मनमोहन के मन मोहन कों, श्री वृषभानु किसोरी है।।१।। होरी में कहा कहा कहियतु, यामें कहा कछु चोरी है।। "कृष्णजीवन लछीराम" के प्रभुसों, जो कहिये सो थोरी है।।२।।

मान में राग-बिहाग यह दिन होरी को सो तू जिन..... (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

चैत्र कृष्ण पक्ष की भाव भावना

इस पक्ष में कुंज की लीला है। फाल्गुन में कामदेव को परास्त करके गोपीयों ने डोल झुलाये। फिर गोपियों ने फूल मण्डली की और द्वितीया-पाट को श्री ठाकुरजी को सिंघासन पर बैठाये और स्वागत कर फूलमण्डलीयां सीध की तथा अनेक सामग्रियां आरोगाई।

श्री डोलोत्सव - श्री चन्द्रावली जी को प्रधानोत्सव - यह अत्यन्त गोपनीय लीला है। श्री वृषभानजी कीरतिजी श्री ठाकुरजी को न्योता करे, अपने जमाई को बुलावे और नाना प्रकार की सामग्री अरोगावे। फेर गुलाल अबीर छिरके इसी भावसे श्री नवनीत प्रियाजी, श्रीनाथजी की गोद में बिराजे। आरती करें, भैंट धरें। पाछे नंदालय में प्रभु पधारे।

डोलोत्सव के मिस इन सब पुष्प-पत्रो को अंगीकार किये। वृक्षादि, वनस्पति आदि सभी भगवदीय है। इसलिये 'भक्त मनोरथ पूरकायनमः' ऐसे मनोरथ में सभी को अंगीकार कर उनके मनोरथों को पूर्ण किये - (१) श्री गोवर्धन पर डोल किये। (२) कुंजन में डोल किये। (३) गोकुल में डोल किये। (४) यमुना पुलिन में डोल किये।

सब सखियों ने मिलकर डोल सिद्ध कियो। कुंज रचना की। उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में डोल झुलाये। फिर समस्त व्रजललना, व्रजवासी, व्रजराज श्री यशोदाजी कीरतिजी आदि सभी ने मिलकर खूब खेल मचायों।

इसे महा महोत्सव कहा गया है। इस उत्सव में आठ दिन पहले नौबत की बधाई बैठती है, नित्य नये वस्त्र धराये जाते हैं, श्रृंगार भी नये होते हैं तथा नई नई सामग्री अरोगाई जाती है। दिन भर गुलाल-अबीर चौवा चंदन से खेलते हैं। ४० दिन पहले झांझन की बधाई बैठे। १५ दिन पूर्व सामग्री सिद्ध होय, सेवा श्रृंगार, भोग, रागादि में अधिकता रहे सो इसे 'महा महोत्सव' कहते हैं।

द्वित्तीया पाट को उत्सव - यह उत्सव डोलोत्सव के दूसरे दिन होता है। इस दिन चेत्री गुलाब की फूल मंडली, भारी वनमाला को श्रृंगार होता है। हीरा-पन्ना-माणक-मोती के आभरण धराये जाते हैं। बसन्त से लेकर डोलोत्सव तक प्रभु के संग व्रजभक्त, उद्दाम-उच्छंखल अमर्यादित खेल खेले। ब्रजराज कुंवर को प्रभु न मानकर, अपने समिपस्थ, अपने समान प्रभु को मानकर स्वामी भाव खोकर खेल खेलें। इसलिये पुनः पाट बैठाय, पूर्ववत् मर्यादा मानकर नित्य लीला उत्सव लीला में पुनः परिणित करते हैं। सो दुबारा इसको पाट बैठानो, इसे ही 'दुतिया-पाट' कहते हैं। आज से वैसाख शुक्ला ६ तक मेवा-भात अरोगते हैं।

कुंज लीला - यह वनों के वर्णन के साथ मानी जाती है। इस निकुंज में श्री कृष्ण, बलदेव, स्वामिनीजी, चन्द्रावलीजी, ललिताजी के राज्य सीमा को वन कहे जाते हैं। श्रीनंद बाबा, ब्रज के राज्य विस्तार और समूह के अधिश्वर होने से इन्हें 'ब्रजराज' कहे गये हैं।

श्री यमुनाजी के भाव से दस दिन 'कुंजलीला' चलती है। निकुंज में सदा साथ रहने वाले अथवा जिन्हें विशेष अधिकार है वे ही निकुंज दर्शन के अधिकारी हैं। इसमें प्रिया-प्रीतम की रस रंग लीला, चौपड़ आदि खेल हास्य-विनोद परस्पर युगल छबि में होते हैं। इस प्रकार द्वादश निकुंज की भावना से सेवा की जाती है। यह ४० दिन कुंज, निकुंज, निभृत निकुंज लीला को भाव है।

चैत्र कृष्णा १

डोल उत्सव - देहरी बन्दनमाल तथा अभ्यंग स्नान।

श्रृंगार - पाग चन्द्रिका का

वस्त्र - सफेद डोरिया के, शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर छज्जेदार पाग तथा उस पर मोर की चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र सिन्दुरी रंग के तथा पिछवाई सफेद व कटि में गुलाल-अबीर की पोटली धराई गई है।

आभरण - श्री मस्तक पर ठाड़ीलर मोती की, शीरपेच, शीशफूल, कर्णफूल आदि सभी सोना के तथा मीना के। श्रीमुखार वृंद पर माणक का तिलक, अलंकार कमलाक्ष नखवेशर माणक-मोती की चिबुंक हीरा की धराई गई है। श्रीअंग में भारी श्रृंगार-हांस, हार, सोना, मीना-मोती के सभी सम्मिलित, गुंजामाला व फूल की माला तथा श्रीहस्तकमल में नखावली मोती पड़ाकी, मुद्रिका, हस्तपान, पोंची-बाजुबंद सभी सोना के तथा हरा मीना के धराये गये है।

श्री चरण कमल में नखावली, मोतीपड़ाकी, मुद्रिका, पगपान, पायल, पेंजनी, जेहर आदि सभी मीनाके, नुंपुर सोना के फूल की छड़ी, फूल की गेंद आदि से भारी श्रृंगार धराया गया है।

आज का सेवाक्रम- आज डोल तिबारी में ध्रुव बारी के नीचे डोल सिध किया गया। बाद में राजभोग अरोगने के बाद श्री नवनीत प्रियाजी, साज समाज सहित श्रीजी के पास पधारें तथा श्रीजी की गोद में बिराजे। श्रीजी तथा श्रीलालन के डोल के सम्मुख दोनों तरफ भोग धराये गये। बादमें दर्शन खुलें, दोनो तरफ फाग खेलाया गया। गुलाल उड़ाई गई। प्रथम श्रीजी के आरती तथा बाद में श्रीलालन के आरती की गई।

डोल के दर्शन खुलने पर प्रभुको पान-बीड़ी आरोगाये गये तथा फाग खेले तथा इसी प्रकार तीन भोग आते हैं तथा डोल के तीन दर्शन खुलते हैं। आखरी दर्शन में आरती होने के बाद, राई-लॉन किये जाकर न्योछावर की जाती है। बाद में एक गांठड़ो जिसे 'राजूपगा' कहते हैं, उसे वारा जाता है।

इसके बाद कीर्तन-समाज को चौवा, चंदन, गुलाल, अबीर से खेलाया जाता है। उसके बाद महाराजश्री व समस्त मुखिया भितरिया डोलकी तीन परिक्रमा करते हैं तथा दण्डवत करत हैं। बाद में श्रीप्रियाजी को श्रीजी की गोद में पधराया जाता है।

बाद में दोनो स्वरूपों को आखरी फाग खेलाया जाता है। गुलाल-अबीर उड़ाई जाती है। आरती

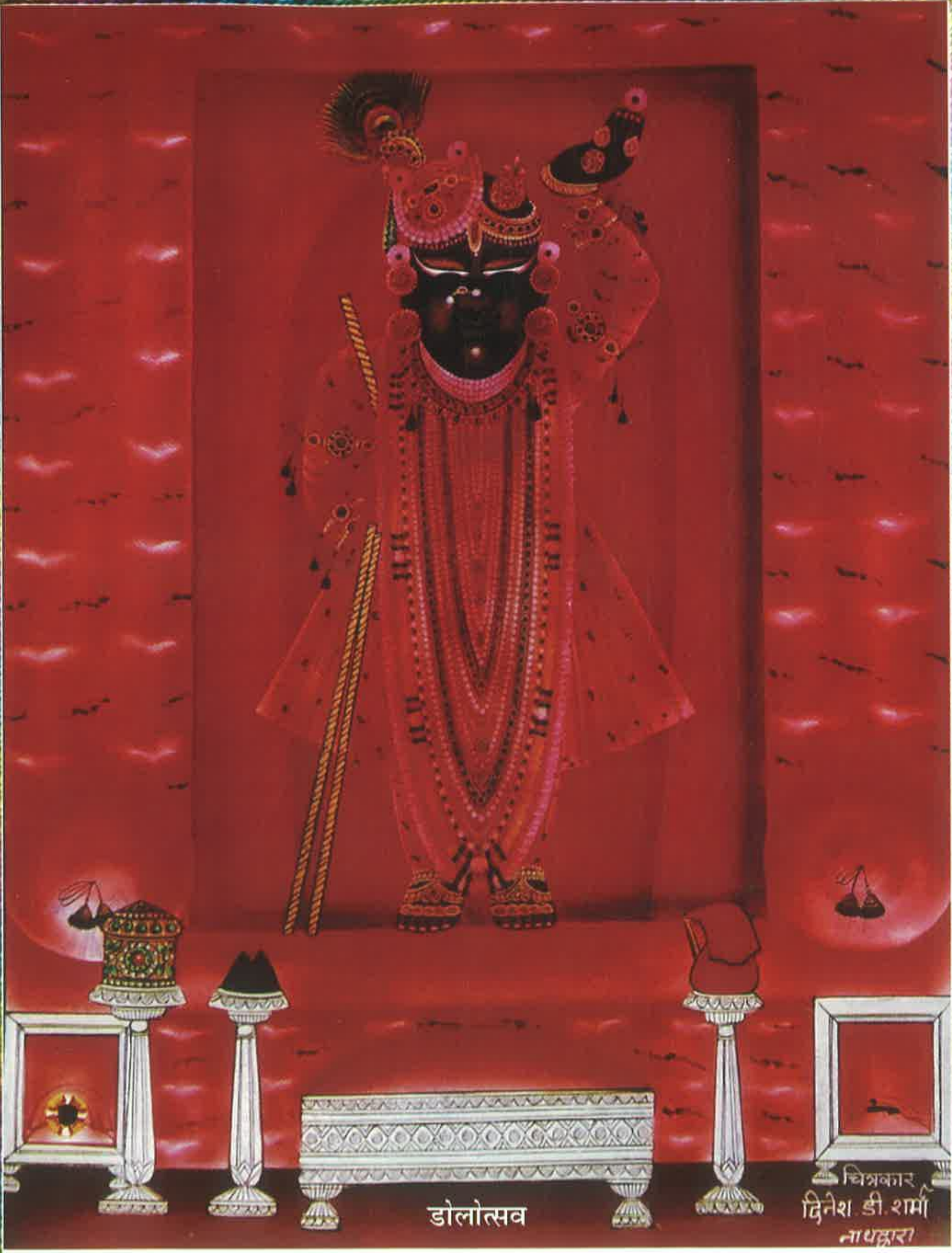
डोलोत्सव
चित्रकार
दिनेश डी. शर्मा
नाथद्वारा

श्रीमती सीतादेवी सत्यनारायण मोदानी, किशनगढ़ (अजमेर) का सपरिवार जय श्रीकृष्ण

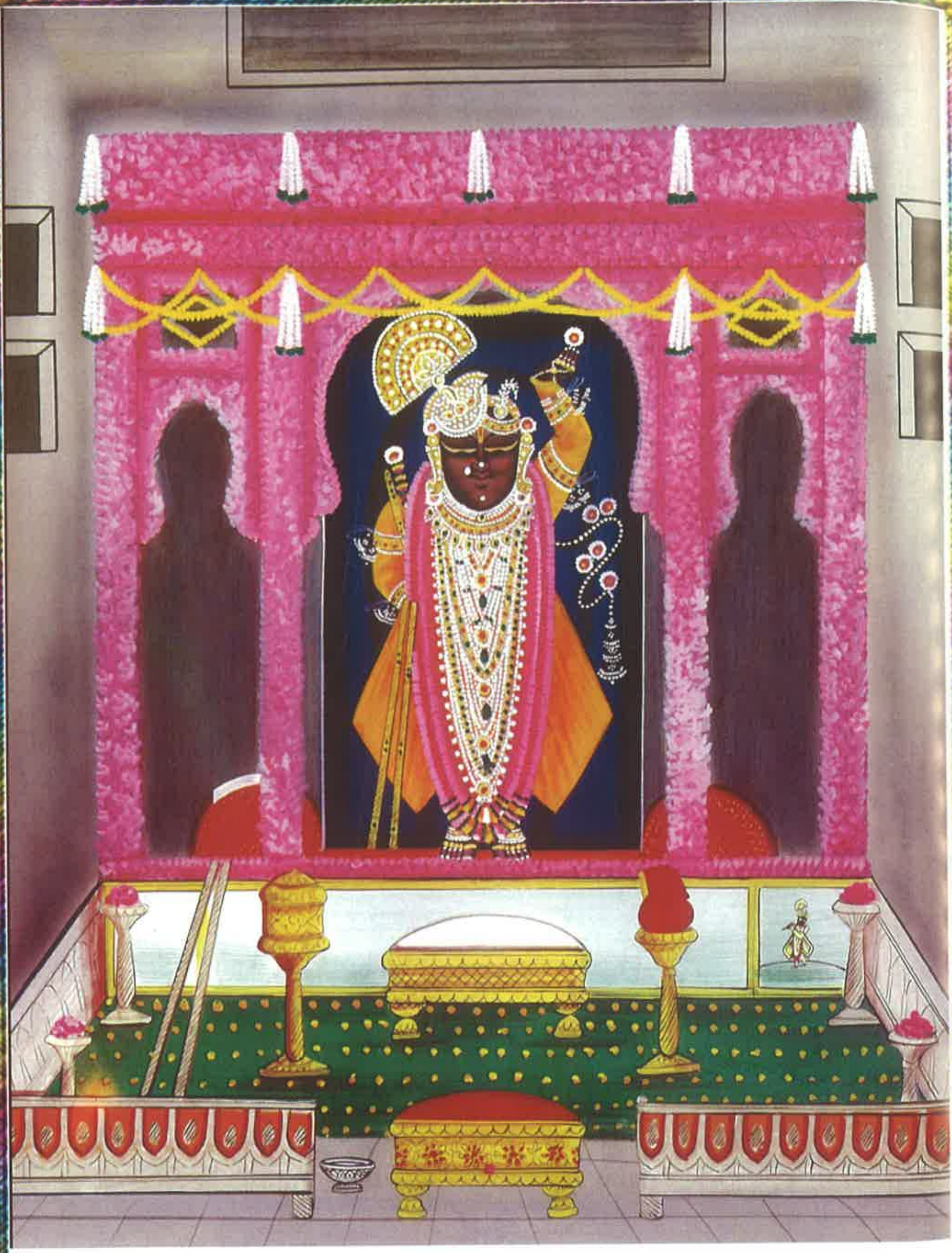

द्वितीया-पाट उत्सव

कुं. जितेन्द्रसिंह मेजा (भीलवाड़ा) R.T.O. उदयपुर का जय श्रीकृष्ण ।

की जाती है, राई-लॉन किया जाता है। श्रीमहाराजश्री को उपरणा ओढाया जाता है। दण्डवत करने के बाद आज्ञा लेकर श्रीनवनीत प्रियाजी को वापस साज-समाज सहित अपने मंदिर में पधराये जाते हैं। दर्शन बंद होने के बाद श्रीजी के श्रृंगार बड़े किये जाते हैं तथा मंदिर की धुलाई की जाती है। गुलाल निकाली जाती है तथा खीनखाप का गदल धराया जाता है। इस प्रकार उत्थापन से लेकर शयन तक की सारी सेवा की जाती है।

डोल उत्सव के कीर्तन

मंगला में राग-देवगंधार **रविजा तट कुंजन में गिरिधर खेलत फाग सुरंग।।** (यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े।)

राख-खट **हो हो होरी खेलन जैये, जाय खिलैये कुंवर कन्हैये।। अपने संग ते फूटि परे छिन, वाहि न्यारें न पत्यैये।।१।। बहुत गुलाल केसर रस लै, समाज खिलार तन थैयें।। अपने रंग में एसें बोरिये, स्याम रंग ढूढूयों नहिं पैये।।२।। एक तन एक मन होय सखीरी, बांह पकर वाको सीस नवैये।। भाज चले तो तारी दे हँस, सब व्रज मेरी वाहि लजैयै।।३।। फगुवा के मिस फेंट पकरकें, मृदु मुसिकाय वदन तन।। "जगन्नाथ" कविराय के प्रभुसों, हिल मिल कें रस सिंधु बढैयें।।४।।**

अभ्यंग समय राग-बिलावल **होरी खेलिये सुंदर लाल।।** (यह पूरा पद पेज ८६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-धनाश्री **होरी के रंगीले लाल गिरधर रंग मचायो।।** (यह पूरा पद पेज १५६ पर पढ़े।)

राजभोग आरती के समय राग-सारंग **डोल झूलावत लाल बिहारी, नाम लेलें बोले लालन प्यारी, हें दुलहा दुलहनि दुलारी, सुन्दर कर सुकुमारी।।** (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

श्रीनवनीत प्रियाजी पधारे तब राग-धनाश्री **हरिसंग खेलन जांय अरी चली बेगि छबीली।।ध्रु.।।** (यह पूरा पद पेज ८२ पर पढ़े।)

डोल में भोग आवे तब राग-बिलावल **नन्द सुबन व्रज भांवते फाग संग मिलि खेलो जू।।** (यह पूरा पद पेज ७२ पर पढ़े।)

राग-बिलावल **घोष नृपति सुत गाइयें जाके बसियें गाम।।** (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

डोल के प्रथम दर्शन में राग-देवगंधार मनमोहन अद्भुत डोल बनी।। (यह पूरा पद पेज १४८ पर पढ़े।)

आज माई झूलत हें नंदलाल।। (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

डोल माई झूलत नन्द कुमार।। वामभाग वृषभान नंदिनी, जोरी अति सुकुमार।।१।। श्रीयमुना तट सघनकुंज तर, वृन्दावनहि मंझार।। माधुरी कुंद लता अति प्रफुल्लित, उरझि परस्पर डार।।२।। बहत समीर मंद अति शीतल, अलि पिक करत पुकार।। झोटा देत हरख ललितादिक, इकटक रहत निहार।।३।। कुरबक, बकुल, पहोप नवलासी, होत परस्पर मार।। उडत अबीर गुलाल कुंमकुमा, देत भामरी गार।।४।। बाजत ताल मृदंग झांझ ढ़फ, रीझ देत उर हार।। ललिताजू अपने कर बीरी, पिय मुख देत संवार।।५।। हरख असीस देत गोपीजन, जोरी रहो अटार।। श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल परदज, "दास" निरख बलहार।।६।।

दूसरे भोग आवे तब राग-बिलावल गोपी हों नन्दराय घर मांगन फगुवा आई।। (यह पूरा पद पेज १२१ पर पढ़े।)

डोल के दूसरे दर्शन में राग-धनाश्री झुलत युग कमनीय किशोर सखी चहुं ओर झुलावत डोल।। (यह पूरा पद पेज १५६ पर पढ़े।)

तीसरा भोग आवे तब राग-सारंग तें मोहन को मन हर्यो, औ तो बिन हर्यों न जायरी प्यारी।।ध्रु.।। कुंज महल बैठे पिया, नव पल्लव तलप संवार।। बीच जुही बीच सेवती, बिच-बिच नवल निवार।।१।। तुव पथ बैठे निहार ही, कुंज कुटी के द्वार।। लोचन भरि भरि लेत हैं, सुंदर व्रज राजकुमार।।२।। अपने कर नख गुँथ हिं, विविध कुसुम की चोली।। तेरे उर पहराव हीं, चलो बेग उठ बोली।।३।। कबहुँक नयनन मुंद कें, करत वदन तुव ध्यान।। तन पुलकित भुज भेट हीं, करत स्वकीय धर पान।।४।। चंद देखि आनंद ही, तुम मुख की अनुहार।। यह छबि वाहि न पूज हीं, निरख कलंक विचार।।५।। यद्यपि सकल ब्रज सुंदरी, कबहूं न मन अरूझाय।। चातक जलधर बूँद ज्यों, भुव जल तृषा न जाय।।६।। पिय को प्रेम सखी मुख सुन्यों, तब ही चली उठ जाय।। "गोविंद" प्रभु पिय सों मिली, रहसि कंठ लपटाय।।७।।

डोल के तीसरे दर्शन में राग-सारंग अहो पिय लाल लडेंती को झूमका, सरस सुर गावत मिल व्रजबाल, अहो कल कोकिल कंठ रसाल।। (यह पूरा पद पेज १२७ पर पढ़े।)

राग-सारंग माधो चांचर खेल ही, खेलत री यमुना के तीर।।ध्रु.।। बिच-बिच गोपी बनी, बिच बिच री वे बने हें मुरारि।। मरकत मणि कंचन मणी माला री, जानों गुही संवारि।।१।। कुंकुम वरनी गोपिका, कैसोंरी घनस्याम शरीर।। नील पीत पट मंडिता, नाचत री वे प्रेम गंभीर।।२।। करतल ताल बजाव हीं, गावें री वे गीत रसाल।। मदन महोदै मन हरयो, लीला सागर गिरिधर लाल।।३।। किंकिणी नूपुर बाज ही, शब्द बरी कोलाहल केलि।। क्वणित वेणु मधि नायिका, लटकत लाल भुजा गल मेलि।।४।। एक जु पान खवाव हीं, एक जु मांगे देहु उगार।। एक जु मुख चुंबन करे, एक जो बीने टूटे हार।।५।। चंद भूल कौतुक रह्यो, हरणी री वे मोहे नाद।। थाक्यो रथ केसें चले, ब्रज युवतिन री वह लाये बाद।।६।। चढ़ विमान सब देवता, बरखन री वे लागे फूल।। जय जय जय यदुं-नंदना, रास रच्यो रति नायक भूल।।७।। जो प्रसाद उनकों भयो हरि, परिरंभन बाहु पसारि।। "परमानंद" प्रभु श्रीपति, पुण्य पुंज कृत गोकुल नारि।।८।।

राग-सारंग सुरंगी होरी खेले सांवरो व्रज वृंदावन माझ।। (यह पूरा पद पेज १३३ पर पढ़े।)

डोल के चौथे दर्शन में राग-जेतश्री शोभा सकल सिरोमणी दंपति झुलें डोल।। (यह पूरा पद पेज १५७ पर पढ़े।)

राग-सारंग हरी को ड़ोल देख वृजवासी फूले।। (यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

राग-सारंग डोल झुलावत लाल बिहारी, नाम लेलें बोलें लालन प्यारी, हें दुलहा दुलहेनि दुलारी, सुंदर वरस कुमारी।। (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

आरती के समय राग-सारंग डोल झूलत हैं प्यारो लाल बिहारी, बिहारिनी (यह पूरा पद पेज १५२ पर पढ़े।)

श्रीजी के पास पधारे फिर आरती होवे तब राग-नट खेल फाग फूल बैठे, झूलत डोल डहडहें, नागर नयन कमल।। बहुत दिनन के भये हें श्रमित, सुख सखीन संग लीने, राधाकृष्ण रस रास जवल।।१।। गावत राग रागिणी सों मिल, कंठ सरस कोकिलाहू तें अमल।। "कल्याण" के प्रभु गिरिधर रीझ झोटा देत, हीये हरख गोरे गात, छूटे छबि सों धवल।।२।।

बाद में गोस्वामी बालको को उपरणा ओढ़ावे तब राग-बसन्त खेलत बसन्त वर विट्ठलेश।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े।)

श्रीनवनीत लाल वापस अपने मंदिर पधारें तब राग-धनाश्री राधाकुंवर रसिक सखी अनुरागे पागे, रससों सब नंदद्वार पै आये।। वार आरती विविध भात सों, जसुमति करत बधाये।।१।। न्हान चले यमुना किलकत सब, शोभा बरनी न जाई।। देखत ही अमरेस थकित भये, पहुंपन वृष्टि कराई।।२।। खेली फाग अनुराग सिंधु बढ़्यो, ब्रजजन संग लगाई।। सुन्दर वदन कमल ऊपर, "रघुवीर" वारनें जाई।।३।।

श्रीलालन अपने मंदिर पहुँचे तब राग-बसन्त खेलि फाग अनुराग भरे दोऊ, हँसति चले पोढन पीय प्यारी।। नवल कुंज नव धाम मनोहर, नवल बाल नव केलीर बिहारी।।१।। नवल सहचरी गान करति नव, नवल ताल बीना कर धारी।। पौढ़े नवल सेज नव "ब्रजपति", चांपत चरन नव भानु कुमारी।।२।।

भोग संध्या में राग-नट खेल फाग फूल बैठे झूलत डोल, डहडहे नागर नयन कमल।। (यह पूरा पद पेज १६७ पर पढ़े।)

शयन में राग-कल्याण डोल चन्दन को झूलत हलधर बीर।। (यह पूरा पद पेज १५३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग चले हों भांवतें रस ऐन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

चैत्र कृष्णा २

द्वितिया पाट का उत्सव - देहरी बन्दनमाल तथा अभ्यंगस्नान।

श्रृंगार - कुल्हे घेरा को।

वस्त्र - सोनेरी जरी के शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर कुल्हे हीरा जड़े हुई पर सोनेरी बादलाका घेरा। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम रंग के तथा पिछवाई सोनेरी जरी की।

आभरण - नित्यानुसार भारी श्रृंगार।

विशेष - आज श्रीजी राजभोग से संध्या तक चैत्री गुलाब की मंडली में बिराजे। निकुंज की लीला चल रही है। कन्दरा पर हीराका जड़ाऊ चोखटा।

मंगला में राग-बिलावल प्यारी के महेल तें चले उठि भोर।। सखि वृंद अवलोक अग्रस्थित, ढकत नील कंचुकी पीत पट छोर।।१।। राधा चरित्र विलोक परस्पर, ते जु हास इत उत मुख मोर।। "गोविन्द प्रभु" ले चले दगा दे, नागर नवल सभा चित चोर।।२।।

अभ्यंग समय राग-देवगंधार कर मोदक माखन मिश्री ले, कुंवर के संग डोलत नन्दरानी।। मिस कर पकर न्हवायो चाहत, बोलत मधुरी बानी।।१।। कनक पटा आंगन में राख्यो, सीत उष्ण धर्यो पानी।। कनक कटोरा सोंधों उबटना, चंदन कांकसी आनी।।२।। यों लाई मज्जन हित जननी, चित चतुराई ठानी।। मनमें मतो करत उठ भाजें, दुखित केस अरूझानी।।३।। निरख नयन भर देखत रानी, शोभा कहत बानी।। गात सचिक्कण यों राजत हैं, ज्यौं घन तडित लपटानी।।४।। आओ मनमोहन मेरे ढिंग, बात कहुं एक छानी।। खिलोना एक तात जो लाये, बल अज हू नहिं जानी।।५।। राज कुंवर अध न्हातो भाजो, ताकी कहुं कहानी।। बेनी न बाढ़ी रही तनक सी, दुलहनी देख हंसानी।।६।। बैठे आय न्हान पट पहरे, आनंद मन में आनी।। "विष्णुदास" गिरिधरन सयाने, मात कही सोई मानी।।७।।

श्रृंगार में राग-बिलावल सुभग श्रृंगार निरख मोहन को, ले दर्पण कर पिय हिं दिखावे।। आपन नैक निहारिये बल जाऊ, आज की छबि कहु कहत न आवें।।१।। भूषण वसन रहे फबि ठाईं-ठाईं अंग-अंग छबि चित हिं चुरावें।। रोम रोम प्रफुल्लित व्रजसुंदरि, फूलन रचि रचि माल बनावे।।२।। अंचल वार करत न्यौंछावर, तन मन अति अभिलाष बढ़ावें।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधर को स्वरूप सुधा, पिवत नयन पुट तृप्ति न पावें।।३।।

राजभोग आवे तब राग-सारंग अरी छकहारी चार-पांच आवत, मध्य व्रजराज लला की।। बहु प्रकार व्यंजन परिपूरण, पठवण बड़े डला की।।१।। ठठक-ठठक टेरत श्री गोपालें, चहुँधा दृष्टि करें।। बाजत वेणु ध्वनि सुन, चली चपल गत परासोली के परें।।२।। “परमानंद” प्रभु प्रेम मुदित मन, टेर लई कर ऊँची बाँह।। हँस-हँस कस-कस फेंटा कटिन सों, बांटत छाक वन ढाकन माँह।।३।।

राग-सारंग आगे आउरी छकहारी।। जब तुम टेरे तब मैं बोली, सुनी न टेर तिहारी।।१।। मैया छाक सवेरे पठई, तूँ कित रही अवारी।। अहो गोपाल गैल हो भूली, मधुरे बोलन पर वारी।।२।। गोवर्धन उद्धरण धीर सों, प्रीति बढ़ी अति भारी।। “जनभगवान” मगन भई ग्वालिनी, तनकी दशा विसारी।।३।।

राग-सारंग आई छाक बुलाये स्याम।। यह सुन सखा सबे जुर आये, सुबल सुबाहु श्रीदाम।।१।। कमल पत्र दोना पलास के, सबके आगे धर परोसत जात।। ग्वाल मंडली मध्य स्याम घन, सब मिल रूचिकर खात।।२।। ऐसी भूख माँझ यह भोजन, पठाय दिये कर यशोदा मात।। “सूरस्याम” अबलों नहीं जेंवत ग्वालिन करतें ले-ले खात।।३।।

राग-सारंग उसीर महल में, बिराजे मंडल मध्य मोहन छाक खात।। ओदन रोटी जंघा धरे लाल, साक-पाक-फल रसाल, सिला पर गोरस के पात।।१।। चहुँ और मेघ, ज्यों छूटत फूँहारें, फूही कबहुँ सुबल, गोद हँसिं ढ़र जात।। “नंददास” प्रभु स्याम ढाक तर, आपुन हँसत-हँसावत ग्वालन, सरस बनावत बात।।३।।

राग-सारंग (कुल्हें का) बलबल आज की बानिक लाल।। कुसुंभी पाग पीत कुल्हे, भरत कुसुम गुलाल।।१।। विश्वमोहन नकवेसर को, अरूण तिलक भाल।। सुंदर मुख कमल, लपटावत ही मधुप जाल।।२।। वरणी पीत विथुरत बंद, सुभग उरसि विशाल।। “गोविंद” प्रभु के पदनख परसत, तरूण तुलसी माल।।३।।

राजभोग में राग-सारंग लाल नेंक देखिये भवन हमारों।। दुतीयापाट सिंहासन बैठे, अविचल राज तिहारो।।१।। सास हमारी खिरक सिधारी, पिय बन गयो सवारो।। आस-पास घर कोऊ नांही हे, यह एकांत हे न्यारो।।२।। ओट्यो दूध सद्य धोरी को, लेहु स्याम घन पीजें।। “परमानंद दास” को ठाकुर, कह्यों हमारो कीजें।।३।।

फूल मंडली का पद राग-सारंग बैठे लाल फूलन की चौखण्डी।। चंपक बकुल गुलाब निवारो, रायवेली श्रीखंडी।।१।। जाई जुई केवरो कुंजो, कनक कणेर सुरंगी।। “चतुर्भुजप्रभु” गिरिधरजु की बानिक, दिन दिन नव नवरंगी।।२।।

भोग में राग-नट आज बन व्रजराज कुँवर बैठे सिंहद्वार निकस, अंग-अंग नव नव छबि बरनी न जाई।। अलक तिलक नासिका, जो कपोल लोल कुंडल छबि देखत धावत कोटि-कोटि रवि अरून अधर, दसनन में झांई।। लटपटी पाग बिच लालकें, पीत कुल्हे भरी गुलाब, लटकत सिर सेहरों बन्यों, सोभा अधिकाई।। “गोविन्दप्रभु” की बानिक, देखत विथकित सब व्रज जन रूप रास गिरवरधर, सुंदर मन राई।।२।।

संध्या में राग-कान्हरो राखी हो अलक बीच चंपकली गनगनी।। जगमगात हीरा लाल, कुलह पर पाग अति बनी।।१।। सुभग नैन तरून मदमाते, मुसकाते अन अनी।। “गोविन्द प्रभु” ब्रजराज कुँवर, धन धन हो धन धनी।।२।।

ब्यारू के पद राग-ईमन आज भटु देखे उसीर महलमें, ब्यारू करत गोपाल।। ताती दार भात घृत सान्यो, जेंवत जोरी रसाल।।१।। मठरी जलेबी गुंजा बाबर घेवर, लाई सब व्रज वधू थाल।। “कुंभनदास” प्रभु गोवर्द्धनधर, रस भरे गिरिधरलाल।।२।।

शयन भोग आवे तब (ब्यारू के पद) राग-ईमन अहो बल जिय अधिक डरात।। गोधन किन ले आवो अबे, कित पारत हो रात।।१।। एक ही थार में जेंवत दोऊ, यशुमति करत वियार।। सुन्दर स्याम देत हुंकारी, जननी प्रीत विचार।।२।। बालक कान्ह निपट भोरे है, सिखवत रही हो बात।। तुम अग्रज वसुदेव के नंदन, जानत हो सब घात।।३।।

राग-ईमन आज अटारी पर उसीर महलमें, रचे दम्पति ब्यारू करत।। खोवा मलाई बासोंधी और पय, हँस-हँस घूँट भरत।।१।। चहुँ और खसखानों छूटत फुहारे फुही, बिंजना बियार सिरी मनको हरत।। “नंददास” प्रभु प्रिया प्रितम परस्पर हँस-हँस कोर लेत, सहचरी कन कडवा बीरासों भरत।।२।।

शयन में राग-ईमन कनक कुसुम अति सोभित श्रवननि।। (यह पूरा पद पेज २२ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग कुंज में पोढे रसिक पिय-प्यारी।। सखी मुदित अति चित्र विचित्र, पहिरे-विविध रंग सारी।।१।। हँसत परस्पर बात रस बरखत, आनंद-उमग्यों भारी।। सुरति रंगके रसमें भीजे, “नंददास” बलिहारी।।२।।

चैत्र कृष्णा ३

श्रृंगार - पागचीरा वाली गोल चन्द्रिका का।

वस्त्र - हरि जरी के रूपेरी कोर के शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग हरि जरी की चीरावाली पर रूपेरी जरी के कामकी गोल चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र श्याम रंग के तथा पिछवाई हरी जरी की रूपेरी कोरकी।

आभरण - नित्यानुसार माणक व सोना के।

मंगला में राग-भैरव भोर भाँवतो गिरिधर देखौं।। विमल कपोल, लोल लोचन छबि, निरखि कें नैन, सुफल करि लेखौं।।१।। नख सिख रूप अनूप बिराजत, अंग अंग मन्मथ को हि बिसेखौं।। "चत्रभुज" प्रभु रस रासि कों, बड़े भाग-बल इक टक पेखौं।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल लालन जहीं जाऊँ, जाके रस लंपट अति।। आलस नैन देखियत रसमसे, प्रगट करत प्यारी की रति।।१।। अधर दसन छत बसन पीक सह, अरू कपोल श्रम बिंदु देखियति।। नख लेखन तन लखी स्याम पर, जय-पताक-जीत्यो रति पति।।२।। किवत विवाद तज हु पिय हम सों, जैसे तन स्याम तैसेई मन हो अति।। "गोविन्द" प्रभु पिय पाग सँवारहुं, गिरत कुसम सिर मालति।।३।।

राजभोग राग-सारंग बैठे हरि राधा संग, कुंजभवन अपने रंग, कर मुरली अधर धरे सारंग मुख गाई।। मोहन अति ही सुजान, परम चतुर गुन निधान, जान बूझ एक तान, चूक के बजाई।।१।। प्यारी जब गह्यो बीन, सकल कला-गुन-प्रवीन, अति नवीन रूप सहित वही तान सुनाई।। "वल्लभ" गिरिधरन लाल, रीझ दई अंक माल, कहत भलें-भलें लाल, सुंदर सुखदाई।।२।।

राग-सारंग बैठे लाल फूलन की चौखंडी।। (यह पूरा पद पेज १७१ पर पढ़े।)

राग-सारंग कसुम गुलाब महल में बैठे, श्रीगिरिधारी स्यामा-प्यारी।। जारी भाँत विचित्र ता छबि, झुमक बनी तिबारी।।१।। बोहो रंग कुसुम भूषन दंपति, पहिरावत चहुँ दिस ब्रज नारी।। वृंदावन खग-मृग अति सोहे, "ब्रजाधीस" प्रभु की बलिहारी।।२।।

राग-नूर सारंग चलो किन देखन कुंज कुटि।। मदन गोपाल जहाँ मध्य नायक, मनमथ फौज लूटी।।१।। सुरत समर में लरत सखी की, मुक्त माल टूटी।। उरज ते जु कंचुकि चुरकट भई, कटि-पट ग्रंथि छुटी।।२।। रसिक सिरोमनि सूर नंदसुत, दीनी अधर घुटी।। “परमानंद” गोविंद ग्वालिन की, नीकी जोट जूटी।।३।।

भोग में राग-पूर्वि गैया गई दूर टेरो जू कहान।। (यह पूरा पद पेज ३८ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी हरी मारग जोवत भई साँझ।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

शयन भोग (ब्यारू के पद) राग-ईमन लाडिले बोलत है तोहि मैया।। संज्या समें गोधन संग आवत, चुंबन लेकर गोद बेठैया।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई, दूधभात अरू दार बनैया।। “परमानन्द” प्रभु करत ब्यारू, जसुमति देख बहुत सुख पैया।।२।।

शयन में राग-ईमन मथुरा नगर की डगर में, चल्यो जात, पायो है हरि हीरा।। सुन री भटू, लटू भयो डोलत, गोकुल गाम को अहीरा।।१।। नृत्यत आवत बेनु बजावत, बंसीवट जमुना के तीरा।। “परमानंददास” को ठाकुर, हंस दीनो मुख बीरा।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग कुंज में पौढ़े रसिक पिय प्यारी।। (यह पूरा पद पेज १७१ पर पढ़े।)

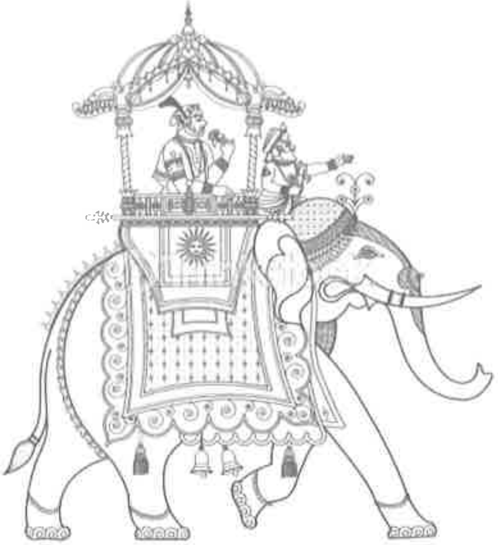

चैत्र कृष्णा ४

श्रृंगार - पाग कतरा का।

वस्त्र - केशरिया जरीके रूपेरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक छोड़वाली पाग पर सोनेरी जरी के कामका कतरा। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम तथा पिछवाई पीली धूप-छाव की।

आभरण - पिरोजा मोती के तथा सोने के।

विशेष - लीली निःकुंज की तथा चैत्री गुलाब का सिरा आरोगाया जाता है।

मंगला में राग-विभास **गोवर्धन-गिरि सघन कंदरा, रैन निवास कियो पिय प्यारी।। उठ चले भोर सुरत रंग भीने, नंद नंदन वृषभान दुलारी।।१।। इत विगलित कचमाल मरगजी, अटपटे भूषन रगमगी सारी।। उत हि अधर मसि, पाग रही धंसि, दुहु दिस छबि बाढ़ी अति भारी।।२।। घूमत आवत रति रन जीते, करिनी संग गज गिरिवर धारी।। "चतुर्भुजदास" निरख दंपति सुख, तन-मन-धन कीनो बलिहारी।।३।।**

श्रृंगार में राग-बिलावल **बाल-दसा गोपाल की सब काहु प्यारी।। लै लै गोद खिलाव हिं, जसुमति महतारी।।१।। पीत झगुलिया तन सोहै, पग नूपुर बाजे।। छुद्र घंटिका कटि बनी, कर कंकन राजैं।।२।। मुरि मुरि नाचै मोर ज्यो, सुर-नर मोहैं।। "कृष्णदास" प्रभु नंद के, आँगन-मधि सोहैं।।३।।**

राजभोग आवे तब राग-सारंग **सुबल गिरिधारी चढ़ टेरत।। आवो बेगि चतुर छकहारि, गिरिधर पेंडो हेरत।।१।। भई अवेर भूख जब लागी, तब हि उपरैना फेरत।। "कुंभनदास" औसर पर पहुँची, रस में दान निवेरत।।२।।**

राग-सारंग **मोहन जेंवत छाक सलोनी।। सखनि सहित हुलसे दोऊ भैया, झपटत कर लै दोहनी।।१।। आजे बिंजन बने कौन के, चाहत हरि की कोहनी।। "परमानन्द" प्रभु जेंवत रूचि सों, पहिलें करि लैं बोहनी।।२।।**

राग-सारंग **गिरि पर चढ़ि गिरिवरधर टेरें।। अहो भैया सुबल श्रीदामा! लावहु गाय खिरक के नेरे।।१।। भई अवेर जो छाक खाये, कछुक धैया पियें सवेरें।। "परमानन्द" प्रभु बैठ सिलन पर, भोजन करत ग्वाल रहे घेरें।।२।।**

राग-सारंग हँसत परस्पर करत किलोल।। व्यंजन सबै सराहे माधव, मीठे कमलवदन के बोल।।१।। तोरि पलास पत्र बहुतेरे, पनवारौ जोयों बिस्तार।। चहुँ दिसि बैठी ग्वाल मंडली, जेवन लागे नंदकुमार।।२।। कौतुक देखहिं सबन देवता, यज्ञ-पुरूष है नीके रंग।। सेष प्रसाद अबहि हम पायो, “परमानन्ददास” हों संग।।३।।

राजभोग में राग-सारंग नयनन लागी हों चटपटी।। मदन मोहन पिय निकसे द्वारे है, सोहत पाग लटपटी।।१।। दूर जाय फिर चितये री मों तन, नैन कमल मनोहर भृकुटि।। “गोविन्द” प्रभु पिय चलत ललित गति, कछुक सखा अपनी गुटी।।२।।

भोग में राग-नट तें री मोहनको मन हर लियो।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी टेडी हेरी आली टेड़ी अलक, लर लटकत अति लसत।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े।)

शयन भोग आवता (ब्यारू का पद) राग-कान्हरो सैन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-केदारों/अडानों कदम बन बिथन करत बिहार।। अति रसभरे मदन मोहन पिय, तोर्यों पिया उर हार।।१।। कनक भूमि बिथुरे गजमोती, कुंज कुटी के द्वार।। “गोविन्द” प्रभु श्रीहस्त कर पोवत, सुंदर ब्रजराज कुमार।।२।।

मान में राग-केदार रूप रस पुंज, वरणुं कहा चातुरी।। मान मेरो कह्यों, चतुर चंद्रावली निरख मुख कमल, उडुराज संकात री।।१।। तिलक मृगमद, द्विरद की सी चाल देख, रीझे लाल मन्द मुसकात री।। “सूर” नग धर केलि, अंस पर भुज मेलि, मुग्ध पद ठेलि, दे मदन सिर लात री।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पौढिये लाल लाडली संग ले।। (यह पूरा पद पेज ३० पर पढ़े।)

चैत्र कृष्णा ५

(रंग पंचमी)

श्रृंगार - मुकुट कांछनी का।

वस्त्र - लाल जरीके रूपेरी कोर के शुथन तथा कटि में कांछनी, श्रीअंग में चोली श्याम साटन की तथा मोटो पिताम्बर लाल सुतका रूपेरी कोरका। श्रीमस्तक पर पाग पर सोनेरी जरी का मुकुट। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई चित्राम में फागणी सवारी की। शयन में फूलके आभरण।

आभरण - नित्यानुसार।

मंगला में राग-बिलावल राधाके रस बस भये लाल, रंग भीने हों।। कोटि काम लज्जित भये, रंग भीने हो।।१।। रतनारे नैन पीय पांय परे, रंगभीने हो।।२।। पाग सिथिल, जावक लग्यो, रंग भीने हो।। भाल तिलक नस में पग्यो, रंग भीने हो।।३।। लटकि रही मानो कनक बेली, रंग भीने हो।। नव दुल्हनि संग करत केलि, रंग भीने हो।।४।। मरकत-मनी कंचन-मनी, रंग भीने हो।। अंग अंग सोभा घनी, रंग भीने हो।।५।। रिझ देत पिय को तंबोल, रंग भीने हो।। पीक-छाप सोभित कपोल, रंग भीने हो।।६।। उमगी सिंधु सरिता बढी, रंग भीने हो।। श्रम जल केलि रंग चढी, रंग भीने हो।।७।। यह सुख सोभा कहि न जाय, रंग भीने हो।। निरख निरख लोचन सिराय, रंग भीने हो।।८।। "श्रीविट्ठल" पदरज प्रताप, रंग भीने हो।। निज दासन के हरत ताप, रंग भीने हो।।९।।

श्रृंगार में राग-रामकली देखो देखोरी नागर नट, निर्तत कालिंदि तट, गोपिन के मध्य राजे, मुकुट लटक।। काछिनी किंकिनी कटि, पीतांबर की चटक, कुंडल किरन रवि, रथ की अटक।।१।। तत्-थेई ता-ता थेई, सब्द सकल घट उरप तिरप गति, पगकी पटक।। रास में श्री राधे राधे, मुरली में एक रट, "नंददास" गावे तहाँ, निपट निकट।।२।।

राजभोग आवता राग-सारंग छाक लिये सिर श्याम बुलावत।। ढूँढत फिरत ग्वालिनी हरिकों, कोऊ भेद नहीं पावत।।१।। टेर सुनत काहू की श्रवणन, नित्य ही तुरत उठ धावत।। पावत नहीं स्याम बलराम हिं, व्याकुल है पछितावत।।२।। वृंदावन फिर-फिर देखत हैं, बोल उठे तहाँ ग्वाल।। "सूरस्याम" बलराम यहाँ हो, छाक लेहों किन लाल।।३।।

राग-सारंग जोरत छाक प्रेम सों मैया।। ग्वालन बोल लिये अध जेंवत, उठ दौरे दौऊ मैया।।१।। तब हीं ते नहिं भोजन कीयो, चाहत दियों पठाय।। भूखे भये आज दौऊ भैया, आपही बोल मंगाय।।२।। सद्य माखन साज्यो दधि मिठो, मधु-मेवा-पकवान।। "सूरस्याम" को छाक पठावत, कहत ग्वालन सों जान।।३।।

राग-सारंग छाक ले आई ग्वालन गोरी।। यशुमति सब पकवान छाब भर, पठई टेरत भोरी।।१।। जबही आन अरोगत प्यारो, गोरस कनक कमोरी।। "ब्रजाधिश" प्रभु श्याम ढाक तर, भली बनी यह जोरी।।२।।

राग-सारंग डला भर हों लाल कैसेक उठावें, पठावों ग्वाल छाक ले आवें।। गिन देखो गाँठन जानों कौन-कौन मेवा, सुन सुरंग हा हा कर पायन पर कें पठाने।।१।। आप ब्रजरानी न विचारें मेरे डला पर, थार ओदन बेला न समायो।। "नंददास" प्रेमी स्याम परस्पर कही बात, कान्ह तें जु काँवर भर किंकर बुलायो।।

राजभोग में राग-सारंग कुंजभवन तें निकसे माधो राधा चले मेलि गल बांह।। तब प्यारी अरसाय पिय सों मंद मद, स्वेद कन बदन निहारत, करत मुकट की छाँह।।१।। श्रमित जान पट पीत छोर सों, पवन दुरावे हो ब्रज वधू बन माँह।। "जगन्नाथ कविराय" की प्यारी, देखत नयन सिराँह।।२।।

भोग में राग-मालव/गौरी जाऊँगी वृन्दावन भेटुंगी गोपाल।। देखोंगी नैन भर, श्याम तामाल।।१।। कालिंदी तट चारत धेनु।। संग सखा बाजत मृदु बेनु।।२।। मोर मुकुट गुंजा अवतंस।। दसन बसन कूजित कलहंस।।३।। "परमानन्द" प्रभु गोवर्धन पाल।। लीला सागर मदनगोपाल।।४।।

संध्या में राग-कान्हरो बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु, श्याम सुंदर कमलनयन, बाँकी भ्रौंह ललित भाल, घुँघरवारी अलकें।। पीत बसन मोती माल, हिये पदक कंठमाल हँसत-बोलत-गावत मंडल, श्रवन कुंडल झलके।।१।। कर पद भूषन अनूप, कोटि मदन-मोहन रूप अद्भूत बन चंद देख, गोपी भूली पलके।। कहि "भगवानहित रामराय" प्रभु, ठाढे रासमंडल में, राधासो बाँह जोरी, किये हिये प्रेम ललके।।२।।

शयन भोग आवता (ब्यारू के पद) राग-कान्हरौ ब्यारू करत है घनश्याम।। मधु-मेवा-पकवान-मिठाई-पिस्ता, दाख-बदाम।।१।। दूध-भात-खौवा बासोंधी ले आई ब्रजवाम।। "आसकरण" प्रभु मोहननागर अंग-अंग अभिराम।।२।।

शयन में राग-कान्हरौ रसिक रसभरे हो नृत्यत रास रंगा।। सुलप संच गति लेत ग्रग्र तत तत, थेई थेई बाजत मृदंगा।।१।। ताल झाँझ किन्नरी कातर भेद, तैसीए उठत धूनि सरस उपंगा।। "गोविन्द" प्रभु के रस माती, जुवती-यूथ सिर ग्रथित मोतिन मंगा।।२।।

मान में राग-केदार राधिका आज आनन्द में डोले।। साँवरे चंद गोविंद के रस भरी, दूसरी कोकिला मधुर स्वर बोले।।१।। पहरे तन नील पट कनक हारावली, हाथ ले आरसी रूप को तोलें।। कहत "श्रीभट्ट" ब्रजनारी नागर बनी, कृष्ण के सील की ग्रन्थिका खोलें।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पौढ़े प्रेम के पर्यंक।। सुरत रस में मगन दोऊ, लेत भर-भर अंक।।१।। कोक कला प्रवीन बिहरत, उठत भाव तरंग।। "कृष्णदास" प्रभु गोवर्धनधर, जीत मुदित अनंग।।२।।

चैत्र कृष्णा ६

श्रृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - गुलाबी जरी के रूपेरी कोरके, शुथन तथा वागो घेरदार, कटि में पटको। श्रीमस्तक पर पाग पर जरीके कामका कतरा। ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई गुलाबी जरी नीचे तास चोखाना की सोनेरी कोरकी। शयन में आज श्रीजी को चेती गुलाब की माला जी धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार।

मंगला में राग-विभास मरगजी और कुन्दमाल, लोचन अलसात लाल, डगमगात चरण धरणी, धरत रेन जागे।। भालतें खस मोरमुकुट, भृकुटी तट आयो निकट, सिथिल चपल चंद्रिका सों, बाँधी पाट लागे।।१।। अतसि कुसुम तन सुभाँत, कहूँ-कहूँ कुंकुम की कांति, मदन नृपति पीक छाप, युग कपोलन लागे।। “छीतस्वामी” गिरिवरधर, सौरभ रसमत्त मधुप, संगम गुणगान करत, फिरत आगे-आगे।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल कमल मुख देखत तृप्ति न होय।। इहि सुख कहा दुहागिन जानै, रही निसा भर सोय।।१।। ज्यों चकोर चाहत उडुराजहिं, चंद्र-बदन रहि जोय।। नैक अँकोर देति नहिं राधे, चाहति पियहि निचोय।।२।। उन तो अपुनो सर्वस्व दीनों, एक प्रान वपु दोय।। भजन भेद न्यारौ “परमानन्द”, जानत बिरला कोय।।३।।

राजभोग आवता (छाक के पद) राग-सारंग तुमको टेर टेर मैं हारी।। कहाँ जो रहे अबलों मनमोहन, लेहो न छाक तुम्हारी।।१।। भूल परी आवत मारग में, क्यों हुँ न पेंडो पायो।। बूझत-बूझत यहाँ लों आई, तब तुम वेणु बजायो।।२।। देखो मेरे अंग को पसीना, उर को अंचल भीनों।। “परमानन्द” प्रभु प्रीति जानकें, धाय आलिंगन कीनों।।३।।

राग-सारंग तुमको मैया छाक पठाई।। टेरत फिरत ग्वाल नंदलाल, कित तुम दोऊ भाई।।१।। नई-नई भाँत नये डबरन में, अपने सिर धर आई।। नेक कहेत सुनि हो श्रवणन-सुख, पावत ताहि ठौर बुलाई।।२।। बानी समझ हँस सुख पावत, ताही ठौर हि धाई।। “श्रीविट्ठल गिरिधरन” लाल कों, अद्भुत रूचि उपजाई।।३।।

राग-सारंग पीत उपरना वारे ढोटा, कब हूँ की टेरत ग्वालनी।। छाक बनाय ले आई विविध विध, कालिंदिनी तीर उपहरनी।।१।। कहा लेओगे ऐसी गाय चरावें में, जाय सभालो क्यों न ऐसी छकहारनी।। “रसिक-प्रीतम” तुम रूप विमोही, कुंजन कुंज बिहारनी।।२।।

राग-सारंग बाँट-बाँट सबहिन कों देत।। ऐसे ग्वाल हरि हिं जो भावत, शेष रहत सोई आपन लेत।।१।। आछो दूध सद्य धोरी को, ओंट जमायो अपने हाथ।। हँडिया मूँद यशोदा मैया, तुमको दें पठई ब्रजनाथ।।२।। आनंद मगन फिरत अपने रंग, वृंदावन कालिंदी तीर।। “परमानंददास” झूठो ले, बाँह पसार दियो बलवीर।।३।।

राजभोग में राग-नूर सारंग चलो किन देखन कुंज कुटि।। (यह पूरा पद पेज १७३ पर पढ़े।)

भोग में राग-पूर्वी पाछें ललिता आगें श्यामा-प्यारी, ता आगे पिय मारग में, फूल बिछावत जात।। कठीन कली बीन करत न्यारी न्यारी, प्यारी के चरण कोमल जान, सकुचत गढ़वे हू डरात।।१।। अरूझी लता अपने कर निवारत, ऊँचे ले डारत द्रुम पल्लव पात।। “सूरदास” मदनमोहन पिय की, आधीनताई देखत मेरे नयन सिरात।।२।।

संध्या में राग-गौरी कदम चढ़ कान बुलावत गैयाँ।। (यह पूरा पद पेज ३८ पर पढ़े।)

शयन भोग (ब्यारु का पद) राग-बिहाग बियारू करत है बलवीर।। आस-पास सब सखा मंडली सुबल सखा मति धीर।।१।। मधु-मेवा-पकवान-मिठाई ओट सिरायो क्षीर।। हँसत परस्पर खात खवावत झपट लेत कर चीर।।२।। यह सुख निरख-निरख नंदरानी प्रफुल्लित अधिक शरीर।। “परमानंददास” को ठाकुर भक्त हेत अवतीर।।३।।

शयन दर्शन में राग-ईमन ले राधे मोहन दे पठई, अपने मुख की सुन्दर बीरी।। सुनो हो संदेसो प्रान पियारे को कित सँकुचत, आवो किन नीरी।।१।। घूंघट खोल नयन भर देखूँ, वहाँ चलो प्रीतम की चेरी।। “कुंभनदास” प्रभु गोवर्धनधर मिल, आँको छतियाँ कर सियरी।।२।।

राग-ईमन पहिरे री माल गुलाब सुरंग की, ले राधे मोहन तोही दीनी।। अबही उरतें उतार लई है, अपने अंगराग रस भीनी।।१।। मान निहार रे निहारी नैन भर, हँसि गही हाथ सखीपे लीनी।। “सूर” कहे जिन करो हो सुंदरी, गिरिधर छेल तोपें बस कीनी।।२।।

मान में राग-ईमन मनावत हारि परी री माई।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग कुसुम सेज पिय प्यारी पौढे, करत हैं रस बतियां।। हँसत परस्पर आनंद हुलसत, लटक-लटक लपटावत छतियाँ।।१।। अति रस भीने रीझेरी रिझवार, एक जान मन भाई एक मति गतियाँ।। “रसिक” सुजान निर्भय क्रीडत दोऊ, अंग-अंग प्रतिबिम्ब दोउन की भतियाँ।।२।।

चैत्र कृष्णा ७

श्रृंगार - ग्वाल पगा को।

वस्त्र - लाल जरी के रूपेरी कोर के शुथन तथा चाकदार वागो तथा श्रीमस्तक पर लाल ग्वाल पगा पर सोनेरी जरी के काम की मोर शिखा। ठाड़ा मेघश्याम रंग के तथा पिछवाई लाल जरी की सोनेरी कोरकी।

आभरण - नित्यानुसार वेणु वैत्र गंगा जमनी (सोना चांदी लहर की) फूल की छड़ी धराई गई है। लीला कुंज की चल रही है।

मंगला में राग-बिलावल **सोभित सुभग लटपटी पाग, भीने रसिक त्रिया अनुराग।। कुंकुम अलक तिलक सेंदूर छबि, घूमत आवत और निस जाग।।१।। कछुक जृंभात और माल मरगजी, पीक कपोल अधर मसि दाग।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरधर नीके जानत, आलस वश सब अंग विभाग।।२।।**

श्रृंगार में राग-बिलावल **सुनरि सैन दई ग्वालन को, मोहनलाल बजायो बैनु।। प्रात समे जागे अनुरागे, वृंदावन आनंद भयो माई, चले चरावन धैंनु।।१।। बरन बरन बानिक बनि आये, पट-भूखन जसुमति पहराये, भाल तिलक दे आँजे नैनु।। "हरिनारायण स्यामदास" के प्रभु माई प्रगट भये धरी चन्द्रिका सीस, सब ब्रजजन सुख दैनु।।२।।**

राजभोग आवता (छाक के पद) राग-सारंग **बाँट-बाँट सबहिन कों देत।।** (यह पूरा पद पेज १८० पर पढ़े।)

राग-सारंग **बिहारीलाल आवहू आई छाक।। गैया दूर गई है मोहन वगदावो दे हाँक।।१।। अर्जुन, भोज, सुबल, श्रीदामा, मधुमंगल एक ताक। खटरस खीर खाँड घृत भोजन बहु पकवान।।२।। अपनी-अपनी पातर लेंके बैठे फैल फराक।। "सूरदास" प्रभु जेंवत रूचिसों प्रेम प्रीति के पाक।।३।।**

राग-सारंग बिहारी लाल आई छाक सलोनी।। अति अद्भुत पठई चंद्रावलि, एक गांठ द्वै दोहनी।।१।। टेरत स्याम भुजा ऊँची कर, गई सुवास आग्योनी।। "कृष्णदास" गिरिधरजू को मन हर्यो, बिधिना रसिक रिझोनी।।२।।

राग-सारंग बहुत फिरी तुम काज कन्हाई।। टेर-टेर हों भई बावरी, दोऊ भैया तुम रहे लुकाई।।१।। जे सब ग्वाल गये घर-घर कों, तिनसों कहि तुम छाक मँगाई।। लोंनी दधि मिष्टान जोरकें, यशुमति मेरे हाथ पठाई।।२।। ऐसी भूख माँज तूँ लाई, तेरी किहि विधि करों बढाई।। "सूरस्याम" सब सखन पुकारत, आवत क्यों न छाक ही आई।।३।।

राजभोग में राग-सारंग राग-रंग राख्यो मुरली में, कहा कहौं री लाल सुघर।। तान तरंग स्वरभेद अरू मिलवत जति गति, बिचबिच मिलवत विकट अवघर।।१।। चोख मांखन की रेख तामे, गायन टेरत लाँबे लाँबे स्वर।। बिच बिच लेत तिहारो नाम, सुन री सयानी "गोविन्द" प्रभु ब्रजरानी के कुँवर।।२।।

भोग में राग-पूर्वि हाँकें हटक-हटक गाय ठठक-ठठक रही, गोकुल की गली सब सांकरी।। जारी अटारी झरोखन मोखन झाँकत, दूर-दूर ठौर-ठौरतें परत काँकरी।।१।। चंपकली कुंदकली बरखत रसभरी, तामें पुन देखियत लिखे हैं आँकरी।। "नंददास" प्रभु जहीं-जहीं द्वारे ठाडे होत, तहीं-तहीं वचन मांगत, लटक लटक जात, काहूसों हाँ करी काहूसों ना करी।।२।।

संध्या में राग-गौरी माई बंशी की भनक कान पर परन लागी, बीर बनवारी ब्रज आवन को भागी।। सुरभि टंकार ग्वार टेर सुनियन लागी, खूरन की रेनु नभ उझगन लागी।।१।। अँखियाँ परकन लागी छतियाँ धरकन लागी, ग्रह ग्रहते गोपी दौरन लागीं।। "छीतस्वामी" गिरिधारी मुख देखन को तू तो चल, आली मेरे मोहन लागी।।२।।

शयन भोग (ब्यारू के पद) राग-कान्हरो करत बियारू हँस हँस मोहन।। चितवन में चितचोर लेत हैं, मो सुध भूली गोहन।।१।। ओट्यो दूध कनक बेला भर, ले ललिता आई जु अगोहन।। फूँक-फूँक कर पीवत साँवरों, अंचर देत यशोहन।।२।। देखत बने कहत नहिं आवे, उपमा को यह कोहनं। "कृष्णदास" प्रभु गिरिधर नागर, चित चोर्यो मृदु मुसकोहन।।३।।

शयन में राग-कान्हरो सोहत नासिका गिरिधर गज-मोती।। खोलत बीरा खात हँसत-डोलत, अरून अधर की दीनी पोती।।१।। कुंडल लोल कपोल बिराजत, जगमगात मुख मंजुल जोती।। “गोविंद” प्रभु देखत सुख उपनो, रसना कहा कहि सके बोती।।२।।

मान में राग-केदार रूप रस पुंज बरनों कहा चातुरी।। मान तेरो कह्यो चतुर चंद्रावली, निरख मुख कमल उडुराज संकात री।।१।। तिलक मृगमद द्विरद की सी चाल, देख रीझे लाल मंद मुसकात री।। “सूर” नगधर केलि, अंस पर भुज मेलि, मुग्ध पद ठेलि, दे मदन सिर लात री।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। (यह पूरा पद पेज ३० पर पढ़े।)

चैत्र कृष्णा ८

श्रृंगार - गोल चन्द्रिका का।

वस्त्र - लाल शेला की फूलेवर वाली रूपेरी कोर की, शुथन तथा वागो, पाग चीरा वाली पर जरी के कामकी गोल चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र श्याम रंग के तथा पिछवाई लाल शैला की फूलेवर की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार निकुंज की लीला।

मंगला में राग-विभास श्यामा श्याम प्रात उठ बैठे अरस-परस दोउ करत सिंगार।। लटपटी पाग सँवारत श्यामा, अलक सँवारत नन्दकुमार।।१।। एके पहेनी वाकी, मोतिन माला, एक पहनो वाको नवसर हार।। "श्रीभट" जुगल किसोर की दूती, मेरे आँगन करत बिहार।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल मोहन घुंमत रतनारें नैन, सकुचत कछू कहे बेन, सेन हीं सेन उत्तर देत, नंद के दुलारे।। भूषण बसन अटपटे, सीस पाग लटपटी, रति रण लई झटपटी, सुभग स्याम प्यारे।।१।। सुबस कियो कुंज-सदन, भोर आये जीत मदन, पलट पहरे बसन, अजहुँ न सँभारे।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिवरधर, दर्पण ले देखिये जू, सेंदुर को तिलक भाल, अधरन मसि कारे।।२।।

राजभोग आवे तब राग-सारंग बोलत कान्ह बुलावत गैया।। गिरि गोवर्द्धन ऊपर ठाडे, कर पीताम्बर लैया।।१।। लागी भूख पियो चाहत है, याको पय मथ घैया।। धार कर देत सबही ग्वालन कूँ, तब ही छाक पठैया।।२।। तिहिं अवसर ग्वालिन बन आई, दधि ओदन विधि ठैया।। भोजन करत सुरत जब कीनी, "प्रियदयाल" बल जैया।।३।।

राग-सारंग बंसीवट बैठे हैं नंदलाल।। भयौ है मध्यान छाक की बिरियाँ, अपनी-अपनी गैया छैया ले आवो ब्रजबाल।।१।। ग्वाल मंडली मध्य बिराजत, करत परस्पर भोजन नवल बने गोपाल।। "आसकरण" प्रभु मोहन नागर सब, सुख रसिक रसाल।।२।।

राग-सारंग बैठे श्री गोवरधन गिरि गोद।। मंडली सखा मध्य बलमोहन, खेलत हसत प्रमोद।।१।। भई अवार भूख जब लागी, चितयें घर की कोद।। "गोविंद" तहाँ छाक ले आये, पठई मात यशोद।।२।।

राग-सारंग बिराजत ग्वालमंडली अहो, बलमोहन छाक खात।। सिला ओदन जंघन रोटी, अंगुरिन बिच फल धरे, और गोरस के पात।।१।। काहु को ले देत स्याम, काहू को डहकावत, कोऊ झटक खात हाथतें, तब लालन मुसकात जात।। "रामदास" प्रभु की लीला लख, कहत शिव-ब्रह्मादिक, हम न भये अहीर, ब्रजमें यों कहि-कहि पछितात।।२।।

राजभोग में राग-सारंग आली कुंज भवन बैठे, ब्रजराज सुवन बोलत, मुख रसिक कुंवर, तूं चल प्राणप्यारी।। तेरे हित लोभी लाल, उठ चल भर अंक-माल, विरह रसाल छांड प्यारी, तो ऊपर हों वारी।।१।। छांड मन कर श्रृंगार, दर्पन ले मुख निहार, कोटि काम डारों वार, पहिरें नील सारी।। "गोविंद प्रभु" रसरंग रेल, कंठ भुजा अंस मेल, वश करी गिरिधारी।।२।।

भोग में राग-पूर्वी सोहत लाल चोकरी पाग साँकरे पेचन।। और सोहत मोतिन अवतंस, लटकन मनमथ हेरन।।१।। सुरत श्रमत सिथिल अति, लोचन निर्तत भुव रसभरी।। "गोविंद प्रभु" प्यारी संग बैठे, जहाँ निविड़ निकुंजदरी।।२।।

संध्या में राग-गौरी टेर हो टेर कदंब चढ़, दूर जात है गैया। तुम्हारी टेर सुनत बगदेंगी पाछें पीजे धैयाँ।।१।। झटकत रई पतूखी फारत, द्यावत नंद दुहैयाँ।। हमतें बहुत तिहारे गोधन, हसत कहा हो भैया।।२।। आज हमारी घिरत न घेरी, उतही कों जात है धैया।। "रामदास" प्रभु पर हूँकत आंई, हेरी देत कन्हैया।।३।।

शयन भोग (ब्यारू के पद) राग-कान्हरौं ब्यारू श्याम आरोगन लागे।। बहुमेवा-पकवान-मिठाई, विंजन करे मधुर रस पागे।।१।। दार-भात-घृत-कढ़ी-संधानों, रूचिकर मुखसों पापर माँगे।। "चतुर्भुज" प्रभु जूठन दे सबको, जो जन पावत सो बड़भागे।।२।।

शयन में राग-केदारों सकल व्रज त्रियन में तू हिं जीति री।। सबन कों भाग्य भोगवत सगरी निसा, लाल गिरिधरन संग तोहि बिती री।।१।। केतिक उपमा कहुँ रावरी एक मुख, स्याम सुंदर संग लाय लीती री।। "रसिक प्रीतम" महासुख दियो राधिका, याहि तें कमला रही है रीती री।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े श्री राधिका के गेह।। नवल धाम नवल संज्या, नवल बाढ़्यो नेह।।१।। नवल सुंदर नवल जोबन, नवल बरषत मेह।। "कृष्णदास" त्रैलोक नागर, नवल स्याम सनेह।।२।।

चैत्र कृष्णा ९

श्रृंगार - फेंटा को।

वस्त्र - मेघ श्याम रंग के जरीके रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर अंगुरी फेंटा पर मोरपिछके काम का कतरा। ठाड़ा वस्त्री पीला रंग का पिछवाई मेघश्याम जरीकी सोनेरी कोर की।

आभरण - हीरा के।

विशेष - निकुंज की लीला।

मंगला में राग-विभास **लाडली सुहाग देख ललितादिक फूली, वदन की बलैया लेत तन-मन-सुध भूली।। अरून उदय अरून वदन, कुँज सदन मदन केलि, सिथिल झेल आलस-भरत, निकसी रस झूलि।।१।। पीक छाप जुग कपोल, घूमत लोचन विलोल, गलत राग अधर मधुर, अद्‌भुत छवि छाजे।। दरक कंचुकि उतंग, गल अंग राग रंग, मरगजी और कुंदमाल, देखत रति लाजे।।२।। प्रितम गरे हाथ लटक, चलत ललित गति विसाल, मंदहास छवि प्रकास, दसन दुति बिराजे।। "दासी" जन हरख-निरख, जनम सुफल लेख-लेख, ठाड़ि कर जोर जोर, मुख-तंबोल काजे।।३।।**

श्रृंगार में राग-बिलावल **प्यारी के महल तें उठ चले भोर।।** (यह पूरा पद पेज १६६ पर पढ़े।)

राजभोग आवता (छाक के पद) राग-सारंग **वन में स्याम चरावत गैया।। वृंदावन में बंसी बजाई, बैठे कदम्ब की छैया।।१।। भाँत-भाँत के भोजन करके, पठये यशोमति मैया।। "सूरदास" प्रभु तम चिरजीयो, मेरो कुँवर कन्हैया।।२।।**

राग-सारंग **बड़ौ मैवा एक ब्रज में टेंटी।। जाको होत है साग-संधानों, और बेजर की रोटी।।१।। भरि-भरि डला जब लावन लागी, बड़े गोप की बेटी।। "कुंभनदास" प्रभु गोवर्धनधर, भुज ओढ़नी लपेटी।।२।।**

राग-सारंग **मोहन जेंवत छाक सलोनी।।** (यह पूरा पद पेज १७४ पर पढ़े।)

राग-सारंग लाल गोपाल हैं आनंदकंद।। बैठे हैं कालिन्दी के तट, बाँटत छाक यशोदानंद।।१।। हँस-हँस भोजन करत परस्पर, रस बाढ्यों रति रंग।। "श्री विट्ठलनाथ" गोवर्धनधारी बैठे, जेंवत एक हि संग।।२।।

राजभोग में राग-सारंग आली कुंज भवन, बैठे तहां नन्द सुवन, बोलत है रसिक रवन, तुं चल प्राण प्यारी।। (यह पूरा पद पेज १८५ पर पढ़े।)

भोग में राग-पूर्वि मेरे तुं जीय में बसत है, नवल त्रिया प्राण-प्यारी।। तेरे ई दरस परस, राग रंग उपजत, मान न कीजे हा हा री।।१।। तू ही जीवन तू ही प्राण, तू ही सकल गुन निधान तो समान और नाहिन, मोकों हितकारी।। "व्यास की स्वामिनी" तेरी मया तें, मै पायो है नाम बिहारी।।२।।

संध्या में राग-गौरी कदम चढ़ कान बुलावत गैयाँ।। (यह पूरा पद पेज ३८ पर पढ़े।)

शयन भोग (ब्यारू के पद) राग-कान्हरौ हँस हँस ब्यारू करत गोपाल।। खटरस विंजन करत रोहनी लाय धरत व्रजबाल।।१।। बीच धरी कंचन की थारी लाय परोस्यों भात।। प्रभु "कल्याण" बलराम स्याम को जिमावत यसोदा मात।।२।।

शयन में राग-बिहाग तैं जो नीलपट ओट दियौ री।। (यह पूरा पद पेज २० पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग राधेजू के प्रान गोवरधन धारी।। तरू तमाल ढिंग कनक लता सी, हरि जु के प्राण राधिका प्यारी।।१।। मरकत मणि नन्दलाल लाडिलों, कंचन तन बृषभान दुलारी।। "सूरदास" प्रभु प्रीत निरंतर, जोरी जुगल बने बनवारी।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग खेली फाग निकुंजन दोऊ, पोढे हैं पिय प्यारी।। रंग भीने रस भीने, दोऊ करत बिलास महारी।।१।। कुच कलसन पर बांह धरावत, चुंबन अति सुखकारी।। रसिक मुकट मणि रसमय दंपति, "कृष्णदास" बलिहारी।।२।।

चैत्र कृष्णा १०

श्रृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - पीली जरीके रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर पीली पाग पर रूपहरी जरी के काम का कतरा। ठाड़ा वस्त्र हरा रंग का तथा पिछवाई पीली जरीकी रूपहरी कोर की।

आभरण - माणक-मोती के, वेणुवेत्र लाल सफेद मीनाकी लहरदार।

विशेष - लीला निकुंज की।

मंगला में राग-विभास श्री वृंदावन निकुंज ठाड़े उठ भौर।। बाँह जोर बदन मोर, हँसत सुरत रति सकुचत, पुनि कछु लजात नयनन कोर।।१।। कबहुँक करत वेनु नाद, पायो सुधा-स्वाद, पंछी जन प्रेम मुदित, बोलत चहुँ ओर।। "रसिक प्रीतम" छबि निहार, प्रकट्यों रवि जिय विचार, बार-बार उमगि तहाँ, नाचत हैं मोर।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल यह पट पीत काहँ तें पायो।। इतनी प्रीति गुप्त मोहन की, तैं राधे त्रैलोक सुनायो।।१।। ना याको मोल न याको ग्राहक, ना लियो मोल न घर उपजायो।। एक बार खेलत वृंदावन, बहुत जतन करि मोहिं उढ़ायो।।२।। सुमिरन-भजन बसत उर-अंतर, इहि मिस करि लालन समुझायो।। प्रीति की रीत चतुर सोई जानें, "परमानन्द" प्रभु यों बोहरायो।।३।।

राजभोग (छाक के पद) राग-सारंग सब ब्रज गोपी रही तक ताक।। कर-कर गाँठ लसत सबहिन कें, वनको चलत जब छाक।।१।। मधु-मेवा-पकवान-मिठाई, घर-घर तें निकसीं थाक।। "नंददास" प्रभु को यह भावत, प्रेम-प्रीत के पाक।।२।।

राग-सारंग सिला पखारो भोजन कीजे।। नीके व्यंजन बने कौन के, चाख-चाख सबहिन कों दीजे।।१।। अहो-अहो सुबल अहो श्रीदामा, अर्जुन भोज विसाल।। अपने अपने ओदन लाओं, आज्ञा दई हैं गोपाल।।२।। फल अंगुरिन अंजलिन बिच राखें, बाँट-बाँट सबहिन को देत।। "परमानंद" स्वामी रस रीझे, प्रेम पूँज को बांध्यों सेत।।२।।

राग-सारंग श्रीगोवर्धनगिरि कंदरा में, भोजन करत है पिय-प्यारी।। आस-पास जुवती सब राजत, देत परस्पर कर मनुहारी।।१।। सखन के भाव की सामग्री लेत, श्री ललिता निहार निहारी।। "कुंभनदास" प्रभु लाल गिरिधर को, देत श्री राधा प्यारी।।२।।

राग-सारंग यमुना तट भोजन करत गोपाल।। विविध भाँत दे पठयो यशोमति, व्यंजन बहोत रसाल।।१।। ग्वालमंडली मध्य बिराजत, हँसत-हँसावत ग्वाल।। कमलनयन मुसकान मन्द हँस करत परस्पर ख्याल।।२।। कोऊ ब्यार दुरावत ठाड़ी, कोऊ गावत गीत रसाल।। “नंददास” तहाँ यह सुख निरखत, अंखियाँ होत निहाल।।३।।

राजभोग दर्शन में राग-सारंग आज वृंदा विपिन कुंज अद्भुत नई।। परम सीतल सुखद स्याम, सोभित तहाँ माधुरी मधुर, और पीत फूलन छई।।१।। विविध कदली खंभ, झूमका झूक रहे, मधुप गुंजार सुर, कोकिला धुनि ठई।। तहाँ राजत श्री, वृषभान की लाडिली, मनो हो घनस्याम ढिंग, उलही सोभा नई।।२।। तरनी तनया तीर, धीर समीर जहाँ, सुनत ब्रजवधू अति, होय हरखित भई।। “नंददासनी” नाथ, और छबि को कहे, सोभा नैन पंग, गति है गई।।३।।

भोग में राग-पूर्वि थोरी धूमर कारी काजर पियरी कहि कहि टेरत।। (यह पूरा पद पेज १७ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी मैया याते भई अबेर।। आवत भाज गई एक गैया, जाय धंसी वन फेर।।१।। दौर ग्वाल सब वाके पाछे, पकरन की कर आस।। चढ़ कदंब पीतांबर फेर्यो, आय गई मों पास।।२।। मैं चुचकार पीठ कर फेर्चो, लहड़े लई जगाय।। बतिया सुनत “रसिक” प्रीतम की मन फूली यशुमति माय।।३।।

शयन भोग (ब्यारू का पद) राग-कान्हरौ सेन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन में राग-इमन चलों, क्यों न देखें री, खरे दोऊ कुंजन की परछाँई।। एक भुजा गहि डार कंदब की, दूजी भुजा गल बाँही।।१।। छबि सों छबीली लपट लटक रही, कनक बेली तरू तमाल अरूझाई।। “हरिदास” के स्वामी-स्यामा कुंजबिहारी, रंगे हैं प्रेम रंग माँही।।२।।

मान में राग-केदारो रूप रस पूंज वरनों कहा चातुरी।। मान मेरी कह्यो चतुर चंद्रावली, निरख मुख कमल उडुराज संकात री।।१।। तिलक मृगमद द्विरद की सी चाल देख, रीझे लाल मन्द मुसकात री।। “सूर” नगधर केलि अंस भुज मेलि, मुग्ध पद ठेलि दे मदन सिर लात री।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग कुंज में पौढे पिय-प्यारी।। (यह पूरा पद पेज १७१ पर पढ़े।)

चैत्र कृष्णा ११

श्रृंगार - सेहरा को।

वस्त्र - लाल जरीके रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो चाकदार केसरिया मलमल को अन्तर वास पटको झालर वालों सुनहरी कोरका, श्रीमस्तक पर केसरी दुमाला पर माणक जड़ा सेहरा वेणी श्याम दाहिनी तरफ माणक की। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम तथा लाल पिछवाई लाल जरीकी सुनहरी कोरकी।

आभरण - नित्यानुसार हीरा, माणक-मोती के धराये गये हैं।

मंगला में राग-बिलावल **यह पट पित काहाँ ते पायो।।** (यह पूरा पद पेज १८८ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल (चोखड़ा) **ललिताजी के आज बधायों।। श्री वृंदावन ब्याह रचायो।। आली सब न्योत बुलाई।। वे मंगलनिधि न्योतो लाई।।टेक।। मंगल न्योतो लाई सखियन, मंडली अद्भुत रची।। बांध वंदनवार चहूं दिश, मध्य निधि वेदी रची।। संकेत देवी पूज ललिता, हरख अति आनंद भरी।। मेरी नवल राधा दुलहनी, कुंवर मिले दुल्हे हरी।।१।। देवी बहु भांत पुजाई।। सो विधना विध आन मिलाई।। जो राधे जिन हरी आराधे।। आज लई लग्न अनूपम साधे।।टेक।। सोई लग्न परम अनूप साधे, हरख मंगल गाईयो।। महा मंगल रूप अद्भुत, भांत मंडल छाईयो।। में उबट राधा दुलहनी, जब स्याम कें उबटन कियो।। स्नान कर सिर गूंथ मोरी, मुकुट मोहन के दियो।।२।। कर सों कर जोर फिराई।। भाँवर दे कें ढिंग बैठाई।। हँस कर दई हे बधाई।। ललिता फूली अंग न समाई।।टेक।। फुली जो अंग न समाय ललिता, रंग केवल भर रही।। आज धन्य-धन्य, यह पल शुभ घरी।। धन्य-धन्य नवलकिशोर दुल्हे दुलहनी राधा वरी।।३।। यह दुलह निपट सयानो।। या दुलहन कें रूप लुभानो।। आली छिन छिन विलंब न कीजै।। अंचल जोरनो कर लीजे।।टेक।। अंचल जोरनो कर दीयो, सखियन विचार गोने को कियो।। कर दिये कुंज प्रेवश दोऊ, धन्य ललिता को हियो।। जहाँ नवल सखी अनेक छबि पर, वारनें बलबल गई।। या ब्याहकी रसरीत सखियन, जात नहीं मोपें कही।।४।।**

राजभोग आने पर राग-सारंग **श्रीवृषभान सदन भोजनको, नंदादिक सब आये हो।। तिनके चरण कमल धरिवे कों, पट पांवडे बिछाये हो।।१।। राम कृष्ण दोऊ वीर बिराजत, गौर श्याम दोउ चंदा हों।। तिनके रूप कहत नहि आवे, मुनिजन के मन फंदा हो।।२।। चंदन**

घस मृगमद मिलाय कें, भोजन भवन लिपाये।। बिविध सुगंध कपूर आदि दे, रचना चोक पुराए।।३।। मंडप छायो कमल कोमल दल, शीतल छांय सुहाई।। आस-पास परदा फूलन के, मानो जाल गुहाई।।४।। शीतल जल कुमकुम के जल सों, सब के चरण पखारे।। कर विनती कर जोर सबन सों, कनक पटा बेठारे।।५।। राजत राज गोप भूपति संग, विमल वेष अहिरा।। मानो समाज राज हंसन को, जूरे सरोवर तीरा हो।।६।। धरे अनेक कनक कटोरा, और कंचन की थारी।। ढिंग-ढिंग धरी सबन के सुन्दर, शीतल जल भर झारी।।७।। गावन लागी गीत ब्याह के, सुकुमारी व्रजनारी।। अति हुलास परिहास परस्पर, यह सुख शोभा-भारी।।८।। परोसन लागे पुरोहित हित सों, जिनकी वदन बड़ाई।। तिनके दरस-परस संभाषण, मानों सुर सरिता आई।।९।। ओदन की उज्वलता मानों, सहेज रूप धर आये।। यह हित प्रीति प्रीतम जन, प्रकट हि आप जनाये।।१०।। बरी बरा अरू बरन बिजोरा, पापर पीत बनाये।। कनक वरण बेसन बहुतेरे, प्रकार न जात गिनाए।।११।। आमल बेल आंब अदरख, नीबू मिले संधाने।। सद सीरा और सुरभी धृत सों, सौरभ घ्राण बखाने।।१२।। बासोंदि शिखरन और खौवा, अमृत रसना तोषे।। आमल रस कटुक-तीक्ष्ण रस, लोन मधुर रस पोषे।।१३।। कंदमूल फल फूल पत्र जो, व्यंजन सबे प्रकारा।। ये हे मानों प्रकट भूतल में, अमृत के अवतारा।।१४।। और बहुत विध षडरस व्यंजन, परोसन वारे हारे।। यद्यपि होय शारदाकी मति, तदपि न जात संभारे।।१५।। शीतल सुगंध चारू सुकोमल, विविध भांत पकवान।। तेउ प्रकार परे नहीं कब हूं, सुरपति हू के कान।।१६।। कर आचमन उठे सब व्रजजन, मनमें अति सुख पाये।। पट भूषण बीरा सोंधे सों, पूज सदन पधराये।।१७।। यह सुख संपति यह रस शोभा, कापें जात बखानें।। जूठन जाय उठाय "गदाधर", भाग्य आपने माने।।१८।।

राजभोग में राग-सारंग दिन दुल्हे मेरो कुँवर कन्हैया।। नित उठ सखा सिंगार बनावत, नित हि आरती उतारत मैया।।१।। नित्य उठी आँगन चन्दन लिपावत, नित्य प्रति मोतिन चोक पूरैया।। नित ही मंगल कलस धरावत, नित प्रति वन्दनवार बन्धैया।।२।। नित ही उठी ब्याह गीत मंगल धुन, नित ही सुर मुनि वेद पढ़ैया।। नित प्रति आनंद होत वार निधि, नित ही "गदाधर" लेत बलैया।।३।।

भोग में राग-नट तू बनरा रे बनि-बनि आया, मो मन भाया, सुख उपजाया।। अति उतंग नीली घोड़ी चढ़ि, धरि सिर सेहरा अति सुन्दर, अंग सुगन्ध लगाया।।१।। अपने संग सकल जन सोहैं, तिलक ललाट बनाया।। "रसिक" प्रीतम बलिहारी तेरी, उठि के अंग लगाया।।२।।

संध्या में राग-गौरी राधा प्यारी दुलहन जू को दुलहा, देखोरी आवत हें व्रज लटकत।। ग्वालन संग गावत ऊंचे स्वर, श्रवण सुनत मन अटकत।।१।। प्यारो लाल देखत ही समात हीये में, अँखियन हुं नहीं खटकत।। प्रभु “कल्याण” गिरिधर जू की माधुरी, देख समर सरन तकि सटकत।।२।।

शयन भोग आने पर राग-कान्हरो राधामोहन दोऊ करत बियारू।। एक कर थार सवारें सुंदरि एक वेष एक रूप उज्यारी।।१।। मधु-मेवा-पकवान-मिठाई दंपति अति रूचिकारी।। “सूरदास” कों जूंठन दीनी अति प्रसन्न ललिता री।।२।।

शयन में राग-बिहाग अरी चल दुल्हे देखन जांय।। सुन्दर स्याम माधुरी मूरति, अँखियां निरख सिरांय।।१।। जुर आई व्रजनारि नवेली, मोहन दिस मुसिक्यांय।। मोर बन्यो शिर कानन कुंडल, मरूवटि मुखहिं सुहाय।।२।। पहेरें बसन जरकसी भूषण, अंग-अंग सुख दाय।। तेसी बनी बरात छबीली, जगमग रंग चुचांय।।३।। गोप सभा सरवर में फूले, कमल परम लपटांय।। “नंददास” गोपिन के दृग अलि, लपटन कों अकुलाय।।४।।

मान में राग-बिहाग न छूटे मोहन डोरना अहो, कसि बांध्यों गिरिधर जू के पाणि।। प्रथम ब्याह विधि व्हे रही हो, कर कंकण चारू बिचार।। हँस-हँस कस कस ग्रन्थ बनावत, नवल निपुण ब्रजनार।।१।। बड़े होय इत खोलियो, हो सुनो घोषके राय।। कर जोरो हा हा करो के, छूवो कुंवरी के पाय।।२।। यह न होय गिरिवर को धरनों, सुनों हो कुंवर गोपीनाथ।। बहुत कहावत हो अपन पे, कांपन लागे हाथ।।३।। सहज शिथिल कर पल्लव हरी, लीनो छोर संवार।। किलक हँसी सखी स्याम की, अब तुम छोरो हो सुकुमार।।४।। तुम किन अब करो सहाय सखी, हो छोड़ो अधिक सयान।। छोरन देउं कुवरि कों कंकण, के बोलो वृषभान।।५।। कमल कमल कर परणियो, पाणि पिया के लाल।। अब कवि कुल सांचे भये, तब भये कटि ले नाल।।६।। ज्यों ज्यों छूटे डोरना त्यों, बढ़े प्रेमकी डोर।। देख दुहुन की रीति सखी री, हँसत सबे मुख मोर।।७।। लीला ललित मुकुंद चंद की, करो रसिक रस पान।। यह जोरी अविचल वृंदावन, बलबल दास “कल्याण”।।८।।

पोढ़वा में राग-बिहाग श्यामाजु दुलहनि, दुलहे लाल गिरिधर कोन सुकृत पायो, कुंवर रसिक वर।। सोहे सिर सेहरो, नवल नव नेहरो, प्रथम मिलन नयना, भये हें कल्पतर।।१।। रूपरास रूचि बाढी, प्रेम गांठ परी गाढी, सखी बांह गहें ठाडी, गयो है लाजको डर।। पोढे पिय रंगमहल, तल्प रचित कुसुम दल, श्यामा सहजोर जाय, रह्योहे रंगन ढर।।२।।

चैत्र कृष्णा १२

श्रृंगार - टिपारा को।

वस्त्र - अमरसी जरीतास के रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर सोनेरी जरी कामका टिपारा। ठाड़ा वस्त्र श्याम रंग के तथा पिछवाई अमरसी जरीताश की रूपहरी कोर की।

आभरण - पन्ना व मोती के तथा सोने के वेणु वैत्र सोना-चांदी के गंगा-जमुनी।

मंगला में राग-बिलावल न्याय दिन दुल्है हों नंदलाल।। रीझी बिकाय जहाँ बसे तहाँ, नव दुलही ब्रजबाल।।१।। सिथिल चाल अति डगमगी हो, बसन मरगजे गात।। सोभित है अति रसमसे मानो ब्याह भयो जागे रात।।२।। नैन लहोहे घूमि रहे हैं, चितवनि चित रही लेत।। कहि “भगवान हित रामराय” प्रभु, बसन बधाई देत।।३।।

श्रृंगार में राग-रामकली निर्तत मोहन रसिक सखन संग, गिड गिड तत् थैई तत् थैई ताता।। (यह पूरा पद पेज ८ पर पढ़े।)

राजभोग राग-सारंग सुबल गिरिघाटी चढ़ हेरत।। आवो बेगि चतुर छकहारि गिरिधर पैंडो हेरत।।१।। भई अवेर भूख जब लागी तबहि उपरैना फेरतं। “कुभनदास” औसर पर पहुँची रसमें दान निवेरतं।२।।

राग-सारंग गिरि पर चढ़ि गिरिवर धर टेरें।। (यह पूरा पद पेज १७४ पर पढ़े।)

राजभोग दर्शन में राग-सारंग आज वृंदावन विपिन कुंज अदभुत नई।। (यह पूरा पद पेज १८६ पर पढ़े।)

राग-सारंग वृंदावन सघन कुंज, माधुरी लतान तर, यमुना पुलीन में, मधुर बाजे बांसुरी।। जबतै धूनि परि कान, मानो लागे मैन बान, प्रानन हु की कहा कहो, पीर होत पांसुरी।।१।। व्याप्यो अनंग ताते, देह सुधि भूल गई, कोउ हँसो कोउ निदो, करो उपहास री।। ऐसे “ब्रजाधीश” जू सों, प्रीत नई रीत बाढ़ि, जाके उर गड़ रही, प्रेम पुंज गांसुरी।।२।।

भोग में राग-पूर्वि गायन के पाछे-पाछे नटवर कांछे, बन्यो है टिपारो आछो लाल गिरिधारी के।। (यह पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी अग्र तक-तक द्रुं-द्रुं-द्रुं द्रन न न न निर्तत रसिक वर आवत गोवर्धन संग।। (यह पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

शयन भोग राग-कान्हरौ सैन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन दर्शन समय राग-ईमन आज सखी मोहन अति बने।। सीस टिपारो फरहरात, बरूहा चन्द्र अलक बीच, बीच चंपकली अति गनें।।१।। लाल काछ कटि, छुद्र घंटिका नूपुर, रूनझुनात गति लेत, ग्रग्रता तत तरंग गने।। "गोविन्द" प्रभु रस भरे नृत्य करत, सकल कला गुन प्रवीन, ब्रज नृपति निपुनें।२।।

विधाता विध न जानी में जानी।। सुन्दर वदन पान करन कूँ, रोम-रोम प्रति नैंन दिए क्यों न, करी यह बात अयानी।।१।। श्रवन सकल वपु जो होते री, सुनति पिय मुख अमृत बानी।। एरी मेरी भुजा होती री कोटि-कोटि, तो हौं भेंटती "गोविन्द" प्रभु सों, तो हूँ न तपति बुझाई सयानी।।२।।

मान में राग-बिहाग आवत जात हो हार परी री।। ज्यों-ज्यों प्यारो बिनती करी पठवत त्यों-त्यों तू गढ़ मान चढ़ीरी।।१।। तिहारे बीच परे सौं बावरी, हौं चौगान की गेंद भई री।। "गोविन्द" प्रभुसों मिले क्यों न भामिनी, सुभग यामिनी जात बही री।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाड़ली संग लें।। (यह पूरा पद पेज ३० पर पढ़े।)

चैत्र कृष्णा १३

श्रृंगार - पाग-कतराकों।

वस्त्र - हरी जरीके रूपहरी कोर के शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग पर हरी जरीका चीरा तथा सोनेरी जरीके कामका कतरा ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई श्याम जरीकी रूपहरी कोरकी।

आभरण - माणक-मोती तथा सोनेके। बेणुवैत्र सोनाकी तथा फूल की छड़ी।

विशेष - श्रीजी आज मोसमी गुलाबकी फूल मंडली में बिराजे।

मंगला में राग-विभास रजनी राज कियो, निकुंज नगर की रानी।। मदन महीपति जीत महारण, श्रमजल सहित जूंभानी।।१।। परम सूर सौंदर्य भृकुटी धनु, अनियारे नयन बाण सन्धानी।। "दास चतुर्भुज" गिरिधर रस संपति, विलसी ज्यों मनमानी।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल साँचे बोल तिहारें साँझ के।। रजनी अनत जागे नंदनंदन, आये निपट सवारे।।१।। आतुर भये नील पट ओढे, पीरे वसन बिसारे।। "कुंभनदास" प्रभु गिरधरन भले जु, भले वचन प्रतिपारे।।२।।

राजभोग राग-सारंग आज हमारे भोजन कीजे।। बहुत भाँत पकवान मिठाई, षटरस व्यंजन लीजे।।१।। सद्य खिचरी और खोवा, स्याम सलोने लीजे।। उर्द के बरा दही में बोरे, कछु कोरे कछु भीजे।।२।। संग समान सखा बुलावहु, बाँट सबन कों दीजे।। "आसकरण" प्रभु मोहन नागर, पान्यों पछावर पीजें।।३।।

राजभोग दर्शन में राग-सारंग आलिरी कुंजभवन, बैठे ब्रजराज-सुवन, बोलत मुख रसिक कुँवर, तू चल प्रान पियारी।। तेरे हित लोभी लाल, उठ चल भर अंकमाल, बिरह रसाल छाँड प्यारी, तो ऊपर हौं वारी।।१।। छाँड मान कर सिंगार, दर्पन ले मुख निहार कोटी काम डारौं वारी, पहिरें नील सारी।। "गोविंद" प्रभु रसरंग केलि, कंठ भुजा में भुज मेलि, वस करि गिरिधारी।।२।।

भोग में राग-नट ज्यों तुं दर्पण लें निरख हंसत, सो तौ मैं जानी हेरी माई।। केते रंगीले नैननि, में प्रानप्यारे की, मोहनी मूरति के उरझाई।।१।। हौं तो रही रीझी, रीझी तोपें जो कछु कही न आवे तेरे, रूपकी निकाई।। “नंददास” प्रभु की प्यारी, आज कछु मोही दीजिये, देखी धों कैसी मैं पाई।।२।।

संध्या में राग-गौरी हरि मारग जोवत भई सांझ।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

शयन भोग राग-इमन सैन भोग लाई भर थारी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन के दर्शन समय राग-केदारो फूली-फूली डोले सोने के सदनमें, मदन मोहन रसमाती।। रस-बस कीने सुहाग बिहारन, मंद-मंद मुस्कयाती।।१।। बहियाँ जोर परस्पर दोऊँ, लाड़ली फेर लडाती।। “हरिदास” के स्वामी, स्याम रंग बरखत बहु भाँति।।

मान में राग-केदारों सकल व्रज त्रियन में तु हीं जीती री।। (यह पूरा पद पेज १८५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग कुसुम सेज पोढे दम्पति, करत है रस बतियाँ।। त्रिविध समीर सीरी, उसीर रावटी मधि, खसखाने सींचे सुभग जोरावत है पिय छतियाँ।।१।। कपोल सों कपोल दिये, भुजसों भुज भीड़े, कुच उतंग पिय, उर राजत है भतियाँ।। “नंददास” प्रभु कनक पर्यंक पर, सब सुख बिलसत, केल करत मोहन, एक गत मतियाँ।।२।।

चैत्र कृष्णा १४

श्रृंगार - मुकुट-कांछनी का।

वस्त्र - गुलाबी रंगके जरीताश के रूपहरी कोरके शुथन तथा कटि में कांछनी, मोटा पिताम्बर, श्रीअंग में मेघश्याम शाटन की चोली, श्रीमस्तक पर पाग पर लाल मखमल पर सोनेरी जरीके कामका मुकुट। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई गुलाबी रंगकी-जरीताश की रूपहरी कोर की।

आभरण - फिरोंजी रंग के मीनाके तथा हीरा-मोती के वैणु-वैत्र लहरदार मीनाके तथा फूलकी छड़ी।

मंगला में राग-बिलावल साँचे बोल तिहारे साँझके।। (यह पूरा पद पेज १६५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल सुमर मन गोपाललाल, सुंदर अति रूपजाल, मिटे हें जंजाल सकल, निरखत सब गोप बाल।। मोर मुकुट सीस धरें, बनमाला सुभग गरें, सबको मन हरे देख, कुंडल की झलक गाल।।१।। आभूषन अंग सोहे, मोतिन के हार सोहे, कंठसरि मोहे दृग, गोपिन निरखत निहाल।। "छितस्वामी" गोवरधनधारी, कुंवर नंद सुवन, गायन के पाछें-पाछें, धरत हैं लटकीली चाल।।२।।

राजभोग आते समय राग-सारंग हँसत परस्पर करत किलोल।। (यह पूरा पद पेज १७५ पर पढ़े।)

राजभोग दर्शन में राग-सारंग मुकुट की छांह मनोहर किये।। सघन कुंज तें निकस सांवरो, संग राधिका लिये।।१।। फूलन के हार सिंगार, फूलन खौर चंदन किये।। "परमानंददासको" ठाकुर, ग्वाल बाल संग लिये।।२।।

भोग में राग-मालव जांऊगी वृंदावन भेटोंगी गोपालें देखुंगी नैनभर श्याम तमालें।।१।। (यह पूरा पद पेज १७७ पर पढ़े।)

संध्या में राग-कान्हरौ बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु स्याम सुंदर कमल नयन।। (यह पूरा पद पेज १७७ पर पढ़े।)

शयन भोग राग-बिहाग रानीजु अपने सुतहीं जिमावति।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन दर्शन में राग-बिहाग पिय को नचवन सिखवत प्यारी।। वृंदावन में रास रच्यो है, सरद रैन उजियारी।।१।। ताल मृदंग उपंग बजावत, अति प्रवीन ललिता री।। रूप भरी गुन हाथ छरी लियें, डरपत लाल बिहारी।।२।। बीना बेनु नूपुर ध्वनि बाजत, खग मृग सुधि बिसारी।। "व्यास-स्वामिनी" की छवि निरखत, रीझ देत कर तारी।।३।।

मान में राग-केदार राधिका आज आंनद में डोलें।। (यह पूरा पद पेज १७८ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग कुंज भवन में पोढे दोऊ।। नंदनंदन वृषभान नंदिनी, उपमा कों दूजो नहीं कोऊ।।१।। लाल कुसुम की सेज बनाई, कोक-कला जानत है सोऊ।। रसमें माते रसिक मुकुटमणि, "परमानंद" सिंध द्वारें होऊ।।२।।

चैत्र कृष्णा अमावस्या ३०

श्रृंगार - पाग-मोर-चंद्रिका को।

वस्त्र - श्याम जरीके-फुलेवर के, रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग पर श्याम जरीका चीरा तथा मोरचंद्रिका। ठाड़ा वस्त्र सिन्दुरी रंग के तथा पिछवाई श्याम जरीकी चोखाने की, रूपहरी कोरकी।

आभरण - हीरा-मोती के तथा वेणुवैत्र मीना की।

विशेष - यदि थोड़ीसी गरमी होय तो हाथ के पंखा किये जाते हैं तथा गुलाबजल छिरका जाता है व गुलकंद आरोगाया जाता है।

मंगला में राग-विभास श्याम की भुजन बिच, राखी सुरत सिंच, निंदते सुमार जान।। सोई सुकुमारी जागी तमचर स्वर तें।।१।। हा हा कान्ह उदै भान, अब हीं होइगो जान।। धुंकुर-पुकुर छाती गुरूजन डर तें।।२।। मधुर वचन कह्यौ, प्यारे कौ भलो मनायौ।। चुंबन अंकोर देति निरवारि गर तें।।३।। आँगन ठाढे आई, ललिता लेत बलाई।। "सूर" स्वामिनी राजत आनंद के भर तें।।४।।

श्रृंगार में राग-बिलावल तिहारे पूजिये पिय पाय।। कैसी कैसी उपजत तुममें, कहत बनाय-बनाय।।१।। आतुर भये नील पट ओढ़े, बसन पीत पलटाय।। रूचिर कपोल पीक कहाँ पागे, अरू यश पत्र लिखाय।।२।। गिरिधरलाल जहाँ निस जागे, तन सुख जिय की जाय।। "कुंभनदास" प्रभु जानिये बतियाँ, अब तुमको न पत्याय।।३।।

राजभोग राग-सारंग श्री गोवर्धन गिरि कंदरामें, भोजन करत हैं पिय प्यारी।। आस-पास जुवती सब राजत, देत परस्पर कर मनुहारी।।१।। सखन के भाव की सामिग्री लेत, श्री ललिता निहार निहारी।। "कुंभनदास" प्रभु लाल गिरिधर को, देत श्री राधा प्यारी।।२।।

राजभोग में राग-सारंग नवल घनश्याम सखि, नवल बनि राधिका, नवल नव कुंज, नव केल ठानी।। नवल कुसुमावलि, नवल सिज्या रची, नवल कोकिल-कीर-मृग बानी।।१।। नवल सहचरी वृंद, नवल बीना-मृदंग, नवल रागिनी, राग-तान गानी।। नवल गोपीनाथ हित, नवल रस रीत, ग्रह नवल "हरिवंश", अनुराग जानी।।२।।

भोग में राग-पूर्वि धरें टेढ़ी पाग टेढ़ी चन्द्रिका, टेढ़े त्रिभंगी लाल।। कुंडल किरण मानों, कोटि रवि उदय होत, उर राजत बनमाल।।१।। साँवरे वदन पीतांबर ओढे, बजावत मुरली मधुर रसाल।। “नंददास” बनतें ब्रज आवत, संग लिये ब्रज बाल।।२।।

संध्या में राग-गौरी झुक रही सुन मुरली की टेर।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शयन भोग राग-कान्हरो आरोगत नंदलाल सयाने।। बहुविध भोजन शाक मिठाई दूध दही पकवाने।।१।। अचवावत यशुमति मैया शीतल जल गोपाल अघाने।। श्रीवल्लभ प्रभु हाथ ले बीरी “स्यामदास” भोजन यश गाने।।२।।

शयन दर्शन समय राग-अडानो अरी हों या मग निकसी आय अचानक, कान्ह कुँवर ठाड़े आपुनी पोर।। दृष्टिसों दृष्टि मिली, रोम-रोम सीतल भई, तनमें उठी हैं केधों, काम रोर।।१।। लाल पाग झुक रही भ्रोहन पर, स्याम गात कीयें चंदन की खोर।। “सूरदास” प्रभु सर्बस्व हरके चलें, मनमें आवत केंधों मिलोरी दौर।।२।।

मान में राग-इमन/हमीर झमकि चल राधे, तोपें स्याम बुलावें।। तो बिन मोहन पान न खात, कौन मंत्र पढ़ि साधे।।१।। निसि-वासर तेरो ध्यान धरत हैं, बिरह अग्नि तन बाँधे।। “सूरदास” प्रभु रसिक सिरोमनि, तो बिन मोहन आधे।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढे माई मदनमोहन स्याम।। (यह पूरा पद पेज ३५ पर पढ़े।)

।।श्रीनाथजी।।

इस ग्रंथ के प्रकाशन में आर्थिक सहयोगकर्ता वैष्णवजन

।।जय श्री कृष्ण।।

१.	श्रीमती स्मिताबेन श्री भुवनेश भाई शाह, अहमदाबाद, नि. उदयपुर।	११०००/-
२.	श्रीमती मुन्नीकुमारी श्री गोपाललाल जी स्वर्णकार, नि. उदयपुर।	११०००/-
३.	श्रीमती आशा बेन श्री द्वारकादास जी पारख, नि. उदयपुर।	३०००/-
४.	श्री नगीनदास जी श्री पुरूषोत्तमदास जी पारख, नि. उदयपुर।	३०००/-
५.	श्री कमल डिजिटल स्टूडियो, उदयपुर।	२०००/-

परिचय

इस ग्रंथ के प्रकाशनकर्ता मदनलाल शर्मा का श्रीनाथजी की नगरी नाथद्वारा में सम्वत् 1996 कार्तिक कृष्ण नवमी को श्री हरिशंकर जी हाड़ा (गुर्जर गौड ब्राह्मण) के पुत्र के रूप में जन्म हुआ । आपने एम.ए., बी.एड. तक की शिक्षा ग्रहण की एवं साहित्य रत्न की उपाधि भी प्राप्त की । आपको राज्य स्तरीय पुरस्कार वर्ष 1993 में प्रदान किया ।

आपकी रूचि बाल्यकाल से ही पुष्टिमार्ग में रही। आपका ब्रह्म संबंध वर्तमान तिलकायत श्री 108 श्री इन्द्रदमनेजी महाराज (श्री राकेशजी) द्वारा हुआ ।

आपश्री की प्रेरणा के फलस्वरूप कीर्तन संकलन प्रणालिका के अनुसार प्रारंभ किया एवं इसका प्रथम पुष्प (माह चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ) का प्रकाशन चैत्र शुल्का प्रतिपदा सं. 2065 को किया । द्वितीय पुष्प (माह आषाढ, श्रावण एवं भाद्रपद) का आश्विन शुक्ल 10 सं. 2067 एवं तृतीय पुष्प (आश्विन, कार्तिक एवं मार्गशीर्ष एवं पौष मास) का प्रकाशन कर आप सभी वैष्णवजनों को समर्पित किया । अब यह चतुर्थ पुष्प (माघ, फाल्गुन एवं चैत्र कृष्ण पक्ष) का प्रकाशन कर आप वैष्णवजनों को समर्पित है ।

आशा है वैष्णव जन इससे लाभान्वित होंगे एवं सेवा में यह उपयोगी होंगे ।